केरल में हिन्दी अध्ययन की समस्यायें

(हिन्दी और मलयालम व्याकरण के विशेष सन्दर्भ में)

KERALA MEM HINDI ADHYAYAN KI SAMASYAYEM

(HINDI AUR MALAYALAM VYAKARAN KE VISHESH SANDHARBH MEM)

Thesis submitted to

COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

for the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

By

IBRAHIM KUTTY P. H.

Supervising Guide

Dr. L. SUNEETHA BAI

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
KOCHI - 682 022

2000

CERTIFICATE

This is to certify that this thesis entitled ' ***KERALA MEM HINDI ADHYAYAN KI SAMASYAYEM (Hindi Aur Malayalam Vyakran Ke Vishesh Sandharbh Mem)*** is a bonafide record of work carried out by Ibrahim Kutty. P.H. Under my supervision for Ph.D and no part of this has hitherto been submitted for a degree in any university

21/8/2000

Dr.L.SUNEETHA BAI, Professor
(Supervising Teacher)
Department of Hindi
Cochin University of Science & Technology
Cochin - 682 022

DECLARATION

I here by declare that the thesis entitled ' **KERALA MEM HINDI ADHYAYAN KI SAMASYAYEM** (***Hindi Aur Malayalam Vyakaran ke Vishesh Sandharbh Mem)*** has not previously formed the basis of the award of any degree, diploma, associateship, fellowship or other similar title or recognition.

IBRAHIM KUTTY.P.H

Department of Hindi
Cochin University of Science & Technology
Cochin - 682 022

पुरोवाक्

प्राचीन काल से ही हिन्दी तमाम उत्तर भारत में आम व्यवहार की भाषा रही है । मलयालम तो भारत के सुदूर दक्षिण में स्थित केरल की प्रादेशिक भाषा रही है । मध्यकाल से ही " गोसाइयों " का उत्तर भारत से केरल में आगमन होने के कारण हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में इस्तेमाल की जाने लगी । तब से लेकर केरल के लोगों ने हिन्दी पढ़ने का कार्य शुरू किया । केरल में हिन्दी अध्ययन यहीं से प्रारंभ होता है । भारत जैसे बहुभाषा - भाषी देश में भाषा संबन्धी समस्याओं का होना बिलकुल सहज एवं स्वाभाविक है । स्वाधीनता प्राप्ति के बाद हिन्दी को राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया । परिणामस्वरूप केरल जैसे अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य हो गया ।

केरल में हिन्दी भाषा का अध्ययन कई स्तरों पर होता है । आम व्यवहार की भाषा के अतिरिक्त विविध शास्त्रों व विज्ञानों के माध्यम के रूप में इसका प्रयोग हो रहा है । हिन्दी साहित्य के अध्येता उसका विशेष रूप से उपयोग करते हैं । इसलिए यह बहुत बड़ी आवश्यकता है कि द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन करने वाले केरल के छात्रों द्वारा हिन्दी का सफल एवं प्रभावी प्रयोग किया जा सके जिससे कि वे अपनी विविध आवश्यकताओं की पूर्ति केलिए हिन्दी का उपयोग करने में कठिनाई का अनुभव न कर सकें ।

केरल में हिन्दी व्याकरण के तत्वों का अध्ययन बँधी-बँधायी परिभाषा के आधार पर किया जाता है । इससे हिन्दी के असली प्रयोग से केरल के छात्र अनभिज्ञ रह जाते हैं । इसलिए

बार बार गलतियों का शिकार बन जाते हैं । अर्थात् उनके सामने व्याकरण संबन्धी अनेक समस्यायें उपस्थित होती है । यह अनुभव सिद्ध सत्य है कि केवल बँधी बँधायी परिभाषा के आधार पर किसी व्याकरण के तत्वों को पूरी तरह नहीं समझाया जा सकता ।

चूँकि केरल के आम व्यवहार की भाषा मलयालम है । इसलिए द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन करते वक्त मलयालम भाषा का अवांछित हस्तक्षेप काफी समस्यायें उत्पन्न करता है । हिन्दी और मलयालम दो अलग अलग परिवारों की भाषायें हैं जिनके व्याकरण, शब्द प्रयोग, वाक्य गठन एवं भाषा की विभिन्न प्रवृत्तियों में काफी अन्तर है । इन दोनों भाषाओं की समानता एवं असमानता से कई समस्यायें उत्पन्न होती हैं । भिन्नता या असमानता जहाँ अधिक होती है, वहाँ ये समस्यायें अधिक मात्रा में पाई जाती हैं । मुख्य रूप से हिन्दी और मलयालम के लिंग, वचन और कारक के प्रयोग में जहाँ वैषम्य अधिक होता है, वहीं समस्यायें अधिक उत्पन्न होती हैं । बीसवीं सदी के प्रारंभ से लेकर केरल में हिन्दी का विशेष अध्ययन होता रहा है । तब से लेकर हिन्दी अध्ययन में जिन समस्याओं को बार बार महसूस किया जाता रहा उन पर दृष्टि डालने का प्रयास इस शोध कार्य द्वारा किया गया है । इस दिशा में चूँकि यह समस्या केरल में हिन्दी भाषा के अध्ययन में बहुत गहरी उतर चुकी है, फिर भी इन समस्याओं का अध्ययन, विश्लेषण एवं समाधान करने का प्रयत्न बहुत कम ही हुआ है । या यों कहा जा सकता है कि नहीं के बराबर है । कहीं कुछ छिटपुट लेख अवश्य मिलते हैं जो शोधपरक कहे जा सकते हैं । इस दिशा

में लिखा गया एकमात्र प्रकाशित शोध है - " केरल में हिन्दी शिक्षण का विकास और मलयालम भाषी छात्रों की समस्यायें "। इस शोध प्रबन्ध में शोधार्थी ने भाषा विज्ञान को आधार बनाकर इन समस्याओं के विश्लेषण का प्रयास किया है जो कुछ हद तक सफल कहा जा सकता है । लेकिन व्याकरणिक नियमों के आधार हिन्दी और मलयालम के व्याकरणिक नियमों की तुलना करते हुए इन समस्याओं पर प्रकाश डालना बहुत आवश्यक दिखाई पडता है । शोधार्थी ने अपने शोध प्रबन्ध में दोनों भाषाओं के व्याकरणिक नियमों की तुलना करते हुए उनके आधार पर त्रुटियों का विश्लेषण करते हुए इन समस्याओं का सोदाहरण विश्लेषण - विवेचन किया है । आशा है कि हिन्दी शोध के क्षेत्र में यह शोध प्रबन्ध अपना अलग योग प्रदान करेगा । केरल के छात्रों को हिन्दी के प्रयोग का सम्यक ज्ञान मिलेगा तथा उनकी व्याकरणिक समस्याओं का निराकरण भी हो जाएगा ।

इस शोध प्रबन्ध को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है । वे इस प्रकार हैं -

" केरल में हिन्दी अध्ययन की सामान्य समस्यायें " नामक पहले अध्याय में मातृभाषा और द्वितीय भाषा के अन्तर को स्पष्ट करते हुए तथा केरल में हिन्दी भाषा के अध्ययन के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए केरल में हिन्दी अध्ययन में होनेवाली सामान्य समस्याओं पर विचार किया गया है ।

दूसरे अध्याय का नाम " केरल में हिन्दी अध्ययन की उच्चारणगत और वर्तनीगत समस्यायें " है । इसमें भाषा अध्ययन, खासकर द्वितीय भाषा अध्ययन में उच्चारण एवं वर्तनी का स्थान

निर्धारित करते हुए हिन्दी और मलयालम वर्णों की तुलना की गई है और साम्य - वैषम्य के आधार पर उच्चारणगत एवं वर्तनीगत समस्याओं का विश्लेषण किया गया है ।

तीसरे अध्याय का नाम " केरल में हिन्दी अध्ययन की संज्ञा सम्बन्धी समस्यायें " है जिसमें हिन्दी और मलयालम की संज्ञा की लिंग व्यवस्था, वचन व्यवस्था तथा कारकों का परिचय देते हुए केरल के हिन्दी अध्ययन में होनेवाली संज्ञा की लिंग, वचन और कारक संबन्धी समस्याओं का सूक्ष्मता से विश्लेषण किया गया है ।

" केरल में हिन्दी अध्ययन की सर्वनाम और विशेषण सम्बन्धी समस्यायें " नामक चौथे अध्याय में केरल के हिन्दी अध्ययन में होने वाली सर्वनाम और विशेषण सम्बन्धी समस्याओं का विश्लेषण किया गया है ।

पाँचवें अध्याय का नाम " केरल में हिन्दी अध्ययन की क्रिया संबन्धी समस्यायें " है । इसमें दोनों भाषाओं की क्रियाओं के प्रयोगगत अन्तर से उत्पन्न समस्याओं का विश्लेषण किया गया है । इस अध्याय के अन्तर्गत सकर्मक व अकर्मक क्रियाओं, प्रेरणार्थक क्रियाओं तथा विभिन्न संयुक्त क्रियाओं से संबन्धित समस्याओं के अतिरिक्त विभिन्न कालरूपों, वाच्य एवं कृदंत संबन्धी समस्याओं का विश्लेषण भी किया गया है ।

" केरल में हिन्दी अध्ययन की अव्यय संबन्धी समस्यायें " नामक छठे अध्याय में हिन्दी और मलयालम के क्रिया विशेषण, सम्बन्ध सूचक अव्यय, समुच्चयबोधक अव्यय और विस्मयादि बोधक

अव्यय का तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन करते हुए इन अव्ययों से संबन्धित समस्याओं का विश्लेषण किया गया है ।

सातवाँ अध्याय " केरल में हिन्दी अध्ययन की वाक्य संबन्धी समस्यायें " है जिसमें साधारण वाक्य, मिश्र वाक्य तथा संयुक्त वाक्य और उनके क्रम व अन्वयन से संबन्धित समस्याओं का विश्लेषण किया गया है ।

शोध प्रबन्ध के अन्त में उपसंहार प्रस्तुत किया गया है जिसमें शोध के द्वारा निकाले गए निष्कर्ष दिए गए हैं और शोध की नवीन वैज्ञानिक प्रणाली " पंचसूत्री कार्यक्रम " के अनुसार सहायक ग्रन्थ सूची प्रस्तुत की गई है ।

इस शोध में मेरा निर्देशन करनेवाली डा. एल सुनीता बाई जी के विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन तथा प्रगति की ओर हमेशा अग्रसर करा देनेवाले व्यक्तित्व के बिना यह कार्य संपन्न होना बहुत ही मुश्किल था । उनके उचित निर्देशन एवं सहयोग के प्रति अपनी कृतज्ञता, भव्यता एवं एहसान को शब्द-बद्ध करने की विधि शोधार्थी नहीं जानता । इस शोध प्रबन्ध की तैयारी में शोधनिर्देशिका के अतिरिक्त अन्य गुरुजनों, साथियों एवं विद्वानों से बहुत सहायता हुई है । शोधार्थी इस अवसर पर उन सबके प्रति आभार प्रकट करता है ।

इस अवसर पर हिन्दी विभाग के पुस्तकालयाध्यक्ष तथा उनके सहायक के प्रति भी शोधार्थी आभार प्रकट कर रहा है जिन्होंने समय समय पर आवश्यक किताबें पहूँचाते हुए शोधार्थी की मदद की है ।

जहाँ तक हो सके, इस शोध प्रबन्ध को त्रुटिहीन बनाने की कोशिश की है । फिर भी इत्तिफाक से कोई त्रुटि आ गई है तो उसके लिए शोधार्थी क्षमाप्रार्थी है ।

इब्राहिम कुट्टि पी. एच.
कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
हिन्दी विभाग
कोच्चिन - 682 022

विषयसूची

पृष्ठ संख्या

पहला अध्याय 1 - 48

केरल में हिन्दी अध्ययन की सामान्य समस्यायें

भूमिका - केरल में भाषा अध्ययन - मातृभाषा अध्ययन - द्वितीय भाषा अध्ययन - सहायक भाषा - समतुल्य भाषा - संपूरक भाषा - परिपूरक भाषा - मातृभाषा और द्वितीय भाषा में अन्तर - मातृभाषा अध्ययन और द्वितीय भाषा अध्ययन का उद्देश्य - मातृभाषा अध्ययन का उद्देश्य - द्वितीय भाषा अध्ययन का उद्देश्य - केरल में हिन्दी भाषा के अध्ययन का स्वरूप - मध्ययुग से लेकर बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक - बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक - स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद - हिन्दी अध्ययन की समस्यायें - मातृभाषा का प्रभाव - भाषाविषयक रुचि का अभाव - हिन्दी वातावरण का अभाव - केरल के हिन्दी अध्ययन में समय की कमी - व्यवस्था संबन्धी समस्यायें - व्याकरण संबन्धी समस्यायें - शिक्षण सामग्री का अभाव - पाठ्यक्रम संबन्धी समस्यायें - द्वितीय भाषा सीखने की विधियाँ और उससे उत्पन्न समस्यायें - पाठ्यक्रमेतर कार्यों का अभाव - अध्यापक केन्द्रित समस्यायें - छात्र केन्द्रित समस्यायें - निष्कर्ष ।

दूसरा अध्याय 49 - 98

केरल के हिन्दी अध्ययन में उच्चारणगत एवं वर्तनीगत समस्यायें

भूमिका - भाषा अध्ययन में उच्चारण एवं वर्तनी का स्थान - द्वितीय भाषा अध्ययन में उच्चारण एवं वर्तनी - हिन्दी और मलयालम वर्णों

की तुलना - वर्णों के विभाजन - संयुक्त व्यंजन - व्यंजनों को संयुक्त करने की विधि - स्वर की मात्राएँ - अन्य बातें - हिन्दी और मलयालम में उच्चारण एवं वर्तनीगत समस्यायें - हिन्दी और मलयालम के स्वरों की उच्चारणगत एवं वर्तनीगत समस्यायें - " अ " की उच्चारणगत और वर्तनीगत समस्यायें - अन्त्य अकार संबन्धी समस्यायें - हिन्दी और मलयालम के " आ " - हिन्दी और मलयालम की "इ" और इससे उत्पन्न समस्यायें - हिन्दी और मलयालम के " ई " और उससे उत्पन्न समस्यायें - हिन्दी और मलयालम के " उ " और "ऊ" और उससे उत्पन्न समस्यायें - हिन्दी और मलयालम के एकारान्त और उसकी समस्यायें - हिन्दी और मलयालम के " ऐ " और उससे उससे संबन्धित समस्यायें - हिन्दी और मलयालम के ओकारान्त - हिन्दी और मलयालम के " औ " - " ऋ " संबन्धी समस्यायें - अनुस्वार और अनुनासिक संबन्धी समस्यायें - हिन्दी और मलयालम के व्यंजनों की उच्चारणगत एवं वर्तनीगत समस्यायें - अल्पप्राण और महाप्राण संबन्धी समस्यायें - घोष और अघोष संबन्धी समस्यायें - " ड " और " ढ " संबन्धी समस्यायें - " न " के उच्चारण संबन्धी समस्यायें - " ळ "कार संबन्धी समस्यायें - " ज्ञ " संबन्धी समस्यायें - अन्य कुछ समस्यायें - निष्कर्ष ।

तीसरा अध्याय 99 - 185

केरल में हिन्दी अध्ययन की संज्ञा संबन्धी समस्यायें

भूमिका - संज्ञा की परिभाषा हिन्दी और मलयालम में - संज्ञा के प्रकार: हिन्दी और मलयालम में - हिन्दी की संज्ञायें - मलयालम की संज्ञाएँ - हिन्दी और मलयालम संज्ञाओं से संबन्धित विशेष बातें - समान अर्थ में प्रयुक्त होनेवाली संज्ञायें - हिन्दी और मलयालम में समान रूपी भिन्नार्थक संज्ञाएँ - संज्ञा शब्द संबन्धी समस्यायें -

संज्ञा की व्याकरणिक कोटियाँ - संज्ञा की लिंग सम्बन्धी समस्यायें - हिन्दी और मलयालम लिंग व्यवस्था का स्वरूप - हिन्दी और मलयालम के लिंग निर्धारण - अर्थ के आधार पर लिंग निर्णय - रूप के आधार पर लिंग निर्णय - लोक व्यवहार के आधार पर - लिंग संबन्धी समस्याओं का विश्लेषण - समान रूपी भिन्नार्थी शब्दों के लिंग निर्णय की समस्या - समानार्थी भिन्न शब्दों की समस्या - एक ही अन्तवाले शब्दों के लिंग निर्णय की समस्या - भिन्नलिंगी समान शब्दों के लिंग निर्णय की समस्या - समस्त पदों के लिंग निर्णय की समस्या - संज्ञा के पहले विशेषण आने से उत्पन्न समस्या - लिंग निर्णय में असमर्थता - मातृभाषा के हस्तक्षेप से उत्पन्न समस्या - अन्य समस्यायें - समस्याओं का निराकरण - केरल के हिन्दी अध्ययन में वचन संबन्धी समस्या - हिन्दी और मलयालम की वचन व्यवस्था का स्वरूप - एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम - मूल या अविकृत रूप बनाने के नियम - विकृत रूप बनाने के नियम - वचन संबन्धी समस्याओं का विश्लेषण - सदैव बहुवचन में प्रयुक्त संज्ञाओं की समस्या - दोनों वचनों में प्रयुक्त संज्ञाओं की समस्या - सदा एकवचन में प्रयुक्त संज्ञाओं की समस्या - संज्ञाओं के बीच में " और " अथवा " या " आने से समस्या - प्रत्येक और हर एक के प्रयोग से उत्पन्न समस्यायें - बहुवचन के स्थान में एकवचन का ही प्रयोग - मूल रूप और विकृत रूप की समस्या - पृथक बहुवचन की समस्या - अन्य कुछ समस्यायें - समस्याओं का निराकरण - कारक संबन्धी समस्यायें - हिन्दी और मलयालम की कारक व्यवस्था - कारक विभक्तियों की समस्याओं का विवेचन - " ने " संबन्धी समस्यायें - " को " संबन्धी समस्यायें - " से " संबन्धी समस्यायें - " का ", के ", की " संबन्धी समस्यायें - में " संबन्धी समस्यायें - पर " सम्बन्धी समस्यायें - अन्य समस्यायें - समस्याओं का निराकरण - निष्कर्ष ।

चौथा अध्याय 186 - 249

केरल में हिन्दी अध्ययन की सर्वनाम और विशेषण

संबन्धी समस्यायें

भूमिका - सर्वनाम की परिभाषा - सर्वनामों के भेद - सर्वनाम के रूपान्तर - सर्वनाम संबन्धी समस्यायें - सर्वनाम की लिंग संबन्धी समस्यायें - सर्वनाम की वचन संबन्धी समस्यायें - सर्वनाम की कारक संबन्धी समस्यायें - अन्य कुछ समस्यायें - परिवर्तन के बिना प्रत्यय जोड़ने से उत्पन्न समस्यायें - निजवाचक सर्वनाम संबन्धी समस्यायें - हर कोई का प्रयोग और उससे संबन्धित समस्यायें - जो ... वह संबन्धी समस्यायें - कौन और क्या का प्रयोग और उससे संबन्धित समस्यायें - विशेषण हिन्दी और मलयालम में और उससे संबन्धित समस्यायें - विशेषण के प्रकार और उससे संबन्धित समस्यायें - अकारान्त विशेषण और उससे संबन्धित समस्यायें - संख्यावाचक विशेषण " एक " से संबन्धित समस्यायें - समस्याओं का निराकरण - निष्कर्ष ।

पाँचवाँ अध्याय 250 - 351

केरल में हिन्दी अध्ययन की क्रिया संबन्धी समस्यायें

भूमिका - क्रिया की परिभाषा - क्रिया संबन्धी समस्यायें - क्रिया धातु और उससे संबन्धित समस्यायें - हिन्दी और मलयालम की सकर्मक क्रिया और उससे संबन्धित समस्यायें - सकर्मक क्रियाओं के प्रकार और उससे संबन्धित समस्यायें - अकर्मक क्रिया और उससे संबन्धित समस्यायें - अकर्मक और सकर्मक से संबन्धित बातें और उससे संबन्धित समस्यायें - सरल क्रिया और उससे संबन्धित समस्यायें -

प्रेरणार्थक क्रिया तथा उससे संबन्धित समस्यायें - संयुक्त क्रिया और उससे संबन्धित समस्यायें - संयुक्त क्रियाओं के प्रकार और उससे संबन्धित समस्यायें - हिन्दी और मलयालम की समाप्तिबोधक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें - हिन्दी और मलयालम में शक्तिबोधक क्रियायें और उससे उत्पन्न समस्यायें - हिन्दी और मलयालम में विवशताबोधक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें - हिन्दी और मलयालम में नित्यताबोधक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें - हिन्दी और मलयालम में इच्छाबोधक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें - आवश्यकताबोधक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें - " जाना " क्रिया के खास प्रयोग एवं उससे संबन्धित समस्यायें - " लेना " क्रिया के खास प्रयोग और उससे संबन्धित समस्यायें - निरंतरताबोधक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें - आकस्मिकता बोधक क्रिया और उससे संबन्धित समस्यायें - नामबोधक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें - द्विरुक्त क्रिया और उससे संबन्धित समस्यायें - अधिकारद्योतक क्रिया और उससे संबन्धित समस्यायें - क्रियार्थक संज्ञा और उससे संबन्धित समस्यायें - आज्ञार्थक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें - हिन्दी और मलयालम क्रियाओं के रूपान्तर और उससे संबन्धित समस्यायें - काल और उससे संबन्धित समस्यायें - वर्तमानकाल और उससे संबन्धित समस्यायें - भूतकाल से संबन्धित समस्यायें - भविष्यत्काल संबन्धी समस्यायें - हिन्दी और मलयालम के वाच्य के प्रकार और उससे संबन्धित समस्यायें - हिन्दी और मलयालम के कृदंत के प्रकार और उससे संबन्धित समस्यायें - समस्याओं का निराकरण - निष्कर्ष ।

छठा अध्याय 352 - 386

केरल में हिन्दी अध्ययन की अव्यय संबन्धी समस्यायें

भूमिका - क्रिया विशेषण और उससे संबन्धित समस्यायें - क्रिया विशेषण के साथ अनावश्यक प्रत्यय जोड़कर प्रयुक्त करने से उत्पन्न समस्यायें - संयोजक क्रिया विशेषण संबन्धी समस्यायें - क्रिया विशेषण प्रत्यय के बिना प्रयुक्त होने से उत्पन्न समस्यायें - क्रिया विशेषण के साथ एक प्रत्यय के स्थान पर दूसरे प्रत्यय का प्रयोग करने से उत्पन्न समस्यायें - अन्य समस्यायें - संबन्धबोधक अव्यय और उससे संबन्धित समस्यायें - संबन्धबोधक के प्रकार और उससे संबन्धित समस्यायें - समुच्चयबोधक के प्रकार और उससे संबन्धित समस्यायें - विस्मयादिबोधक अव्यय और उससे संबन्धित समस्यायें - समस्याओं का निराकरण - निष्कर्ष ।

सातवाँ अध्याय 387 - 417

केरल में हिन्दी अध्ययन की वाक्य संबन्धी समस्यायें

भूमिका - वाक्य की परिभाषा - वाक्य के अंग - अर्थ के आधार पर वाक्य विभाजन और उससे संबन्धित समस्यायें - रचना के आधार पर वाक्य विभाजन और उससे संबन्धित समस्यायें - क्रम और उससे संबन्धित समस्यायें - अन्वयन और उससे संबन्धित समस्यायें - हिन्दी और मलयालम की वाक्य रचना और उससे संबन्धित समस्यायें - भिन्नार्थी एक रूपी शब्दों से उत्पन्न समस्यायें - निष्कर्ष ।

उपसंहार 418 - 429

सहायक ग्रन्थ सूची 430 - 443

पहला अध्याय

केरल में हिन्दी अध्ययन की सामान्य समस्यायें

भारत विविधताओं का देश है । यहाँ पर प्राकृतिक विविधता, वेश-भूषा की विविधता, खान-पान की विविधता के साथ साथ भाषा की विविधता भी पाई जाती है । भारत एक बहुभाषा-भाषी देश है । जितनी सशक्त एवं समृद्धशाली भाषाएँ हैं, उतनी दुनिया के अन्य देशों में बहुत कम मिलेगी । भारत में लगभग 179 प्रचलित भाषाओं और 544 बोलियों में 20 भाषाएँ अत्यन्त समृद्ध हैं ।[1] ये सभी समृद्ध भाषाएँ साहित्यिक दृष्टि से संपन्न और परिपुष्ट हैं और इनके बोलनेवालों की संख्या भी बहुत अधिक है । इन भाषाओं का स्वतंत्र रूप से विकास भी होता आ रहा है । इनकी दीर्घ साहित्यिक परंपरा और स्वतंत्र लिपि हैं । इस प्रकार भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं राजनीतिक कारणों से अनेक भाषाएँ भारत में व्यवहृत होती हैं । फलस्वरूप बहुभाषिकता एक गंभीर समस्या बन गयी है । भारत में भाषाओं के दो स्वतंत्र दल रहे हैं - आर्यकुल की भाषाओं का पहला और द्रविड कुल की भाषाओं का दूसरा । ये दोनों दल भारत की भाषायी समस्या को जटिल बनाने का एक महत्वपूर्ण कारण है । क्योंकि आर्यकुल की भाषाएँ (जैसे, हिन्दी,

---

1 समग्र्थन जनवरी - 1991 पृष्ठ संख्या - 28

बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी, कश्मीरी, उड़िया, सिन्धी, राजस्थानी, असमिया और कोंकणि ﴾ संस्कृत से उत्पन्न हैं और द्रविडकुल की भाषाओं ﴾ जैसे तमिल, तेलुगु, कन्नड और मलयालम ﴾ का उद्गम द्रविड से हैं । उद्गम की भिन्नता के साथ साथ दोनों भाषाओं की लिपियाँ भी भिन्न हैं और उच्चारणगत, ध्वनिगत तथा वाक्यसंरचनागत भिन्नता भी पायी जाती है । इस भिन्नता की ओर इशारा करते हुए लक्ष्मीनारायण शर्मा जी ने लिखा है :- "जो भाषा जितने विस्तृत देश में जितने वर्गों के द्वारा व्यवहार में लायी जाती है, उसके उच्चारण, लेखन, अभिव्यक्ति में उतनी ही विविधता होती है ।" [1] विविधता का एहसास तब होता है जब एक कुल की भाषा बोलनेवाला दूसरे कुल की भाषा का अध्ययन करता है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अहिन्दी प्रदेश की जनता नियमित ढंग से हिन्दी का अध्ययन बडी रुचि के साथ कर रही है । इस सिलसिले में उसे कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड रहा है ।

आर्यकुल के अन्तर्गत आनेवाली भाषा है हिन्दी । सामान्यतः हिन्दी का इस्तेमाल बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान और दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के कुछ भागों में होता है । हिन्दी भाषा को भाषावैज्ञानिकों ने पूर्वी हिन्दी और पश्चिमी हिन्दी दो भागों में विभक्त किया है । पूर्वी हिन्दी के तहत अवधी, बघेली,

---

1. हिन्दी संरचना का अध्ययन-अध्यापन-लक्ष्मीनारायण शर्मा पृष्ठ संख्या-14

छत्तीसगढी आदि बोलियाँ आती है जबकि पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत खडीबोली, ब्रज, कनौजी, बुन्देली, राजस्थानी, मेवाती, मारवाडी, मालवी, जयपुरी आदि बोलियाँ हैं ।

मलयालम द्रविड परिवार के अन्तर्गत आनेवाली नूतन भाषा है जो भारत के सुदूर दक्षिण-पश्चिम कोने में स्थित छोटे से सुन्दर प्रान्त केरल में बोली जाती है । सह्यपर्वत के पश्चिम भाग में मलबार तट के किनारे पर स्थित मंगलापुरम के निकट से लेकर त्रिवेन्द्रम तक के इलाके में यह बोली जाती है । इसके अलावा यह लक्षद्वीप (Lacadive Islands) में भी बोली जाती है । मोटे तौर पर केरल में तीन बोलियाँ हैं - उत्तर मलयालम (तृश्शूर के उत्तर में केरल की भाषा), मध्य मलयालम (तृश्शूर से कोल्लम तक की भाषा) और दक्षिण मलयालम (कोल्लम के दक्षिणी प्रदेश की भाषा) ।

केरल में बोलीगत भिन्नता के कारण भाषायी समस्या पर्याप्त मात्रा में है । इसके बावजूद भी केरल के छात्र-छात्राएँ हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं । यहाँ पर उन्हें कई तरह की कठिनाईयों का सामना करना पडता है । हिन्दी सीखने में उन्हें जो कठिनाईयाँ होती हैं, वे दो प्रकार की हैं - एक वे हैं जो हिन्दी भाषा की प्रकृति को आत्मसात् न करने के कारण होती हैं और दूसरे वे हैं जो अपनी मातृभाषा के संस्कारों को हिन्दी पर आरोपित करने के कारण उत्पन्न होती हैं । केरल के छात्र मातृभाषा मलयालम के पर्याप्त

अध्ययन के बाद द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं ।

केरल में भाषा अध्ययन

केरल में मलयालम, हिन्दी, अंग्रेजी आदि का अध्ययन हो रहा है । मलयालम यहाँ की मातृभाषा है । हिन्दी और अंग्रेजी आदि भाषाओं का अध्ययन यहाँ के छात्र द्वितीय भाषा के रूप में कर रहे हैं ।

भाषा अध्ययन का आशय है-किसी भाषा के बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने की शिक्षा प्राप्त करना। इन चार प्रक्रियाओं के बारे में डॉ. भोलानाथ तिवारी यों लिखते हैं - "इसमें बोलने का अर्थ है स्वर व्यंजन के उच्चारण, सुगम, अनुतान, बलाघात तथा व्याकरणिक नियमों आदि की दृष्टि से ठीक बोलना, श्रवण का अर्थ है किसी को बोलते सुनना तथा सुनकर उसे समझ लेना, पठन का अर्थ है मौन या मुखर रूप से किसी लिखित सामग्री को पढ़ना तथा लेखन का अर्थ है वर्तनी और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध रूप में और अर्थ की दृष्टि से तर्क संगत रूप में लिखना ।"[1] भाषा का अध्ययन करते समय अध्ययन करनेवाला अपनी आवश्यकता के अनुसार कभी इन चारों का अध्ययन करता है और कभी इनमें से तीन को या दो ही को चुन लेता है ।

---

1. हिन्दी भाषा शिक्षण - डॉ. भोलानाथ तिवारी - पृ. सं. 9

अध्ययन सामग्री की प्रकृति की भिन्नता के आधार पर अध्ययन को दो भागों में बाँटा जा सकता है - विषय का अध्ययन और भाषा का अध्ययन । इन दोनों में मूलभूत अंतर यह है कि विषय का अध्ययन ज्ञानात्मक होता है, अर्थात् इस प्रकार के अध्ययन के द्वारा सीखनेवाले को विविध प्रकार के विषयों का ज्ञान कराके उसका बौद्धिक विकास कराया जाता है । लेकिन भाषा का अध्ययन कौशलात्मक होता है । दूसरे शब्दों में भाषा अध्ययन का लक्ष्य होता है सीखनेवाले को भाषा व्यवहार के सभी क्षेत्रों अर्थात् विचारों के आदान-प्रदान में भाषा का कुशलता के साथ प्रयोग करने में समर्थ बनाना । भाषा अध्ययन को सिखायी जानेवाली भाषा की स्थिति के आधार पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है - मातृभाषा अध्ययन और द्वितीय भाषा अध्ययन ।

मातृभाषा अध्ययन

मातृभाषा का मूल अर्थ है वह भाषा जो बच्चे की माँ की भाषा होती है । बच्चा इस भाषा को अपनी माँ से तथा आसपास के समाज से सहज रूप में अपनी आवश्यकता के अनुसार धीरे धीरे सीखता है । इस प्रकार मातृभाषा बच्चे की अपनी भाषा होती है । अध्ययन के क्षेत्र में यह पहली या प्रथम भाषा होती है । डा. एन. वी. राजगोपालन के अनुसार -" A language is first because it happens to be the medium of communication in the family or society in

which a child is born and its (the Child's) mental faculties, preception, conception, recollection, ideation etc - develop along with recognition and acquisition of the (first) language. The first language leads the infant from the language less state to language full state" 1

द्वितीय भाषा अध्ययन

दूसरी या द्वितीय भाषा उसे कहते हैं जो अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा होती है। डा. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने द्वितीय भाषा की परिभाषा यों दी है -"मातृभाषा से इतर जिस किसी भी भाषा को प्रयोक्ता सीखना चाहता है उसे द्वितीय भाषा की संज्ञा दी है।" [2] द्वितीय भाषा को चार भागों में विभाजित किया गया है - सहायक भाषा (Auxilary Language), संपूरक भाषा (Supplimentary) परिपूरक भाषा (Complimentary) और समतुल्य भाषा।

सहायक भाषा (Auxilary Language)

सहायक भाषा (Auxilary Language को भोलानाथ तिवारी ने पुस्तकालयी (Library) भाषा की संज्ञा दी है।[3] डा. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के अनुसार, "जब द्वितीय भाषा

---

1. अन्य भाषा शिक्षण के कुछ पक्ष - पृ. सं 17
2. हिन्दी शिक्षण डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव - पृ. 48
3. हिन्दी भाषा शिक्षण - डॉ. भोलानाथ तिवारी - पृ. 13

सामाजिक स्तर पर संप्रेषण के लिए व्यवहार में लाई जाय और उसे केवल ज्ञान के माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाय तब ऐसी भाषा को सहायक भाषा की संज्ञा दी जाती है"।[1]
यह भाषा समाज में सामान्य बोलचाल और लेखन के लिए प्रयुक्त नहीं होती है। ग्रीक, संस्कृत आदि क्लासिकल भाषाएँ इस वर्ग के अन्तर्गत आती हैं। इनके अध्ययन में पढ़ने पर ही विशेष बल दिया जाता है और बोलने, सुनने, लिखने और पढ़ने पर नहीं।

<u>समतुल्य भाषा</u> (Equvilant)

समतुल्य भाषा (Equvilant) उसे कहते हैं जिसका व्यवहार मातृभाषा के समान होता है। भोलानाथ तिवारी ने इसकी परिभाषा यों दी है -"किसी भाषा के प्रयोग का विस्तार इतना हो जाए कि वह मातृभाषा की तरह समाज विशेष में प्रयुक्त होने लगे अर्थात् वह लोगों के लिए मातृभाषा के समतुल्य हो जाए तो उसे समतुल्य भाषा कहते हैं।[2] इसके अध्ययन में बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने इन चारों पर बल दिया जाता है।

<u>संपूरक भाषा</u> (Supplimentary)

विशेष सन्दर्भों में विशेष प्रयोजन के लिए प्रयुक्त भाषा को संपूरक भाषा (Supplimentary) कहते हैं। डा. भोलानाथ

---

1. भाषा शिक्षण - डा. रवीन्द्र श्रीवास्तव, पृ 202
2. हिन्दी भाषा शिक्षण - डा. भोलानाथ तिवारी - पृ 13

तिवारी के अनुसार" जब कोई भाषा अस्थायी रूप में और वह भी कुछ सन्दर्भों में प्रयुक्त हो तो उसे संपूरक भाषा कहते हैं ।" [1] पर्यटकों और व्यापारियों द्वारा सीखी जानेवाली भाषा इस वर्ग में आती है । इसमें बोलने तथा सुनने पर विशेष बल दिया जाता है ।

परिपूरक भाषा (Complementary)

परिपूरक भाषा (Complementary) का प्रयोग तब होता है जब मातृभाषा का प्रयोग अपेक्षित न हो । डा. भोलनाथ तिवारी इसके बारे में लिखते हैं -" मातृभाषा के साथ साथ सामाजिक स्तर पर परिपूरक रूप में प्रयुक्त होनेवाली भाषा है । प्रायः इसका प्रयोग जिन परिस्थितियों में होता है उनमें मातृभाषा का नहीं होता तथा जिन परिस्थितियों में मातृभाषा का प्रयोग होता है इसका नहीं होता । इस तरह इसका तथा मातृभाषा का वितरण परिपूरक नहीं होता ।" [2] इसमें बोलने, सुनने, पढने तथा लिखने चारों पर बल देने की आवश्यकता होती है ।

मातृभाषा और द्वितीय भाषा में अन्तर

मातृभाषा और द्वितीय भाषा में काफी अन्तर है । वे निम्न प्रकार हैं -

---

1. हिन्दी भाषा शिक्षण - डा. भोलनाथ तिवारी - पृ 13
2. वही पृ 13

मातृभाषा मूलतः अपनी भाषा होती है जबकि द्वितीय भाषा अपनी नहीं होती ।

मातृभाषा का अर्जन बच्चा अपने घर और समाज से करता है, किन्तु द्वितीय भाषा अध्यापक, पुस्तक या अन्य समाज से सीखी जाती है ।

बच्चा पहले मातृभाषा का ही अर्जन करता है । अतः उसकी जड़ें बच्चे के मस्तिष्क में गहरी होती हैं और द्वितीय भाषा मातृभाषा के आधार पर सीखी जाती है । परिणाम यह होता है कि लिखने तथा बोलने की जो दक्षता मातृभाषा में प्राप्त होती है, वह द्वितीय भाषा में नहीं होती । क्योंकि मातृभाषा सहज रूप से अर्जित की हुई होती है जबकि अन्य भाषा एक प्रकार से ऊपर से आरोपित होती है ।

मातृभाषा के अर्जन की शुरुआत पाँच वर्ष की आयु में होती है । लेकिन द्वितीय भाषा का अध्ययन सामान्यतः दस वर्ष की आयु से शुरू होता है ।

मातृभाषा सीखनेवाले में विरोध या झिझक या संकोच नहीं होता। अतः सीखनेवाला आसानी से अध्यापक का अनुकरण करता है । लेकिन द्वितीय भाषा सीखनेवाले में प्रायः विरोध, झिझक या संकोच होता है । अतः वह स्वाभाविक ढंग से अध्यापक का अनुकरण नहीं कर पाता है ।

मातृभाषा सहज वातावरण में सीखी जाती है । लेकिन द्वितीय भाषा का अध्ययन कृत्रिम वातावरण में होता है ।

मातृभाषा का अध्ययन करनेवाला स्वाभाविक आदत के रूप में भाषा का व्यवहार करता है । लेकिन द्वितीय भाषा का अध्ययन करनेवाले को अस्वाभाविक आदत के रूप में भाषा का व्हवहार करना पडता है । द्वितीय भाषा में व्यवहार करने का अर्थ है कि अपने को नई आदत में ढालना ।

मातृभाषा सीखनेवाले को, जहाँ भाषा बोली जाती है उस प्रदेश की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का आधारभूत ज्ञान होता है । एक भाषा क्षेत्र से दूसरे भाषा क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में उन्तर होने के कारण सीखनेवाली भाषा के क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधारभूत ज्ञान का अभाव होता है ।

मातृभाषा सीखनेवाले को अपनी भाषा की लगभग सभी ध्वनियों का ज्ञान होता है । लेकिन द्वितीय भाषा के अध्ययन करनेवाले को सीखनेवाली भाषा की ध्वनियों का ज्ञान नहीं होता।

मातृभाषा सीखनेवाले को अपनी मातृभाषा के लगभग दो हजार कोशीय शब्दों का व्यावहारिक ज्ञान होता है । लेकिन द्वितीय भाषा सीखनेवाले को सीखनेवाली भाषा के शब्दों का ज्ञान नहीं होता ।

मातृभाषा सीखनेवाले सरल और सीमित व्याकरणिक नियमों के आधार पर वाक्य बना सकता है और उनकी अभिव्यक्ति कर सकता है । लेकिन द्वितीय भाषा सीखनेवाले के लिए यह संभव नहीं है ।

मातृभाषा सीखनेवाला श्रवण और भाषण कौशल से अनभिज्ञ होता है । इसलिए बाकी दो कौशलों-वाचन और लेखन पर विशेष बल दिया जाता है । द्वितीय भाषा सीखनेवाला किसी भी कौशल में अनभिज्ञ नहीं होता । इसलिए प्रायः चारों कौशलों (श्रवण, भाषण, पठन और लेखन) पर विशेष बल दिया जाता है ।

मातृभाषा के अध्ययन में शुद्ध उच्चारण पर अधिक बल न देने पर भी काम चल सकता है । लेकिन द्वितीय भाषा के अध्ययन में शुद्ध उच्चारण पर अधिक बल देना आवश्यक है । साथ ही उसकी ध्वनियाँ, संस्वन, ध्वनि गुण, आक्षरिक विभाजन और खंडेतर ध्वनियों तथा उसके वितरण पर भी सम्यक् ध्यान देना जरूरी होता है ।

मातृभाषा अध्ययन और द्वितीय भाषा अध्ययन का उद्देश्य

मातृभाषा अध्ययन और द्वितीय भाषा अध्ययन के उद्देश्य में भी यह अन्तर पाया जाता है ।

मातृभाषा अध्ययन का उद्देश्य

व्यक्ति को मातृभाषा और उसकी विशेषताओं से परिचित होना, उसे मातृभाषा के माध्यम से विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करना, भाषा के चारों कौशलों का विकास करना, मातृभाषा में लिखित साहित्य का समुचित रसास्वादन एवं मूल्यांकन करने की क्षमता प्राप्त करना आदि मातृभाषा अध्ययन का उद्देश्य होता है ।

द्वितीय भाषा अध्ययन का उद्देश्य

कुछ लोग लेखक, अध्यापक, दुभाषिया तथा अनुवादक आदि बनने के लिए द्वितीय भाषा का अध्ययन करते हैं । अतः लोगों के लिए द्वितीय भाषा अध्ययन का उद्देश्य यह होता है कि उस भाषा में उनकी गति प्रायः मातृभाषा जैसी कर देना, ताकि वे उसे सुन पढकर केवल समझ ही न सके, एक सीमा तक उसमें सोच भी सके ।

समतुल्य, संपर्क एवं परिपूरक भाषा के रूप में द्वितीय भाषा अध्ययन का उद्देश्य होता है उस भाषा में (समतुल्य, संपर्क एवं परिपूरक भाषा में) उपयुक्त दक्षता प्राप्त करना । ये दक्षताएँ मातृभाषा पढते समय होनेवाली दक्षता से कम होती है ।

पुस्तकालयी भाषा के रूप में द्वितीय भाषा के अध्ययन का उद्देश्य होता है कि पढनेवाला उस भाषा में लिखित साहित्य को पढकर समझ सके । उसमें सुनने, बोलने तथा लिखने के कौशल का विकास आवश्यक नहीं होता।

संपूरक भाषा के रूप में द्वितीय भाषा के अध्ययन का उद्देश्य यह होता है कि पढनेवाला सामान्य बोलचाल के वाक्यों और शब्दों को सुनकर समझ सके तथा आवश्यकतानुसार उस भाषा के उन वाक्यों को बोल सके। पढने लिखने का भाषा कौशल इसमें प्रायः अपेक्षित नहीं होता ।

केरल में हिन्दी भाषा के अध्ययन का स्वरूप

नई भाषाएँ पढना और अधिक से अधिक भाषाएँ पढना केरलीय जनता की पसन्द की बात रही है । कई विदेशी जातियों के आगमन और केरल के साथ हुए अनेक ऐतिहासिक सम्बन्धों के कारण केरलीय जनता को नई भाषाओं के अध्ययन की आवश्यकता पडी । हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा रही है और मध्य युग से लेकर आज तक भारत में हिन्दी का प्रचार निरंतर होता रहा है । भारत के सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं व्यापारिक केन्द्रों से संपर्क रखने का माध्यम हिन्दी ही रही है और इसलिए हिन्दी का प्रचार - प्रसार पहले से ही केरल में हुआ । केरल के लोग इसका अध्ययन किस प्रकार करते थे, यह जानने के लिए इसे तीन काल खंडों में विभक्त किया जा सकता है -

मध्य युग से लेकर बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक, बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ।

<u>मध्य युग से लेकर बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक</u>

मध्यकाल में सन्तों व भक्तों का आगमन केरल में हुआ जिन्हें "गोसाई" कहते थे । उनके लिए केरल के राजा-महाराजाओं ने मन्दिरों के पास धर्मशालाएँ और मठों की स्थापना की थी । इन मठों में रहनेवालों के लिए मुफ्त में भोजन देने का प्रबन्ध किया जाता था । हिन्दी जाननेवाले दक्षिणी लोग द्विभाषियों के तौर पर नियुक्त होते थे । द्विभाषियों के लिए हिन्दी में बातचीत करने की क्षमता प्राप्त करना अनिवार्य था । द्विभाषी बनने के लिए लोग स्वयं हिन्दी का अध्ययन करते थे । वे गोसाइयों से भी हिन्दी सीख लेते थे । मलयालम की लिपि में लिखी हुई हिन्दी पुस्तिकाएँ उन दिनों प्रचलित थीं । [1] उत्तर के तीर्थस्थानों में जाने के इच्छुक दक्षिण भारतीय लोग भी हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करने के लिए ऐसी पुस्तकों का सहारा लेते थे । इन गोसाइयों के ज़रिए ही कबीर, तुलसी, मीरा आदि के भक्ति साहित्य का प्रचार-प्रसार केरल में हुआ था । [2] केरल की रियासत के राजा लोग हिन्दी का अध्ययन करते थे और उन्होंने कई हिन्दुस्तानी मलयालम पाठशालाएँ खुलवाई थीं । हिन्दुस्तानी मलयालम शब्दकोश का निर्माण भी इस जमाने में हुआ ।[3] दो

---

1. दक्षिण में हिन्दी प्रचार आन्दोलन का समीक्षात्मक इतिहास
   पी.के. केशवन नायर पृ. 100
2. केरल [illegible] हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास - एन. ई. विश्वनाथ अय्यर पृ. 26
   [illegible]

हिन्दी मलयालम पाठमालाओं की रचना भी इस समय हुई जिसमें मलयालम में हिन्दुस्तानी व्याकरण की विस्तृत रूप से व्याख्या मिलती है ।[1] महाराजा स्वातितिरुनाल के शासन काल में हिन्दी भाषा का प्रचार व प्रसार खूब हुआ । वे भी खुद हिन्दी के ज्ञाता थे । उन्होंने हिन्दी गीतों की रचना करके केरल के प्रथमगीतकार का अमर स्थान प्राप्त किया ।[2]

मुगल सल्तनत और मुस्लिम शासन काल में हिन्दी का खूब प्रचार-प्रसार हुआ । शासकीय पत्रों में खड़ीबोली का प्रयोग होता था जिसे पढ़ने के लिए हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य बन गया । टीपू ने हिन्दी को कूटनीतिक भाषा बनाने की कोशिश की और कोच्चिन के राजा के साथ हुई सन्धि में उन्होंने यह शर्त रखी कि राज परिवार के लोगों को नियमित रूप से हिन्दी पढ़ायी जाय । इसके अनुसार राजघराने के लोगों को हिन्दुस्तानी सीखाने के लिए एक मुंशी की नियुक्ति की गयी थी ।[3] राजाओं के शासन काल में दखिनी हिन्दी बोलने वाले लोग जो हैदराबाद और उसके आसपास रहते थे, ऐतिहासिक कारणों से केरल में आ गए । उनकी भाषा और हिन्दी में खास अन्तर नहीं था । वे यहाँ आकर सेना में भर्ती हुए और बाद में राजाओं से भूमि प्राप्त कर केरल में स्थायी

---

1. केरलियों की हिन्दी को देन - जी गोपिनाथन - पृ 49
2. राष्ट्र भारती को केरल का योगदान - डा. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर - पृ. 46
3. दक्षिण में हिन्दी प्रचार अन्दोलन का समीक्षात्मक इतिहास पी. के. केशवन नायर - पृ. 302.

रूप से रहने लगे । वे आसानी से हिन्दी भी सीखने लगे और शुरुआत में हिन्दी सीखानेवाले अध्यापक दखिनी भाषी थे ।[1]

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक का समय केरल में हिन्दी का व्यापक प्रचार का युग रहा । आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् 1874 ई. में ही भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का समर्थन किया था ।[2] धीरे धीरे इस विचार धारा ज़ोर पकडती गयी । सन् 1918 में इन्दौर सम्मेलन में गान्धीजी ने हिन्दीतर प्रदेशों में हिन्दी का प्रचार करने का प्रस्ताव रखा और बहुतों ने इसका समर्थन किया । बाद में मद्रास थियोसेफिकल सोसायिटि के सदस्य सी.पी. रामस्वामी अय्यर ने गान्धीजी से हिन्दी पढाने के लिए किसी को मद्रास भेजने का अनुरोध किया । उन्होंने अपने पुत्र देवदास गान्धी को उनके पास भेज दिया । परिणामस्वरूप 1918 में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना हुई ।[3] उसके बाद अनेक व्यक्तियों ने हिन्दी के अध्ययन एवं प्रचार में योग दिया । घर घर में हिन्दी का अध्ययन होने लगा । सन् 1932 में केरल में तिरुवनन्तपुरम, एरणाकुलम, कालिकट, कोल्लम आदि स्थानों में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का आरंभ हुआ ।[4] पंचायती भवनों

---

1. केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास - डा. एन. ई विश्वनाथ अय्यर - पृ. 28
2. हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्य समाज की देन -डा. लक्ष्मीनारायण गुप्त - पृ. 33,57
3. केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास - डा. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर - पृ49
4. वही पृ 49

में, वाचनालयों में, निजी स्कूलों में, बड़े बड़े घरों की इमारतों पर भी, जहाँ सुविधा होती वहाँ प्रचारक व छात्र मिला करते थे । इस प्रकार विकसित हिन्दी भाषा को केरल में बीसवीं सदी के प्रथम चरण में एक नई राष्ट्रीय भूमिका प्राप्त हुई । देश भर में फैली स्वतंत्रता साधना के अंग के रूप में हिन्दी लोकप्रिय हो गयी । सन् 1934 में तिरुवितांकूर प्रचार सभा की भी स्थापना हुई जो बाद में केरल हिन्दी प्रचार सभा के नाम से भी जानी जाने लगी ।[1] इन सभाओं के तत्वावधान में हिन्दी का अध्ययन जोर से होने लगा ।

सन् 1928 में केरल के कोच्चिन प्रदेश में और सन् 1931 से ट्रावनकोर प्रदेश में हिन्दी को स्कूल में पाठ्य विषय बनाया गया । सन् 1938 के बाद मलबार तट के स्कूलों में भी हिन्दी का अध्ययन शुरु किया गया, लेकिन कुछ वर्ष बाद मद्रास प्रेसिडेन्सी के अधीन आनेवाले स्कूलों में हिन्दी अध्ययन बन्द हो गया ।[2] केरल में 1934 में एरणाकुलम के महाराजा कालेज में हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में स्थान दिया गया ।[3] सन् 1937 में ट्रावनकोर विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद कालेजों में हिन्दी उपभाषा के रूप में पढाई जाने लगी । धीरे धीरे केरल के उच्च स्तरीय पाठ्यक्रम में भी हिन्दी महत्वपूर्ण

---

1. केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास -डा. एन ई. विश्वनाथ अय्यर - पृ 109.
2. वही................पृ 128.
3. वही................पृ 156.

स्थान पा गयी और स्वातंत्र्योत्तर काल में वह परिवर्तन की कई मंजिलों को पार कर एक नया रूप अपना सकी ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद

भारत के स्वतंत्र होने के बाद हिन्दी अध्ययन में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है । दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की केरल शाखा, केरल हिन्दी प्रचार सभा जैसी संस्थाएँ स्वतंत्र रूप से हिन्दी का अध्ययन को बढावा देती रही हैं । भारत सरकार ने जब से त्रिभाषा सूत्र का आविष्कार किया तब से यहाँ अनिवार्य रूप से हिन्दी को पाठ्यक्रम पद्धति के तहत स्थान मिला । केरल के स्कूलों में पाँचवे स्तर से हिन्दी का अनिवार्य विषय के रूप में अध्ययन होता है । इसी प्रकार पाँच विश्वविद्यालय (केरल विश्वविद्यालय, महात्मागान्धी विश्वविद्यालय, कालिकट विश्वविद्यालय, कण्णूर विश्वविद्यालय और श्री शंकराचार्या संस्कृत विश्वविद्यालय) के अधीन आनेवाले कालेजों/केन्द्रों में स्नातकपूर्व स्तर पर अनेक विद्यार्थी हिन्दी को ऐच्छिक एवं द्वितीय भाषा के रूप में अध्ययन करते हैं । ऐच्छिक विषय के रूप में स्नातक स्तर (उपर्युक्त सभी विश्वविद्यालयों में) और स्नातकोत्तर स्तर (उपर्युक्त सभी विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में भी) पर हिन्दी पढनेवाले छात्रों की संख्या भी बढ रही है ।

हिन्दी में एम. फिल, पी. एच. डी. और डी. लिट् तक शोधकार्य करने की पूरी व्यवस्था भी केरल के विश्वविद्यालयों में हो गयी है । अभी अनुवाद, प्रयोजनमूलक भाषा और पत्रकारिता के क्षेत्र में भी हिन्दी में पाठ्यक्रम चल रहे हैं ।

हिन्दी अध्ययन की समस्यायें

केरल में हिन्दी भाषा का अध्ययन द्वितीय भाषा के रूप में होता है जिससे उसके अध्ययन करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है । यों तो भिन्न भाषाओं की प्रकृति भिन्न प्रकार की होती है । हिन्दी और मलयालम भिन्न परिवार की भाषाएँ रही है । हिन्दी आर्य परिवार की भाषा है और मलयालम द्राविड परिवार की भाषा है । इस नाते उनमें भिन्नताएँ हैं । साथ ही साथ कुछ समानताएँ भी मिलती हैं । दोनों की लिपि भी अलग अलग है । हिन्दी देवनागरी में लिखी जाती है जबकि मलयालम आधुनिक मलयालम लिपि में जिसका विकास वट्टे-ळुत्तु और कोले-ळुत्तु नामक प्रसिद्ध लिपि से हुआ है ।[1] हिन्दी और मलयालम की अधिकांश ध्वनियाँ समान रही हैं । हालाँकि हिन्दी में कुछ ध्वनियों का अभाव - सा है । जैसे ऴ, ष, ़र आदि । उच्चारण की दृष्टि से दोनों में भिन्नताएँ है । उदाहरण के लिए, हिन्दी में कुछ ध्वनियों के पूर्ण उच्चारण के साथ ही साथ अपूर्ण उच्चारण भी चलता है जबकि मलयालम में एक ही प्रकार का उच्चारण है - जैसे, ऐसा, और आदि के ऐ और औ

---

1. दक्षिण में हिन्दी प्रचार आन्दोलन का समीक्षात्मक इतिहास
   श्री. पी. के. केशवन नायर, पृ. 299

मलयालम के ऐ और औ से भिन्नता लिये हुए हैं। हिन्दी में केवल दो ही लिंग - पुल्लिग और स्त्रीलिंग चलते हैं जबकि मलयालम में पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग चलते हैं। हिन्दी अयोगात्मक भाषा है।[1] लेकिन मलयालम संस्कृत की तरह योगात्मक है।[2] हिन्दी में शब्द और कारक अलग रहते हैं। जैसे, बाबू को, बाबू ने आदि। मलयालम में शब्दों से जुडकर रहता है। जैसे, बाबुविन्रे। समान रूप से प्रयुक्त शब्दों के अर्थ में भी भिन्नता दिखाई पडती है। उदाहरण के लिए चरित्र शब्द को लीजिए। हिन्दी में इसका अर्थ है स्वभाव जबकि मलयालम में चरित्रम् का अर्थ है इतिहास। इन सभी भिन्नताओं के बावजूद दोनों भाषाओं में कुछ समानताएँ पायी जाती हैं। दोनों में दो ही वचन चलते हैं - एकवचन और बहुवचन। इन दोनों में संस्कृत शब्दों का प्रयोग बहुत अधिक है। जैसे - पर्वत, अद्रि, अग्नि, स्थिति, कला, अपराध आदि अनेक शब्द हैं जो कुछ ध्वन्यात्मक अन्तर के साथ दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होते हैं। अतः इन दोनों भाषाओं में 40 प्रतिशत से ज्यादा संस्कृत शब्दों का प्रयोग चालू है। इससे मलयालम भाषियों के लिए हिन्दी पढना आसान हो गया है। फिर भी व्याकरणिक भिन्नता, मातृभाषा का प्रभाव आदि कुछ कारणों से हिन्दी अध्ययन में काफी कठिनाईयाँ उत्पन्न होती हैं।

---

1. इस वर्ग की भाषाओं में योग नहीं रहता, अर्थात् शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय आदि जोड़कर अन्य शब्द या वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य रूप नहीं बनाये जाते। सन्दर्भ के लिए देखिए भाषा - विज्ञान डॉ. भोलानाथ तिवारी - पृ 90

2. योगात्मक-संबन्धतत्व और अर्थतत्व में योग होता है। सन्दर्भ के लिए देखिए - भाषाविज्ञान - भोलानाथ तिवारी - पृ 91

मातृभाषा का प्रभाव

मातृभाषा उस भाषा को कहते हैं जो बच्चा माँ के मुँह से सुनकर सीखता है । यह बच्चों के प्रारंभिक ज्ञान का आधार है । बच्चा जिस वातावरण में रहता है उस वातावरण की भाषा का अध्ययन करना उसके लिए आवश्यक होता है । साथ ही साथ आसान भी होता है । बच्चा प्रारंभ से ही मातृभाषा में अपने को अभिव्यक्त करने की चेष्टा करता है । अतः हर व्यक्ति बचपन से ही मातृभाषा से परिचित रहता है । सतत् अभ्यास से पाँच छः साल की उम्र तक पहुँचते पहुँचते वह अपनी मातृभाषा में छोटे छोटे विचार बड़ी स्पष्टता एवं कुशलता के साथ प्रकट कर सकता है । उसके कान, और जीभ मातृभाषा के शब्द, ध्वनि एवं उच्चारण से काफी परिचित होते हैं । मातृभाषा का प्रभाव इस प्रकार उस पर गहरा रहता है जिसके कारण वह सहज रूप से उस भाषा को ग्रहण करता है । वह द्वितीय भाषा सीखता है तब मातृभाषा में सोचता है, विचार करता है और उसे अनुवाद के ज़रिए द्वितीय भाषा में रूपान्तरित करने का प्रयास करता है । इस प्रक्रिया में मातृभाषा का प्रभाव स्वंय आ जाता है ।

केरल के लोगों की मातृभाषा मलयालम है । जब मलयालम भाषा - भाषी हिन्दी सीखतें हैं तब मातृभाषा का प्रभाव बहुत सारी समस्यायें खड़ा करता है । कभी यह प्रभाव कुछ सीमा तक सहायक सिद्ध होता है तो भी व्याघात उत्पन्न करता है । जिन स्थलों पर द्वितीय भाषा की संरचनात्मक विशेषताओं में साम्य

होता है, उन स्थलों पर उसकी संरचना सीखना कठिन प्रतीत नहीं होता । हिन्दी और मलयालम की वाक्य संरचना समान है । कर्ता, कर्म और क्रिया आदि क्रम से वाक्य बनता है । जैसे,हिन्दी में "बाबू रोटी खाता है" । मलयालम में "बाबू रोटी तिन्नुन्नु" । इसलिए वाक्य संरचनात्मक अध्ययन कठिन प्रतीत नहीं होता । लेकिन मातृभाषा के प्रभाव से व्याघात ज्यादा होता है । केरल के विद्यार्थियों की यह आदत पड जाती है कि वे हिन्दी बोलने में भी मातृभाषा की ध्वनियों का ही प्रयोग करते हैं । यह सच्ची बात है कि मातृभाषा के स्पष्ट उच्चारण की तरह स्पष्टता से अन्य भाषा का उच्चारण संभव नहीं है । हिन्दी जिस प्रकार उत्तर भारत के लोगों से बोली जाती है, वैसे दक्षिण के लोगों से नहीं बोली जाती । उत्तर के लोगों का ध्वनियंत्र पहले से ही हिन्दी के उच्चारण के लिए काफी अभ्यस्त रहता है और मलयालम भाषियों का ध्वनियंत्र मलयालम के उच्चारण के लिए अनुकूल रहता है । शब्दों की शुरुआत में यदि "ग" "ज" "ड" "द" "ब" "व" "य" "र" "ल" आए तो मलयालम के उच्चारण में एकार का आगम प्रथम अक्षर में होता है । जैसे गति, जय, दया,बल, यज्ञ, रवि, लज्जा आदि शब्द हिन्दी और मलयालम दोनों में प्रयुक्त है, लेकिन इसका उच्चारण मलयालम में गेति, जेय, देया बेल, येज्ञ, रेवि, लेज्जा आदि के समान है ।

इसलिए मलयालम भाषा-भाषी हिन्दी के इन शब्दों का उच्चारण भी मलयालम उच्चारण के समान ही करते हैं । मलयालम में ऐ और औ का केवल पूर्ण उच्चारण ही होता है । हिन्दी में इसके पूर्ण उच्चारण के साथ ही साथ अपूर्ण उच्चारण भी चलता है । हिन्दी का अध्ययन करनेवाले मलयालम भाषा-भाषी अपूर्ण उच्चारणवाले ऐ और औ का पूर्ण उच्चारण करने लगते हैं । जैसे-ऐनक, औषध आदि का उच्चारण । मलयालम में पूर्णानुस्वार का प्रयोग ज्यादा रहता है । हिन्दी में शब्दों के आदि और अन्त में आनेवाले अनुस्वार और अनुनासिक का उच्चारण पूर्ण रूप में नहीं किया जाता । इसी कारण मलयालम भाषा भाषी कई हिन्दी शब्दों का उच्चारण पूर्णानुस्वार के साथ करते हैं । जैसे, आँसू, उँगली, साँस आदि । इस प्रकार मातृभाषा के प्रभाव के कारण उच्चारणगत गलतियाँ स्वाभाविक रूप से आ जाती हैं ।

मलयालम में लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार क्रिया में कोई परिवर्तन नहीं होता । उदाहरण के लिए, "राजु पोयी"। "राधा पोयी"। "राजुवुम राधयुम पोयी"। वाक्य के स्तर पर हिन्दी में प्राप्त लिंग, वचन, कारक की अन्विति मलयालम भाषा भाषी के लिए "लड़का गया", "लड़कियाँ गया", "लड़के गया", जैसी संरचनाएँ जितनी सरल प्रतीत होती है उतनी "लड़का गया", "लड़कियाँ गयी", "लड़के गये", नहीं । इस प्रकार मलयालम भाषा का प्रभाव हिन्दी के अध्ययन में समस्यायें उत्पन्न करता है ।

इसके सम्बन्ध में डा. विश्वनाथ अय्यर जी का कथन है कि "पाँचवी कक्षा तक पहुँचते पहुँचते छात्र अपनी मातृभाषा के बहुत से शब्दों, व्याकरणिक संरचनाओं और प्रयोगगत विशेषताओं से परिचित हो जाता है । इस अवसर पर नयी भाषा के रूप में हिन्दी सीखते समय छात्रों को श्रवण, भाषण, वाचन और लेखन में भावग्रहण और अभिव्यक्ति के स्तर पर कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ।"[1]

भाषाविषयक रुचि का अभाव

भाषा का प्रयोग एक कला है । कलाओं में कुशलता प्राप्त करने के लिए सतत् अभ्यास की सख्त जरूरत है । अच्छी भाषा अभ्यास से ही आती है । भाषा पर अधिकार जमा लेना भी बड़े यत्न का कार्य है । बड़ों की नकल कर गलत सही बोलना, क्रम से गलतियों का सुधार कर सही बोलने का अभ्यास करना, पहली अवस्था में सोचकर बोलना, फिर सोचने और बोलने की क्रिया एक साथ करना, भाव ग्रहण की शक्ति के विकास के साथ अभिव्यंजना शक्ति का विकास कर लेना, धीरे धीरे शब्द भण्डार की वृद्धि करना, सुगठित वाक्य रचना का अभ्यास करना, शुद्ध उच्चारण करना आदि लम्बी एवं प्रयासपूर्ण प्रणाली से भाषा सीखी जाती है । केरल के छात्र और छात्राएँ इस लम्बी प्रणाली से गुजरने के लिए तैयार नहीं है । उनके लिए ये जोखिम भरा काम है ।

1. केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास डा. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर - पृ. सं. 134

मलयालम विषयक रुचि भी उनमें नहीं के बराबर है । क्योंकि मलयालम भाषा पर अधिकार प्राप्त करना आसान कार्य नहीं है । ऐसी हालत में मलयालम भाषा - भाषी के बीच हिन्दी की हैसियत का अंदाजा लगाया जा सकता है । मलयालम भाषा-भाषी के लिए हिन्दी एक नयी भाषा है । इसका अध्ययन एक नयी लिपि में करना पड़ता है । उसके बाद उसकी संरचना पर ध्यान देना होता है । इसमें आनेवाली गलतियों को दूर करना भी अनिवार्य है । हिन्दी का अध्ययन करते वक्त मातृभाषा में सोचकर उसे हिन्दी में अनुवाद के जरिए रूपान्तरित करना पडता है । ये सब कार्य उतने आसान नहीं हैं । मातृभाषा अध्ययन से बढ़कर दुगुना समय और अभ्यास इसके लिए अपेक्षित है । इसके अलावा हिन्दी के व्याकरणिक नियम भी काफी जटिल हैं । व्याकरणिक सिद्धांतों पर अधिक ध्यान देकर व्यावहारिक पक्ष पर कम बल देने की आदत भी केरलवासियों में है । इन कारणों से छात्र-छात्राओं का मन ऊब जाता है । एक और बात यह है कि भाषा सुनते ही मलयालम भाषा-भाषी के मन में साहित्य का बोध होता है । क्योंकि यहाँ के कालेजों में भाषा के नाम पर सिर्फ साहित्य ही पढ़ाते हैं । भाषा विषयक रुचि का अभाव स्वतः हिन्दी अध्ययन में काफी अधिक हो जाता है । ये सब "भाषा विषयक संपन्नता की विभिन्नता" है ।[1]

---

1. भाषा. त्रैमासिक 1964, दिसंबर पृ. सं 42.

इन सभी कारणों से भाषा में रुचि रखनेवालों की संख्या भी बहुत कम होती है । इससे हिन्दी अध्ययन के प्रचार में बाधाएँ उत्पन्न होती है ।

<u>हिन्दी वातावरण का अभाव</u>

केरल में अक्सर लोगों द्वारा मलयालम बोली जाती है, क्योंकि मलयालम उनकी मातृभाषा है । प्राथमिक शिक्षा वे मलयालम से शुरू करते हैं । उनके इर्द-गिर्द का वातावरण मलयालम भाषा से जुडा हुआ है जिससे मजबूर होकर उन्हें मलयालम में अध्ययन तथा आदान प्रदान ज्यादा करना पडता है । घरवाले आपस में मलयालम में भावों का आदान प्रदान करते हैं । बाजार, गलियाँ, दूकान, सडक, सब कहीं मलयालम का प्रयोग अधिक है । अतः मलयालम भाषा-भाषी लोगों के बीच हिन्दी में आदान प्रदान करने की प्रथा नहीं है । किसी भी भाषा के अध्ययन के लिए उसके प्रति रुचि पैदा करना परम आवश्यक है । इसके लिए उचित वातावरण की आवश्यकता है । कहने का मतलब यह है कि हिन्दी भाषा के अध्ययन के लिए उसके प्रति रुचि जगाने के लिए उचित वातावरण की जरूरत है । हिन्दी पढनेवाले छात्र-छात्राएँ भी पहले मलयालम में सोचते हैं और बाद में हिन्दी में बोलते या लिखते हैं । छात्र-छात्राओं को हिन्दी में सोचने और समझने का अवसर नहीं है ।
हिन्दी को मुख्य विषय {भाषा} के रूप में अपनाकर पढनेवाले

छात्र-छात्राएँ भी हिन्दी में बातचीत तक नहीं करते। हिन्दी क्लासों में अध्यापक मलयालम में ही हिन्दी पढ़ाते हैं। अध्यापक क्लास में शुद्ध मुहावरेदार एवं व्यावहारिक भाषा का प्रयोग कर विद्यार्थियों को प्रभावित करने का प्रयास नहीं करते जिससे क्लास में छात्रों को भाषा सीखने की अनुकूल परिस्थिति और उचित वातावरण प्राप्त नहीं होते। स्पष्ट है कि कम से कम क्लास में ही सही हिन्दी वातावरण की सख्त जरूरत है। अधिकांश दफ्तरों में अंग्रेजी का बोलबाला है। हिन्दी का प्रयोग दफ्तरों में नहीं के बराबर है। अतः वह वातावरण और सुविधा यहाँ नहीं है जो हिन्दी भाषा सीखने में आवश्यक है। ये सब हिन्दी के अध्ययन में समस्यायें उत्पन्न करते हैं।

<u>केरल के हिन्दी अध्ययन में समय की कमी</u>

केरल में हिन्दी का अध्ययन - अध्यापन बड़े चाव से किया जाता है। लेकिन हिन्दी के अध्ययन - अध्यापन के लिए जितना समय अपेक्षित है उतना समय यहाँ के लोग हिन्दी के अध्ययन - अध्यापन के लिए नहीं निकाल पाते। अंग्रेजी के अध्ययन - अध्यापन के लिए जितना समय निर्धारित है उतना समय हिन्दी के लिए नहीं दिया जाता। यह हिन्दी के प्रति घोर अन्याय है। चूँकि हिन्दी केरल में द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ी जाती है, इसलिए मलयालम के प्रभाव से बचने के

लिए हिन्दी के अध्ययन में विशेष ध्यान आवश्यक होता है । इसके लिए अभ्यास की जरूरत होती है । बोलचाल एवं लेखन में हिन्दी को अधिक महत्व देना पड़ता है जिससे कि वह मलयालम के प्रभाव से मुक्त हो जाय । इसके लिए ज्यादा समय की आवश्यकता होती है । उतना समय आजकल के हिन्दी अध्ययन की पद्धतियों में निर्धारित नहीं है । यही केरल में हिन्दी अध्ययन - अध्यापन की समस्या बन गयी है ।

<u>व्यवस्था सम्बन्धी समस्यायें</u>

व्यवस्था से तात्पर्य केन्द्र सरकार द्वारा हिन्दी के प्रचार - प्रसार के लिए की गई कार्यवाही से है । स्वतंत्र भारत के संविधान की रचना (26 नवंबर, 1949) और भारत के गणराज्य बन जाने पर हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में अपनाया गया । संविधान के सत्रहवें भाग में भाषा सम्बन्धी उपबन्ध रखे हैं जिसके अनुसार "संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी ।" [1]

इसके अतिरिक्त 343(2) में कहा गया है कि "खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पन्द्रह वर्ष की कालावधि में संघ के उन सब शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका प्रयोग किया जा रहा था ।" [2] संविधान के अनुच्छेद 345 में यह भी कहा गया है कि" परन्तु जब तक राज्य का

---

1. प्रशासनिक एंव कामकाजी हिन्दी - डा. रामप्रकाश, डा. दिनेश कुमार गुप्त - पृ 04

2. वही पृ 107

विधान मण्डल, विधि द्वारा कोई अन्य उपबन्ध न करे तब तक राज्य के भीतरी प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए वह इस संविधान से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था ।"[1] संविधान द्वारा स्वीकृत उपर्युक्त बातों पर गौर करने से पता चलता है कि संविधान में भारत सरकार ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाया है । लेकिन प्रारंभ के पन्द्रह वर्ष के लिए अंग्रेजी को हिन्दी के स्थान पर प्रयुक्त करने का विकल्प भी दिया । इससे हिन्दी का प्रयोग अहिन्दी प्रान्तों में कम होने लगा ।

इसके बाद 10 मई, 1963 को संसद द्वारा राजभाषा अधिनियम पारित किया गया जिसमें कुल मिलाकर नौ धाराएँ हैं । इसके धारा 3 में स्पष्ट किया गया है -" संविधान के आरंभ से पन्द्रह वर्ष की अवधि समाप्त हो जाने पर भी अंग्रेजी भाषा नियतत दिन (26-1-1965) से ही (क) संघ के उन राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग में लायी जाती रहेगी जिनके लिए वह उस दिन से ठीक पहले प्रयोग में लायी जाती थी । (ख) संसदीय कार्य व्यवहार में भी (अंग्रेजी भाषा) प्रयोग में लायी जाती रहेगी ।"[2] अतः इसके अनुसार अंग्रेजी का स्थान स्थिर हो गया ।

सन् उन्नीस सौ तिरप्पन में श्री एस. फजल अलि की अध्यक्षता में एक राज्य पुनर्संगठन आयोग का गठन हुआ जिसने 1955 का अपना

---

1. प्रशासनिक एवं कार्यालयी हिन्दी - डा. रामप्रकाश, डा. दिनेश कुमार मिश्र पृ. स. 104
2. वही पृ. सं 116

प्रतिवेदन प्रस्तुत किया । उसमें बताया गया है कि "केवल अथवा मुख्य रूप से भाषा के ही आधार पर प्रान्तों का पुनर्संगठन अवांछनीय है ।"[1] इन सिफारिशों पर ध्यान देते हुए भाषावार प्रान्तों के पुनर्संगठन के प्रश्न पर पुनर्विचार के लिए पंडित नेहरू, सरदार पटेल और पट्टाभी सीता रामय्या के नेतृत्व में समिति गठित की गयी । इस समिति के सिफारिश के अनुसार भाषावार प्रान्त के पुनर्संगठन करने का फैसला किया गया । इससे केरल के लोग मलयालम भाषा के प्रति अधिक रुचि दिखाने लगे ।

एक ओर हिन्दी की स्थिति बिगड़ रही थी तो दूसरी ओर शिक्षा की प्रगति के लिए कुछ सामान्य नीतियाँ तथा तत्वों के आविष्कार के लिए सन् 1964 में "कोठारी आयोग" का गठन भारत सरकार ने किया ।[2] इसने अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी को प्रमुखता देनेवाले विश्वविद्यालयों को प्रोत्साहन देने का फैसला किया । साथ ही साथ "त्रिभाषा सूत्र" का आविष्कार किया जिसने अहिन्दी प्रान्तों में मातृभाषा तथा हिन्दी के साथ अंग्रेजी को भी प्रमुखता दी । यहाँ के विश्वविद्यालयों में हिन्दी सिर्फ द्वितीय भाषा के रूप में ही स्थान पा सकी ।

इस प्रकार भारत ने स्वाधीनता प्राप्ति के बाद ऐसे अधिनियम बनाये जिनसे केरल में अंग्रेजी का स्थान बढ़ गया और उसे

---

1. भारत का राजनीतिक इतिहास - राजकुमार - पृ सं 503.
2. Educational and National Development Report -1964-66 की भूमिका - पृ सं X

भाषा के रूप में यहाँ के विश्वविद्यालयों ने स्वीकारा । तब से हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में अपनी भूमिका अदा करती रही है ।

<u>व्याकरण सम्बन्धी समस्यायें</u>

व्याकरण वह शास्त्र है जिसमें भाषा के शुद्ध रूप तथा तत्सम्बन्धी नियम होते हैं । भाषा के व्यावहारिक प्रयोग के लिए व्याकरणिक नियमों से परिचित होने की आवश्यकता नहीं है । लेकिन गलतियों से दूर रहने के लिए व्याकरण सहायक होते हैं । केरल में हिन्दी पढ़नेवालों के लिए हिन्दी के व्याकरणिक नियम समस्यायें पैदा करते हैं । इसलिए अक्सर हिन्दी व्याकरण को सरल बनाने की आवश्यकता पर बल दिया जाता है । यह सच है कि केरल में हिन्दी पढ़नेवालों की प्रमुख समस्या व्याकरणिक नियमों की ही रही है ।

द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन करते समय उच्चारणगत गलतियाँ समस्या बन जाती हैं । मलयालम ध्वनियों का प्रभाव हिन्दी की ध्वनियों पर पड़ने से ध्वनियों के उच्चारण में गलतियाँ आ जाती हैं । उच्चारण की समस्यायें वर्तनीगत गलतियाँ पैदा करती हैं । दोनों भाषाओं की उच्चारणगत भिन्नता ही इसका कारण है । विभिन्न व्याकरणिक कोटियाँ संज्ञा (लिंग, वचन, कारक सहित), सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण आदि केरल के हिन्दी अध्ययन में समस्यायें पैदा

करती हैं । इन सभी के सम्बन्ध में विभिन्न अध्यायों में विस्तार से विश्लेषण किया जा रहा है ।

शिक्षण सामग्री का अभाव

शिक्षण सामग्री से तात्पर्य भाषा शिक्षण में सहायता पहुँचानेवाले दृश्य-श्रव्य साधनों से है । भाषा शिक्षण में स्पष्ट धारणा बनाने में सहायक होनेवाले मुद्रित एवं लिखित शब्दों के अतिरिक्त साधन ही शिक्षण सामग्री है । इसकी प्रत्यक्ष अनुभूति के जरिए भाषा-शिक्षण संभव हो जाता है । दृश्य-श्रव्य साधनों की सम्पूर्ण सूची तैयार करना संभव नहीं है । क्योंकि हर दिन जो बीतता है, कुछ न कुछ ऐसी नयी सामग्री और नए साधन दे जाते हैं जिनसे पढाई लिखाई सार्थक, आनन्दप्रद और कारगर बन जाती हैं । विज्ञान की प्रगति ने भाषा के अध्ययन को बढावा दिया है । ध्वनि के सही उच्चारण करने में सहायता पहुँचानेवाले यंत्रों का आविष्कार हुआ है । मुखमापक (Mouth Measurer), कृत्रिम तालु (Artificial palate), कायमोग्राफ (Kymograph), एक्सरे (X-Ray) लैरिंगोस्कोप (Laryngoscope), एंडोस्कोप (Endoscope), ओसिलोग्राफ (Osilograph), पैटर्न प्ले बैक (pattern play back), स्पीच स्ट्रेचर (speech Stretcher), स्पेक्टोग्राफ (Spectograph),

कंप्यूटर (Computer) आदि के उपयोग के जरिए सही उच्चारण का अध्ययन संभव हो सकता है ।

ऐटकिन्सन द्वारा बनाया गया मुखमापक की सहायता से किसी ध्वनि के उच्चारण के समय जीभ की ऊँचाई, निचाई, उसके आगे या पीछे हटना आदि ठीक ठीक नापा जा सकता है ।[1]

कृत्रिम तालु प्रयोक्ता के मुँह के ऊपर के तालु के ठीक नाप के लिए होता है । पहले उसके भीतर कोई रंग लगा लेते हैं और ऊपर के तालु पर इसे बैठा देते हैं । इसके बाद जिस ध्वनि की परीक्षा करनी होती है उसका उच्चारण करते हैं । उच्चारण करते समय जीभ कृत्रिम तालु का स्पर्श करती है । जीभ के स्पर्श करने से वहाँ का रंग उस पर लग जाता है । उसे बाहर निकालकर फोटो लेते हैं और इससे स्पर्श स्थान स्पष्ट होता है ।[2]

कायमोग्राफ एक यंत्र है जिसका उपयोग ध्वनियों के अध्ययन के लिए होता है । मुँह में लगाने के लिए इसमें एक छोर है और उसकी दूसरी तरफ एक पतली-सी सूई रहती है । मुँह में लगाये जानेवाले छोर को मुँह में लगाकर प्रयोगकर्ता बोलता है । इससे दूसरे छोर पर लगी सूई में कम्पन होता है । विद्युत की सहायता से सूई काले कागज पर टेढी मेढी लकीर बनाने लगती है । अनुनासिकता आदि को दिखाने

---

1. भाषा विज्ञान :डा. भोलानाथ तिवारी - पृ.सं 346
2. वही पृ सं 347

के लिए इसकी नली नाक से सम्बन्ध कर लेते हैं जो एक अलग निशान बनाती चलती है । घोष और अघोष ध्वनियाँ काइमोग्राफ की सहायता से सफलतापूर्वक हो सकती हैं । अल्पप्राण और महाप्राण की लाइनों में भी कायामोग्राफ में स्पष्ट भेद रहता है । स्पर्श, स्पर्श संघर्षी, पार्श्विक आदि की लहरों में भी सूक्ष्म अन्तर रहता है, जिसे लाइनों का अध्ययन करनेवाला पहचान सकता है ।[1]

एक्सरे के जरिए विभिन्न ध्वनियों के उच्चारण में जीभ तथा जबड़े की स्थिति की जानकारी हासिल की जाती है ।[2]

लैरिंगोस्कोप में 120^0 के कोण पर एक छोटा-सा गोल दर्पण है जिसके द्वारा स्वरयंत्र और उसके कार्य को देखा जा सकता है । उच्चारण करते वक्त स्वरतंत्रियों और सवरतंत्र की स्थिति भी देखी जा सकती है । इसकी एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसके जरिए उच्चारण करनेवाला स्वयं स्वर यंत्र को देखा सकता है ।[3]

एंडोस्कोप लैरिंगोस्कोप का विस्तृत एवं परिष्कृत रूप है जिसके सहारे मुँह बन्द रहने पर भी स्वरयंत्र का अध्ययन हो सकता है । ध्वनियों के मूल स्थान का अध्ययन भी इससे संभव है ।[4]

---

1. भाषा विज्ञान - डा. भोलानाथ तिवारी पृ.सं. 348-349
2. वहीं.............. पृ 349
3. वहीं.............. पृ 350
4. वहीं.............. पृ 350

ओसिलोग्राफ भाषा के अध्ययन में प्रवृत्त यंत्रों में एक बहुत ही महत्वपूर्ण यंत्र है । इसमें बोलने पर ध्वनि की लहरें बनती है, जो बीच के स्क्रीन पर दिखाई पडती है और उनका फोटो लिया जाता है । इससे ध्वनियों के उच्चारण समय का पता चल जाता है । ध्वनि की गंभीरता, उसका तरंगीय स्वरूप, घोषत्व और अघोषत्व का पता आदि की जानकारी इससे प्राप्त होती है । [1]

पेटन प्ले बैक में ध्वनियों के उच्चारण के बाद उसका चित्र बनाया जाता है और साथ ही उसके आधार पर उन्हीं ध्वनियों को सुना जा सकता है । [2]

स्पीच स्टेचर में किसी भी सामग्री को रिकार्ड करके धीरे धीरे इसकी सहायता से सुनकर विश्लेषण किया जाता है । [3]

भाषा के अध्ययन में सहायक यंत्रों में सबसे अधिक उपयोगी यंत्र है स्पेक्टोग्राफ । इससे मुख्यतः उच्चारण समय तथा आवृति (Frequency) का पता चलता है । [4]

आजकल भाषाओं के अध्ययन में कंप्यूटर का प्रयोग अक्सर होता रहता है । केरल में हिन्दी अध्ययन के लिए कंप्यूटर का प्रयोग किया जा सकता है जिससे मलयालम भाषा-भाषी लोगों के लिए हिन्दी का

---

1. भाषा विज्ञान - डा. भोलानाथ तिवारी - पृ सं 351
2. वहीं पृ. सं. 352
3. वहीं पृ. स. 352
4. वहीं पृ. सं. 353

पठन-पाठन आसानी से एवं शुद्ध रूप में सुविधा के अनुसार संभव हो सकता है। कंप्यूटर के जरिए किसी भी भाषा का शुद्ध उच्चारण सीखा जा सकता है। जहाँ केरल में मलयालम बोलनेवालों की सवरतंत्रियाँ मलयालम की ध्वनियों के उच्चारण की आदी बन गयी है वहाँ बड़े प्रयत्न के साथ ही हिन्दी का शुद्ध उच्चारण संभव हो सकता है। ऐसी हालत में कंप्यूटर शुद्ध ध्वनियों के उच्चारण के साथ साथ शुद्ध वर्तनी के भी प्रचार में बड़ी सहायता दे सकता है। हिन्दी भाषा-भाषी किसी विद्वान की सहायता से एक बार शुद्ध वर्तनी का आयोजन करते हैं तो फिर मलयालम भाषा-भाषी के लिए यह काम कंप्यूटर के जरिए बहुत आसान हो सकता है। इसमें अध्यापक की भूमिका नाम मात्र के लिए ही रहती है। छात्र कंप्यूटर की सहायता से स्वयं सही हिन्दी का अध्ययन और अभ्यास कर सकते हैं। हिन्दी के अध्ययन में इस प्रकार कंप्यूटर एक नया अध्याय खोल सकता है।

इन शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग केरल के शैक्षिक संस्थापनों में नहीं है। इससे उच्चारणगत और वर्तनीगत समस्यायें एक हद तक दूर हो सकती हैं। इसका प्रयोग यहाँ होना चाहिए।

<u>पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्यायें</u>

पाठ्यक्रम वह माध्यम है, जिसके द्वारा अध्यापक और छात्र में शैक्षिक सम्बन्ध स्थापित होता है । मनोहर महोदय के अनुसार "पाठ्यक्रम उन समस्त अनुभवों का संचय है, जिनका उपयोग विद्यालय, बालकों को शिक्षा के आदर्शों को प्राप्त कराने में करता है ।" [1] पाठ्यक्रम शिक्षा के क्षेत्र में एक निश्चित मार्ग प्रदर्शन करता है, जिससे बालक, शिक्षक एवं विद्यालय सुव्यवस्थित एवं संगठित रूप से लक्ष्य की प्राप्ति की ओर सतत अग्रसर होते हैं । पाठ्यक्रम के बिना कोई शिक्षा प्रणाली निर्धारित करना मुश्किल है ।

स्कूलों में राज्य शिक्षा संस्थान के शैक्षिक विकास एवं अनुसंधान आयोग के द्वारा तथा विश्वविद्यालयों में हिन्दी पाठ्य परिषद (The board of studies in Hindi) द्वारा पाठ्य पुस्तकें तैयार की जाती हैं । शैक्षिक विकास एवं अनुसंधान के कमीशनर ने हिन्दी पढाने के उद्देश्य के बारे में लिखा है कि "इसका मुख्य उद्देश्य भाषा शैली का आस्वादन कराना नहीं, बल्कि भाषाई कौशल में दक्ष बनाना है ।" [2] लेकिन पुस्तक के अन्तर्गत भाषाई कौशल में दक्ष बनाने का कम प्रयास किया गया है । कुछ नये शब्दों का अर्थ, मलयालम में अनुवाद कराने का अभ्यास और स्त्रीलिंग-पुलिंग तथा एकवचन और बहुवचन निर्धारण का अभ्यास मात्र

---

1. शिक्षा के मूलाधार शोभा गर्ग, पृ.सं. 20।
2. आठवीं कक्षा की केरल हिन्दी पाठमाला, पृ.सं 11

दिया गया है । व्याकरणिक नियमों का उल्लेख तक नहीं है । लेकिन अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकों में अध्याय के आरंभ में ही उसमें आनेवाले भाषाई प्रयोग तथा नियमों का उल्लेख मिलता है जिसे "भाषा अध्ययन" (Language Study) [1] नाम दिया गया है । अध्ययन के अन्त में उससे सम्बन्धित व्याकरणिक अभ्यास भी है । हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में इनमें से प्रथम का अभाव है । हिन्दी पुस्तकों में विविध विषयों पर जानकारी प्रदान करने पर ही अधिक बल दिया गया है । इसका कारण यह है कि अधिकतर लोगों का यह भ्रम है कि साहित्य की तरह भाषा भी ज्ञान प्रदान है न कि कौशल प्रधान । भाषाई प्रयोग के अध्ययन से ही भाषा पर सम्यक अधिकार प्राप्त होता है । इसके लिए पाठ्यक्रम में कम सुविधाएँ ही उपलब्ध है । भाषा के स्थूल रूप (जैसे ध्वनि, उच्चारण, शब्दावली, वाक्यसंरचना) से अवगत होने के बाद भाषा के सौन्दर्य अभिग्रहण उचित होगा ।

विश्वविद्यालय के हिन्दी पाठ्य परिषद् (The Board of Studies in Hindi) का ध्येय "पाठ्यक्रम सामग्री को सरल एवं रोचक बनाना" ही है । [2] लेकिन इसमें भाषा पर ध्यान बहुत कम ही दिया गया है । इसमें पुस्तकीय एवं सैद्धान्तिक बातों पर विशेष बल दिया गया है । इसमें व्यावहारिक भाषा शिक्षण का अत्यन्त अभाव है । इसमें अनावश्यक विस्तार है तथा पाठ्यविषयों की बहुलता है । परीक्षा शिक्षा प्रणाली का मुख्य अंग है । परीक्षा द्वारा

---

1. आठवे, नवे एवं दसवें कक्षा के अंग्रेजी पुस्तक के हर अध्याय की शुरूआत देखिए ।

2. अध्यक्ष के दो शब्द, मधु सुमन (प्रीगिग्रा[illegible]), गान्धीजी विश्वविद्या[illegible] - ।

प्रणाली का मुख्य अंग है । परीक्षा द्वारा अध्यापक को छात्र-छात्राओं की रुचि का आभास हो जाता है । परीक्षा द्वारा उनके सामान्य स्तर का ज्ञान सरलता से हो सकता है । केरल में सिर्फ लिखित परीक्षा ही चल रही है । इससे छात्र छात्रओं की विभिन्न प्रकार की हानियाँ होती हैं । कुछ छात्र मंद गति से लिखते हैं तथा कुछ छात्रों की लेखन शैली सुन्दर नहीं होती । अतः सुन्दर लेखन कला के अभाव में वे उन बालकों की अपेक्षा कम अंक प्राप्त करते हैं जिनकी लेखन शैली सुन्दर और स्पष्ट होती है । इसके अतिरिक्त कुछ छात्र मौखिक रूप से जितने अपने ज्ञान को व्यक्त कर सकते हैं, उतना लिखित रूप से नहीं कर पाते हैं । ऐसे छात्रों के लिए परीक्षा लाभप्रद सिद्ध नहीं होती है । इसलिए लिखित तथा मौखिक परीक्षा अनिवार्य है ।

द्वितीय भाषा सीखने की विधियाँ और उससे उत्पन्न समस्यायें

मातृभाषा के अतिरिक्त एक नई भाषा सीखने की मुख्यतःचार विधियाँ प्रयुक्त की जाती हैं ।[1] इसमें पहली है "प्रत्यक्ष विधि" (Direct Method) । प्रत्यक्ष विधि का ध्येय यह है कि छात्र-छात्राएँ उसी रीति से एक नवीन भाषा सीखते हैं, जैसे वे अपनी मातृभाषा सीखते हैं । इससे वे नई भाषा को न तो अटक अटक कर बोलते न ही रुक रुक कर लिखते हैं । बिलकुल मातृभाषा

---

1. दक्षिण भारत - जूलाई/अगस्त/सितंबर - 1999-पृ. 45-44

के समान उसका विचार स्रोत फूट पडता है । इस प्रकार प्रत्यक्ष विधि में वार्तालाप की प्रधानता है और वार्तालाप सीखने के पश्चात् वाचन या लेखन का आरंभ होता है जिसमें मातृभाषा का प्रयोग नहीं होता । इसके द्वारा भाषा सीखने से छात्र को अपने मनोगत भावों को प्रदर्शित करने के लिए किसी दूसरी भाषा में सोचना नहीं पड़ता और न उसे पद-पद में व्याकरण के नियमों का ही स्मरण करना पड़ता है ।

दूसरी "परोक्ष विधि" है जिसके द्वारा हिन्दी पढ़ाते समय, प्रत्येक वाक्य या शब्द का मातृभाषा में अनुवाद किया जाता है । इसे "अनुवाद विधि" (Translation Method) भी कहते हैं । इसमें सम्पूर्ण शिक्षा, व्याकरण तथा अनुवाद पर आधारित होती है । लेकिन इसकी कमजोरियाँ है । अनुवाद द्वारा भाषा सीखने के कारण नवीन भाषा के भाव व्यक्त करते समय अडचनें आती है । क्योंकि लिखते और बोलते समय मातृभाषा के शब्द कलम या मुह से निकल पड़ते हैं । इस कारण विद्यार्थियों के हृदय से नवीन भाषा का स्रोत फूटता नहीं है ।

तीसरी "आगमन प्रणाली (Inductive Method) " है । इस विधि के अनुसार विद्यार्थी व्याकरण के नियम पहले कंठस्थ नहीं करते । भाषा के व्यावहारिक उपयोग के साथ ही वह अपने आप व्याकरण सीख जाता है । इस विधि से भाषा शिक्षण में एक नवीनता आ गई है । इससे विद्यार्थियों का उच्चारण स्पष्ट

होता है, उन्हें वार्तालाप का अभ्यास होता है।

चौथी "ढाँचा गठन" या संरचनात्मक विधि (Structural Method) है। इसके अनुसार विद्यार्थियों को प्रायः तीन सौ चुने गए शब्दों तथा ढाँचों का उपयोग सिखाया जाता है। पर आरंभ में हिन्दी भाषा के कुछ चुने हुए शब्दों, वाक्यों तथा ढाँचों का परिचय इस पद्धति के द्वारा दिया जा सकता है।

केरल में सिर्फ "परोक्ष पद्धति" के ज़रिए हिन्दी पढ़ाई जाती है जिससे मातृभाषा का प्रभाव ज्यादा पड़ जाता है। इससे केरल में हिन्दी अध्ययन करते समय अनेक समस्यायें उत्पन्न होती हैं।

पाठ्यक्रमेतर कार्यों का अभाव

पाठ्यक्रम के अलावा हिन्दी भाषा का प्रयोग तथा उसके प्रति उत्साह बढ़ाने वाला कार्य ही पाठ्यक्रमेतर कार्य है। इसका अभाव केरल के हिन्दी अध्ययन में भी दृष्टिगोचर होता है। सही उच्चारण को समझने तथा उसका सही प्रयोग करने के लिए सस्वर वाचन का बहुत महत्व है। केरल के हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों में सस्वर वाचन की कुशलता बहुत कम दिखाई पड़ती है। कोई जल्दबाज़ी करता है तो कोई अस्पष्ट उच्चारण के साथ पढ़ता है और कोई असावधानी से गलती करता है।

उच्चारण की गलतियों को ठीक करने का सर्वोत्तम मार्ग सस्वर वाचन का ठीक तरह से अभ्यास है । इसका अभाव केरल के हिन्दी अध्ययन में दिखाई पड़ता है ।

भाषा शिक्षण में लेखन का कम महत्व नहीं है । लेखन तो दो प्रकार के होते हैं - मौखिक और लिखित । मौखिक लेखन में भाषा बोलने का अभ्यास दिया जाता है । लिखित लेखन के अन्तर्गत नाटक निबंध आदि की रचना का अभ्यास होता है । यह अभ्यास स्कूलों व कालेजों में नही के बराबर है । भाषाई क्षमता बढ़ानेवाले भाषण, आशुभाषण वक्तव्य, संवाद, वाद-विवाद, निबंध, एकांकी, नाटक, हस्तलेख की प्रतियोगिताएँ बहुत कम है । हिन्दी में इस प्रकार की प्रतियोगिताएँ बहुत कम है । हिन्दी में इस प्रकार की प्रतियोगिताएँ चलती हैं, लेकिन उनमें भाग लेने के लिए छात्र-छात्राएँ हिचकते हैं ।

छात्रों को अपने शब्द भण्डार की वृद्धि करने में अपठित पाठों का पठन सहायक होता है । साथ ही अनेकानेक सामान्य विषयों का ज्ञान पत्रिकाओं और ग्रन्थों को पढ़कर प्राप्त होता है । लेकिन केरल में हिन्दी पढ़ने वाले छात्र-छात्राएँ हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों के अलावा अन्य पत्र-पत्रिकाएँ पढने में उत्सुक नहीं है ।

भाषा अध्ययन यात्रा (Language Study Tour) का आयोजन भाषा अध्ययन में बड़ा महत्वपूर्ण है । केरल के हिन्दी विद्यार्थियों को उत्तर

भारत के इलाकों की सैर कराने का प्रबन्ध होना चाहिए जिससे वहाँ के लोगों, उनकी भाषाएँ तथा उनकी संस्कृति से अवगत होने का अवसर प्राप्त हों। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (Central Hindi Directorate) की ओर से इसके लिए प्रयास जारी है। लेकिन इसका सही इस्तेमाल करने का सौभाग्य केरल के हिन्दी छात्र-छात्राओं को नहीं है।

इसके अलावा हिन्दी दिवस, कबीर, तुलसी, प्रेमचंद के स्मृति-दिन आदि मनाने तथा संगोष्ठियाँ आयोजित करने का प्रयास नहीं किया जाता है।

<u>अध्यापक केन्द्रित समस्यायें</u>

भाषा शिक्षण के क्षेत्र में अध्यापक का महत्वपूर्ण स्थान है। अध्यापक विभिन्न आयु एवं स्तर के छात्र-छात्राओं के संपर्क में आता है, और उन्हें ज्ञान ग्रहण कराने के साथ-साथ उनमें अन्य प्रभावों को भी सहज ढंग से ग्रहण करने की क्षमता उत्पन्न करता है। हुमायूँ कबीर ने शिक्षक के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा हैं -"उत्तम शिक्षकों के अभाव में श्रेष्ठतम शिक्षा योजना भी असफल होगी, पर सुयोग्य शिक्षकों द्वारा शिक्षा को अनेक दोषों से मुक्त रखा जा सकता है।[1] केरल में हिन्दी पढ़ानेवाले अध्यापकों की कुछ कमियाँ है जो हिन्दी भाषा सिखाने में बाधक बन जाती हैं।

---

1. भाषा के मूलाधार शोभा शर्मा पृ. सं. 256

केरल के हिन्दी अध्यापकों को हिन्दी ध्वनि-विज्ञान की अच्छा ज्ञान होना परम आवश्यक है । केरल के छात्र-छात्राएँ हिन्दी ध्वनियों का उच्चारण सबसे पहले अपने अध्यापक से सुनते हैं । लेकिन केरल के हिन्दी अध्यापक हिन्दी ध्वनियों का मातृभाषा के अनुकूल उच्चारण करते हैं । इसे सुनकर छात्र-छात्राएँ भी उसी तरह उच्चारण करते हैं ।

केरल के विद्यार्थियों को अध्यापकों से हिन्दी सुनने का मौका मिलता है । घर या समाज से हिन्दी सुनने का अवसर उन्हें प्राप्त नहीं होता । इसलिए अध्यापक का कर्तव्य है कि वह क्लास में हिन्दी में ही बोले और हिन्दी के माध्यम से ही हिन्दी अध्यापन का कार्य चलाये । लेकिन केरल में हिन्दी अध्यापक मलयालम के जरिए [प्रत्यक्ष विधि के अनुसार] हिन्दी पढाते हैं । उसी तरह अक्सर देखा जाता है कि अध्यापक पुस्तकें पढाने तथा भाषा समझने पर अधिक जोर देते हैं । इसका कारण यह है कि भाषा शिक्षण की ये दो क्रियायें अपेक्षाकृत सरल है । बोलने और लिखने का अभ्यास देने के लिए कठिन परिश्रम करना पडता है । अभ्यास कराने का शौक केरल के अध्यापकों में नहीं है ।

अक्सर हिन्दी कक्षाओं में देखा जाता है कि अध्यापक एक शब्द के लिए अनेक पर्यायवाची शब्द देते हैं और छात्रों को उन्हें कंठस्थ करने का आदेश देते हैं । उनकी यह गलत धारणा है कि शब्द भंडार की वृद्धि हो जाने पर भाषा आसानी से आ जाती है किन्तु शब्दों इस प्रकार बिन किसी [illegible]

के सिर्फ कंठस्थ कराना मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के बिल्कुल खिलाफ है ।

केरल के अधिकतर अध्यापक हिन्दी के सामयिक साहित्य से कम परिचित है । प्राचीन साहित्य तथा आधुनिक काल के प्रसाद, प्रेमचन्द युग तक की रचनाओं से परिचित रहना पर्याप्त नहीं है । उसे आधुनिक साहित्य प्रवृत्तियों से परिचित रहना चाहिए । इसके अतिरिक्त विज्ञान तथा समाज के लिए उपयोगी अन्य शास्त्रों के विषय में जानकारी हासिल करना अत्यन्त जरूरी है । क्योंकि केरल में प्रयोजनमूलक हिन्दी (Functional Hindi) और हिन्दी पत्रकारिता पर पाठ्यक्रम चल रहा है ।

हिन्दी पढानेवाले अध्यापकों की संख्या हिन्दी के छात्रों की संख्या की अपेक्षा बहुत कम है । एक अध्यापक कालेजों में एक घंटे, एक क्लास में डेढ सौ छात्र-छात्राओं को पढाता है । इस कारण से केरल के हिन्दी अध्ययन में विश्वविधालय अनुदान आयोग (UniversityGrantCommission) द्वारा निर्धारित संशिक्षकीय कक्षाओं (TutorialClass) की अवधारणा निरर्थक बन जाती है । छात्रों की संख्या इतनी अधिक होती है कि अध्यापक उनकी साहित्यिक एवं भाषिक क्षमता बढाने में असमर्थ हो जाता है ।

<u>छात्र केन्द्रित समस्यायें</u>

मातृभाषा का प्रभाव तथा अध्यापकों की समस्याओं से छात्रों को भी हिन्दी का अध्ययन करते समय कुछ समस्याओं का सामना करना पडता है । अध्यापक के गलत उच्चारण सुनकर छात्र-छात्राएँ भी गलत उच्चारण करते हैं । स्कूल तथा कालेजों में पहले सैद्धांतिक विषयों का ज्ञान कराया जाता है तथा बाद में व्यावहारिक विषयों को लिया जाता है । इससे भाषा संबंधी रुचि समाप्त हो जाती है ।

लिखने का ठीक अभ्यास न कराने के कारण केरल के हिन्दी छात्र गलत लिखते हैं । इससे कोई ऊपर की रेखा खींचता है तो कोई उस पर ध्यान ही नहीं देता । कोई विभक्ति को शब्दों से मिलाकर लिखता है और कोई शब्दों को अपनी इच्छा के अनुसार खड्डा करके दो पंक्तियों में रख देता है ।

केरल के छात्र हिन्दी भाषा पढ़ते हैं और समझते भी हैं । किन्तु बोलकर या लिखकर अपने विचारों को प्रकट करने में वे प्रायः असमर्थ पाये जाते हैं ।

शिक्षा, शिक्षा के लिए न होकर परीक्षा के लिए होती है । परीक्षा पास करना और पास कराना एक मात्र ध्येय रहता है । इसलिए हिन्दी के पाठों को रटते हैं । अतः वर्तमान परीक्षा पद्धति रटने की प्रकृति को प्रोत्साहित करती है । छात्र-छात्राएँ कुछ चुने हुए अंशों को बिना समझे रट देते हैं और

उन्हीं रटे हुए तथ्यों के आधार पर परीक्षा पास कर लेते हैं। ज्ञान की अपेक्षा परीक्षा पास करना उनका मुख्य लक्ष्य हो जाता है। अतः वास्तविक ज्ञानवृद्धि तथा तथ्यों को भली भाँति समझने में उनकी रुचि नहीं रहती है। उनकी समस्त शक्ति तथ्यों को रटने की ओर केन्द्रीभूत रहती है। भारत सरकार का यह प्रतिवेदन (Govt. of India Report) केरल के विद्यार्थियों के लिए लागू है कि "आजकल के विद्यार्थी पुस्तकों के वास्तविक अध्ययन की ओर न जाकर कुंजी एवं संक्षिप्त नोट्स को रटकर परीक्षा पास कर लेते हैं।"[1]

<u>निष्कर्ष</u>:

केरल में हिन्दी का द्वितीय भाषा के रूप में अध्ययन करते वक्त जो समस्यायें खड़ी होती हैं उनके आधार पर कुछ सुझाव इस प्रकार दिये जा सकते हैं। स्कूली स्तर से लेकर हिन्दी के सही उच्चारण पर बल देकर अध्ययन शुरू किया जा सकता है। व्याकरण को जहाँ तक हो सके सरल बनाकर अध्ययन-अध्यापन कार्य किया जा सकता है। व्याकरण के सैद्धांतिक पक्ष पर कम बल देकर व्यावहारिक पक्ष पर अधिक ध्यान देना चाहिए। आगमन प्रणाली के अनुसार हिन्दी का अध्ययन शुरू किया जा सकता है जिससे छात्र मातृभाषा के प्रभाव से बच सकते हैं। हिन्दी में सोचने और विचार करने पर बल देना चाहिए।

---

1. शिक्षा का मूलाधार - शोभा गर्ग, पृ सं 232.

अध्यापकों को समय-समय पर द्वितीय भाषा सिखाने का प्रशिक्षण देना चाहिए। हिन्दी कक्षाओं में हिन्दी का माहौल बनाये रखना अनिवार्य है। छात्र-छात्राओं के बीच भाषा के प्रति रुचि पैदा करने का प्रयास किया जा सकता है। शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग यथा संभव होना चाहिए। भाषा के व्यावहारिक पक्ष पर ध्यान देकर पाठ्यक्रम में सुधार किया जा सकता है। इन सुझावों के आधार पर केरल के हिन्दी अध्ययन का स्वरूप निर्धारित किया जा सकता है।

दूसरा अध्याय

केरल के हिन्दी अध्ययन में उच्चारणगत एवं वर्तनीगत समस्यायें

भाषा मूलत: ध्वन्यात्मक है । ध्वनियों की विशिष्ट व्यवस्था को भाषा कहते हैं । डा. भोलानाथ तिवारी के अनुसार "भाषा मुखोच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था है, जिसके सहारे समाज-विशेष के लोग आपस में विचार-विनिमय करते हैं ।" ध्वनियाँ स्वरयंत्र के कार्य होने के कारण प्रकृतया उच्चारण के विषय हैं । उच्चरित ध्वनियाँ जब प्रतीकों व लिपियों में लिखी जाती हैं तो लिखित भाषा कहलाती हैं । अर्थात् किसी भी भाषा के अध्ययन में उसके उच्चारण एवं वर्तनी का महत्वपूर्ण स्थान है ।

भाषा अध्ययन में उच्चारण एवं वर्तनी का स्थान :-

भाषा अध्ययन में भाषा के बोलने, सुनने, पढ़ने एवं लिखने का अध्ययन होता है । इन चार बातों को भाषा शिक्षण की शब्दावली में "भाषा कौशल" कहते हैं ।[2] इससे स्पष्ट है कि बोलना सुनना, पढ़ना एवं लिखना भाषा अध्ययन के लिए अपेक्षित कार्य होने के कारण भाषा अध्ययन में उच्चारण एवं वर्तनी के अध्ययन की विशिष्ट भूमिकाएँ होती हैं ।

इन भाषाई कौशलों में "सुनना" भाषा अध्ययन की प्रथम सीढ़ी है । इसका अर्थ यह है कि किसी को बोलते सुनना और समझना ।

[illegible]

इस कौशल की प्रधानता को स्पष्ट करते हुए डा. भोलानाथ तिवारी ने लिखा - "जितना भाषा का संपर्क बढ़ता है, सुनने की क्षमता बढ़ती है और निरंतर सुनने से भाषा में क्षमता बढ़ती है । इस कौशल को विकसित करने के लिए "सामान्य श्रवण" आवश्यक है । अधिकांश व्यक्ति किसी भाषा को इस "सामान्य श्रवण" से ही सीख जाते हैं । इस कौशल को विकसित करने के लिए पर्याप्त सुनना चाहिए ।[1]

इनमें "बोलना" भाषा अध्ययन की दूसरी सीढ़ी है । मौखिक अभिव्यक्ति ही "बोलना" है । इसका अर्थ यह है कि स्वर व्यंजन का उच्चारण ठीक से करना । इस पर अधिकार पाने के लिए भाषिक संरचनाओं के अतिरिक्त सही उच्चारण करना पहली आवश्यकता है ।

"सुनना" और "बोलना" - इन दोनों कौशलों से स्पष्ट है कि भाषा अध्ययन में उच्चारण का अध्ययन अत्यन्त ज़रूरी है । सही उच्चारण सुनकर उसे सही रूप में उच्चारण करना भाषा अध्ययन की पहली आवश्यकता है । क्योंकि भाषा वक्ता और श्रोता के बीच की चीज़ होती है ।

पढ़ना, जो भाषा अध्ययन की तीसरी सीढ़ी है, का अर्थ है मौन या मुखर रूप से किसी लिखित सामग्री को पढ़ना और उसे समझ लेना । यह भाषा के लिखित रूप पर आधारित होता है ।

---

1. हिन्दी भाषा शिक्षण डा. भोलानाथ तिवारी - पृ. 33

पढ़ने के दो भेद हैं - सस्वर पठन और मौन पठन । अक्षरों और शब्दों का शुद्ध उच्चारण से युक्त सस्वर पठन से पर्याप्त लाभ है ।

भाषा अध्ययन की अंतिम एवं चौथी सीढ़ी है - लेखन । लेखन का अर्थ है वर्तनी और व्याकरण की दृष्टि से तर्कसंगत रूप में लिखना । इस कौशल से सही वर्तनी का जानकारी और अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास होता है ।

अंतिम दो कौशलों से यह भी सिद्ध होता है कि भाषा अध्ययन में वर्तनी का स्थान भी महत्वपूर्ण है ।

<u>द्वितीय भाषा अध्ययन में उच्चारण एवं वर्तनी :-</u>

सामान्यतः प्रथम भाषा का अध्ययन करने वाले पहले उस भाषा को सुनकर उसे बोलने का प्रयास करते हैं और उसके बाद लिखने का अभ्यास करते हैं । अर्थात् लेखन कौशल का आरंभ करने से पहले "सुनना" और "बोलना" आरंभ करते हैं । द्वितीय भाषा के अध्ययन में उसका क्रम ठीक उलटा है । द्वितीय भाषा का अध्ययन करनेवाला पहले उस भाषा के वर्णों को सीखने का प्रयास करता है । अर्थात् द्वितीय भाषा का अध्ययन करनेवाला पहले "लिखना" और "पढ़ना" शुरू करता है और बाद में सुनने और बोलने का प्रयास करता है । वास्तव में द्वितीय भाषा का अध्ययन करनेवाले को उस भाषा की ध्वनियों को भी निरंतर सुनते रहना चाहिए ताकि दोनों भाषाओं की ध्वनियों का अंतर समझकर उसे बोल सके । द्वितीय भाषा के अध्ययन में यह प्रक्रिया आवश्यक है ।

इसे स्पष्ट करते हुए डा. भोलानाथ तिवारी लिखते हैं - "किसी भी अन्य भाषा की ध्वनियों को सीखने के लिए मातृभाषा की ध्वनियों से भिन्नता स्थापित करने के लिए भी सुनना सहायक सिद्ध होता है।" [1]

प्रथम भाषा का उच्चारण और वर्तनी सीखने के बाद द्वितीय भाषा का उच्चारण सीखना होता है। इस प्रक्रिया में दोनों भाषाओं का परस्पर प्रभावित होना स्वाभाविक है। दोनों भाषाएँ मूलतः ध्वनि व्यवस्था और वर्तनी व्यवस्था में भिन्न होने पर भी कहीं कहीं समान भी होता है। इस भिन्नता और समानता का उस भाषा के अध्ययन में बड़ा महत्व है। द्वितीय भाषा के वे तत्व जो प्रथम भाषा में नहीं हैं, उसके शिक्षण कार्य में कठिनाई उपस्थित करते हैं और जो प्रथम भाषा में है, सुविधा पैदा करते हैं। इसलिए द्वितीय भाषा और प्रथम भाषा की ध्वनि एवं वर्तनी का तुलनात्मक अध्ययन करके इन कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है। हिन्दी और मलयालम दो भिन्न परिवार की भाषाएँ होने के कारण दोनों की उच्चारण व्यवस्था भिन्न है। लेकिन दोनों में संस्कृत से आगत शब्दों की बहुलता के कारण उच्चारण एवं वर्तनी व्यवस्था में कुछ समानता भी है। इसी साम्य-वैषम्य का अध्ययन करने का प्रयास आगे किया गया है।

---

1. हिन्दी भाषा शि[illegible] - पृ. [illegible]

हिन्दी और मलयालम वर्णों की तुलना :-

मनुष्य किसी भाव को व्यक्त करना चाहता है तो उसके मुख से वे भाव ध्वनि के माध्यम से प्रकट होते हैं। इन ध्वनियों को पहचानने के लिए कतिपय चिह्न बना लिये हैं, जिन्हें वर्ण कहते हैं। "वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं जिसके खंड न हो सके।" [1] जैसे, अ, इ, क्, द्, आदि।

वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिन्दी वर्णमाला में 44 वर्ण हैं। इनके दो भेद हैं - स्वर और व्यंजन। स्वर की परिभाषा देते हुए कामता प्रसाद गुरु और केरलपाणिनी लिखते हैं - "स्वर उन वर्णों को कहते हैं जिनका उच्चारण स्वतंत्रता से होता है और जो व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होता है। व्यंजन वे वर्ण हैं जो स्वर की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते।" [2] हिन्दी में स्वर 11 हैं -

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

हिन्दी में व्यंजन 33 हैं -

क् ख् ग् घ् ङ्	- क वर्ग
च् छ् ज् झ्	- च वर्ग
ट् ठ् ड् ढ् ण्	- ट वर्ग
त् थ् द् ध् न्	- त वर्ग
प् फ् ब् भ् म्	- प वर्ग
य् र् ल् व्	- अन्तस्थ
श् स् ह्	- ऊष्म

मलयालम के स्वर 16 हैं। अर्थात् मलयालम में हिन्दी की अपेक्षा 5 स्वर ज़्यादा हैं। -

അ	ആ	ഇ	ഈ	ഋ	ൠ	ഉ	ഊ	ഌ
अ	आ	इ	ई	ऋ	ॠ	उ	ऊ	ऌ

ൡ	എ	ഏ	ഐ	ഒ	ഓ	ഔ
ॡ	ऎ	ए	ऐ	ऒ	ओ	औ

मलयालम के 37 व्यंजन हैं। इसमें हिन्दी की अपेक्षा 4 व्यंजन ज़्यादा हैं।

ക	ഖ	ഗ	ഘ	ങ
क	ख	ग	घ	ङ
ച	ഛ	ജ	ഝ	ഞ
च	छ	ज	झ	ञ
ട	ഠ	ഡ	ഢ	ണ
ट	ठ	ड	ढ	ण
ത	ഥ	ദ	ധ	ന
त	थ	द	ध	न
പ	ഫ	ബ	ഭ	മ
प	फ	ब	भ	म

യ	ര	ല	വ
य	र	ल	व
ശ	ഷ	സ	ഹ
श	ष	स	ह
ള	ഴ	റ	
ळ	ऴ	ऱ	

दोनों वर्णमालाओं को सूक्ष्मता से देखने से पता चलता है कि मलयालम भाषाओं के वर्ण हिन्दी की अपेक्षा ज़्यादा हैं । मलयालम के स्वरों में ऍ (എ) ऑ (ഒ) लृ (ഌ) दीर्घ ॠ (ൠ) ॡ (ൡ) ज़्यादा है जो हिन्दी में नहीं है । व्यंजनों में ळ, ष़, ऱ (ള•ഴ•റ) और वत्स्र्य न कार हिन्दी में नहीं हैं ।

वर्णों के विभाजन :-

हिन्दी और मलयालम के वैयाकरणों ने वर्णों का विभाजन निम्नानुसार किया है ।

1. प्रयत्न के आधार पर :-

वर्णों के उच्चारण की रीति को प्रयत्न कहते हैं । प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं - आभ्यंतर प्रयत्न और बाह्य प्रयत्न । ध्वनि उत्पन्न होने के पहले की क्रिया को आभ्यंतर प्रयत्न कहते हैं और ध्वनि के अंत की क्रिया को बाह्य प्रयत्न कहते हैं ।

आभ्यंतर प्रयत्न के अनुसार वर्णों के मुख्य चार भेद हैं -

1. विवृत :-

इनके उच्चारण में वागीन्द्रीय खुला रहता है । इसके उच्चारण करते समय जीभ उच्चारण अवयवों का स्पर्श नहीं करती । सारे स्वर विवृत हैं मलयालम में इसके लिए "अस्पृष्टम" कहा है । हिन्दी और मलयालम के स्वर सभी "अस्पृष्टम" है

लेकिन मलयालम में किसी शब्द में स्वर के पहले व्यंजन के आने से संवृत हो जाता है ।[1] उदा:- रावुँ, वीट्ँ आदि । उ कार भी मलयालम में दो प्रकार के हैं - विवृतोकार और संवृतोकार । जिन स्वर का उच्चारण खुलकर नहीं किया जाता, उनको संवृतोकार कहते हैं- जैसे वीट्ँ (घर) । इसे आधा उकार भी कहते हैं । जिन स्वरों का उच्चारण खुलकर किया जाता है उसे विवृतोकार कहते हैं - वन्नु (आया) ।[2]

2. <u>स्पृष्ट :-</u>

इनके उच्चारण करते समय वागिन्द्रीय का द्वार बंद रहता है । इसका उच्चारण करते समय जीभ का आदि, मध्य और पश्च स्थान उच्चारण अवयवों को पूर्ण रूप से स्पर्श करता है । क से लेकर म तक 25 व्यंजनों को स्पर्श वर्ण या स्पृष्ट कहते हैं ।

3. <u>ईषत् विवृत :-</u>

इनके उच्चारण में वागिन्द्रीय कुछ खुला रहता है । इसका उच्चारण करते समय जीभ उच्चारण अवयवों का आधा स्पर्श करती है ।

---

1. व्याकरण मित्रम् शेषगिरी प्रभु - पृ. 56
2. भाषादीपिका - के. पोन्नत्त - पृ. 11

इसको मलयालम में "ईषत स्पृष्टम्" कहते हैं । य, र, ल, व आदि इस प्रकार का वर्ण है । इनका उच्चारण स्वर और व्यंजन का मध्यवर्ती होने के कारण "अन्तस्थ" वर्ण कहते हैं ।

4. <u>ईषत् स्पृष्ट</u> :-

इनका उच्चारण वागीन्द्रीय के कुछ बंद रहने से होता है । इनका उच्चारण करते समय जीभ उच्चारण अवयव को थोडा स्पर्श करते हैं । मलयालम में इसे "नेमस्पृष्टम" कहते हैं । श, ष, स, ह इस प्रकार के हैं । इन वर्णों के उच्चारण में एक प्रकार का घर्षण होता है । इसलिए इसे ऊष्म वर्ण कहते हैं । मलयालम में "ह" ऊष्म वर्ण या ऊष्मा नहीं है, बल्कि वे घोषी हैं ।

<u>बाह्य प्रयत्न के आधार पर</u> :-

बाह्य प्रयत्न के आधार पर वर्णों के मुख्य दो भेद हैं - अघोष और घोष । मलयालम में इसे श्वासी और नादम दो नाम दिया गया है ।

1. <u>अघोष (श्वासी)</u> :-

अघोष (श्वासी) के उच्चारण में केवल श्वास का उपयोग होता है । इसका उच्चारण करते समय कंठरन्ध्र खुलने से श्वास झट बाहर जाता है । वर्गाक्षर का पहला और दूसरा अक्षर तथा ऊष्म वर्ण अघोष या श्वासी हैं । अर्थात् क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स आदि ।

2. घोष ॥ नादम् ॥ :-

घोष के उच्चारण में केवल नाद का उपयोग होता है । इसका उच्चारण करते समय कंठरन्ध्र बन्द होने से घोष या नाद उत्पन्न होता है । दोनों भाषाओं के वर्गाक्षरों के तीसरा, चौथा और पंचम् वर्ण तथा स्वर घोष है ।

उच्चारण स्थान के आधार पर :-

मुख के जिस भाग से जिस अक्षर का उच्चारण होता है, उसे उच्चारण स्थान कहते हैं । इसके आधार पर वर्णों के निम्नलिखित भेद हैं ।

1. कंठ्य :-

इसका उच्चारण कंठ से होता है । हिन्दी और मलयालम के अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ. , ह और विसर्ग कंठ्य वर्ण है । मलयालम के ए, ऍ, ऐ कंठ्य है जबकि हिन्दी के ए कार और ऐ कार कंठतालव्य है ।

2. तालव्य :-

इसका उच्चारण तालु से होता है । इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ , य और श हिन्दी और मलयालम के तालव्य वर्ण है ।

3. मूर्धन्य :-

इनका [illegible]च्चार[illegible] [illegible]ूर्धा से होता है [illegible] ट, ठ, ड, ढ, [illegible], र [illegible] र ष [illegible] है [illegible]ोंकि हिन्दी में ये तीनों ध्वनियाँ नहीं [illegible] ।
[illegible] [illegible] कि हिन्दी [illegible] द[illegible]

4. <u>दन्त्य</u> :-

इनका उच्चारण ऊपर के दाँतों पर जीभ लगाने से होता है । हिन्दी और मलयालम के त, थ, द, ध, न और स दन्त्य वर्ण है । हिन्दी का ल दन्त्य है जबकि मलयालम में मूर्धन्य है ।

5. <u>ओष्ठ्य</u> :-

इनके उच्चारण ओष्ठों से होता है । हिन्दी और मलयालम के "उ", "ऊ", "प", "फ", "ब", "भ", "म" आदि ओष्ठ्य है । मलयालम के "व", "ओ", "ओं" और "औ" ओष्ठ्य है जबकि हिन्दी में "व" दन्तोष्ठ्य है और "ओ" और "औ" कंठोष्ठ्य है ।

6. <u>कंठतालव्य</u> :-

इनका उच्चारण कंठ और तालु से होता है । हिन्दी के "ऐ", "ए" कंठतालव्य है । मलयालम के "ऐ" और "ए" कंठतालव्य नहीं है । वे कंठ्य वर्ण है ।

7. <u>कंठोष्ठ्य</u> :-

इसका उच्चारण कंठ और ओष्ठ्य दोनों से होता है । "ओ" और "औ" कंठोष्ठ्य है जबकि मलयालम के "ओ", "ओं" और "औ" ओष्ठ्य है

8. <u>दन्तोष्ठ्य :-</u>

इसका उच्चारण दांत और ओष्ठ् दोनों से होता है । "व" हिन्दी में दंतोष्ठ्य है जबकि मलयालम में ओष्ठ्य है ।

<u>संसर्ग के आधार पर :-</u>

संसर्ग ❨ जोड ❩ के आधार पर मलयालम के व्याकरणों में दो प्रकार के व्यंजन मिलते हैं - अल्पप्राण और महाप्राण । हिन्दी में भी ये भेद मिलते हैं । वर्गाक्षर का पहला और तीसरा अक्षर अल्पप्राण है और दूसरा तथा चौथा महाप्राण है । पहला तथा तीसरा वर्गाक्षर के साथ "ह" का प्रयोग होने से वह महाप्राण बन जाता है । वर्गाक्षर के पहले अक्षर को मलयालम में "खरम्" कहते हैं । इसके साथ "ह" जोडने से दूसरा अक्षर "अतिखरम्" बन जाता है । मलयालम में तीसरा वर्गाक्षर को मृदु कहते हैं । इसके साथ "ह" का योग होने से "घोषम्" अर्थात् चौथा अक्षर बन जाता है । इस प्रकार मलयालम के वर्गाक्षर को निम्न प्रकार विभाजित किया गया है ।

	खरम्	अतिखरम्	मृदु	घोषम्	अनुनासिकम्
कवर्ग	क	ख	ग	घ	ङ
चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण
तवर्ग	त	थ	द	ध	न
पवर्ग	प		ब		

हिन्दी के वर्गाक्षरों का इस प्रकार विभाजन नहीं है। फिर भी पंचम वर्ण अनुनासिक है। घोष और अघोष नामक भेद भी हिन्दी में है। पहला और दूसरा वर्गाक्षर घोष है। लेकिन मलयालम में सिर्फ चौथा अक्षर घोष है।

<u>हवा के आने जाने के मार्ग के आधार पर:-</u>

हवा के आने जाने के मार्ग के आधार पर वर्णों के दो भेद मलयालम व्याकरण में मिलते हैं - सानुनासिक और निरनुनासिक (मौखिक)। नाक से हवा निकलने पर व्युत्पन्न वर्ण सानुनासिक है। सभी प्रकार का अनुनासिक स्वर हिन्दी में उपलब्ध है - जैसे अँ, आँ, इँ, उँ, ऊँ, एँ, ऐँ, ओँ, औँ आदि अनुनासिक स्वर है। वर्गाक्षर के पंचम अक्षर दोनों भाषाओं में सानुनासिक है। बाकी सब व्यंजन निरनुनासिक अथवा मौखिक है।

<u>मात्रा के आधार पर :-</u>

मात्रा के आधार पर मलयालम व्याकरण में - ह्रस्व और दीर्घ स्वर दो भेद मिलते हैं।

ह्रस्व - अ, इ, उ, ऋ, ऌ (एक मात्रा का समय उच्चारण में लगता है)

दीर्घ - आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ (दो मात्रा का समय)

हिन्दी वैयाकरणों ने इन्हें लघु और गुरु दो भेद किये हैं -

लघु - अ, इ, उ, ऋ

गुरु आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

हिन्दी में दीर्घ "ॠ" और "ॡ" नहीं है

उत्पत्ति के आधार पर :-

उत्पत्ति के आधार पर दोनों भाषाओं में दो प्रकार के स्वर हैं - मूल स्वर और सन्धि स्वर । सन्धि स्वर के लिए मलयालम में सन्ध्याक्षर कहते हैं । जिन स्वरों की उत्पत्ति किन्हीं दूसरे स्वरों से नहीं है, उन्हें मूल स्वर कहते हैं ।

हिन्दी में चार मूल स्वर हैं - अ, इ, उ, ऋ जबकि मलयालम में पाँच हैं - अ, इ, उ, ऋ, ऌ । मूल स्वरों के मेल से बने स्वर सन्धि स्वर या सन्ध्याक्षर हैं । इसके दो भेद हैं - दीर्घ और संयुक्त ।

किसी मूल स्वर में उसी मूल स्वर के मिलने से जो स्वर उत्पन्न होता है, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं । जैसे

हिन्दी में - आ ई ऊ
(अ+अ) (इ+इ) (उ+उ)

मलयालम में - आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ

किसी मूल स्वर में किसी भिन्न स्वर मिलने से जो स्वर उत्पन्न होता है, उन्हें संयुक्त स्वर कहते हैं - जैसे -

हिन्दी में - ए ओ ऐ
(अ+इ) (अ+उ) (अ+ए)

मलयालम में संध्याक्षर ह्रस्व और दीर्घ दोनों है :-

ह्रस्व अ[illegible]

[illegible]

जाति-भेद के अनुसार :-

जाति भेद के अनुसार हिन्दी में दो प्रकार के स्वर होते हैं - सजातीय और विजातीय । समान स्थान व प्रयत्न से उत्पन्न होनेवाले स्वर सजातीय स्वर हैं । जैसे, इ-ई, उ-ऊ, अ-आ सजातीय ⟮ सवर्ण ⟯ है । जिन स्वरों की उत्पत्ति भिन्न स्थान व प्रयत्न से होता है, उन्हें विजातीय स्वर कहते हैं । जैसे अ और इ परस्पर विजातीय स्वर है । मलयालम में इसी प्रकार का वर्ण है । फिर भी इस तरह का कोई विभाजन नहीं है ।

संयुक्त व्यंजन :-

जब दो या दो से अधिक व्यंजनों के बीच में कोई स्वर नहीं रहता तो वे आपस में मिल जाते हैं । तब से संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं । जैसे - क्क ⟮ क + क ⟯, न्द ⟮ न + द ⟯, क्त ⟮ क् + त ⟯ आदि ।

व्यंजनों को संयुक्त करने की विधि :-

दोनों भाषाओं में व्यंजनों को संयुक्त करते समय पहला व्यंजन आधा होता है । जैसे :-

हिन्दी	मलयालम
क् + क = क्क	ക + ക ക്ക
व् = [illegible]	[illegible] + [illegible] [illegible]

लेकिन दोनों भाषाओं में र से युक्त संयुक्त व्यंजनों को बनाने की विधि अलग है । वे इस प्रकार हैं -

1. यदि हिन्दी और मलयालम में "र" व्यंजन के पहले आये तो वह उस व्यंजन के ऊपर लिखते हैं । जैसे -

धर्म (ध + र् + म) ധർമ്മം

हिन्दी में इसके लिए " " और मलयालम में " " वाला चिह्न प्रयुक्त होता है ।

2. यदि "र" व्यंजन के परे आये तो वह हिन्दी में नीचे लिखा जाता है । जैसे -

निद्रा (निद्रा)
चक्र (च + क + र) ।

लेकिन मलयालम में व्यंजन के पहले " " चिह्न लगाते हैं । जैसे -

നിദ്ര (निद्रा)
മുദ്ര (मुद्रा)

3. ह और र को जब मिलाकर लिखा जाता है, तब उसका रूप हिन्दी में इस प्रकार होता है -

ह्र - ह्रस्व

ल लेकिन मलयालम में " " चिह्न उसके नीचे प्रयुक्त होता है - जैसे :-

ഹൃദം (हृद)

4. क, ठ, ड, ढ, त के नीचे [illegible] र" [illegible] हिन्दी [illegible] चिह्न [illegible] लिखे [illegible] - [illegible] क्रय, [illegible] । [illegible]

जैसे - ക്രയം (क्रय) പത്രം (पत्र) आदि ।

5. जिन वर्णों के अन्त में खडीपाई (।) रहती है, उनका केवल स्वर रहित होने के कारण संयुक्त होने से पहले व्यंजन का आधा ही लिखता है । जैसे - प्यार, न्याय आदि । लेकिन मलयालम में ऐसा नहीं होता । दूसरे व्यंजन के स्थान पर " " चिह्न लगाते हैं । जैसे - ന്യായം (न्याय), कल्याणम् (കല്യാണം विवाह) आदि ।

6. ङ, ट, ठ, ड, ढ, ह आदि अगले व्यंजन के साथ संयुक्त होते हुए ऊपर लिखा जाता है । जैसे - शङ्का, प्रह्लाद, गद्दा आदि । लेकिन मलयालम में इसके लिए चन्द्र बिन्दी (˘) लगाते हैं । जैसे -

പ്രഹ്ലാദൻ (प्रह्लाद) आदि ।

7. ङ, ञ, ण, न, म जब अपने ही वर्ग के व्यंजन से मिलते है तब उसे दो प्रकार लिखते हैं । जैसे - अन्धा - अंधा । लेकिन मलयालम में इस प्रकार का विकल्प नहीं है ।

8. कहीं तो संयुक्त वर्णों का रूप ऐसा बदल जाता है कि उनमें मूल वर्णों के रूप का कुछ पता ही नहीं चलता । जैसे - ज + ञ = ज्ञ, क + ष = क्ष, त + र = त्र, द + य = द्य । लेकिन मलयालम में इस प्रकार के रूप नहीं है

स्वर की मात्राएँ :-

हिन्दी में स्वर की मात्राएँ नीचे लिखी हैं

स्वर - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

मात्रा - ा ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ

मलयालम में

	അ	ആ	ഇ	ഈ	ഉ	ഊ	ഋ	ൠ	എ	ഏ	ഐ
स्वर -	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ए	ऐ	ऐ
मात्रा -	-	ാ	ി	ീ	ു	ൂ	ൃ	-	െ	േ	ൈ

	ഒ	ഓ	ഔ
स्वर -	ओ	ओ	औ
मात्रा -	-	ാ	ൗ

हिन्दी और मलयालम में " अ " की कोई मात्रा नहीं है । यह व्यंजन में जुड़ने से व्यंजन के नीचे का चिह्न (्) नहीं लिखा जाता । जैसे - क् + अ = क ।

मलयालम में चन्द्र बिन्दी नहीं लिखा जाता । जैसे - ക്‌ + അ (क् + अ) (क) (ക) ।

मलयालम में "आ" की मात्रा के लिए व्यंजन के आगे " ാ " चिह्न लगाई जाती है । हिन्दी में आ, ई, ओ और औ की मात्राएँ व्यंजन के आगे लगाई जाती है । जैसे - का, की, को और कौ । लेकिन मलयालम में भी ई, ओ, और औ की मात्रा पीछे लगाई जाती है । जैसे കീ (की) (കോ) को ( ), കൗ (कौ) आदि । इ की मात्रा मलयालम में व्यंजन के आगे और हिन्दी में पीछे लगाती है । जैसे - കി (कि) । हिन्दी में उ, ऊ की मात्राएँ हिन्दी में पीछे लगाई जाती है । जैसे - कु, लेकिन मलयालम में लगाती है । जैसे - കു, കൂ आदि ।

अनुस्वार हिन्दी में ऊपर और विसर्ग पीछे आता है । जैसे - कं, कः । लेकिन मलयालम में अनुस्वार आगे लगता है । जैसे - ക० (कं) ।

अन्य बातें :-

हिन्दी में क, ख, ग, ज, ड, ढ, फ के नीचे नुक्ता डालकर कुछ व्यंजन बनाये जाते हैं - जैसे क़, ख़, ग़, ज़, ड़, ढ़, फ़ । मलयालम में इसके लिए अलग लिपि नहीं है, यद्यपि फ़, ज़, आदि ध्वनियाँ हैं ।

द्रविड वर्त्स्य न कार मलयालम में है जबकि हिन्दी में नहीं है ।

मलयालम में न, र, ल, ळ इनके हलन्त रूप का अलग चिह्न है, जिन्हें चिल्लु कहते हैं । इनका ज़्यादा प्रयोग मलयालम में होता है ।

हिन्दी और मलयालम में उच्चारण एवं वर्तनीगत समस्यायें :-

केरल के विद्यार्थियों की यह आदत पड़ जाती है कि वे मातृभाषा की ध्वनियों में ही हिन्दी बोलने लगते हैं । यह सच्ची बात है कि मातृभाषा के स्पष्ट उच्चारण की तरह स्पष्टता से अन्य भाषा का उच्चारण संभव नहीं है । हिन्दी जिस तरह उत्तर भारत के लोगों से बोली जाती है, वैसे दक्षिण के लोगों द्वारा नहीं बोली जाती है । उत्तर के लोगों का ध्वनियंत्र पहले ही हिन्दी के उच्चारण के लिए काफी अनुकूल रहता है [illegible] भाषियों का [illegible]

अतः मलयालम ध्वनियों का प्रभाव हिन्दी ध्वनियों पर पडने के कारण ध्वनियों के उच्चारण में गलतियाँ आ जाती है ।

लिखने की रीति को वर्तनी कहते हैं । "किसी भाषा के शब्दों में ध्वनियों का जिस क्रम से प्रयोग होता है, उस ध्वनिक्रम को उस शब्द की वर्तनी कहते हैं ।"[1] भाषाओं के उच्चरित रूप में जितनी जल्दी परिवर्तन होता है, उतनी जल्दी लिखित भाषाओं में परिवर्तन नहीं किया जाता । इसलिए अन्य भाषा - भाषी जब नयी भाषा सीखना प्रारंभ करता है तब उसके उच्चारण के अनुसार लिखने का प्रयास करता है । अतः उच्चारण की समस्यायें द्वितीय भाषा सीखनेवालों केलिए वर्तनीगत समस्यायें पैदा करती है ।

केरल के छात्रों के सामने हिन्दी के अध्ययन करते समय अनेक प्रकार की उच्चारणगत एवं वर्तनीगत समस्यायें उत्पन्न होती है ।

हिन्दी और मलयालम के स्वरों की उच्चारणगत एवं वर्तनीगत समस्यायें :-

हिन्दी के कुछ स्वर मलयालम में भी हैं, लेकिन उनके उ उच्चारण में कुछ भिन्नता है ।

"अ" के उच्चारणगत और वर्तनीगत समस्यायें :-

हिन्दी और मलयालम का प्रथम स्वर है

इसका उच्चारण करते समय दोनों भाषाओं में जीभ उच्चारण अवयवों का स्पर्श नहीं करती । इसलिए इसे हिन्दी में विवृत स्वर अथवा मलयालम में "अस्पृष्टम्" कहते हैं । दोनों भाषाओं में इसका उच्चारण कंठ से होने के कारण इसे कंठ्य स्वर कहते हैं । इसका उच्चारण हिन्दी में कभी कभी नाक से हवा निकलने से होता है । इसलिए हिन्दी में सानुनासिक है, जबकि मलयालम में इस प्रकार के सानुनासिक "अ" नहीं है । दोनों भाषाओं में ह्रस्व या लघु स्वर है । दोनों भाषाओं में "अ" मूल स्वर है ।

<u>अंत्य अकार संबन्धी समस्यायें :-</u>

हिन्दी में अंत्य अ का उच्चारण प्रायः हल के समान होता है ।[1] जैसे, "घर", "किताब", "राम", "विद्यालय" आदि में इसका उच्चारण क्रमशः र्, ब्, म्, य् आदि होता है । लेकिन मलयालम में जैसे लिखा जाता है, वैसा पढ़ा जाता है । जैसे, मेश, पलक आदि में श और क का पूर्ण उच्चारण होता है । ल् (ൽ), ळ(ൾ) , न् (ൻ), र् (ർ) आदि वर्णों § जिसे मलयालम में चिल्लाक्षर कहते हैं । § का उच्चारण हिन्दी के अंत्य अकार के उच्चारण के समान है । लेकिन चिल्लाक्षरों को संवृत उकार समान लुँ, ळुँ, नुँ जैसे उच्चरित करने की प्रवृत्ति अधिकतर मलयालम में पाई जाती है ।[2]

---

1. हिन्दी ध्वनियाँ और उच्चारण – भोलानाथ तिवारी – पृ. 47

[illegible]

जैसे, पाल {दूध} का उच्चारण पाल्‌ जैसा करते हैं । इरुट्‌ {अन्धेरा} का उच्चारण इरुट्‌ जैसा करते हैं । तेन {मधु} का उच्चारण तेन्‌ के समान करते है, मलयालम में छात्र इस तरह के उच्चारण से प्रभावित रहने के कारण हिन्दी शब्दों के अंतिम अकार का संवृत उकार के जैसे उच्चारण करते हैं । उदाहरणार्थ

रात के लिए रात्‌

किताब के लिए किताब्‌

कमल के लिए कमल्‌

मेज़ के लिए मेज़्‌ आदि ।

यहाँ पर उच्चारण समस्या के रहते हुए भी वर्तनी में गलतियाँ नहीं आती । उदाहरण के लिए रात शब्द को रात्‌ जैसा नहीं लिखते । इन समस्याओं को दोनों भाषाओं के उच्चारणगत अन्तर को ठीक ठीक समझने से दूर किया जा सकता है । इसके लिए दोनों भाषाओं का व्यतिरेकी अध्ययन अत्यन्त ज़रूरी है ।

हिन्दी शब्द के प्रथमाक्षर में अ का लोप नहीं होता ।[1] जैसे बदल, कमल आदि । हिन्दी प्रथमाक्षर के " अ ", " ए" के स्थान में परिवर्तित नहीं होता । लेकिन मलयालम में मृदु {वर्गाक्षर के तीसरा अक्षर} और मध्यमम्‌ {य्‌, र्‌, ल, व आदि} के आगे आनेवाले अकार संवृत होने के कारण उनका एकार के समान उच्चारण होता है ।[2] जैसे गणम का गेणम । अर्थात्‌ ग, ज, ड, द, ब, य, र, ल, व से शुरू होनेवाले शब्दों के आगे आने वाले " अ " का उच्चारण भी " ए " के समान करता है ।

---

1. हि[illegible] का [illegible]रणात्म[illegible] व्याक[illegible] डा. [illegible]क्ष्मीनारायण शर्मा पृ. [illegible]

2. [illegible]

इसका कारण यह हो सकता है कि तमिल जैसी द्रविड भाषाओं में अकार का सबसे ज़्यादा घनत्व होने के कारण इसका एकार के रूप में परिवर्तित होने की संभावना ज़्यादा है । "अ" कार "ए" कार के रूप में परिवर्तित होने की प्रवृत्ति भी पायी जाती है ।[1] इसलिए गजम, जन्म, दया, डमरू, बल, यश, रवि, ललिता आदि का उच्चारण केरल के छात्र क्रमशः गेजम, जेन्म, देया, डेमरू, बेल, येश, रेवि, लेलिता आदि के रूप में करते हैं ।

द्वयाक्षरी और त्रयाक्षरी शब्दों के अन्तिम अ का लोप होता है ।[2] जैसे बात, बाल, पर, खत्म आदि का उच्चारण बात्, बाल्, पर्, खत्म् जैसा किया जाता है । कमाल, कमल, प्रसाद, विन्ध्याचल का उच्चारण कमाल्, कमल्, प्रसाद्, विन्ध्याचल् जैसा किया जाता है । काइमोग्राफ और स्पेक्टोग्राफ पर किये गये प्रयोगों से भी पुष्टि होती है कि हिन्दी भाषा के शब्दों के अन्त में "अ" का उच्चारण नहीं होता । लेकिन मलयालम में इस तरह का उच्चारण नहीं होता है । इसके स्थान पर केरल के छात्र संवृत उकार का प्रयोग करते हैं ।

इसका कारण यह है कि मलयालम में न, ल, ळ का उच्चारण भी कभी कभी संवृत न्, ल्, ळ् जैसा होता है । जैसे पाल {दूध} का पाल् । मलयालम की इस विशेष प्रवृत्ति के प्रभाव के कारण केरल के छात्र इसका प्रयोग संवृत उकार जैसा करते हैं । जैसे पाल् ।

---

1. द्रवि[illegible] भाषा [illegible]याकरणम्, भाग 1,- का[illegible]डवेल अ[illegible]ादक. एस[illegible] [illegible]ाधार पृ. 15[illegible]

[illegible]

शब्द	गलत उच्चारण	सही उच्चारण
बात	बातॅ्	बात्
बाल	बालॅ्	बाल्
पर	परॅ्	पर्
खत्म	खत्मॅ्	खत्म्
कमाल	कमालॅ्	कमाल्
कमल	कमलॅ्	कमल्
प्रसाद	प्रसादॅ्	प्रसाद्
विन्ध्याचल	विन्ध्याचलॅ्	विन्ध्याचल्

चार अक्षरों के ह्रस्व स्वरान्त शब्दों में यदि दूसरा अक्षर अकारान्त हो तो उसके "अ" का उच्चारण अपूर्ण होता है ।[1] जैसे, गडबड, देवधन, बलहीन आदि का उच्चारण क्रमशः गडबड्, देवधन्, बल्हीन् आदि करते हैं । मलयालम में पहले अक्षर यदि मृदु या मध्यमम् है तो उसके आगे आनेवाले अ का पूर्ण उच्चारण भी हो सकता है । मलयालम में बलवान, धनवान आदि का उच्चारण क्रमशः बेलवानॅ्, धेनवानॅ् आदि के रूप में करते हैं । इसके अपवाद भी हिन्दी में है । यदि दूसरा अक्षर संयुक्त हो अथवा पहला अक्षर कोई उपसर्ग हो तो दूसरे अक्षर के "अ" का उच्चारण पूर्ण होता है । जैसे, [illegible]लाभ, [illegible]महीन, आचरण, प्रचलित आदि में

1. [illegible]

दीर्घ स्वरान्त चार अक्षरांवाले शब्दों में तीसरे अक्षर के "अ" का उच्चारण अपूर्ण होता है ।[1] जैसे समझना, निकलना आदि का उच्चारण क्रमशः समझ्ना, निकल्ना आदि होता है । लेकिन मलयालम में हर कहीं अ का पूर्ण उच्चारण होने के कारण केरल के छात्र इसका पूर्ण उच्चारण करते हैं । जैसे, "निकलना" का उच्चारण "निकल्ना" के स्थान पर "निकलना" करते हैं ।

दीर्घ स्वरान्त त्रयाक्षरी शब्दों में यदि दूसरा अक्षर अकारान्त हो तो उसका उच्चारण अपूर्ण होता है ।[2] जैसे, बकरा, कपडा आदि । मलयालम में हर कहीं पूर्ण उच्चारण होता है । इसलिए वे इसका गलत उच्चारण करते हैं । जैसे,

शब्द	गलत उच्चारण	सही उच्चारण
बकरा	बकरा	बक्रा
कपडा	कपडा	कप्डा
गहरा	गेहरा	गह्रा
कमरा	कमरा	कम्रा

शब्द की पूरी या आंशिक संरचना में स्वर + व्यंजन + अ + व्यंजन + दीर्घ स्वर होने पर अ का लोप होता है ।[3]

---

1. हिन्दी का [illegible] रूपात्मक व्याकरण - डा. [illegible]मीन [illegible]
   पृ. [illegible]

[illegible] व्याकरण डा. [illegible]

जैसे, अचला, कमरा, नकली आदि का उच्चारण क्रमशः अच्ला, कम्रा, नक्ली आदि होता है । मलयालम में इस प्रकार का लोप नहीं है । इसलिए केरल के छात्र इ सका उच्चारण करते हैं ।

शब्दों की पूरी या आंशिक संरचना में स्वर + संयुक्त व्यंजन/ दीर्घ व्यंजन + अ + वयंजन + दीर्घ स्वर होने पर अ का लोप नहीं होता ।[1] जैसे पत्थरों, बिस्तरों, तस्करी आदि के उच्चारण में अ का लोप नहीं होता । मलयालम में भी हर कहीं पूर्ण उच्चारण होने के कारण छात्रों को इस अवसर पर कोई समस्या नहीं होती ।

"अ" के उच्चारण के विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों भाषाओं में उच्चारण संबन्धी जो विषमता है उसके कारण ही समस्यायें उत्पन्न होती हैं । लेकिन इस तरह की उच्चारणगत समस्यायें कोई वर्तनीगत समस्या उत्पन्न नहीं करती । दोनों भाषाओं के "अ" के उच्चारण के तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन और विश्लेषण करके, साम्य वैषम्य को आत्मसात् करने से "अ" के उच्चारण संबन्धी समस्याओं का निराकरण हो सकता है ।

<u>हिन्दी और मलयालम के "आ":-</u>

दोनों भाषाओं में "आ" विवृत स्वर (अस्पृष्टम्) है, क्योंकि इसका उच्चारण करते समय जीभ उच्चारण अवयवों का स्पर्श नहीं करती ।

---

1. हिन्दी विव[illegible]त्मक [illegible]करण - पृ. 43.

दोनों भाषाओं में यह घोष [नादम्] है। दोनों में यह कंठ्य वर्ण है। हिन्दी में अनुनासिक आ है। जैसे, आँख। लेकिन मलयालम में इस प्रकार का उच्चारण नहीं है। केरल के छात्र इसका उच्चारण निरनुनासिक रूप में ही करते हैं। जैसे - आंख। इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

गलत उच्चारण	सही उच्चारण
आंक	आँक
आंकडा	आँकडा
आंगिक	आँगिक
आंचल	आँचल
आंत	आँत
कांच	काँच
चांद	चाँद
जांच	जाँच
तांगा	ताँगा
हांकना	हाँकना

इस प्रकार के उच्चारण के कारण केरल के छात्र हमेशा इसे गलत रूप में लिखते हैं। जैसे आँचल लिए आंचल लिखते हैं।

[illegible]

हिन्दी में दीर्घ आकारान्त का प्रयोग बहुत मात्रा में किया जाता है । जैसे, राधा, राजा, सीता, रेखा आदि । लेकिन मलयालम में ह्रस्व अ का प्रयोग बहुत मात्रा में किया जाता है और दीर्घान्त शब्द कम है । जैसे - राध (രാധ) सीता (സീത) आदि । हिन्दी के कई दीर्घान्त शब्दों को मलयालम भाषा - भाषी छात्र ह्रस्वान्त करके लिखते हैं । जैसे -

शब्द	गलत वर्तनी
सीता	सीत
उमा	उम
राधा	राध
रमा	रम
रेखा	रेख

अनुनासिक आ से उत्पन्न उच्चारणगत एवं वर्तनीगत समस्या को दोनों भाषाओं की उच्चारणगत भिन्नता से भली-भाँति अवगत होने से दूर किया जा सकता है ।

हिन्दी और मलयालम के "इ" और उससे उत्पन्न समस्यायें :-

दोनों भाषाओं में "इ" विवृत या अस्पृष्टम् (मलयालम में) है । दोनों में यह स्वर घोष अथवा नादम् (मलयालम में) है । उच्चारण अवयव के आधार पर देखें तो यह स्वर तालव्य है । मात्रा के आधार पर इ दोनों भाषाओं में ह्रस्व या लघु है ।

हिन्दी शब्दों में संयुक्त व्यंजनों और "त" के अन्त में आनेवाला "इ" का उच्चारण कुछ दीर्घता लिए हुए होता है । जैसे -

शब्द	उच्चारण
शान्ति	शान्ती
गति	गती
मति	मती आदि ।

लेकिन मलयालम में इसका उच्चारण ह्रस्व जैसा ही होता है । इसलिए केरल के छात्र इसका उच्चारण ह्रस्व "इ" के समान ही करते हैं । इससे उनका उच्चारण हिन्दी भाषियों के उच्चारण से भिन्न हो जाता है ।

"इ" संबन्धी वर्तनीगत समस्यायें भी कभी कभी केरल के छात्रों के सम्मुख आ जाती हैं । जैसे कि पहले बताया गया कि हिन्दी में ह्रस्व इ का उच्चारण कुछ दीर्घता लिए हुए होता है । मलयालम में जैसे उच्चारण होता है, उसी प्रकार लिखा जाता है । इसलिए केरल के छात्र इसको दीर्घ इ में लिखते हैं । जैसे -

सही वर्तनी	गलत वर्तनी
शान्ति	शान्ती
गति	गती
मति	मती
भूमि	भूमी ।

इस समस्या का एक और कारण यह है कि मलयालम में "इ" की मात्रा वर्ण के दाहिने भाग पर लगायी जाती है जबकि हिन्दी में यह बायें ओर लगायी जाती है । केरल के छात्र हिन्दी में भी इसे दाहिने ओर लगाते हैं ।

इस प्रकार की समस्यायें वैषम्य को पहचान कर प्रयोग करने से दूर की जा सकती है ।

<u>हिन्दी और मलयालम के "ई" और उससे उत्पन्न समस्यायें :-</u>

दोनों भाषाओं में "ई" दीर्घ स्वर है । यह दोनों में विवृत अथवा अस्पृष्टम् (मलयालम में) है । उच्चारण अवयव के आधार पर "ई" दोनों में तालव्य है ।

दोनों भाषाओं में उच्चारण की दृष्टि से कुछ अन्तर न होने के कारण "ई" संबन्धी समस्यायें नहीं के बराबर है । लेकिन "ई" संबन्धी कुछ वर्तनीगत समस्यायें हैं ।

हिन्दी में दीर्घ "ई" कारान्त स्वर का प्रयोग बहुत मात्रा में किया जाता है । ह्रस्व स्वर का प्रयोग बहुत कम है । जैसे - पत्नी, नारी, नदी आदि । लेकिन मलयालम में ह्रस्व स्वर का प्रयोग बहुत मात्रा में किया जाता है और दीर्घान्त शब्द बहुत कम है । जैसे - പത്നി (पत्नि), നാരി (नारि) आदि । इसलिए हिन्दी के कई दीर्घान्त शब्दों को मलयालम भाषा - भाषी छात्र ह्रस्वान्त करके लिखते हैं ।

जैसे -

शब्द	गलत वर्तनी
अद्वितीय	अद्वितिय
पत्नी	पत्नि
निरीह	निरिह
नदी	नदि
सूची	सूचि
शारीरिक	शारिरिक
श्रीमती	श्रीमति
कमी	कमि
पुत्री	पुत्रि
बाकी	बाकि
नारी	नारि

इस प्रकार की गलतियाँ दोनों भाषाओं में जो वैषम्य है, उसके व्यतिरेकी विश्लेषण के जरिए दूर की जा सकती हैं ।

<u>हिन्दी और मलयालम के "उ" और "ऊ" और उससे उत्पन्न समस्यायें :-</u>

हिन्दी और मलयालम के "उ" और "ऊ" विवृत अथवा अस्पृष्टम् है । मलयालम में संवृत उकार भी उपलब्ध है । जैसे, वीट्ट्‌ {घर} में अन्तिम उकार संवृत है । ये दोनों घोष या नादम् है । उच्चारण स्थान के आधार और "ऊ" ओष्ठ्य है । "उ" ह्रस्व और दीर्घ स्वर है

संवृत "उकार" से उत्पन्न समस्याओं का विश्लेषण पहले किया जा चुका है ।

हिन्दी में शब्द के अन्त में खासकर य, र, ल, व के साथ आया हुआ "उ" कुछ दीर्घता के साथ उच्चरित होता है ।[1] जैसे -

शब्द	उच्चारण
आयु	आयू
वायु	वायू आदि ।

इस तरह की प्रवृत्ति मलयालम में नहीं है । इसलिए केरल के छात्र इसका ह्रस्व रूप में ही उच्चारण करते हैं ।

हिन्दी में दीर्घ उ का प्रयोग बहुत मात्रा में किया जाता है । ह्रस्व स्वर का प्रयोग बहुत कम है । लेकिन मलयालम में ह्रस्व उ का प्रयोग बहुत मात्रा में किया जाता है और दीर्घ उ का प्रयोग कम है । इसलिए केरल के छात्र दीर्घ उ के स्थान पर ह्रस्व उकार लिखते हैं । जैसे -

शब्द	अशुद्ध वर्तनी
अनुकूल	अनुकुल
प्रतिकूल	प्रतिकुल
अमरूद	अमरुद

---

1 हिन्दी [illegible] डा. [illegible]मीनारायण

इस प्रकार की समस्यायें थोडी - सी सावधानी बरतने तथा दोनों के वैषम्य को व्यतिरेकी विश्लेषण के जरिए समझकर दूर की जा सकती है ।

<u>हिन्दी और मलयालम के एकारान्त और उसकी समस्यसयें :-</u>

हिन्दी में एकारान्त एक है - ए । लेकिन मलयालम में दो है - ऍ, ए । दोनों में ये विवृत अथवा अस्पृष्टम् हैं । ये सब घोषी या नादम् है । उच्चारण स्थान की दृष्टि से देखें तो हिन्दी के "ए" कंठ्तालव्य है । मलयालम में ये कंठ्य वर्ण है । मलयालम के ऍ भी कंठ्य है । इसलिए केरल के छात्र ए का कंठ्य वर्ण के समान इस्तेमाल करते है । कभी कभी मलयालम में ए का उच्चारण इ और इ का उच्चारण उ जैसा होता है ।[1] जैसे -

शब्द	अर्थ	उच्चारण	
चेलवॅ	खर्चा	चिलवॅ	
पिरके	पीछे	पुरके	आदि ।

लेकिन हिन्दी में इस तरह का ऍ का ए जैसा उच्चारण नहीं है । इससे मिलता जुलता उच्चारण न होने के कारण इससे कोई समस्यायें उत्पन्न नहीं होतीं ।

---

1. मलयालम व्याकरणवुम् रचनयुम् - [illegible]परम्बिल गोपिनाथन पिल्लै पृ. 19

हिन्दी और मलयाल्म के ऐ और उससे संबन्धित समस्यायें :-

दोनों भाषाओं में ऐ विवृत अथवा अस्पृष्ट्म् है । ऐ दोनों में घोष या नादम् है । हिन्दी के ऐ कंठतालव्य है, बल्कि मलयाल्म के ऐ कंठ्य है । ऐ दीर्घ स्वर है ।

हिन्दी में ऐ का उच्चारण मलयाल्म से कुछ भिन्नता लिए हुए है । तत्सम शब्दों में इसका उच्चारण संस्कृत के समान ही होता है । जैसे - ऐश्वर्य, सदैव आदि में । लेकिन हिन्दी में ऐ बहुधा अय् के समान उच्चरित होता है ।[1] जैसे -

शब्द	उच्चारण	
है	हय्	
मैल	मय्ल्	आदि ।

अर्थात् तत्सम् शब्दों को छोडकर बाकी सब में ऐ का अपूर्ण उच्चारण होता है । लेकिन मलयाल्म में इसका संस्कृत के समान पूर्ण उच्चारण होने के कारण केरल के छात्र इसका पूर्ण उच्चारण करते हैं । इसलिए ऐनक, ऐब आदि में वे पूर्ण उच्चारण करते है, जो बिलकुल ठीक नहीं है ।

हिन्दी और मलयाल्म के ओ कारान्त :-

हिन्दी के ओ और मलयाल्म के ओ॑ और ओ विवृत अथवा अस्पृष्टम् हैं । ये सब घोषी या नादम् हैं । हिन्दी के ओ कंठोष्ठ्य हैं । मलयाल्म के ओ॑ और ओ ओष्ठ्य हैं ।

---

1. [illegible]

इसलिए उच्चारण में थोडा फर्क होता है। इससे उत्पन्न समस्यायें इन दोनों के अन्तर समझने से दूर की जा सकती हैं।

<u>हिन्दी और मलयालम के औ :-</u>

दोनों भाषाओं में औ विवृत या अस्पृष्टम् है। दोनों में यह घोषी या नादम् है। औ हिन्दी में कंठोष्ठ्य है जबकि मलयालम में ओष्ठ्य है। हिन्दी में औ के उच्चारण में कुछ भिन्नता है। तत्सम् शब्दों का उच्चारण संस्कृत के समान पूर्ण होता है। जैसे : पौत्र, कौतुक आदि। लेकिन हिन्दी में "औ" बहुधा "आव्" के समान बोला जाता है।[1] जैसे -

शब्द	उच्चारण
और	आवर
चौथा	चाव्था

चूँकि मलयालम में एक ही उच्चारण ही होता है, इसलिए केरल के छात्र औचित्य, औजार, औषधि आदि शब्दों में औ का पूर्ण उच्चारण करते हैं जो बिलकुल ठीक नहीं है। इस तरह की समस्यायें दोनों के उच्चारण में जो अन्तर है उसे अच्छी तरह समझने से दूर किया जा सकता है।

हिन्दी का विवरणात्‍मक व्याकरण डा. लक्ष्मीनारायण शर्मा पृ.

"ऋ" सम्बन्धी समस्यायें :-

हिन्दी में "ऋ" का उच्चारण "रि" के समान होता है । जैसे -

शब्द	उच्चारण
ऋषि	रिषि
ऋण	रिण
ऋतु	रितु
ऋत्विक	रित्विक आदि ।

लेकिन मलयालम में "ऋ" का उच्चारण संस्कृत के समान ही होता है । इसलिए हिन्दी में भी केरल के छात्र "ऋ" के उच्चारण मलयालम और संस्कृत के समान करते हैं । अतः उनके ऋषि, ऋतु कृष्ण आदि का उच्चारण हिन्दी भाषियों के समान रिषि, रितु, क्रिष्णा जैसा नहीं होता । "ऋ" संबन्धी समस्या भी दोनों में जो उच्चारणगत अन्तर है उसे समझकर प्रयोग करने से दूर की जा सकती है ।

अनुस्वार और अनुनासिक संबन्धी समस्यायें :-

हिन्दी शब्दों के आदि और अन्त में आनेवाले अनुस्वार और अनुनासिक का उच्चारण पूर्ण रूप से नहीं किया जाता । जैसे - आँसू, उँगली आदि में पूर्णानुसार का प्रयोग ज़्यादा है ।

हि[illegible]ी का [illegible]वरणा[illegible] [illegible]व्या [illegible] ड[illegible] [illegible]लक्ष्मा[illegible]नारायण
[illegible] पृ.

इसलिए साँस, हँसी, आऊँ, करें, कहीं, आयी, छोडो आदि में पूर्णानुसार के साथ उच्चारण करते हैं ।

हिन्दी में अन्तस्थ व्यंजन "य" के पूर्व अनुस्वार का उच्चारण 'य' पर बल देकर "ल", "ष" और "स" के पूर्व अनुस्वार का उच्चारण "न" की तरह, व के पूर्व "म" की तरह, "श" के पूर्व "ञ" के जैसे और "ह" के पूर्व "ङ" के समान होता है । लेकिन मलयालम में अनुस्वार का प्रयोग "म्" की तरह ही होता है । इसलिए संयम, संलग्न, संरक्षण, द्रष्टा, संसद, संवेग, संशय, संहार आदि का उच्चारण सम्यम्, सम्लग्न्, सम्रक्षण्, द्रम्ष्टा, सम्सद्, सम्वेग, सम्शय्, सम्हार जैसा करते हैं जो हिन्दी के उच्चारण की दृष्टि से गलत है । इनका उच्चारण क्रमशः सन्यम्, सन्लग्न्, सन्रक्षण्, द्रन्ष्टा, सन्सद्, सन्वेग, सञ्शय्, सङ्हार जैसा होना चाहिए ।

मलयालम में पूर्ण अनुस्वार का प्रयोग अधिक है । हिन्दी में पूर्णानुस्वार को दिखाने के लिए नुक्ता चिह्न लगाते हैं । लेकिन मलयालम में इसप्रकार वर्ण के ऊपर नुक्ता डालकर अनुस्वार का उच्चारण नहीं दिखाने के कारण केरल के छात्र उसे छोडकर लिखते हैं ।

---

1. अनुशीलन डा. एल सुनीत बाई - 73

शब्द	गलत वर्तनी
कहीं	कही
करें	करे
हैं	है
लडकों	लडको

अनुनासिकता को दिखाने के लिए चन्द्र बिन्दी डालने की भी प्रवृत्ति मलयालम में न होने के कारण उसे भी छोडकर लिखते हैं । जैसे -

शब्द	गलत वर्तनी
आँसू	आंसू
उँगली	उंगली
आँख	आंख

<u>हिन्दी और मलयालम के व्यंजनों की उच्चारणगत एवं वर्तनीगत समस्यायें :-</u>

हिन्दी और मलयालम में जो अल्पप्राण और महाप्राण व्यंजन तथा घोष अघोष व्यंजन है, उसके आधार पर इन समस्याओं का विश्लेषण किया जा रहा है ।

<u>अल्पप्राण और महाप्राण संबन्धी समस्यायें :-</u>

वर्गाक्षर का पहला और तीसरा व्यंजन अल्पप्राण है । जैसे क, ग च, ट, ड त, द, , ब आदि ।

वर्णाक्षर का दूसरा और चौथा व्यंजन महाप्राण है । जैसे, ख, घ, छ, झ, ठ, ढ़, ध, फ, भ आदि ।

मलयालम में वर्णाक्षर के महाप्राण रूपी चौथे अक्षर §घोषम§ का उच्चारण § घ, झ, ढ़, ध, भ § महाप्राण रूपी दूसरे अक्षर §अतिखरम्§ के उच्चारण ख, छ, ठ, थ, फ के समान होता है ।[1] इसलिए के. एन. नारायण पिल्लै के अनुसार मेघम् § മേഘം § का उच्चारण मेखम् § മേഖം § जैसा करता है । के. एन. नारायण पिल्लै के अनुसार यह मलयालम की परंपरागत उच्चारण नहीं है । उनकी राय में आधुनिक मलयालम की विशेषता है जोकि भाषा के विकास को सूचित करता है । मलयालम भाषियों के स्वरयंत्र इस उच्चारण के लिए काफी अभ्यस्त रहता है । इस प्रभाव के कारण छात्र इसका उच्चारण भी मलयालम के अनुसार करते हैं जिससे गलतियाँ होती हैं ।

शब्द	उच्चारण
झलना	छलना
पढ़ना	पठना
साध	साथ
आभूषण	आफूषण

मलयालम में कभी कभी महाप्राण ध्वनियों का उच्चारण अल्पप्राण ध्वनियों के रूप में भी किया जाता है ।

---

[1] ना[illegible] पि. - [illegible] [illegible]

जैसे, "खरम्" का उच्चारण "करम्" के रूप में करते हैं । इसका कारण यह है कि द्राविडी ध्वनियों में अल्पप्राण की प्रमुखता है तथा महाप्राण के अल्पप्राणीकरण करने की प्रवृत्ति सहज ही मिलती है ।[1] इसी प्रवृत्ति के कारण केरल के छात्र महाप्राण ध्वनियों का उच्चारण अल्पप्राण ध्वनियों के रूप में करते हैं जिससे गलतियाँ होती है । जैसे -

शब्द	उच्चारण
हाथ	हात
शोध	शोद

जैसे कि पहले बताया गया है कि भाषा भाषी जब हिन्दी शब्दों का उच्चारण करते हैं तब वर्ग के दूसरे अक्षर के स्थान पर चौथे और चौथे के स्थान पर दूसरे का प्रयोग करते हैं । उच्चारण की यह गलती वर्तनी में भी गलतियाँ पैदा करती है । जैसे, झेलने का छेलना, कबूतर का कपूतर आदि ।

जैसे कि पहले बताया गया है कि कभी कभी केरल के छात्र अल्पप्राण के स्थान पर महाप्राण और महाप्राण के स्थान पर अल्पप्राण लिखते हैं । जैसे -

शब्द	गलत वर्तनी
इकट्ठा	इकट्टा
घनिष्ठ	घनिष्ट
[illegible]	सादु
[illegible]	शोद
[illegible]	तुम्हा[illegible]

दोनों भाषाओं के इस अंतर को समझकर प्रयोग करने से इन समस्याओं को दूर किया जा सकता है ।

<u>घोष और अघोष सम्बन्धी समस्यायें</u> :-

दोनों भाषाओं में वर्गाक्षर के पहला और दूसरा व्यंजन तथा ऊष्म वर्ण अघोष हैं और तीसरा, चौथा, पंचम व्यंजन घोष है । अर्थात् क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ और श, ष, स आदि अघोष हैं जबकि ग, घ, ङ. , ज, झ, ञ , ड, ढ़, ण, द, ध, न, ब, भ, म आदि घोष हैं ।

दो स्वरों के बीच अघोष व्यंजन आने से इसका उच्चारण मलयालम में घोष के समान होता है । इसका कारण यह है कि द्रविड परिवार की भाषा होने के नाते मलयालम में द्रविड परिवार की विशेषताएँ बराबर पाई जाती है । उनमें सबसे प्रमुख है घोष वर्णों का अघोष में परिवर्तन ।[1] जैसे अतिशयम का उच्चारण मलयालम में अदिशयम् है । इस तरह के समान शब्दों का उच्चारण करते समय केरल के छात्र इसका प्रयोग अनजाने ही करते हैं । जैसे -

शब्द	उच्चारण
अतिशय	अदिशय
पाताल	पादाल
कुटीर	कुडीर
विचार	विजार

---

1. अनुशीलन डा. [illegible] बाई पृ. 76

शब्दादि में घोष व्यंजन आने से मलयालम में इसका उच्चारण अघोष होता है । जैसे, घनम (ഘനം) का "कन्नम्" । लेकिन हिन्दी में इस तरह का उच्चारण नहीं है । इसलिए केरल के छात्र इसका उच्चारण अघोष के समान करते हैं । जैसे -

शब्द	उच्चारण
घर	कर
धन	थन
ढाई	ठाई
झील	छील

उपर्युक्त उच्चारणगत समस्याओं के कारण केरल के छात्र घोष वर्णों को अघोष वर्णों के रूप में लिखते हैं । जैसे -

शब्द	गलत वर्तनी
अतिशय	अदिशय
कुटीर	कुडीर
पसन्द	पसन्त
साध	साथ
कंपन	कंबन
संतान	संदान
सुगन्ध	सुगन्द

इन समस्याओं का कारण भाषागत प्रवृत्तियों की भिन्नता है । इन दोनों प्रवृत्तियों के व्यतिरेकी अध्ययन से यह दूर सक

"ड़" और "ढ़" सम्बन्धी समस्यायें :-

हिन्दी में "ड़" और "ढ़" के अलावा "ड़" और "ढ़" वर्ण भी मिलता है जिसका उच्चारण करते समय मलयालम भाषा - भाषियों को बहुत कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं । "ड़" और "ढ़" का हिन्दी और मलयालम में मूर्धन्य उच्चारण है । "ड़" और "ढ़" का हिन्दी में द्विस्पृष्ट उच्चारण है ।[1] इसका उच्चारण जिह्वा का अग्र भाग उलटकर मूर्धा में लगाने से होता है । लेकिन इस प्रकार जिह्वा के अग्रभाग उलटकर उच्चारण करने की प्रवृत्ति मलयालम ध्वनियों में नहीं है । इसलिए इन दोनों का उच्चारण केरल के छात्र मूर्धन्य व्यंजनों के समान ही करते हैं ।

"न" के उच्चारण सम्बन्धी समस्यायें :-

हिन्दी में "न" का उच्चारण जीभ का अग्रभाग दाँतों का स्पर्श करने से होता है । लेकिन मलयालम में दो प्रकार से "न" का उच्चारण होता है - दन्त्य और वर्त्स्य । वर्त्स्य "न" कार प्राचीन द्रविड़ भाषा में पाया जाता था । इस ध्वनि को मलयालम भाषा ने स्वीकृत किया है ।[2]

---

1. हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण - डा. लक्ष्मीनारायण शर्मा पृ. 44

2. आधुनिक मलयालम व्याकरणम् - एस. नारायण पिल्लै - पृ.

मलयालम में शब्दों के आदि में दन्त्य "न" का उच्चारण होता है, जैसे, नरन् ‖ नर ‖ और इसका वर्त्स्य उच्चारण शब्दों के अन्त में आने से होता है । जैसे, आना ‖ हाथी ‖ । इसलिए केरल के छात्र शब्दान्त में आनेवाले "न" कार का उच्चारण वर्त्स्य "न" कार जैसे करते हैं । जैसे, रहना, जीना, रोना, जान, तीन आदि का उच्चारण करते समय वर्त्स्य "न" का प्रयोग करते हैं जो सचमुच गलत है ।

"ळ" कार संबन्धी समस्यायें :-

मलयालम में जो "ळ" कार है वह हिन्दी में नहीं है । काड्विल के अनुसार लकार और षकार के संयोग से उत्पन्न वर्ण है "ळ" । ळकार सभी द्रविड भाषाओं में पाई जाती है ।[1] मलयालम में ळकार से युक्त शब्दों के समान रूपी हिन्दी शब्दों का उच्चारण लकार है । लेकिन केरल के छात्र अपनी मातृभाषा की प्रवृत्ति के अनुसार "ल" के बदले "ळ" का ही उच्चारण करते हैं । जैसे, "कोमल" शब्द का उच्चारण "कोमळ्" जैसे ही करते हैं । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं ।

---

1. द्रविड भाषा व्याकरणम् - काड्विल - पृ. 172

शब्द	उच्चारण
काली	काळी
कालिदास	काळिदास
कालिमा	काळिमा
केली	केळी
दल	दळ
ललित	लळित
पाताल	पाताळ
नलिन	नळिन
परिमल	परिमळ
पुलक	पुळक
पिंगल	पिंगळ
वेताल	वेताळ
शकुन्तला	शकुन्तळा
शीतल	शीतळ
सम्मेलन	सम्मेळन
सरल	सरळ

"ज्ञ" सम्बन्धी समस्यायें :-

हिन्दी में "ज्ञ" का उच्चारण "ग्य" के समान है। लेकिन मलयालम में इसका उच्चारण संस्कृत के समान "ज्ञ" ही है। इसलिए केरल के छात्र इसका उच्चारण हिन्दी में भी "ज्ञ" ही करते हैं। जैसे -

गलत उच्चारण	सही उच्चारण
ज्ञान	ग्यान
विज्ञान	विग्यान
अज्ञान	अग्यान
संज्ञा	संग्या

अन्य कुछ समस्यायें :-

1. मलयालम में पूर्ण व्यंजन के आगे आनेवाले "त" का उच्चारण "ल" के समान होता है। लेकिन हिन्दी में "त" व्यंजन के आगे स्वर आते समय "त" का स्वतंत्र उच्चारण होता है। जैसे, उ + त् + स + व् = उत्सव। यहाँ त् के आगे स पूर्ण व्यंजन आया है। तब "त" "ल" के रूप में परिवर्तित होता है। पात (सडक) शब्द को लीजिए - प् + अ + त् + अ के योग से पात शब्द बना है।

"त" के आगे "अ" स्वर आया है । तब वहाँ "त" का उच्चारण "ल" के समान ही है, "ल" जैसा नहीं है । हिन्दी में "त" कार का उच्चारण "लकार" जैसा नहीं है । केरल के छात्र हिन्दी में भी इसका उच्चारण भी लकार जैसा करता है जोकि बिलकुल गलत है । जैसे -

शब्द	उच्चारण
उत्सव	उल्सव्
तत्सम	तल्सम्

इस उच्चारणगत समस्या के कारण केरल के छात्र हिन्दी और मलयालम के इस तरह के समान शब्दों को मलयालम के उच्चारणानुसार लिखते हैं ।

शब्द	गलत वर्तनी
अत्भुत	अल्भुत
सद्गुण	सल्गुण
वत्कल	वल्कल
उत्भव	उल्भव
आत्मा	आल्मा
तत्काल	तल्काल

2. हिन्दी में कभी कभी अन्तिम "ह" का उच्चारण नहीं होता । इसलिए केरल के छात्र ग्यारह, तुम्हारा, वह, यह में जो [illegible]

3. मलयालम में अनुनासिक के बाद आनेवाले प्रथम वर्गाक्षर [खरम्] का उच्चारण तीसरे अक्षर के रूप में [मृदु] होता है। इसलिए केरल के छात्र इस तरह के शब्दों का उच्चारण मलयालम के अनुसार करते हैं और उच्चारण के अनुसार लिखते भी हैं। जैसे -

शब्द	गलत वर्तनी
अंक	अंग
अंत	अंद
कंप	कंब

4. "अ" के बाद "ह" आने से हिन्दी "अ" का उच्चारण "ए" के समान होता है। जैसे "कहना" के उच्चारण "केहना" होता है। पहला का पेहला आदि। लेकिन मलयालम में इस प्रकार की प्रवृत्ति न होने के कारण इसका उच्चारण जैसा लिखा जाता है वैसा ही उच्चारण करते हैं।

5. हिन्दी में फारसी प्रभाव से आयी ध्वनियाँ है क़, ख़, ग़, ड़, ढ़, फ़ आदि। मलयालम में इस प्रकार नीचे नुक्ता डालकर लिखने वाले व्यंजन का नितांत अभाव है। इसलिए केरल के छात्र नुक्ता डाले बिना इसे लिखते हैं। जैसे -

शब्द	गलत वर्तनी
लड़का	लडका
लड़की	लड़की
अनाड़ी	अनाडी
मेंढ़क	मेढक

6. बहुवचन सूचक सानुनासिक स्वर हिन्दी में बहुलता से मिलते है । जैसे, हैं, थीं, चलीं, सुनीं, करेंगी आदि । मलयालम में यह प्रवृत्ति न होने के कारण उसे निरनुनासिक बनाकर लिखते हैं । जैसे, है, थी, चली, सुनी, करेगी आदि जो हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुसार गलत है ।

7. हिन्दी और मलयालम में संयुक्ताक्षर ह्न् और ह्म् का उच्चारण न्ह और म्ह जैसा होने के कारण इसे उच्चारण के अनुसार केरल के छात्र लिखते हैं । जैसे -

शब्द	गलत वर्तनी
मध्याह्न	मध्यान्ह
चिह्न	चिन्ह
ब्राह्मण	ब्राम्हण
ब्रह्म	ब्रम्ह

8. अशुद्ध उच्चारण के कारण कभी कभी शब्दों की वर्तनी का गलत प्रयोग होता है जो अर्थ परिवर्तन का कारण बन जाता । जैसे -

जोडना	-	छोंडना
प्रदान	-	प्रथान
उठना	-	उड़ना
हस	-	हंस

निष्कर्ष :-

ऊपर के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो गया है कि मलयालम भाषा का प्रभाव हिन्दी ध्वनि एवं वर्तनी के अध्ययन में समस्यायें उत्पन्न करता है । यद्यपि दोनों भाषाओं की ध्वनियाँ समान हैं, फिर भी उसका उच्चारण थोडी भिन्नता लिए हुए है । इसी कारण से हिन्दी का उच्चारण करते समय कठिनाइयाँ पायी जाती हैं और इसकी वजह से वर्तनी में गलतियाँ आ जाती हैं । दोनों भाषियों के उच्चारण अवयव अपनी भाषा की ध्वनियों के उच्चारण के लिए काफी अभ्यस्त रहते हैं । इसलिए हिन्दी भाषियों के समान उसका उच्चारण करना काफी कठिन होता है । इसलिए केरल के हिन्दी अध्ययन करने वाले छात्रों को यह काफी समस्यायें पैदा करती हैं । इसलिए दोनों भाषाओं के उच्चारण का तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन करके उच्चारणगत भिन्नताओं से अवगत होने से इन समस्याओं को दूर किया जा सकता है । आधुनिक यंत्रों की सहायता से इन भिन्नताओं का अध्ययन करने से समस्यायें बडी मात्रा में दूर हो सकती हैं ।

तीसरा अध्याय

केरल में हिन्दी अध्ययन की संज्ञा सम्बन्धी समस्यायें

किसी भी वस्तु के विषय में मनुष्य की भावनाएँ कई प्रकार की होती है प्रत्येक भाषा में मनुष्य की हर भावना को व्यक्त करने के लिए विशेष शब्द भी होता है । इन शब्दों को वैयाकरणों ने विभाजित करने का प्रयास किया है । इस प्रकार शब्दों के आठ भेद बने और उसमें प्रथम है - संज्ञा । केरल में हिन्दी अध्ययन की संज्ञा सम्बन्धी समस्याओं और उनके परिहरण के लिए सर्वप्रथम हिन्दी तथा मलयालम में संज्ञा की सामान्य विशेषताओं का विश्लेषण करना होगा ।

संज्ञा की परिभाषा - हिन्दी और मलयालम में

संज्ञा को परिभाषित करने का प्रयास हिन्दी और मलयालम भाषाओं के वैयाकरणों ने किया है । कामता प्रसाद गुरु के अनुसार "संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं जिससे प्रकृत किंवा कल्पित सृष्टि की किसी वस्तु का नाम सुचित हो ।"[1] लक्ष्मीनारायण शर्मा ने इसकी परिभाषा यों की है -"लोक में वर्तमान या कल्पित किसी भी प्राणी, पदार्थ, स्थान, गुण, भाव या कर्म के बोधक विकारी शब्द संज्ञा है ।"[2]

मलयालम में संज्ञा के लिए "नामम्" शब्द प्रयुक्त होता है । केरल पाणिनी के अनुसार "किसी द्रव्य, गुण, क्रिया आदि का नाम ही संज्ञा है ।"[3] एम शेषगिरी प्रभु ने इसकी परिभाषा यों की - "वाक्य में उद्देश्य (कर्ता) और विधेय (कर्म) के रूप में प्रयुक्त शब्द ही "नामम्" हैं ।"[4]

---

1. हिन्दी व्याक[illegible] पृ 56
   हिन्[illegible] का [illegible] प्रात[illegible] व्याकर[illegible] - पृ 203
   केरल[illegible] [illegible]पिनी पृ [illegible]

संज्ञाओं के प्रकार: हिन्दी और मलयालम में

दोनों भाषाओं में संज्ञा के विभिन्न भेद मिलते हैं जिनमें समानता ज्यादा पायी जाती है ।

हिन्दी की संज्ञाएँ

हिन्दी में दो प्रकार की संज्ञाएँ हैं — पदार्थवाचक और जातिवाचक ।

पदार्थवाचक

"जिस संज्ञा से किसी पदार्थ या पदार्थों के समूह का बोध होता है, उसे पदार्थवाचक संज्ञा कहते हैं" - जैसे, राधा, राजा, घोडा आदि ।[1] पदार्थवाचक संज्ञा के दो भेद होते हैं -- व्यक्तिवाचक और जातिवाचक ।

व्यक्तिवाचक

"जिस संज्ञा से किसी एक ही पदार्थ व पदार्थों के एक ही समूह का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं ।"[2] मलयालम में भी इस प्रकार की संज्ञा हैं जिसे "संज्ञा नामम्" कहते हैं । मलयालम के व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में पुल्लिंग शब्द अन् प्रत्यान्त है, स्त्रीलिंग शब्द दीर्घ अकारान्त है और नपुंसक संज्ञा अम् कारान्त है ।

हिन्दी		मलयालम
राम्	-	रामन्
बैंगलूर	-	बैंगलूर
हिमालय	-	हिमालयम्
पुस्तक	-	पुस्तकम् आदि
राधा		राधा

---

1. हिन्दी व्य – ता, गुरु 57

<u>जातिवाचक संज्ञा</u>

"जिस संज्ञा से किसी जाति के सम्पूर्ण पदार्थ या उनके समूह का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।"[1] इस प्रकार की संज्ञाएँ मलयालम में भी है जिसे "सामान्य नामम्" कहते हैं। मलयालम में ज्यादतर जातिवाचक संज्ञाएँ 'अम्' में अन्तहोनेवाली हैं।

जैसे,

हिन्दी	मलयालम
शहर	पट्टणम्
घर	वीट्

<u>भाववाचक संज्ञा</u>

"जिस संज्ञा से पदार्थ में पाए जाने वाले किसी धर्म का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।"[2] मलयालम में इस के लिए "गुणनामम्" कहते हैं। मलयालम की सभी भाववाचक संज्ञाएँ अम् में अन्त होनेवाली हैं। जैसे

हिन्दी	मलयालम
बल	बलम्
क्रोध	क्रोधम्
बूढ़ापा	वार्धक्यम् आदि।

हिन्दी की भाववाचक संज्ञाएँ तीन प्रकार के शब्दों से बनती हैं -

1 <u>जातिवाचक संज्ञा से</u>

जैसे - बुढा (वृद्धन) - बूढापा (वार्धक्यम)
मित्र (मित्रं) - मित्रता (मैत्रि)

---

1. हिन्दी व्याकरण - कामताप्रसाद गुरु - पृ 58
2. प. [illegible] पृ - [illegible]

विशेषण से

गरम (चूड) — गर्मी (चूड्)
कठोर (कठोरम्) — कठोरता

क्रिया से

घबराना (परिभ्रमिक्कुका) - घबराहट (परिभ्रमम्)
दौड़ना (ओटुका) - दौड (ओट्टम्)

मलयालम की संज्ञाएँ

मलयालम में चार प्रकार की संज्ञाएँ है - द्रव्यनाम , गुणनामम्, क्रियानामम्, सर्वनाम ।

द्रव्यनामम्

यह हिन्दी की पदार्थवाचक संज्ञा है । किसी मूर्त पदार्थ या व्यक्ति का नाम द्रव्यनामम् है । [1] केरल पाणिनी और शेषगिरी प्रभु ने इसे द्रव्यों को सूचित करनेवाली संज्ञा कहा है । [2] जैसे - पेना (कलम), वस्त्रम् (कपडा), मला (पहाड), नदी आदि । इसके चार भेद होते हैं - संज्ञानामम्, सामान्यनामम्, मेयनामम् ।

संज्ञानामम्

किसी प्रत्येक व्यक्ति या वस्तु को सूचित करनेवाली संज्ञा संज्ञानामम् है । [3]

---

1. आधुनिक मल लम व्या रणम् कें. एस. नारायण पिल्लै -पृ. 2
2. केर णिनी केर णिनी· पृ. 142 और व्याकरणमित्रम्
कि पे

सामान्यनामम्

किसी जाति की वस्तुओं और व्यक्तियों को सूचित करने वाली संज्ञा सामान्यनामम् है ।[1] जैसे मृगम् §पशु§, राज्यम् §राज्य§ । यह हिन्दी की जातिवाचक संज्ञा है ।

मेयनामम्

जिस संज्ञा से किसी वस्तु या पदार्थ की जाति या व्यक्ति का बोध नहीं होता, उसे मेयनामम् कहते हैं ।[2] मलयालम की अचेतन वस्तुएँ इसके अन्तर्गत आती हैं । जैसे पालु §दूध§, वेल्लम् §जल§, वायु आदि । हिन्दी में इसका समानार्थी विभाजन नहीं है ।

गुणनाम

जिससे किसी वस्तु के गुण का बोध होता है, उसे गुणनामम् कहते हैं ।[3] जैसे, वेलुप्प् §सफेद§, धैर्यम् §धैर्य§, तिन्मा §बुराई§ आदि । यह हिन्दी की भाववाचक संज्ञा है ।

क्रियानामम्

किसी क्रिया की द्योतक संज्ञा क्रियानाम है ।[4] जैसे, वरव् §आना§, उरक्कं §सोना§ आदि । यह हिन्दी की क्रियार्थक संज्ञा है जो संज्ञा के विभाजन के अन्तर नहीं आता । हिन्दी में इसका विवेचन क्रिया के अंतर्गत किया गया है ।

---

1. केरल पाणिनीयम् - पृ. 142
2. वही पृ. 1 3
   वही पृ.
   वही

सर्वनाम

किसी संज्ञा के बदले में आनेवाले शब्द सर्वनाम है ।[1] जैसे अवन् {वह}, अवळ् {वह} । हिन्दी में यह संज्ञा का भेद नहीं है । इसका विवेचन अगले अध्याय में अलग से किया जा रहा है ।

हिन्दी और मलयालम संज्ञाओं से संबन्धित विशेष बातें

हिन्दी और मलयालम में कुछ समान रूपी संज्ञाएँ हैं । कभी कभी इसका अर्थ भिन्न होता है और कभी कभी समान अर्थ में भी प्रयुक्त होता है । हिन्दी और मलयालम में प्रयुक्त होनेवाली संज्ञायें केरल में छात्रों केलिए समस्यायें खडी करती हैं । केरल के छात्र मलयालम में प्रयुक्त अर्थों में इसका प्रयोग करते हैं । इसलिए उसकी एक सूची तैयार करना आवश्यक प्रतीत होता है ।

समान अर्थ में प्रयुक्त होनेवाली संज्ञाएँ

हिन्दी और मलयालम में समानार्थवाली कुछ संज्ञायें हैं जो कुछ ध्वन्यात्मक अन्तरों के साथ दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होता हैं । जैसेः-

---

1. केरल पाणिनीयम् - पृ 143

हिन्दी	मलयालम
असल	असल्
अवसर	अवसरम्
अशुद्ध	अशुद्धम
अमानत	अमानत्
अन्तर	अन्तरम्
कचहरी	कच्चेरी
कसरत	कसर्त
काली	काली
खत्	कत्त्
टोपी	तॊप्पि

हिन्दी और मलयालम में समान रूपी भिन्नार्थक संज्ञाएँ

हिन्दी और मलयालम में कुछ संज्ञाएँ ऐसी हैं जिनका अर्थ दोनों भाषाओं में भिन्न भिन्न होता है । जैसे,

	हिन्दी शब्द	हिन्दी अर्थ	मलयालम शब्द	मलयालम अर्थ
1.	अनुवाद	तर्जमा	अनुवादम	अनुमति
2.	आराम	विश्राम	आरामम्	बगीचा
3.	आलोचना	समीक्षा	आलोचना	विचार
4.	अवकाश	समय	अवकाशम्	अधिकार
5.	उपन्यास	उपन्यास	उपन्यासम्	निबन्ध
[illegible]	चरित्र	स्वभाव	चरित्रम्	इतिहास
7.	प्रसंग	सन्दर्भ	[illegible]	भाषण
	[illegible]	[illegible]		

	हिन्दी शब्द	हिन्दी अर्थ	मलयालम शब्द	मलयालम अर्थ
10.	संसार	दुनिया	संसारम्	बोलना
11.	सम्मान	आदर	सम्मानम्	पुरस्कार
12.	कल्याण	मंगल	कल्याणम्	शादी
13.	उद्योग	धंधा	उद्योगम्	नौकरी
14.	यजमान	यज्ञ करने वाला	यजमानन्	मालिक
15.	समाज	समूह	समाजम्	सभा
16.	संगति	संग	संगति	विषय
17.	सावधान	सतर्क	सावधान	धीरे
18.	संभावना	मुमकिन होना	संभावना	उपहार
19.	मत	निषेधार्थ. सूचक शब्द	मतम्	धर्म
20.	चीता	एक जानवर का नाम	चीता	बुराई
21.	क्षेत्र	स्थान	क्षेत्रम्	मंदिर
22.	पायल	नूपुर	पायल	काई
23.	कलम	लेखनी	कलम	पकाने का बर्तन
24.	प्रयास	परिश्रम	प्रयासम्	कठिन
25.	नाक	नासिका	नाक्कु	जीभ
26.	वासना	विकार	वासना	खुशबु
27.	तीर	बाण	तीरम्	तट
28.	[illegible]बन्ध	व्यवस्थ[illegible]	प्र[illegible]न्धम्	निबन्ध
29.	[illegible]त्येक	हर ए[illegible]	[illegible]कम्	खास

<u>संज्ञा शब्द सम्बन्धी समस्यायें</u>

हिन्दी और मलयालम में प्रयुक्त होनेवाली समान रूपी भिन्नार्थक संज्ञाओं का प्रयोग करते समय मलयालम भाषा-भाषी उन्हें अपनी भाषा में जिस अर्थ में प्रयुक्त करते हैं, उसी अर्थ में हिन्दी में लाते हैं । जैसे "चरित्र" शब्द हिन्दी में है जिसका अर्थ है "स्वभाव" । मलयालम में भी "चरित्रम्" शब्द चलता है जिसका अर्थ है "इतिहास" । मलयालम भाषा भाषी अक्सर मलयालम के अर्थ में इसका प्रयोग करते हैं । जैसे,

"केरल के चरित्र में ऐसी कई प्रमुख घटनाओं का उल्लेख है ।" मलयालम के अर्थ से अवगत केरल के छात्र ने "चरित्र" शब्द का प्रयोग अपनी भाषा में प्रयुक्त अर्थ में किया है जो गलत है । सही वाक्य होना चाहिए - केरल के इतिहास में ऐसी कई घटनाओं का उल्लेख है । इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं ।

1. हिन्दी गद्य के विकास में पेमचंद की संभावना अमूल्य है । (अशुद्ध)
   हिन्दी गद्य के विकास में प्रेमचंद की देन अमूल्य है ।
2. विष्णु प्रभाकर जी देश विदेश में संचार करके अपनी रचना केलिए सामग्री इकट्टा करते थे । (अशुद्ध)
   विष्णु प्रभाकर जी देश-विदेश की यात्रा करके अपनी रचना केलिए सामग्री इकट्टा करते थे । (शुद्ध)
3. प्रेमचन्द के साहित्य के परिभाषा अनेक भाषाओं में हुए हैं । (अशुद्ध)

प्रेमचन्द के साहित्य के अनुवाद अनेक भाषाओं में हुए हैं । §शुद्ध§

<u>संज्ञा की व्याकरणिक कोटियाँ - लिंग, वचन और कारक</u>

चूँकि संज्ञा विकारी शब्द है, इसलिए अलग अलग अर्थ सूचित करने के लिए संज्ञा शब्दों के रूपान्तर किये जाते हैं । संज्ञा शब्दों के रूपान्तर लिंग, वचन और कारक के कारण होते हैं । इन्हें संज्ञा की व्याकरणिक कोटियाँ कहते हैं । लड़का शब्द जातिवाचक संज्ञा है । निम्नलिखित वाक्यों में इसका रूपान्तर देखा जा सकता है ।

<u>हिन्दी</u>	<u>मलयालम</u>
लड़का जाता है ।	आण्कुट्टि पोकुन्नु
लड़के जाते हैं ।	आण्कुट्टिकल् पोकुन्नु ।
लड़की जाती है ।	पेण्कुट्टि पोकुन्नु ।
लड़कियाँ जाती हैं ।	पेण्कुट्टिकल् पोकुन्नु ।
लड़के को जाना है ।	आण्कुट्टिक्कु पोकणम् ।
लड़कों को जाना है ।	आण्कुट्टिकलक्कु पोकणम् ।
लड़की को जाना है ।	पेण्कुट्टिक्कु पोकणम् ।
लड़कियों को जाना है ।	पेण्कुट्टिकलक्कु पोकणम् ।

लड़का/आण्कुट्टि संज्ञा के ये रूपान्तर लड़के, लड़की, लड़कियाँ, लड़के को, लड़कों को, लड़की को, लड़कियों को - §मलयालम में आण्कुट्टिकल्, पेण्कुट्टि, पेण्कुट्टिकल्, आण्कुट्टिक्कु, आण्कुट्टिकलक्कु, पेण्कुट्टिक्कु, पेण्कुट्टिकलक्कु§ लिंग, वचन, कारक के आधार पर होते हैं ।

लिंग के आधार पर "लडका" §मलयालम में आण्कुट्टि§ संज्ञा का जब रूपान्तर होता है तब "लडका" §मलयालम में आण्कुट्टि§ पुल्लिंग शब्द का स्त्रीलिंग रूप "लडकी" §मलयालम में पेण्कुट्टि§ हो जाता है ।

वचन की दृष्टि से लडका §मलयालम में आण्कुट्टि§ एकवचन है तो उसका बहुवचन रूप "लडके" §आण्कुट्टिकल§ होगा। लडकी §पेण्कुट्टि§ एकवचन है तो लडकियाँ §पेण्कुट्टिकल§ बहुवचन रूप हैं ।

कारक के आधार पर विभक्तियाँ जोडकर शब्दों में अनेक परिवर्तन किये जाते हैं । संज्ञा शब्द में जब विभक्तियाँ जुडती है तभी वाक्य में व्याकरणिक संबन्ध स्पष्ट होते हैं । विभक्तियों के द्वारा ही पद रचनायें होती हैं । संज्ञा पदों के साथ जुडकर विभक्तियाँ वाक्य को भिन्न भिन्न अर्थ प्रदान करती है । जैसे,

1. लडके ने पुस्तक पढी । §हिन्दी§
   आण्कुट्टि पुस्तकम् वायिच्चु । §मलयालम§
2. लडके से हमने पुस्तक ली । §हिन्दी§
   आण्कुट्टियिल निन्नुं ञङळ् पुस्तकम् एडुत्तु । §मलयालम§
3. लडके को जाना है । §हिन्दी§
   आण्कुट्टिक्कु पोकणम् । §मलयालम§
4. लडके में कई बुराई हैं । §हिन्दी§
   आण्कुट्टियिल पल चीत्तत्तरङ्ङम उण्ड् । §मलयालम§ ×
5. लडके पर भरोसा रखो । §हिन्दी§
   आण्कुट्टियिल विश्वसिक्कू । §मलयालम§ आदि वाक्यों

में संज्ञा पद भिन्न भिन्न अर्थों का बोध कराते हैं । पद समूहों को [illegible] पर [illegible] रूप [illegible] लिंग [illegible], वचन और

कारक का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है । आगे दोनों भाषाओं के लिंग, वचन और कारक का तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन करके उससे होनेवाली समस्याओं का विश्लेषण किया जा रहा है ।

संज्ञा की लिंग संबन्धी समस्यायें

लिंग एक व्याकरणिक कोटी है जो संज्ञाओं में व्यापक रूप से पाया जाता है । संज्ञाओं के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु की जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं । प्राणत्व के आधार पर संसार की वस्तुओं के दो विभाग बन सकते हैं- चेतन और अचेतन । अचेतन वस्तुओं में वंशवृद्धि की शक्ति रखनेवाला अवयव लिंग नहीं होता । अतः वास्तव में पुंसत्व न होने के कारण जड वस्तुएँ नपुंसक होती हैं । चेतन वस्तुओं में लिंग के अनुसार पुरुष और स्त्री का अस्तित्व माना गया है । इसी आधार पर संसार की कुछ भाषाओं में तीन लिंग प्रचलित है - (जैसे संस्कृत, मराठी आदि) जबकि हिन्दी जैसी भाषाओं में सिर्फ दो ही लिंग हैं । पं. कामदा प्रसाद गुरु के अनुसार, "संज्ञा के जिस रूप से वस्तु की (पुरुष या स्त्री) जाति का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं ।[1] केरल पाणिनी कृत मलयालम व्याकरण में दी गई परिभाषा इस प्रकार है - "संसार में पुरुष, स्त्री, नपुंसक नाम से अभिहित विभाग को ही भाषा में लिंग कहते हैं ।"[2]

हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद पृ.

केरलपाणिनीयम्: केरलपाणिनी, 160

कामताप्रसाद और केरलपाणिनी दोनों ने भिन्न ढंग से एक ही बात को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है । चूँकि हिन्दी में नपुंसक लिंग नहीं है, इसलिए कामताप्रसाद नपुंसक लिंग के बारे में मौन है । मलयालम में नपुंसक लिंग चलता है, इसलिए केरल पाणिनी ने नपुंसक लिंग को भी जोड दिया है । संज्ञा की लिंग संबन्धी समस्याओं के विश्लेषण और उसके परिहरण केलिए उसकी स्वरूप का विश्लेषण करना होगा ।

<u>हिन्दी और मलयालम लिंग व्यवस्था का स्वरूप</u> :-

हिन्दी में लिंग दो ही हैं - पुल्लिंग और स्त्रीलिंग । हिन्दी में नपुंसक लिंग नहीं होता । प्राणिवाचक संज्ञाओं में पुरुष बोधक शब्द पुल्लिंग और स्त्रीबोधक स्त्रीलिंग हैं । जैसे, लडका, पिता, नौकर, बेटा, सुनार, देवर, पंडित, बूढ़ा आदि पुल्लिंग हैं, जबकि लडकी, माता, नौकरानी, बेटी, सुनारिन, देवरानी, पंडिताइन, बुढ़िया आदि स्त्रीलिंग । अप्राणिवाचक शब्द रूप या अर्थ के अनुसार पुल्लिंग या स्त्रीलिंग माने जाते हैं । जैसे, पानी, फूल, कमरा, दही, मकान, चावल, केला आदि पुल्लिंग है जबकि नदी, साडी, सडक, किताब, तस्वीर, कविता आदि स्त्रीलिंग है । मलयालम में तीन लिंग हैं । सचेतन संज्ञा पुरुष के अर्थ में हो तो पुल्लिंग और स्त्रीबोधक हो तो स्त्रीलिंग । जैसे, केमन् (होशियार आदमी), कल्लन् (चोर), कुमारन् (कुमार), मटियन् (आलस) आदि पुल्लिंग हैं । लेकिन केमत्ति (होशियार औरत), कल्ली (चोरी करनेवाली), कुमारी ([illegible]) [illegible] मटिच्ची (आलसी [illegible]) आदि स्त्रीलिंग हैं ।

[illegible] नपुंसक लिंग में [illegible]

जैसे - कळ्ळम् (झूठ), मरम् (पेड), कसेरा (कुर्सी), मेश (मेज़) आदि । अतः मलयालम में लिंग निर्णय शब्द के अनुसार नहीं अर्थ के अनुसार किया जाता है । कभी कभी दोनों भाषाओं में लोकव्यवहार के आधार भी लिंग निर्णय करना पडता है । कई देवी - देवताओं के संकल्प के आधार पर सामान्य लोगों के बीच में जिन शब्दों का प्रयोग होता रहा है, वे शब्द इसी आधार पर पुल्लिंग या स्त्रीलिंग निर्धारित किये गये हैं । जैसे -

	हिन्दी	मलयालम
पुल्लिंग	सूर्य	सूर्यन्
	चन्द्र	चन्द्रन्
स्त्रीलिंग	धरती	धरणी
	भूमि	भूमि

हिन्दी में एक ही अर्थ को सूचित करनेवाले दो शब्दों में एक शब्द पुल्लिंग है तो दूसरा स्त्रीलिंग हो सकता है । जैसे - रास्ता पुल्लिंग है तो राह स्त्रीलिंग है । दाम पुल्लिंग है तो कीमत स्त्रीलिंग है । प्राण पुल्लिंग है तो जान स्त्रीलिंग है । "वाणी" स्त्रीलिंग है तो "वचन" पुल्लिंग है । "पुस्तक" स्त्रीलिंग शब्द है तो "ग्रन्थ" पुल्लिंग है ।

हिन्दी में एक ही शब्द को पुल्लिंग में प्रयोग करने पर एक अर्थ और स्त्रीलिंग में प्रयोग करने पर दूसरा अर्थ होता है । जैसे - "हार" स्त्रीलिंग है तो अर्थ होता है "पराजय" और पुल्लिंग है तो "माला" । इस प्रकार के शब्द हैं - "जड" (मूर्ख और मूल), "नाक" (स्वर्ग और नासिका) आदि । एक ही अन्तवाले शब्द हिन्दी में भिन्न लिंगों में प्रयुक्त हैं । जैसे - बात (स्त्री), शरबत (पु), कोशिश (स्त्री), होश (पु), आस (स्त्री), मास (पु) लेकिन मलयालम में इस प्रकार के सभी शब्द नपुंसक माने जाते हैं । हिन्दी में कुछ शब्द उभयलिंग हैं । जैसे - पवन, सन्तान, सामर्थ्य आदि । मलयालम में ऐसा नहीं है । हिन्दी और मलयालम के समान रूपी शब्द एक भाषा में एक लिंग में प्रयुक्त है तो दूसरी भाषा में अन्य लिंग में । जैसे - "आत्मा" मलयालम में पुल्लिंग संज्ञा है जबकि हिन्दी में स्त्रीलिंग है । उसी प्रकार के कुछ शब्द हैं -

मलयालम में	हिन्दी में
देहम् (नपुंसक लिंग)	देह (स्त्रीलिंग)
वचनम् (नपुंसक लिंग)	वचन (पुल्लिंग)

मलयालम में विशेष ज्ञान रखने वाले जीव, मनुष्य, देवता, पालतू जानवर आदि में स्त्री - पुरुष भेद किया जाता है । जैसे, काळा (बैल) पुल्लिंग है और पशु (गाय) स्त्रीलिंग है । अन्य पशु-पक्षी और छोटे बच्चे नपुंसक माने जाते हैं । हिन्दी में नपुंसक लिंग न होने के कारण यह सुविधा नहीं है । हिन्दी में "मोर", "कोयल" आदि शब्दों में नर या मादा जोडकर लिंग बोध कराते हैं । वैसे मलयालम में "आण्" और "पेण्" शब्द जोडे जाते हैं । जैसे - आण्कुट्टि (लडका), पेण्कुट्टि (लडकी) आदि । दोनों भाषाओं में संस्कृत शब्दों का स्त्रीलिंग रूप संस्कृत के अनुसार ही है - जैसे, विद्वान- विदुषि, राजा - रानी आदि । हिन्दी में लिंग के अनुसार क्रिया में परिवर्तन होता है, मगर मलयालम में लिंग के अनुसार क्रिया में रूपान्तर नहीं होता । मलयालम में "अन्" पुल्लिंग का "इ" या "अळ्" स्त्रीलिंग का और "अं" नपुंसक लिंग का प्रत्यय है । जैसे, कळ्ळन (चोर) मकन् (बेटा), तटियन् (मोटा व्यक्ति) आदि पुल्लिंग है, कळ्ळी (चोरी करनेवाली), मकळ् (बेटी) स्त्रीलिंग तथा कळ्ळं (झूठ), मरं (पेड) जैसे शब्द नपुंसक हैं । मगर हिन्दी में लिंग प्रत्यय नहीं है । कुछ पुल्लिंग शब्दों का स्त्रीलिंग रूप बनाने केलिए कुछ प्रत्यय अवश्य हैं । सामान्यतया "इ", "इया", "इन", "नी" और "आनी" हिन्दी के स्त्री प्रत्यय हैं । जैसे, सुन्दरी, गुडिया, भवानी, पूजारिन आदि ।

<u>हिन्दी और मलयालम के लिंग निर्धारण</u>

हि[illegible] में अप्राणिवाचक [illegible] द रूप [illegible] लि[illegible]
[illegible] जाते

हिन्दी में लिंग निर्णय के बारे में कोई निश्चित नियम नहीं है। कुछ नियम अवश्य हैं, लेकिन जितने नियम हैं उतने अपवाद भी हैं। इसलिए हिन्दी में शब्दों का लिंग निर्णय करना कठिन है। मलयालम में लिंग निर्णय बहुत ही सरल कार्य है। इसका पहला कारण यह है कि मलयालम में शब्दों के स्वरूप से ही स्त्री, पुरुष और नपुंसक लिंग का पता चलता है। उसके साथ अलग अलग लिंग प्रत्यय जुड़े रहते हैं। जैसे, पुल्लिंग के साथ अन् (बालन्, रामन् आदि), स्त्रीलिंग के साथ इ या अळ् (कळ्ळी, मकळ्) और नपुंसक के साथ अं प्रत्यय (मरं) जुड़े रहते हैं। दूसरा कारण यह है कि मलयालम में लिंग निर्णय का आधार विशेष बुद्धि है।[1] यदि विशेष बुद्धि का अभाव किसी में दिखाई पडे तो वह लिंग के अनुसार नपुंसक मान लिया जायेगा। तीसरा कारण यह है कि हिन्दी की भाँति मलयालम में कभी कर्ता के लिंग के अनुसार क्रिया पदों में परिवर्तन नहीं होता। जैसे, आण्कुट्टिकळ् पाडुन्नु। (लड़के गाते हैं।), पेण्कुट्टिकळ् पाडुन्नु (लड़कियाँ गाती हैं।)। इसका अर्थ यह है कि लिंग के अनिश्चय के कारण कभी मलयालम की वाक्य-रचना अशुद्ध नहीं होती।

हिन्दी में जडवाचक संज्ञाओं का लिंग निर्णय शब्द के अर्थ, उसका रूप या लोक व्यवहार के आधार पर होता है।

---

1. केरळपाणिनीयम् ए.आर. राजराजवर्मा - पृ. 149

मलयालम में शब्दों का लिंग निर्णय मूलत: अर्थ के आधार पर होता है । कभी कभी रूप और लोक व्यवहार से ही लिंग निर्णय संभव है ।

अर्थ के आधार पर लिंग निर्णय :-

दोनों भाषाओं में अर्थ के आधार पर लिंग निर्णय संभव है । ग्रह, उपग्रह व तारों के नाम हिन्दी में पुल्लिंग है । लेकिन मलयालम में वे मूलत: नपुंसक शब्द हैं, फिर भी इन्हें देवता सूचक शब्दों के रूप में प्रयोग करने से ये शब्द पुल्लिंग बन जाते हैं । जैसे, सूर्य, चन्द्र, मंगल, ध्रुव आदि । लेकिन पृथ्वी दोनों भाषाओं में अपवाद है । दोनों में स्त्रीलिंग है ।

सभी धातुयें जैसे, लोहा, सोना, पीतल आदि हिन्दी में पुल्लिंग हैं । लेकिन मलयालम में सभी धातुएँ नपुंसक लिंग में प्रयुक्त होती हैं । जैसे, स्वर्णम् ‖ सोना ‖, इरुम्बु ‖ लोहा ‖, पिच्चला ‖ पीतल ‖ आदि । लेकिन चाँदी शब्द हिन्दी में अपवाद है, इसलिए स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है ।

पर्वतों तथा समुद्रों का नाम हिन्दी में पुल्लिंग हैं जबकि मलयालम में नपुंसक लिंगमेंप्रयुक्त होता है । हिमालय, विन्ध्याचल, काला सागर, अरब सागर आदि इसके उदाहरण हैं ।

---

1. व्याकरणमित्रम् भारिप्रम पृष्ठ सं या 101

रत्नों तथा मणियों के नाम हिन्दी में पुल्लिंग है । जैसे, हीरा, पुखराज, नीलम्, नीलमणि आदि । मलयालम में ये सब नपुंसक लिंग हैं । वैरम् (हीरा), पुष्यरागम (पुखराज), इन्द्रनीलम् (नीलम्) आदि मलयालम में प्रयुक्त रत्नों व मणियों के नाम हैं जो नपुंसक लिंग की श्रेणी में आते हैं ।

तरल द्रव पदार्थों का नाम हिन्दी में पुल्लिंग है । जैसे, पानी, घी, दही, दूध आदि । मलयालम में ये नपुंसक हैं । जैसे, जलम् (पानी), नेय्यें (घी), तैरें (दही), पालें (दूध) आदि ।

नदियों के नाम हिन्दी में स्त्रीलिंग है । जैसे, गंगा, यमुना, सरस्वती आदि । मलयालम में भी इन्हें स्त्रीलिंग मानकर प्रयुक्त किया जाता है । लेकिन हिन्दी में "सिन्धु" तथा "ब्रह्मपुत्र" पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है ।

पेडों तथा अनाजों के नाम हिन्दी में पुल्लिंग तथा मलयालम में नपुंसक लिंग में हैं । जैसे, गेहूँ, चावल आदि पुल्लिंग हैं जबकि "अरहर", "दाल" जैसे शब्द स्त्रीलिंग हैं । मलयालम के गोतम्बु (गेहूँ), अरि (चावल), तुवर (अरहर), परिप्पें (दाल) आदि नपुंसक हैं । नारियल, आम आदि शब्द पुल्लिंग है । लेकिन "इमली" इसका अपवाद है । तेङ.ङ. (नारियल) मावें (आम) आदि मलयालम के शब्द नपुंसक हैं ।

रूप आधार पर लिंग निर्णय

[illegible]

मलयालम में "अन्" से अन्त होने वाले शब्द पुल्लिंग है । जैसे, वेटन् ॥ शिकारी ॥, अध्यापकन् ॥ अध्यापक ॥ आदि । "इ" या अळ् से अन्त होने वाले शब्द स्त्रीलिंग है । जैसे, तटिच्ची ॥ मोटी लड़की ॥, कळ्ळी ॥ चोरी करने वाली ॥ आदि । "अं" से अन्त होनेवाले शब्द नपुंसक हैं । जैसे, कळ्ळं ॥ झूठ ॥, मरं आदि ।

हिन्दी में भी रूप के आधार पर लिंग निर्णय किया जा सकता है । "अ" और "आ" में अन्त होने वाले शब्द पुल्लिंग है । जैसे, घर, फूल, कपड़ा, जूता, पेड़, फल, कमरा आदि । लेकिन कुछ इसके अपवाद हैं । जैसे, किताब, जगह, बात, हवा, कलम, आँख, चाय, दवा, मेज़, चीज़, सज़ा, दुनिया आदि । "इ" और "ई" से अन्त होने वाले शब्द स्त्रीलिंग हैं । जैसे, जाति, विधि, नदी, रोटी, रीति, शक्ति, घड़ी, कुर्सी आदि । लेकिन पानी, मोती, दही, घी आदि पुल्लिंग हैं । "ना", "आव", "पन", "पा" आदि में अन्त होनेवाले शब्द पुल्लिंग हैं । जैसे, गाना, चुनाव, चढ़ाव, बचपन, बड़पन, बुढ़ापा आदि । ता, आई, हट, वट आदि स्त्रीलिंग हैं । जैसे, चतुरता, भलाई, पढ़ाई, घबराहट, लिखावट आदि । "इया", "इन", "नी", "आन", "आइन" आदि से अन्त होनेवाले शब्द स्त्रीलिंग हैं । जैसे, कुत्तिया, मालिन्, ऊँटनि, मोरनी, देवरानी, पंडिताइन आदि स्त्रीलिंग हैं ।

<u>लोक व्यवहार के आधार पर :-</u>

कुछ शब्द भी ऐसे होते हैं जिनका लिंग लोक व्यवहार से निश्चित किया जा सकता है ।

पुस्तक, किताब, ग्रन्थ आदि हिन्दी के शब्द हैं जिनका लिंग निर्धारण व्यवहार के आधार पर निश्चित किया जा सकता है । मलयालम में भी यत्र - तत्र लोक व्यवहार के आधार पर लिंग का पता लगाया जा सकता है । जैसे, भूमि, सूर्य, चन्द्र जैसे शब्द देवि - देवताओं केलिए प्रयुक्त होने के कारण इसका लिंग व्यवहार से ही जाना जा सकता है ।

इस प्रकार दोनों भाषाओं की लिंग व्यवस्था और निर्धारण पर सूक्ष्म दृष्टि डालने से पता चलता है कि दोनों भाषाओं के लिंग सम्बन्धी बातों में साम्य तथा वैषम्य है । वैषम्य ज़्यादा होने के कारण केरल के छात्र हिन्दी पढ़ते समय कई प्रकार की गलतियाँ कर बैठते हैं ।

<u>लिंग सम्बन्धी समस्याओं का विश्लेषण :-</u>

हिन्दी के लिंग निर्धारण और उसके प्रयोग में केरल के छात्र और छात्राओं को अकसर कठिनाई महसूस होती है । क्योंकि हिन्दी में लिंग भेद का ठीक ज्ञान व्यवहार से ही जाना जा सकता है । आये दिन लिखते वक्त हमारी कलम अक्सर रुक जाती है और शब्दकोशों को उलट - पलटकर हमें किसी शब्द - विशेष के लिंग के बारे में आस्वस्थ होना पड़ता है । कभी कभी शब्दकोश भी ठीक समाधान नहीं कर पाते । क्योंकि भिन्न भिन्न शब्दकोशों में एक ही शब्द के भिन्न भिन्न लिंग पाये जाते हैं । अतः केरल के छात्र - छात्राओं के सामने हिन्दी के लिंग सम्बन्धी अनेक समस्यायें हैं जिन्हें सुविधा के [illegible] निम्नलिखित [illegible] में [illegible] किया जा सकता है ।

समान रूपी भिन्नार्थी शब्दों के लिंग निर्णय की समस्या :-

हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं । उदाहरण केलिए "जड़" शब्द है जिसके दो अर्थ हैं - मूर्ख और मूल । प्रथम अर्थ में वह पुल्लिंग के रूप में प्रयुक्त होता है तो दूसरे में स्त्रीलिंग । इस तरह के शब्दों का अध्ययन करनेवाले छात्र पहले जिस अर्थ और लिंग से अवगत होता है उसका प्रयोग हमेशा करता रहता है चाहे वह दूसरे अर्थ और लिंग से परिचित हो या नहीं । मलयालम में भी यही शब्द चलता है - जड़म् । यहाँ पर वह नपुंसक लिंग है और उसका अर्थ हिन्दी शब्द के अर्थ बिलकुल भिन्न है । अपनी मातृभाषा में निरंतर नपुंसक लिंग एवं भिन्नार्थ में प्रयोग करने की आदत के कारण केरल के विद्यार्थी इस शब्द के प्रयोग में व्याकरणिक दृष्टि से गलती कर बैठते हैं । जैसे, "उसका जड़ मिट्टी की गहराई में उतर गया है ।" यहाँ "जड़" का प्रयोग पुल्लिंग में किया गया है जबकि प्रयोग होना चाहिए स्त्रीलिंग में ।

"परीक्षा में उनका हार हो गया" या "लड़ाई में उनका हार हो गया" जैसे वाक्यों में हार शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त हुआ है जो गलत है । मलयालम में भी यही शब्द चलता है - "हारं" जिसका अर्थ है माला जो नपुंसक है । अपनी भाषा में इसका निरंतर प्रयोग नई भाषा में, हिन्दी में इसके गलत प्रयोग की प्रेरणा विद्यार्थी को देता है । वह इस भ्रम में पड़ जाता है कि "हार" का लिंग क्या लिखा जाय । फलस्वरूप पुल्लिंग सामने आता है और प्रयोग का अर्थ [illegible] जा[illegible] है । [illegible]स प्रकार की सम[illegible]ाओं [illegible] हल सि[illegible] प्रयो[illegible] [illegible]र अ[illegible]ास के [illegible] [illegible]ही [illegible] सक[illegible] है ।

इस प्रकार के कई और शब्द है -

	हिन्दी	मलयालम
पुल्लिंग	नाक (स्वर्ग)	नाकम् (स्वर्ग - नपुंसक लिंग)
स्त्रीलिंग	नाक (नासिका)	
पुल्लिंग	जोड़ (योग)	समान शब्द नहीं है।
स्त्रीलिंग	जोड़ (मुकाबिला)	
पुल्लिंग	धूप (अगर)	धूपम् (नपुंसक)
स्त्रीलिंग	धूप (सूर्य का प्रकाश)	
स्त्रीलिंग	शाल (दुपट्टा)	शाल (नपुंसक)
पुल्लिंग	शाल (वृक्ष विशेष)	
पुल्लिंग	टीका (हिन्दी)	समान शब्द नहीं है।
स्त्रीलिंग	टीका (टिप्पणी)	

समानार्थी भिन्न शब्दों की व्याख्या :-

[illegible]

इसलिए इन शब्दों का प्रयोग करते वक्त केरल के छात्र और छात्राओं के सामने कठिनाई उत्पन्न होती है। क्योंकि समान रूपी भिन्नार्थी शब्दों की तरह इसका प्रयोग अक्सर एक ही लिंग में करते हैं। जैसे, "उनकी वचन निरर्थक होगी।" इसमें वचन का प्रयोग दोनों भाषाओं में है। मलयालम में इसका प्रयोग हमेशा नपुंसक लिंग में होता है। लेकिन हिन्दी में इसका प्रयोग पुल्लिंग में किया जाता है। "वचन" शब्द के समानार्थी शब्द है "वाणी" जो दोनों भाषाओं में चलता है। लेकिन मलयालम में इसका प्रयोग नपुंसक में और हिन्दी में इसका प्रयोग स्त्रीलिंग में किया जाता है। इसलिए इस शब्द के अनुसार "वचन" का प्रयोग अनजाने में स्त्रीलिंग में कर बैठते हैं जो गलत हैं। इसका सही प्रयोग इस प्रकार है - "उनका वचन निरर्थक होगा।" इस प्रकार दोनों भाषाओं में प्रचलित भिन्न शब्द निम्नलिखित है जिनमें दोनों शब्दों का प्रयोग मलयालम में नपुंसक लिंग में प्रयुक्त किया जाता है -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
सुधा	अमृत
मरण	मृत्यु
प्रवाह	धारा
यश	कीर्ति
हार	माला
वैर	शत्रुता
आग्रह	इच्छा
धन	संपत्ति
ग्रन्थ	पुस्तक

कुछ समा ार्थी श द ऐसे जिनका योग के हिन्दी में चलता । उ का प्रयो मलयाल में नहीं है । जैसे, महत्व §पु§ और महत्ता §स्त्री§ । इससे भी इस तरह की समस्यायें होती हैं । जैसे, "इसमें गुप्त जी ने उर्मिला के विरह को वर्णित करने के पहले उस विरह वर्णन की महत्ता की ओर ध्यान दिया है ।" यहाँ महत्व शब्द को स्त्रीलिंग के रूप में प्रयुक्त किया है । क्योंकि इसके समानार्थी भिन्न शब्द "महत्ता" हिन्दी में मिलता है । उसके अनुरूप महत्व को भी स्त्रीलिंग के रूप में प्रयुक्त किया है । इस प्रकार के अन्य शब्द निम्नलिखित हैं -

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
दाम	कीमत
प्राण	जान

एक ही अन्तवाले शब्दों के लिंग निर्णय की समस्या :-

एक ही अन्तवाली संज्ञाओं के लिंग निर्णय में कठिनाई होती है । क्योंकि इस प्रकार की संज्ञाएँ ऐसी हैं जिनमें से कुछ का प्रयोग पुल्लिंग और कुछ का प्रयोग स्त्रीलिंग में होता है । एक ही अन्त वाली संज्ञाओं के लिंग निर्णय के सम्बन्ध में वैयाकरणों ने कुछ नियम प्रस्तुत किये हैं । लेकिन इसके अपवाद भी हैं । इसलिए ऐसी संज्ञाओं के लिंग निर्धारण करते समय मलयालम भाषा - भाषी असमंजस में पड़ जाता है । इस प्रकार के कुछ नियम निम्नलिखित हैं -

1. ई कारान्त संज्ञाएँ हिन्दी में स्त्रीलिंग जैसे, नदी, चिट्ठी, रोटी, टोपी, उदासी इत्यादि । इसके अपवाद भी हैं । जैसे, पानी, घी, जी, मोती, दही, मही आदि । मलयालम में ई कारान्त शब्द बहुत कम हैं , जैसे स्त्री । मलयालम में इ कारान्त संज्ञाएँ अधिक प्रयुक्त की जाती हैं जो मुख्यत: स्त्रीलिंग हैं - जैसे, कळ्ळी ‖ चोरी करने वाली ‖, तडिच्चि ‖ मोटी ‖ आदि ।

2. तकारान्त संज्ञाएँ हिन्दी में स्त्रीलिंग हैं - जैसे, रात, बात, लात, छात, भीत इत्यादि । मलयालम के तकारान्त में अन्त होनेवाली अधिकांश प्राणिवाचक संज्ञाएँ स्त्रीलिंग हैं - जैसे, सीत, लत । तकारान्त मेंअप्राणिवाचक संज्ञाएँ मलयालम में नपुंसक लिंग है । जैसे, पात ‖ रास्ता ‖, पत ‖ फेन ‖ आदि ।

3. ऊकारान्त संज्ञाएँ स्त्रीलिंग में हिन्दी में प्रयुक्त की जा जाती हैं । जैसे, बालू, लू, दारू, गेरू, खालू, ब्यालू, झाड़ू इत्यादि । इसके अपवाद हैं - आँसू, आलू, रतालू, टेसू आदि । मलयालम में "ऊ" में अन्त होनेवाली संज्ञाएँ नहीं के बराबर हैं ।

4. जिनके अन्त में "आब" होता है, वे सब पुल्लिंग हैं । जैसे, गुलाब, हिसाब, जवाब, कबाब आदि । लेकिन शराब, मिहराब, किताब, कमखाब, ताब आदि स्त्रीलिंग है । लेकिन मलयालम में "आब" में अन्त होनेवाली संज्ञाएँ नहीं हैं । उसी से मिलता आव् से अन्त होनेवाली संज्ञाएँ हैं जो स्त्रीलिंग और पुल्लिंग में प्रयुक्त की जाती हैं । जैसे, कर्ताव्, भर्ताव, दाताव्, पिताव् आदि पुल्लिंग हैं जबकि माताव् जैसी संज्ञाएँ स्त्रीलिंग हैं ।

5. जिनके अन्त में "आ" होता है, वे पुल्लिंग हैं, जैसे परदा, किस्सा, चश्मा आदि । लेकिन "दफा" जैसी संज्ञाएँ स्त्रीलिंग हैं । मलयालम में आकारान्त संज्ञाएँ नहीं के बराबर हैं ।

अक्सर देखा जाता है कि मलयालम भाषा - भाषी नियमों पर हमेशा ध्यान देते है और अपवादों को नज़र अंदाज़ करते हैं । इसलिए अपवादों की श्रेणी में आनेवाली संज्ञाओं को भी नियमों के अनुसार इस्तेमाल करते हैं । जैसे, "संसार के लोगों की आँसुओं की अनगिनत धाराएँ तुम्हारे शिला सदृश कठोर हृदय को आकर्षित नहीं करती है " इसमें आँसू शब्द का प्रयोग स्त्रीलिंग में किया है । क्योंकि, बालू, दारू जैसी ऊकारान्त संज्ञाएँ स्त्रीलिंग हैं । अतः आँसू जैसी ऊकारान्त संज्ञा पुल्लिंग होते हुए भी स्त्रीलिंग में प्रयुक्त किया है जो गलत है । सही वाक्य इस प्रकार है - "संसार के लोगों के आँसुओं की अनगिनत धाराएँ तुम्हारे शिला सदृश्य कठोर हृदय को आकर्षित नहीं करती ।"

भिन्नलिंगी समान शब्दों के लिंग निर्णय की समस्या :-

हिन्दी और मलयालम में प्रयुक्त समान शब्दों का लिंग कभी कभी भिन्न होता है । अक्सर इनके अर्थ भी दोनों भाषाओं में भिन्न भिन्न होते हैं । इन शब्दों के प्रयोग में गलतियाँ आ सकती हैं । जैसे हिन्दी और मलयालम में प्रयुक्त समान अर्थवाला शब्द है "आत्मा" । हिन्दी में इसका प्रयोग स्त्रीलिंग तथा मलयालम में पुल्लिंग में किया जाता है ।

मलयालम भाषा - भाषी इसका प्रयोग हिन्दी में पुल्लिंग में करके गलती कर बैठता है । जैसे, "उनका आत्मा परमात्मा में विलीन हो गया ।" सही वाक्य है - "उनकी आत्मा परमात्मा में विलीन हो गयी ।" हिन्दी में देह शब्द स्त्रीलिंग है जबकि मलयालम में इसका नपुंसक लिंग के रूप में प्रयोग किया जाता है । मलयालम भाषा - भाषी इसका प्रयोग पुल्लिंग में करता है । जैसे, "उनके देह से चन्दन का गन्ध आ रहा है ।" शुद्ध वाक्य है -"उनकी देह से चन्दन का गन्ध आ रहा है ।" प्राण भी ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग हिन्दी में पुल्लिंग में होते हुए "जान" जैसे शब्दों के प्रभाव के कारण स्त्रीलिंग में प्रयुक्त किया जाता है । जैसे,

उनकी प्राण चली गयी । (अशुद्ध)

उनके प्राण चले गये । (शुद्ध)

इस प्रकार के कुछ अन्य शब्द हैं -

हिन्दी			मलयालम		
शब्द	लिंग	अर्थ	शब्द	लिंग	अर्थ
चरित्र	पुल्लिंग	स्वभाव	चरित्रम्	नपुंसक	इतिहास
अवकाश	"	खाली वक्त	अवकाशम्	"	अधिकार
अनुवाद	"	भाषान्तर	अनुवादम्	"	अनुमति
परिभाषा	"	लक्षण	परिभाषा	"	अनुवाद
प्रस्थान	"	गमन	प्रस्थानम्	"	प्रवृत्ति
सभावना	"	मुमकिन होना	संभावना	"	चंदा
कथा	स्त्रीलिंग		कथा	"	कथा
उपन्यास	पुल्लिंग	काल्पनिक कथा	उपन्यासम्	"	निबन्ध
संख्या	स्त्रीलिंग		संख्या		संख्या
शिला	पुल्लिंग	पत्थर	शिल		पत्थर
प्रकाश	पुल्लिंग	रोशनी	प्रकाशम्	नपुंसक	रोशनी

समस्त पदों के लिंग निर्णय की समस्या :-

हिन्दी में समस्त पद संज्ञाओं में तत्पुरुष का लिंग उत्तर पद का लिंग होता है। जैसे, राजकाज, देशप्रेम आदि पुल्लिंग हैं। राजनीति, देशभक्ति आदि शब्द स्त्रीलिंग हैं। मलयालम में इस प्रकार के शब्द हमेशा नपुंसक हैं। जैसे, भरणकार्यम्, देशप्रेमम्, देशभक्ति जैसे शब्द नपुंसक हैं। हिन्दी और मलयालम के द्वन्द्व समासों में रूढ़ स्त्री - पुरुष जोडे की वाचक संज्ञाएँ प्रयोग की रूढ़ी के अनुसार उत्तर पद की परवाह किये बिना पुल्लिंग में होती है। जैसे, राजा रानी (मलयालम में राजावुम् राणियुम्), माता-पिता (मलयालम में मातापिताक्कन्मार), पति-पत्नी (भार्या भर्ताक्कन्मार), रामकृष्ण (रामकृष्णन्मार) आदि। हिन्दी में शेष द्वन्द्व समासों का लिंग उत्तर पद का लिंग होता है। जैसे, सोना-चाँदी (स्त्री), मोह-ममता (स्त्री) आदि। मलयालम में सभी प्रकार के समासों में पूर्वपद प्रमुख है और उसी के आधार पर लिंग निर्णय किया जाता है। जैसे, मोहममता (नपुंसक) , धन धान्यङ्ङळ् (नपुंसक) आदि।

केरल के छात्र अक्सर पूर्वपद के आधार पर समस्त पदों का लिंग निर्णय करते हैं जिससे समस्यायें उत्पन्न होती हैं। इसका कारण यह है कि मलयालम में इस प्रकार समस्त पदों का लिंग निर्णय की आवश्यकता नहीं होती। लिंग निर्णय के बिना ही समस्त पदों का वाक्यों में प्रयोग होता है। इसका ज्यों का त्यों प्रयोग हिन्दी में जब किया जाता है तो निम्नप्रकार की गलतियाँ होती हैं - "यह पंचतंत्र की रचना वैशिष्ट है।" इसमें पूर्वपद (रचना) को प्रमुखता देकर पूरे समस्त पद (रचना वैशिष्ट) का प्रयोग स्त्रीलिंग में कर डाला।

सही वाक्य है - "यह पंचतंत्र का रचना वैशिष्ट है ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. कालिदास की प्रतिभा का सच्चा परिचय उनकी प्रकृति चित्रण से मिलता है । ﴾ अशुद्ध ﴿

   कालिदास की प्रतिभा का सच्चा परिचय उनके प्रकृति चित्रण से मिलता है । ﴾ शुद्ध ﴿

2. राम के क्रोधाग्नि से सागर का हृदय धधक उठा । ﴾ अशुद्ध ﴿

   राम की क्रोधाग्नि से सागर का हृदय धधक उठा । ﴾ शुद्ध ﴿

इस प्रकार समस्त पदों के लिंग निर्णय केरल के छात्रों के सामने समस्यायें खड़ा करते हैं जिसे व्याकरणिक नियमों के ज्ञान से नहीं, बल्कि उसके सही प्रयोग से दूर किया जा सकता है ।

संज्ञा के पहले विशेषण आने से उत्पन्न समस्या :-

यदि वाक्य में संज्ञा के पहले विशेषण आ जाए तो उस विशेषण के आधार पर लिंग निर्णय किया जाता है और असली संज्ञा शब्द को नज़रअंदाज़ किया जाता है । उदाहरण केलिए "अश्रु-भेद के समय में भी ऊर्मिला के मन में गतकाल के मधुर स्मृतियाँ आ जाती [illegible] ।" यहाँ "स्मृतियों" के पहले विशेषण शब्द आ गया और उस "मधुर" शब्द के आधार पर [illegible] पुल्लिंग प्रयोग किया है ।

मलयालम में यह प्रवृत्ति नहीं दिखाई देती । संज्ञा के पहले आनेवाले विशेषण, जहाँ तक लिंग का प्रश्न है, मलयालम में वाक्य में कोई परिवर्तन नहीं करता । हिन्दी की बात अलग है । मलयालम भाषा-भाषी यहाँ पर अपनी भाषा की प्रवृत्ति को ध्यान में रखने के कारण इस भ्रम में पड़ जाता है कि वह पुल्लिंग या स्त्रीलिंग होगा । इस प्रकार विशेषण के आने से सहज रूप से स्त्रीलिंग स्मृति शब्द का प्रयोग पुल्लिंग में किया जाता है । सही वाक्य होना चाहिए ऋतु-भेद के समय में भी ऊर्मिला के मन में गतकाल की मधुर स्मृतियाँ आ जाती है । एक ओर उदाहरण है - "

वैदेही वनवास खड़ीबोली की प्रतिनिधि काव्य है ।

§ अशुद्ध §

वैदेही वनवास खड़ीबोली का प्रतिनिधि काव्य है ।

§ शुद्ध §

लिंग निर्णय में असमर्थता :-

कभी कभी केरल के छात्रों को कुछ संज्ञाओं का लिंग निर्णय करते समय कठिनाई महसूस होती है । वे असमंजस में पड़ जाते हैं कि अमुक संज्ञा को कौन से लिंग में प्रयुक्त करना है । लिंग सम्बन्धी अज्ञता ही इसका कारण है । जैसे,

"महान लोग अपने शरण में आए हुए नीच व्यक्ति को भी सज्जनों की भाँति विशिष्ट उपचार देते हैं । इसमें शरण का प्रयोग पुल्लिंग में अज्ञता के कारण ही किया गया है ।

सही वाक्य होना चाहिए - "महान लोग अपनी शरण में आए हुए नीच व्यक्ति को भी सज्जनों की भाँति विशिष्ट उपचार देते हैं ।" इस प्रकार के एक और उदाहरण है -

चित्रकूट से आकर ऊर्मिला के स्थिति और भी करुण बन जाती है । (अशुद्ध)

चित्रकूट से आकर ऊर्मिला की स्थिति और भी करुण बन जाती है । (शुद्ध)

दूसरी बात यह है कि हिन्दी के एकवचन और बहुवचन संज्ञाओं के लिंग एक होते हैं । वचन बदलने से लिंग बदलता नहीं है । लेकिन केरल के छात्र बहुवचन स्त्रीलिंग शब्दों का प्रयोग पुल्लिंग में करते हैं । जैसे, " हिमालय प्रदेश में रहनेवाले लोगों के विशेषताएँ भी उनके वर्णन में मिलता हैं । " यहाँ विशेषता स्त्रीलिंग है जिसका बहुवचन "विशेषताएँ" स्त्रीलिंग के बदले पुल्लिंग में प्रयुक्त किया गया है । इसका कारण यह है कि एकवचन संज्ञा का अन्त और बहुवचन प्रत्यय "एँ" लगने के कारण बहुवचन संज्ञा के अन्त एक ही नहीं रहा । फलस्वरूप मलयालम भाषा - भाषी छात्र भ्रम का शिकार बन गया और स्त्रीलिंग के प्रयोग पुल्लिंग के समान किया । इसके अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. उनके रचनाओं में प्रकृति चित्रण का वर्णन हम देख सकते हैं । (अशुद्ध)

   उनकी रचनाओं में प्रकृति चित्रण का वर्णन हम देख सकते हैं । (शुद्ध)

   साकेत पंचवटी जयद्रथ आदि उनके कृतियाँ हैं ।

साकेत, पंचवटी, जयद्रथवध आदि उनकी कृतियाँ हैं । (शुद्ध)

3. प्रेमचन्द के विचारधाराओं में मार्क्सवादी दर्शन के स्पष्ट रेखाएँ विद्यमान है । (अशुद्ध)

प्रेमचन्द की विचारधाराओं में मार्क्सवादी दर्शन की स्पष्ट रेखाएँ विद्यमान हैं । (शुद्ध)

मातृभाषा के हस्तक्षेप से उत्पन्न समस्या :-

मलयालम भाषा भाषी जब हिन्दी पढ़ता है तब होनेवाली समस्याओं का कारण मुख्यत: मातृभाषा का अवांछित हस्तक्षेप है । लिंग संबन्धी समस्याओं में भी यह दक्षता अड़चन पैदा करती है । मलयालम भाषा - भाषी शब्द का संबन्ध जिससे रहता है उसी को अधिक महत्व देता हैं ।[1] इसलिए स्त्री के संबन्ध में चर्चा करते समय स्त्रीलिंग का प्रयोग और पुरुष का प्रयोग से संबन्धित बातों की चर्चा करते समय पुल्लिंग का प्रयोग करते हैं और असली संज्ञा को नज़रअंदाज़ करते हैं । अधिकतर छात्र इस दोष का शिकार बन जाते हैं । इससे समस्यायें ज़्यादा गंभीर हो जाती हैं । जैसे, " उत्तर दिशा में देवता तुल्य हिमालय नामक पर्वतों का राजा पूर्व और पश्चिम समुद्र में प्रविष्ट होकर पृथ्वी की मानदण्ड की तरह विद्यमान है । " इसमें पृथ्वी स्त्रीलिंग हैं और उसको अधिक महत्व देने के कारण मानदण्ड भी स्त्रीलिंग में प्रयुक्त किया है । सही वाक्य होना चाहिए - " उत्तर दिशा में देवता तुल्य हिमालय नामक पर्वतों का राजा पूर्व और पश्चिम समुद्र में प्रविष्ट होकर पृथ्वी के मानदण्ड की तरह विद्यमान है ।

[illegible] 36

इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. इसमें वह आदर्श और मर्यादा पुरुषोत्तम राम को चित्रित करके आधुनिक पीढ़ी की मार्गदर्शन करना चाहता है । (अशुद्ध)

   इसमें वह आदर्श और मर्यादा पुरुषोत्तम राम को चित्रित करके आधुनिक पीढ़ी का मार्गदर्शन करना चाहता है । (शुद्ध)

2. इन सभी दृष्टियों से साकेत का नवम् सर्ग गुप्त जी के महानता का परिचारक भी है । (अशुद्ध)

   इन सभी दृष्टियों से साकेत का नवम् सर्ग गुप्त जी की महानता का परिचायक भी है । (शुद्ध)

3. एक तो रोते रहनेवाली नायिका की आँसू और दूसरा एक प्रकार के औषध हैं जिनके लेपन मात्र से ताम्रपत्र स्वर्ण बन जाते हैं । (अशुद्ध)

   एक तो रोते रहनेवाली नायिका की आँसू और दूसरा एक प्रकार के औषध हैं जिनके लेपन मात्र से ताम्रपत्र स्वर्ण बन जाते हैं । (शुद्ध)

<u>अन्य समस्यायें :-</u>

"हमारी प्रदेश की सरकार निष्क्रिय है ।" प्रदेश पुल्लिंग है, फिर भी केरल के छात्र इस तरह के प्रसंगों में प्रमुख संज्ञा जुड़कर रहनेवाली संज्ञाओं के लिंग प्रमुख संज्ञा के लिंग में ही प्रयुक्त करते हैं ।

इस प्रकार " हम नयी प्रकार की इमारत देखना चाहते हैं । " में भी इमारत के अनुरूप "प्रकार" को भी स्त्रीलिंग के रूप में प्रयुक्त किया

समस्याओं का निराकरण :-

इन सभी विश्लेषणों से पता चलता है कि लिंग सम्बन्धी नियमों का अध्ययन करने से इन समस्याओं का हल संभव नहीं है । पहले हिन्दी के प्रयोग से वाकिफ़ होना चाहिए और उसके बाद नियमों का निर्धारण इसके लिए सहायक हो सकता है । केरल में पहले नियमों का अध्ययन होता है और उसके बाद उसे प्रयोग के ज़रिए लागू करने का प्रयास भी किया जाता है । छात्रों की भाषा विषयक रुचि हटाने का प्रमुख कारण यही है । इसका हल लिंग का अध्ययन "आगमन प्रणाली" से शुरू करने से ही सकता है । इसमें पहले प्रयोग सिखाते हैं और बाद में उसी के आधार पर नियमों का निर्धारण होता है । छात्रों को बोलते समय लिंगों के सही प्रयोग पर ध्यान देना चाहिए । पाठ्यपुस्तकों में लिंग प्रयोग पर ज़्यादा बल देकर अध्ययन क्रमबद्ध करना भी ज़रूरी है । केरल के हिन्दी के अध्ययन में कार्यरत अध्यापक और अध्यापिकाओं को भी इस ओर अधिक ध्यान देना चाहिए और इन सारी गलतियों से अवगत होकर उन्हें दूर कराने का प्रयत्न करना चाहिए ।

केरल के हिन्दी अध्ययन में वचन संबन्धी समस्यायें

वचन एक व्याकरणिक कोटि है जिससे संज्ञा की संख्या जानी जाती है। वचन विकारी शब्द के उस रूप को कहते हैं जिससे उसके एक या अनेक का बोध होता है। वस्तु या तो एक होगी या एक से अधिक होगी। अर्थात् प्रत्येक संज्ञा या तो एकवचन होगी या बहुवचन। हिन्दी और मलयालम के विख्यात वैयाकरणों ने वचन की परिभाषा यों दी है। पं. कामताप्रसाद गुरु के अनुसार " संज्ञा के जिस रूप से संख्या का बोध होता है उसे वचन कहते हैं। "[1] केरलपाणिनी ने वचन व्यवस्था पर यों प्रकाश डाला है- " जब हम किसी वस्तु के विषय में बातचीत करते हैं तब यह दिखाने केलिए शब्दों में रूपभेद करते हैं कि वह वस्तु एक है या अधिक। यही रूपभेद वचन है।"[2] हिन्दी में दो वचन है जिसका उद्भव संस्कृत भाषा से हुआ है। संस्कृत में तीन वचन थे - एकवचन, द्विवचन और बहुवचन। इनमें से द्विवचन का प्रयोग मध्यकाल में लुप्त हो गया और हिन्दी में आकर केवल दो वचन रह गए। मलयालम में भी दो वचन हैं जिसका उद्गम द्राविड़ भाषा है। द्राविड़भाषाओं में द्विवचन नहीं है।[3] संज्ञा के वचन संबन्धी समस्याओं के विश्लेषण और उनके परिहरण के लिए उसके स्वरूप का विश्लेषण करना होगा।

---

1. हिन्दी व्याकरण कामताप्रसाद गुरु - पृष्ठ संख्या - 174
केरलपाणिनीयम् केरलपाणिनी पृष्ठ संख्या - 156
केरलपाणिनीयम् केरलपाणिनी पृष्ठ संख्या - 156

हिन्दी और मलयालम की वचन व्यवस्था का स्वरूप :-

हिन्दी और मलयालम, दोनों भाषाओं में सिर्फ दो ही वचन है - एकवचन और बहुवचन । द्विवचन दोनों में नहीं है । एक वस्तु का बोध कराने वाली संज्ञाएँ दोनों में एकवचन है जबकि अनेकत्व का बोध करानेवाली संज्ञाएँ बहुवचन हैं । हिन्दी की तरह मलयालम में भी वचन के अनुसार शब्दों में विकार होते हैं । जैसे, हिन्दी में " लड़का - लड़के " । मलयालम में वेलक्कारन (नौकर) - वेलक्कारन्मार ।

मलयालम में लिंग प्रत्यय ही एकवचन का प्रत्यय हैं, तथा शब्द की प्रकृति ही एकवचन रूप है और मलयालम में संज्ञा सप्रत्यय हो या अप्रत्यय हो उसका एक ही रूप होता है ।[1] जैसे, रामन्, सीता, काट् (जंगल) । हिन्दी में मूल या अविकारी रूप में प्रकृति ही एकवचन रूप है । जैसे, राम, सीता आदि । विकृत रूप में मूल रूप के साथ "ए" प्रत्यय जोड़ते हैं । जैसे, रास्ते लड़के आदि ।

हिन्दी में बहुवचन के तीन रूप हैं - मूल (अविकृत), विकृत और पूजक बहुवचन । मूल रूप के उदाहरण हैं - लड़के, बेटे, जातियाँ, चिड़ियाँ आदि । विकृत रूप के उदाहरण हैं - माताओं, कवियों, वस्तुओं, स्त्रीयों आदि । अर्थात् "ए" और "यों" कारान्त संज्ञाएँ विकृत बहुवचन हैं । पूजक बहुवचन केलिए कहीं प्रांरभ में शब्दांश या शब्द लगाते हैं तो कहीं के अन्त में प्रत्यय लगाते हैं ।

---

1 केरल पाणिनीय — केरल पाणिनी पृष्ठ संख्या 156

सबसे प्रचलित शब्दांश है - "श्री", "श्रीमान", "महाराज", "जनाब" आदि और अन्त्य प्रत्यय है "जी", "साहब", "महोदय", "महाशय" आदि ।[1] पूजक बहुवचन में सिर्फ साधारण एकवचन रूप ही होता है ।

मलयालम में बहुवचन तीन प्रकार के मिलते हैं - सलिंग, बहुवचन, अलिंग बहुवचन और पूजक बहुवचन । सलिंग बहुवचन स्त्री, पुरुष और नपुंसकों में किसी एक का बहुत्व सूचित करता है । जैसे, बालन्मार § लड़के §, अच्छन्मार § पिता §, अम्ममार § मातायें §, मलकळ् § पहाड़ें § आदि । अतः इसको सूचित करनेवाला प्रत्यय "मार" है और नपुंसक में "कळ्" है । अलिंग बहुवचन स्त्री और पुरुष का एक साथ बहुत्व सूचित करता है और उसका प्रत्यय "आर" है । जैसे, वेलक्कार § नौकर §, मिडुक्कर § होशियार § आदि । पूजक बहुवचन सम्मान प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होता है । इसकेलिए अधिकांशतः "आर" प्रत्यय इस्तेमाल करते हैं । साथ ही साथ "श्री", "अद्देहं", अवर्कळ्", "वाध्यार" जैसे शब्द भी जोडते हैं । जैसे , "स्वामि अदेहं", "गोपालन् अर्वकळ्", "श्री परमेश्वरन" आदि । इसके अलावा कभी कभी एक बहुवचन प्रत्यय के साथ दूसरा कोई शब्द जोड़कर भी प्रयोग किया जाता है । जैसे -

राजा + कन् + मार = राजाक्कन्मार
गुरु + कन + मार = गुरुक्कन्मार

---

1. अनुवाद [illegible] समस्यायें - ई. विश्वनाथ अय्यर - पृष्ठ [illegible]

मलयालम में जहाँ नपुंसक संज्ञा का बहुत्व संख्यावाचक विशेषण से सूचित होता है वहाँ संज्ञा के साथ बहुवचन प्रत्यय लगाने की ज़रूरत नहीं है । उदाहरण

एकवचन	बहुवचन
ओरु पेंना (एक कलम)	अंचु पेना (पाँच कलम)
ओरु रोट्टी (एक रोटी)	मून्नु रोट्टी (तीन रोटियाँ)
ओरु रूपा (एक रुपया)	नूरु रूपा (सौ रुपये)

इस तरह की व्यवस्था प्रायः छोटी - छोटी निर्जीव वस्तुओं के विषय में ही होती है । नपुंसक में आनेवाले छोटे प्राणियों के बोधक संज्ञा तथा बड़ी निर्जीव वस्तुओं के बोधक संज्ञाओं के बहुवचन में प्रत्यय लगाया जाता है । उदाहरणार्थ -

एकवचन	बहुवचन
ओरु वीट्ट (एक घर)	अंचु वीट्कळ् (पाँच घर)
ओरु मल (एक पहाड़)	एट्टु मलकळ् (आठ पहाड़ें)

हिन्दी में जहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा से कभी उसके गुण या तत्व से युक्त अनेक व्यक्तियों की चर्चा होती है वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा का भी बहुवचन में प्रयोग किया जाता है । उदाहरणार्थ -

जयचंदों से देश को बचाओ,
रघुओं की गाथा सुनी गई है ।

कुछ हिन्दी संज्ञाएँ व्यवहार में बहुवचन में ही प्रयुक्त होती हैं । जैसे, आँसू, ओठ, केश, दर्शन, प्राण, दाम, बाल, भाग्य, समाचार, हस्ताक्षर, होश आदि ।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम :-

बहुवचन बनाने के लिए दोनों भाषाओं में विशेष प्रकार के नियम हैं ।

मलयालम में अलिंग बहुवचन बनाने के लिए एकवचन के साथ "अर्" प्रत्यय जोड़ते हैं । जैसे, मिटुक्कन् - मिटुक्कर्, शूद्रन् - शूद्रर्, वेलक्कारन् - वेलक्कार् । इन बहुवचन शब्दों से स्त्रीत्व एवं पुंस्त्व दोनों का बोध होता है । लेकिन यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि एकवचन प्रत्यय "अन्" को छोड़ने के बाद "अर" प्रत्यय जोड़ते हैं । सलिंग बहुवचन बनाने केलिए पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के साथ "मार" प्रत्यय और नपुंसक के साथ "कळ्" प्रत्यय जोड़ते हैं । जैसे, मल - मलकळ, आन - आनकळ, मरं - मरङ्ङळ्, रामन् - रामन्मार, नंपूरी नंपूरिमार, तट्टान - तट्टान्मार, अम्मा - [illegible]म्ममार [illegible]दि । पूजक बहुवचन बनाने के लिए तीनों प्रत्ययों [illegible]मार्, [illegible] कळ् [illegible] का प्रयोग करते हैं । जैसे, गुरुक्कळ्, [illegible]मार्, [illegible] ।

हिन्दी में कुछ संज्ञाओं का बहुवचन रूप बनाने केलिए किसी प्रत्यय का प्रयोग नहीं होता । अर्थात् दोनों वचनों में एक ही रूप चालू है । जैसे, घर, पक्षी, पेड, फल, फूल, हाथ, आदमी, भाई, डाकू आदि । हिन्दी में बहुवचन के मुख्यतः दो रूप पाये जाते हैं मूल (अविकृत) और विकृत (तिर्यक) । [1]

मूल या अविकृत रूप बनाने के नियम

यदि पुल्लिंग शब्द अकारान्त हो, तो बहुवचन बनाने के लिए "आ" के स्थान पर "ए" का प्रयोग होता है - जैसे, लड़का,- लड़के, रास्ता - रास्ते, बेटा - बेटे, घोडा - घोडे, बच्चा - बच्चे, हीरा - हीरे । इस नियम के अपवाद भी हैं । संस्कृत के अकारान्त संज्ञा बहुवचन में नहीं बदलते । जैसे, कर्ता, दाता, देवता, पिता, नेता, योद्धा, राजा, सखा आदि । सम्बन्धियों केलिए प्रयुक्त होनेवाले शब्दों में पोता, बेटा, भतीजा, भानजा और साला में "आ" का "ए" हो जाता है, परन्तु काका, चाचा, नाना, दादा, बाबा, फूफा, मामा आदि में दोनों वचनों का रूप एक सा ही रहता है । स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त के "इ" या "ई" या "इया" बदलकर बहुवचन में "इयाँ" हो जाते हैं । जैसे, जाति - जातियाँ, लड़की - लड़कियाँ, स्त्री - स्त्रियाँ, गुडिया - गुडियाँ, चिडिया - चिडियाँ, नीति - नीतियाँ, निधि - निधियाँ, रमणी - रमणियाँ, डिबिया - डिबियाँ आदि । जिन स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में "इ", "ई", या "इया" नहीं होता उनके अन्त में "एँ" जोडने से बहुवचन बनता है । जैसे बहन-बहनें, गाय गायें, छात्रा-छात्राएँ, कक्षा-कक्षाएँ, लता-लताएँ बहू-बहूएँ आदि

---

[1] [illegible]

विकृत रूप बनाने के नियम :-

आकारान्त, उकारान्त और औकारान्त शब्दों के अन्त में "अ" जोड़ने से वे बहुवचन बनते हैं । जैसे, नेता,- नेताओं, माता - माताओं, वस्तु - वस्तुओं आदि । कुछ अकारान्त और आकारान्त शब्दों के "अ" और "आ" हट जाते हैं और उनके स्थान पर "ओं" जुड जाता है । जैसे, आँख - आँखों, बहन - बहनों, किला - किलों, लड़का - लड़कों आदि । इकारान्त और ईकारान्त शब्दों के अन्त में "यों" जोड़ने से और "ई" को "इ" करने से बहुवचन बन जाते हैं । जैसे, कवि - कवियों, जाति - जातियों, नाई - नाइयों, स्त्री - स्त्रियों आदि । अकारान्त शब्दों के अन्त में "ओ" जोड़ने और "ऊ" को "उ" करने से वे बहुवचन बन जाते हैं । जैसे, "बंधु - बंधुओं, साधु - साधुओं, डाकू - डाकुओं, उल्लू - उल्लुओं आदि । जिन शब्दों के अन्त में "या" होता है, उसके अन्तिम "आ" को हटाकर "य" में "ओ" जोड देने से वे बहुवचन बन जाते हैं । जैसे, गुड़िया - गुड़ियों, ड़िबिया - ड़िबियों, मुखिया - मुखियों, चिड़िया - चिड़ियों आदि । लेकिन जिन शब्दों के अन्त में "ओ" और "औ" होता है उनके रूप नहीं बदलते । जैसे, कोदों, सरसों, गौ आदि । सम्बोधन कारक सहित संज्ञाओं के विकृत बहुवचन रूप बनाने केलिए "ओ" जोड़ते हैं । जैसे, छात्रों, मित्रों, भाइयों, बहनों, सज्जनों, देवियों आदि ।

वचन सम्बन्धी समस्याओं का विश्लेषण :-

हिन्दी वचन का प्रयोग केरल के छात्रों केलिए समस्यायें उत्पन्न करता ।

ये वचन सम्बन्धी नियमों की विषमता के कारण ही नहीं, अपितु उनकी असावधानी या लापरवाही के कारण हुआ करता है । इसलिए वे वचन की अशुद्धि बहुतायत से करते हैं । अतः केरल के छात्रों के सामने हिन्दी के वचन संबन्धी अनेक समस्यायें हैं जिन्हें सहूलियत के अनुसार निम्नलिखित रूप में विभक्त किया जा सकता है ।

<u>सदैव बहुवचन में प्रयुक्त संज्ञाओं की समस्या :-</u>

हिन्दी में कुछ ऐसी संज्ञाएँ पाई जाती है जिनका प्रयोग हमेशा बहुवचन में होता है । लेकिन ऐसी संज्ञाएँ देखने पर एकवचन प्रतीत होती हैं । जैसे, दर्शन, प्राण, हस्ताक्षर, आँसू, दाम, होश, समाचार, केश, बाल, दाम, भाग्य, लोग आदि । ऐसी संज्ञाओं केलिए मलयालम में प्रयुक्त अधिकांश शब्द एकवचन ही हैं । जैसे, दर्शनम् (दर्शन), प्राणन् (प्राण), कण्णुनीर (आँसू), विला (दाम), बोधम् (होश), केशम् (केश), दानम् (दान), भाग्यम् (भाग्य) आदि । इसलिए केरल के छात्र हिन्दी में इसका प्रयोग एकवचन में प्रयुक्त करने का भूल कर बैठते हैं । अर्थात् एकवचन प्रतीत होने के कारण इन्हें उसी वचन में प्रयुक्त किया जाता है । इसका कारण वचन सम्बन्धी अज्ञता ही है । जैसे, "उसकी आँखों से आँसू ढुलक पडा ।" इसमें आँसू का प्रयोग अज्ञतावश एकवचन में किया गया है । अतः सही प्रयोग इस प्रकार होना चाहिए - "उसकी आँखों से आँसू ढुलक पड़े ।" इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. इस भयंकर रोग ने केवल 34 वर्ष की अवस्था में इस बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभा और लगनशील समाज सेवी को प्राण ले गया । (अशुद्ध)

इस भयंकर रोग ने केवल 34 वर्ष की अवस्था में इस बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभा और लगनशील समाज सेवी के प्राण ले लिये । § अशुद्ध §

2. शेर को देखकर होश उड़ गया । § अशुद्ध §
शेर को देखकर होश उड़ गये । § शुद्ध §

3. सौभाग्य से आपका दर्शन हो गया । § अशुद्ध §
सौभाग्य से आपके दर्शन हो गये । § शुद्ध §

4. उनका दर्शन करना आसान नहीं । § अशुद्ध §
उनके दर्शन करना आसान नहीं । § शुद्ध §

5. उसका बाल लम्बे और घने है । § अशुद्ध §
उसके बाल लम्बे और घने हैं । § शुद्ध §

6. मैं ने सूचना पर हस्ताक्षर नहीं किया । § अशुद्ध §
मैं ने सूचना पर हस्ताक्षर नहीं किये । § शुद्ध §

7. गाँवों में समाचार विलम्ब से पहुँचता है । § अशुद्ध §
गाँवों में समाचार विलम्ब से पहुँचते हैं । § शुद्ध §

<u>दोनों वचनों में प्रयुक्त संज्ञाओं की समस्या :-</u>

हिन्दी में कुछ संज्ञाएँ ऐसी हैं जिनका प्रयोग दोनों वचनों में एक ही रूप में होता है । जैसे, घर, पेड़, फल, आदमी, भाई, डाकू, व्यक्ति, साधु आदि । लेकिन मलयालम में इसके लिए प्रयुक्त समानार्थी संज्ञाओं के बहुवचन रूप भी मिलते हैं । जैसे,

एकवचन	बहुवचन
वीड् घर §	वीडुकळ्

मरम् ﴾ पेड ﴿ - मरड.्ड.ळ
पषम् ﴾ फल ﴿ - पषड्.ड.ळ
सहोदरन् ﴾भाई﴿ - सहोदरन्मार, सहोदरर

इस तरह की हिन्दी संज्ञाएँ बहुवचन के रूप में आने पर केरल के छात्रों के सामने समस्यायें पैदा होती हैं । वे इन्हें एकवचन के रूप में अज्ञानवश प्रयुक्त करते हैं । क्योंकि उनकी धारणा यह है कि हिन्दी में इसके लिए बहुवचन रूप है । उदाहरण केलिए, "उस राज्य के थोडे समीप तक छायावान वृक्ष है जिसका फल तरह तरह के पक्षियों द्वारा खाया जाता है ।" इसमें फल शब्द का प्रयोग एकवचन में किया गया है । चूँकि एक वृक्ष में एक से ज़्यादा फल होते हैं, इसलिए इसका प्रयोग बहुवचन में होना चाहिए । मलयालम में इसके लिए पषम् ﴾ फल ﴿ शब्द चलता है । मलयालम में इसका बहुवचन रूप "पषड्.ड.ळ् है । लेकिन हिन्दी में "फल" का बहुवचन "फल" ही है । मलयालम भाषा - भाषी जब हिन्दी "फल" शब्द का प्रयोग करता है तो उसे एकवचन ही मानता है । क्योंकि वह मलयालम के समानार्थी शब्द "पषम्" का समानार्थी है । लेकिन पंषड्.ड.ळ् का समानार्थी शब्द भी फल ही है जो कुछ समय केलिए भूल जाता है । अतः सही वाक्य होना चाहिए - "उस राज्य के थोडे समीप एक छायावान वृक्ष है जिसके फल तरह तरह के पक्षियों द्वारा खाये जाते हैं ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. इसकी विशेषता यह है कि इसका पात्र पशु - पक्षी है । ﴾ अशुद्ध ﴿

   इसकी विशेषता यह है कि इसके पात्र पशु - पक्षी । ﴾ शुद्ध ﴿

2. साकेत के नवम सर्ग लिखते समय स्वयं गुप्तजी रोया करते थे । § अशुद्ध §

साकेत का नवम सर्ग लिखते समय स्वयं गुप्तजी रोया करते थे । § शुद्ध §

3. उसने दो - चार मीठा फल खरीदा । § अशुद्ध §
उसने दो - चार मीठे फल खरीदे । § शुद्ध §

इनमें से कुछ संज्ञाओं के बहुवचन रूप गढ़कर प्रयुक्त करते हैं जिससे गलतियाँ आ जाती हैं । जैसे, "विद्यार्थी" शब्द का बहुवचन रूप भी "विद्यार्थी" ही है । इसका बहुवचन रूप विद्यार्थियाँ नहीं है । लेकिन वे इसका प्रयोग करते हैं । जैसे, "हाई स्कूल में कुछ विद्यार्थियाँ पढ़ते हैं ।" इसमें विद्यार्थियाँ का जो प्रयोग किया गया है वह गलत है । इस तरह करने का कारण यह है कि उसका स्त्रीलिंग शब्द "विद्यार्थिनी" का बहुवचन "विद्यार्थिनियाँ" है । इसके अनुरूप विद्यार्थी के बहुवचन रूप विद्यार्थियाँ बनाते हैं । इसी प्रकार का शब्द है "पक्षी" । उसका समानार्थी शब्द है "चिडिया" । उसी के अनुरूप पक्षी का बहुवचन "पक्षियाँ" कर डालते हैं । जैसे,

इसमें कई प्रकार की पशु - पक्षियाँ रहती है । § अशुद्ध §
इसमें कई प्रकार के पशु - पक्षी रहते हैं । § शुद्ध §

सदा एकवचन में प्रयुक्त संज्ञाओं की समस्या :-

हिन्दी में कुछ ऐसी संज्ञाएँ पाई जाती हैं जिनका प्रयोग हमेशा एकवचन में होता है । इस तरह की संज्ञाएँ दो का बोध कराती हैं ।

इसलिए वे इसका प्रयोग अनजाने में बहुवचन में करते हैं । जैसे, "हमें जोडा धोतियों की ज़रूरत हैं ।" इसमें जोडा का प्रयोग बहुवचन में किया गया है । क्योंकि "जोडा" अपने आप में दो का परिचायक है । लेकिन इसका प्रयोग हिन्दी में एकवचन में हुआ करता है ।

संज्ञाओं के बीच में "और" अथवा "या" आने से समस्या :-

कभी कभी एक वाक्य में एक से अधिक संज्ञाओं का प्रयोग होता है । तब अन्तिम संज्ञा के पहले "और" अथवा "या" का प्रयोग होता है । यदि "और" का प्रयोग करना है तो क्रिया बहुवचन में होना चाहिए और "या" का प्रयोग है तो एकवचन में । लेकिन केरल के छात्र "और" का प्रयोग करते समय अन्तिम संज्ञा के आधार पर क्रिया का प्रयोग भी एकवचन में करते हैं और "या" का प्रयोग बहुवचन में । यदि "और" का प्रयोग करते वक्त केवल अन्तिम संज्ञा के अनुसार क्रिया का प्रयोग किया जाए तो वाक्य रचना गलत हो जायेगी । जैसे, "हाथी, शेर, चीता और मृग प्रायः जंगल में पाया जाता है ।" इसमें मृग शब्द के आधार पर क्रिया का प्रयोग एकवचन में किया गया है जो गलत है । सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए - " हाथी, शेर, चीता और मृग जंगल में पाये जाते हैं । "

एक ओर उदाहरण है - " कुत्ता, बिल्ली, सुअर और चूहा गलियों में घूमता हुआ दिखाई देता है । इसमें भी "चूहा" शब्द के आधार पर एकवचन का प्रयोग हुआ है । सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए " कुत्ता, बिल्ली, सुअर और चूहा गलियों में घूमते हुए दिखाई देते हैं ।

इसके ठीक विपरीत इसी प्रकार के वाक्यों में कई संज्ञाओं के बाद अन्तिम संज्ञा के पूर्व यदि "और" की अपेक्षा "या" का प्रयोग हुआ हो तो क्रिया एकवचन में प्रयुक्त होगी । क्योंकि "या" अनेक से एक का सूचक होता है । जैसे, "राजू, रवि या बाबू में से कोई भी वहाँ जा सकते हैं ।" इस वाक्य में तीनों का जाना जरूरी नहीं है । इनमें से किसी एक को जाना है । इसलिए एकवचन में प्रयोग होना चाहिए । लेकिन एक से अधिक व्यक्तियों के नाम आने से भ्रमवश इसका प्रयोग बहुवचन में किया जाता है । सही वाक्य इस प्रकार है -

"राजू रवि या बाबू में से कोई भी जा सकता है ।"

इस प्रकार के अन्य उदाहरण है - "मिठाई, किताब या रुपया कुछ भी दिये जा सकते हैं ।" इसमें भी रुपया शब्द के आधार पर क्रिया का वचन होना चाहिए । इसलिए शुद्ध प्रयोग होगा - " मिठाई, किताब या रुपया कुछ भी दिया जा सकता है ।"

<u>प्रत्येक और हर एक के प्रयोग से उत्पन्न समस्यायें :-</u>

"प्रत्येक" और "हर एक" शब्द का प्रयोग हिन्दी में सदा एकवचन में किया जाता है । उसके बाद आनेवाली संज्ञाएँ भी एकवचन में प्रयुक्त की जाती हैं । लेकिन उनका प्रयोग अज्ञता के कारण बहुवचन में करता है जिससे गलतियाँ आ जाती हैं । जैसे, "प्रत्येक व्यक्तियों को इसमें भाग लेना चाहिए ।" यहाँ "प्रत्येक" आ जाने से प[illegible] आनेवाली संज्ञा मूल रूप में व्यवहृत होती है ।

सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए - "प्रत्येक व्यक्ति को इसमें भाग लेना चाहिए ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. प्रत्येक छात्राएँ पास होने के लिए कठिन प्रयास करती है । (अशुद्ध)

   प्रत्येक छात्रा पास होने के लिए कठिन प्रयास करता है । (शुद्ध)

2. सदन में प्रत्येक सदस्यों का अभिमत था । (अशुद्ध)
   सदन में प्रत्येक सदस्य का अभिमत था । (शुद्ध)

<u>बहुवचन के स्थान में एकवचन का ही प्रयोग :-</u>

कभी कभी बहुवचन संज्ञा रूप के स्थान पर एकवचन रूप का इस्तेमाल होता है । केरल के छात्र ऐसी संज्ञाओं का एकवचन तथा बहुवचन के रूप एक ही मानते हैं । इसलिए अज्ञातवश बहुवचन रूप के स्थान पर एकवचन रूप का प्रयोग कर बैठते हैं । जैसे, " वे अनेक भाषा जानते थे ।" यहाँ अनेक शब्द आने से यह विदित है कि संज्ञा बहुवचन में है । लेकिन वे भाषा शब्द का बहुवचन रूप अक्सर "भाषा" ही समझ रखे हैं । इसलिए भाषा का प्रयोग यहाँ किया गया है जो गलत है । सचमुच भाषा शब्द का बहुवचन रूप "भाषाएँ" है । अतः शुद्ध ववक्य होना चाहिए - " वे अनेक भाषाएँ जानते थे ।" इस तरह के कुछ अन्य उदाहरण हैं -

1. उसने दो मिठाई खरीदी । (अशुद्ध)
   उसने दो मिठाइयाँ खरीदी । (शुद्ध)

2. दो तीन किताब चाहिए । {अशुद्ध}
   दो तीन किताबें चाहिए । {शुद्ध}

3. उसने अनेक प्रकार की माला बनायीं । {अशुद्ध}
   उसने अनेक प्रकार की मालाएँ बनायीं । {शुद्ध}

मूल रूप और विकृत रूप की समस्या :-

हिन्दी में बहुवचन के दो रूप मिलते हैं - मूल रूप और विकृत रूप । मूल रूप विभक्ति रहित रूप है जबकि विकृत रूप विभक्ति सहित है । जैसे ,

मूल रूप	विकृत रूप
लड़के	लड़कों
लड़कियाँ	लड़कियों
किताबें	किताबों
पुस्तकें	पुस्तकों
कन्याएँ	कन्याओं

कभी कभी वे मूल रूप के स्थान पर विकृत रूप का प्रयोग करते हैं जिससे गलतियाँ पैदा होती है । जैसे, " इसे देखकर अप्सरा कन्यकाओं नाचने गाने श्रृंगार करने लगती हैं । " यहाँ " कन्यकाओं " के स्थान पर " कन्यकाएँ " का प्रयोग उचित है, क्योंकि यहाँ संज्ञा विभक्ति के बिना प्रयुक्त हुई है । इसलिए मूल रूप का प्रयोग ठीक होगा ।

इस प्रकार विकृत रूप के स्थान पर मूल रूप का प्रयोग किया जाता है । ऐसी गलतियाँ वे हमेशा करते रहते हैं । विभक्ति के आने पर संज्ञा के मूल बहुवचन रूप का ही प्रयोग करते हैं । यह मुख्यतः अज्ञता के कारण है । क्योंकि मलयालम में बहुवचन के मूल रूप और विकृत रूप नहीं है ।

" द्वितीय अंक में औशीनरी की उक्ति से नारी के स्वभाव को चित्रित किया है । इसमें "उक्ति" के बाद विभक्ति "से" आयी है । फिर भी इनका प्रयोग मूल रूप में ही किया है । शुद्ध वाक्य है - " द्वितीय अंक में औशीनरी की उक्तियों से नारी के स्वभाव को चित्रित किया है । " इस प्रकार का अन्य उदाहरण हैं -

1. उनकी सारी रचना में भी प्रकृति का वर्णन हम देख सकते हैं । (अशुद्ध)

   उनकी सारी रचनाओं में भी प्रकृति का वर्णन हम देख सकते हैं । (शुद्ध)

2. महान लोग अपनी शरण में आये हुए नीच व्यक्ति को भी सज्जन की भाँति विशिष्ट उपचार देते हैं । (अशुद्ध)

   महान लोग अपनी शरण में आये हुए नीच व्यक्तियों को भी सज्जन की भाँति विशिष्ट उपचार देते हैं । (शुद्ध)

3. उत्तर दिशा में देवता तुल्य हिमालय नामक पर्वत के राजा पूर्व और पश्चिमी समुद्र में प्रविष्ट होकर पृथ्वी के मानदण्ड [illegible] तरह विद्यमान है । (अशुद्ध)

> उत्तर दिशा में देवता - तुल्य हिमालय नामक पर्वतों
> के राजा पूर्व और पश्चिमी समुद्र में प्रविष्ट होकर
> पृथ्वी के मानदण्ड की तरह विद्यमान है । §शुद्ध§

पूजक बहुवचन की समस्या :-

आदर प्रकट करने के लिए हिन्दी में एकवचन संज्ञाओं का प्रयोग बहुवचन में किया जाता है । जैसे, "मेरे बापू इमानदार अफ़सर थे ।" यहाँ बापू शब्द एक व्यक्ति का द्योतक है । लेकिन आदर प्रकट करने केलिए इसका प्रयोग बहुवचन में किया गया है । केरल के छात्र हमेशा इसका प्रयोग एकवचन में करते हैं जिससे समस्यायें उत्पन्न होती है । जैसे, " कालिदास मुख्यतः प्रकृति का कवि है ।" यहाँ कवि शब्द एकवचन रूप में प्रयुक्त किया गया है । क्योंकि कालिदास एक व्यक्ति है । लेकिन यहाँ उसको सम्मान देते हुए कवि शब्द का प्रयोग बहुवचन में प्रयुक्त करना चाहिए, जैसे - " कालिदास मुख्यतः प्रकृति के कवि है । " इस तरह के एक और उदाहरण हैं -

> कबूतरों का राजा परिवार सहित वहाँ आया । §अशुद्ध§
> कबूतरों के राजा परिवार सहित वहाँ आया । §शुद्ध§

अन्य कुछ समस्यायें :-

मलयालम का यह नियम है कि संख्यावाचक के बाद आनेवाली संज्ञाओं के साथ बहुवचन प्रत्यय जोड़ने की ज़रूरत नहीं है ।[1]

---

1. केरल पाणिनी §ए. आर. राजराज वर्मा§ केरल पाणिनीयम्, पृष्ठ संख्या - 158

उदाहरण केलिए ओरु रूपा ‖ एक रूपया ‖, पत्तु रूपा ‖ दस रूपये ‖ आदि । लेकिन हिन्दी में संख्यावाचक के बाद आनेवाली संज्ञाएँ बहुवचन में प्रयुक्त होती है । जैसे, दो रूपये । इसलिए मलयालम भाषा - भाषी हिन्दी में भी ऐसे प्रसंगों में मलयालम के अनुरूप एकवचन का ही प्रयोग करते हैं । जैसे, दो रूपया, तीन रूपया, दो रोटी आदि । अर्थात् संख्यावाचक शब्द संज्ञा के पहले आने से हिन्दी में कभी कभी संज्ञा के साथ बहुवचन प्रत्यय नहीं जोड़ता । जैसे, " उसे सौ रूपया दे दो । " यह वाक्य गलत है । क्योंकि संख्यावाचक शब्द सौ के बाद आनेवाले रूपया शब्द के साथ बहुवचन प्रत्यय अनिवार्य है । अतः शुद्ध वाक्य इस प्रकार होना चाहिए - " उसे सौ रूपये दे दो ।

हिन्दी में शुद्ध वचन प्रयोग की दृष्टि से गिनती के क्रम को ठीक ढ़ंग से लिखा जाना चाहिए । मलयालम भाषा भाषी लापरवाही के कारण उसका प्रयोग मनमाने ढ़ंग से करते हैं । जैसे, " राजा ने दस ऊँट, दो घोड़े और एक बैल खरीद लिया । " इस वाक्य में वचन की दृष्टि से गिनती का क्रम ठीक नहीं है । इसका क्रम इस प्रकार होना चाहिए - " राजा ने एक बैल, दो घोड़े और दस ऊँट खरीद लिए । "

हिन्दी के वाक्यों में समान अर्थ के लिए प्रयुक्त होनेवाली संज्ञाओं में वचन की दृष्टि से समानता चाहिए । लेकिन केरल के हिन्दी छात्र इसको नज़रअंदाज़ करते हैं । जैसे, " हिन्दु और मुसलमानों में जमकर लड़ाई हुई । " ग्रामीण और डाकुओं में जमकर लड़ाई हुई । इसमें समान अर्थ लिए प्रयुक्त संज्ञाओं ‖ जैसे, हिन्दु और मुसलमान या ग्रामीण और डाकुओं ‖ के वचन में असमानता है ।

परिणामस्वरूप वचन की दृष्टि से वाक्य रचना गलत हो जाती है । शुद्ध वाक्य इस प्रकार हैं -

1. हिन्दुओं और मुसलमानों में जमकर लड़ाई हुई ।
2. ग्रामीणों और डाकुओं में जमकर लड़ाई हुई ।

समस्याओं का निराकरण :-

इन सभी विश्लेषणों से पता चलता है कि वचन सम्बन्धी नियमों का अध्ययन करने से इन समस्याओं का हल संभव नहीं है । क्योंकि वचन के प्रयोग से उत्पन्न होने वाली अधिकांश गलतियाँ, वचन संबन्धी त्रुटियों से नहीं, बल्कि मुख्यतः असावधानी और लापरवाही के कारण होती है । इसलिए केरल के छात्रों को वचन संबन्धी प्रयोगों पर अधिक ध्यान देना है । लेकिन यहाँ पहले नियमों का अध्ययन सिखाया जाता है और उसी के आधार पर प्रयोग करते हैं । केरल के छात्रों की भाषा विषयक रुचि घटाने वाली इस प्रवृत्ति का हल व्याकरण का अध्ययन आगमन प्रणाली से शुरू करने से हो सकता है । इसके अनुसार पहले प्रयोग सिखाते हैं और बाद में उसी के आधार पर नियमों का निर्धारण होता है । छात्रों को बोलने का अवसर देना चाहिए जिसमें वे वचन के सही प्रयोग में ध्यान दे सके । कंप्यूटरों के ज़रिए भी इन समस्याओं का निराकरण हो सकता है । केरल में हिन्दी के अध्ययन में कार्यरत अध्यापक इसकी ओर ध्यान देकर इन सारी गलतियों से छात्रों को अवगत कराने का प्रयत्न करना चाहिए ।

केरल के हिन्दी अध्ययन में कारक संबन्धी समस्यायें

वाक्य का निर्माण शब्दों से होता है । लेकिन वाक्य केवल शब्द-समूह नहीं है । वाक्य में एक शब्द का दूसरे के साथ सम्बन्ध स्पष्ट होना चाहिए । यह सम्बन्ध अर्थबोध केलिए वाक्य में अनिवार्य है । नहीं तो वाक्य मात्र शब्दों का समूह बनकर रह जायेगा जिससे अर्थ की प्राप्ति नहीं हो पायेगी । उदाहरण केलिए " अध्यापक जी पुस्तकों आधार विद्यार्थियों परिचर्चा शुरुआत की । " यह केवल शब्द-समूह है, वाक्य नहीं । जिस शब्द-समूह से अर्थबोध न होता हो, या जो शब्द-समूह निरर्थक हो, उसे वाक्य नहीं कहा जायेगा । इन शब्दों में क्रमशः "ने", "के", "पर", "से" आदि शब्द चिह्नों का प्रयोग कर देने पर अर्थ की दृष्टि से इनमें संबन्ध स्थापित हो सकते हैं । जैसे, " अध्यापक जी ने पुस्तकों के आधार पर विद्यार्थियों से परिचर्चा शुरू की । " व्याकरण में वाक्य को सार्थक बनाने वाले ये शब्द-चिह्न "कारक" या "विभक्ति प्रत्यय" कहे जाते हैं तथा इनसे बने शब्दरूपों को "कारक" या "विभक्ति" कहा जाता है ।

केरल पाणिनी तथा कामताप्रसाद गुरु ने इनकी परिभाषा एक ही ढंग से दी है । कामताप्रसाद गुरु के अनुसार " संज्ञा के जिस रूप से उसका संबन्ध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ प्रकाशित होता है, उस रूप को कारक कहते हैं ।"[1] केरलपाणिनी ने भी इसकी परिभाषा ज्यों की त्यों की है । कामताप्रसाद गुरु कारक को सूचित करने केलिए संज्ञा के आगे लगाने वाले प्रत्ययों को विभक्तियाँ मानते हैं ।[2]

---

1. हिन्दी व्याकरण - कामताप्रसाद गुरु - पृ संख्या - 184
2. वही , पृ संख्या 184

केरलपाणिनी ने भी अन्य शब्दों से संबन्ध सूचित करने केलिए संज्ञा के साथ जुड़नेवाले प्रत्ययों को विभक्ति माना है ।[1] संज्ञा की विभक्ति संबन्धी समस्याओं के विश्लेषण और उसके परिहरण के लिए कारक व्यवस्था का विवेचन करना होगा ।

हिन्दी और मलयालम की कारक व्यवस्था :-

हिन्दी और मलयालम में आठ कारक हैं जिनके नाम और विभक्ति प्रत्यय निम्न प्रकार से हैं ।

हिन्दी के कारक और प्रत्यय :-

हिन्दी के कारक	प्रत्यय
1. कर्ता	ने
2. कर्म	को
3. करण	से
4. संप्रदान	को, केलिए
5. अपादान	से

1. लघा[illegible] [illegible]यम् [illegible] संख्या 16[illegible]

6.	सम्बन्ध	का, के, की
7.	अधिकरण	में, पर
8.	सम्बोधन	ए, अरे

मलयालम के कारक और प्रत्यय :-

	कारक	प्रत्यय
1.	निर्देशिका	कोई प्रत्यय नहीं
2.	प्रतिग्राहिका	ए, ने
3.	संयोजिका	ओटॅ, आल्, कोण्डु
4.	उद्देशिका	क्कु, न्नु
5.	प्रयोजिका	आल्, इल् निन्नु, काळ
6.	सम्बन्धिका	उटे, न्टे
7.	आधारिका	क्कल्, इ. ल्
8.	सम्बोधिका	हे, [illegible]

कारकों के विभक्ति प्रत्यय लगने पर शब्दों का रूपान्तर मलयालम और हिन्दी दोनों भाषाओं में होता है । जैसे, मलयालम में " रामन् " के साथ "आल्" जुडने से " रामनाल् " बन जाता है । हिन्दी में " लड़का " के साथ " से " जुड़ने से एकवचन में " लड़के से " और बहुवचन में " लड़कों से " बन जाता है ।

मलयालम में प्रत्यय लगने के पहले कुछ शब्दांश उच्चारण की सुविधा केलिए जोडे जाते हैं । उसे " इटनिल " (मध्यप्रत्यय) कहते हैं ।[1] जैसे, मरं + इन + उटे = मरत्तिन्टे । " इन" मध्यप्रत्यय है । इस प्रकार के अन्य रूप हैं –

राजाव् + इन + ए = राजाविन्टे ।
राजाव् + इन + आल् = राजाविनाल् ।
मनस्स् + इन + ओटॅ = मनस्सिनोटॅ ।

इस प्रकार के मध्यप्रत्यय का प्रयोग हिन्दी में नहीं है । मलयालम में तिर्यक रूप नहीं है ।

यद्यपि हिन्दी और मलयालम में कारकों की संख्या बराबर है, फिर भी उनके प्रयोग में भिन्नता पाई जाती है । हिन्दी में एक ही संज्ञा कभी कभी चार – चार विभिन्न विभक्तियों में आती है । जैसे, " मेरा हाथ दुःखता है ", " मेरा हाथ पकडो ", " नौकर के हाथ चिट्ठी भेजी गयी ", " चिडिया हाथ न आयी । एक ही संज्ञा यहाँ क्रमशः कर्ता, कर्म, करण और अधिकरण के अर्थ में प्रयुक्त की गयी है ।

---

1. केरलपाणिनि ए. आर. राजराज वर्मा, पृष्ठ संख्या – 171

हिन्दी में विभक्तियों का रूप अक्सर अर्थ से निश्चित करना पडता है। जैसे, करण व अपादान केलिए " से " एक ही रूप है। शब्दों का सभी सम्बन्ध इन रूपों से व्यक्त करना असंभव है। " प्रति ", " द्वारा " आदि अव्ययों से काम लिया जाता है। जैसे, डाक द्वारा खत भेजा गया ", यह उनके प्रति किया गया अन्याय है " आदि।

कर्ताकारक :-

वाक्य में संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के करनेवाले का बोध हो, उसे " कर्ताकारक " कहते हैं। जैसे,

हिन्दी	मलयालम
1. रमेश दौड़ता है।	1. रमेशन् ओटुन्नु।
2. राजू ने पुस्तक पढ़ी।	2. राजू पुस्तकं वायिच्चु।

पहले वाक्य में " दौड़ने " का कार्य रमेश करता है, अतः " रमेश " कर्ताकारक है। दूसरे वाक्य में पढ़ने का काम राजू ने किया, इसलिए " राजू " कर्ताकारक है। दूसरे वाक्य में राजू के साथ " ने " प्रत्यय जोड़ा गया है। पर पहले वाक्य के साथ किसी विभक्ति का प्रयोग नहीं किया गया है। मलयालम में इसका नाम " निर्देशिका है। मलयालम में चेतन और अचेतन कर्ता को सूचित करने वाला कोई खास प्रत्यय नहीं है।

हिन्दी में अपूर्ण भूतकाल और हेतुहेतुमत् भूतकाल को छोडकर बाकी सभी भूतकालों की सकर्मक क्रिया के साथ इसका प्रयोग होता है । जैसे, " राजू ने रोटी खायी । " लेकिन " लाना ", भूलना, " बोलना " आदि सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक रूप के साथ " ने " परसर्ग का प्रयोग नहीं किया जाता । जैसे, " राम कुछ बोला ", " राजू पुस्तक लाया ", " राम अपने आपको भूला " आदि । प्रेरणार्थक क्रिया के कर्ता के साथ भी " ने " लगाया जाता है । जैसे, " अध्यापक ने विद्यार्थी से पाठ पढ़वाया । ", " अध्यक्ष ने विधायक को सदन से निकलवाया ।" द्विकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक रूप के साथ भी " ने " परसर्ग का प्रयोग किया जाता है । तथा, " माँ ने बच्चे को खाना खिलवाया । " "सक", "चुक", "लग" आदि सहायक क्रियाओं का प्रयोग करते वक्त कर्ता के साथ " ने " नहीं जुड़ता । जैसे,

रमा हिन्दी पढ़ सकती है ।
रवि काम कर चुका ।
रमेश सुनने लगा । आदि ।

अतः सकर्मक क्रिया के भूतकाल में " ने " नियम का पालन करना पड़ता है जो मलयालम भाषा - भाषी केलिए उनकी भाषा की दृष्टि से कृत्रिम और बोझिल लगता है ।

कर्मकारक :-

जिस व्यक्ति या वस्तु पर कर्ता के व्यापार का फल पड़ता हो, उसे कर्म कहते हैं । जैसे, राजू ने रमेश को बुलाया

इस वाक्य में " राजू " कर्ता है और व्यापार { बुलाने } का फल रमेश पर पड़ता है, इसलिए " रमेश " कर्म है और " को " विभक्ति है । मलयालम में इस विभक्ति का नाम " प्रतिग्राहिका " है । इसका प्रत्यय " ए" और " ने " है । जैसे, " राजू रमेशिने विलिच्चु " में " रमेश " कर्म और " ने " विभक्ति है । उसी प्रकार " रामन् सीतये कण्डु " { राम ने सीता को देखा } में "सीता " कर्म और " ए " विभक्ति है । हिन्दी और मलयालम में कर्मकारक विभक्ति का प्रयोग मुख्यतः प्राणिवाचक संज्ञाओं केलिए होता है । अप्राणिवाचक संज्ञाएँ बिना किसी परिवर्तन के प्रयुक्त होती हैं । जैसे,

अप्राणिवाचक संज्ञाओं के साथ प्रत्यय नहीं

1. मलयालम में – राजू पुल्लु कोन्टुवरून्नु ।
   हिन्दी में – राजू घास लाता है ।

2. मलयालम में – षील कथ केळकुन्नु ।
   हिन्दी में – षीला कथा सुनती है ।

प्राणिवाचक संज्ञाओं के साथ विभक्ति का प्रयोग होता है :-

1. मलयालम में – रवि ओरु पशुविने वाडिक्कुन्नु ।
   हिन्दी में – रवि एक गाय खरीदता है ।

2. मलयालम में – रवि राजुविने अटिक्कुन्नु ।
   हिन्दी में – रवि राजु को मारता है ।

[illegible] कर्मक [illegible] ओं का [illegible] योग करते समय दोनों भाषाओं में गौण क[illegible] साथ [illegible] यय [illegible] हैं ।

उदाहरण केलिए -

राजू ने रमेश को पैसा दिया । ﴾ हिन्दी ﴿
राजू रमेशिनु पैसा कोटुत्तु । ﴾ मलयालम ﴿

लेकिन दोनों भाषाओं में कभी कभी कर्मकारक विभक्ति के स्थान पर अन्य विभक्ति प्रत्यय का प्रयोग होता है । उदाहरण केलिए -

1. रवि राजुविन्‌ रूप कोटुक्कुन्नु । ﴾ मलयालम ﴿
   रवि राजू को रूपये देते हैं । ﴾ हिन्दी ﴿

2. षील रमक्कु एषुत्तु अयच्चु । ﴾ मलयालम ﴿
   षीला ने रमा को चिट्ठी भेजी । ﴾ हिन्दी ﴿

3. राजू रवियोटु कळ्ळं परञ्ञु । ﴾ मलयालम ﴿
   राजू रवि से झूठ बोला । ﴾ हिन्दी ﴿

पहले उदाहरण में उद्देशिका विभक्ति "नु" का प्रयोग किया गया है जबकि हिन्दी में कर्मकारक विभक्ति का ही प्रयोग हुआ है । दूसरे उदाहरण में उद्देशिका विभक्ति " क्कु " का प्रयोग किया गया है, लेकिन हिन्दी में कर्तकारक का ही प्रयोग हुआ है । तीसरे में मलयालम में संयोजिका विभक्ति " ओटॅ " का तथा हिन्दी में अपादान का प्रयोग हुआ है । विभक्ति प्रयोगों में इस प्रकार के अन्तर का कारण हिन्दी की अर्थ संकल्पना और मलयालम की अर्थ संकल्पना का अन्तर है ।[1]

---

[1] अनुवाद भाषाएँ समस्यायें - ना. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर - पृष्ठ० संख्या 153

करण कारक :-

संज्ञा के जिस रूप से किसी क्रिया के साधन का बोध होता है, उसे करण कारक कहते हैं । जैसे, " राजू ने रमेश को हाथ से मारा । " इस वाक्य में " हाथ " से " मारे जाने " का कार्य हुआ, अतः करण कारक में है । इसकी विभक्ति " से " है । मलयालम में इसकेलिए " ओट्ट् ", " आल् " और " कोण्टु " विभक्ति प्रत्यय है । इसका नाम मलयालम में " संयोजिका " है । उदाहरण केलिए -

शिवन् शक्तियोटु चेरुन्नु । (शिव शक्ति से एकाकार होता है ।)

कभी - कभी हिन्दी में " से " की जगह अलग - अलग शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है । जैसे, " के ज़रिए ", " से होकर ", " के साथ ", " के बिना " आदि । मलयालम में इसके लिए " कोण्टु ", " ऊटे " आदि का प्रयोग किया जाता है । जैसे,

1. नाँ मरं कोण्टु कसेर उण्टाक्कुन्नु । (हम लकड़ी से कुर्सी बनाते हैं ।)

2. जाथ निरत्तिलूटे नीङुन्नु । (जत्था सड़क से होकर आगे बढ़ती है ।)

अक्सर हिन्दी का करण कारक अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है । जैसे, सजीव से यह काम हो गया " (सजीवनाल् ई जोलि चेय्यप्पेट्टु) यहाँ कर्ता के साथ कर्मवाच्य में " से " का प्रयोग किया गया है ।

मलयालम में यह प्रयोजिक या पंचमी के रूप में प्रयुक्त होता है । कभी - कभी संप्रदान कारक के अर्थ में हिन्दी में इसका प्रयोग मिलता है । जैसे, मतलब से गई होगी ।

कभी कभी करण कारक का प्रयोग परसर्ग के बिना ही होता है । जैसे, आँखों देखी घटना ", " कानों सुनी बात " आदि । इन वाक्यों में करण कारक परसर्ग " से " नहीं मिलता, फिर भी सही अर्थ मिल जाता है । मलयालम में कारक के बिना इस प्रकार का प्रयोग नहीं होता । जैसे, " कण्णाल् कण्ट संभवम् " ﴾ आँखों देखी घटना ﴿, " चेवियाल् केट्ट कार्यम् " ﴾ कानों सुनी बात ﴿ आदि ।

संप्रदान कारक :-

संज्ञा का वह रूप जिसके लिए कोई क्रिया की जाती है, संप्रदान कारक है । हिन्दी में इसकी विभक्तियाँ " को " और " केलिए " हैं । जैसे, " राजा ने भिक्षुओं को भिक्षा दी । " यहाँ " देने का कार्य " राजा कर रहा है और जो दी जा रही है, वह भिक्षा है । राजा ﴾ कर्ता ﴿ भिक्षा ﴾ कर्म ﴿ भिक्षुओं को दे रहे हैं । अतः यहाँ भिक्षु संप्रदान कारक में है । " मैं राजू केलिए कुछ फल लाया हूँ । " इसमें राजू संप्रदान कारक में है । मलयालम में इस विभक्ति का नाम " उद्देशिक " है । इसका प्रत्यय " क्कु " और " न्नु " है । उदाहरणार्थ, " षीलक्कु सारि इष्टमायि " ﴾ षीला को साड़ी पसन्द आयी ﴿ " राजुविन्नु पेन इष्टमायि " ﴾ राजू को कलम पसन्द आयी ﴿ आदि ।

हिन्दी में " को " के स्थान पर " के वास्ते ", " के लिए " का प्रयोग होता है । जैसे, " किसके लिए घंटी बजती है ", " मैं उसके वास्ते कुछ फल लाया हूँ " आदि । उसी तरह मलयालम में " वेण्टि " इसके लिए प्रयुक्त होता है । जैसे, " षीलक्कु वेण्टि राजु पाटुन्नु " (शीला के लिए राजू गाता है ।), विद्यार्थी हाजरिन्नु वेण्टि स्कूळिलेक्कु वरुन्नु (विद्यार्थी हाजिरी के लिए आता है), गान्धीजि देशत्तिन्नु वेण्टि कष्टप्पेट्टु (गान्धीजी ने देश के लिए तकलीफ़ झेली) आदि ।

" जानकारी " के अर्थ में दोनों भाषाओं में कर्ताकारक के स्थान पर संप्रदान का प्रत्यय लगता है । जैसे,

राजू को लिखना आता है । (हिन्दी)
राजुविन्नु एषुत्तु अरियाम् । (मलयालम)

मलयालम में संबन्ध के अर्थ में संप्रदान का प्रयोग किया जाता है । लेकिन हिन्दी में इसके लिए सम्बन्ध कारक का प्रयोग ही होता है । जैसे,

रामन्नु रंटु पुत्रन्मार उन्टायिरुन्नु । (मलयालम)
राम के दो बेटे थे । (हिन्दी)

आवश्यकता बोधक क्रियाओं के साथ हिन्दी में संप्रदान आता है । जैसे, " रमेश को जाना है ", " रमा को पढ़ना है " आदि । ऐसे प्रयोग में मलयालम में कर्ताकारक प्रथम विभक्ति प्रयुक्त की जाती है । जैसे, रामन् पोकेन्टतायिरुन्नु (राम को जाना था), रवि एषुतेण्टिवन्नु (रवि को लिखना पड़ा) आदि ।

हिन्दी में क्रिया की अवधि के अर्थ में संप्रदान आता है । जैसे, " राम को गये एक साल हुआ । " मलयालम में कर्ता के साथ विभक्ति नहीं जोडते हैं । जैसे, " रामन् पोयिट्टु ओरु कोल्लमायि । "

अपादान कारक :-

संज्ञा का वह रूप जिससे अलगाव का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं । जैसे, " गंगा नदी हिमालय से निकलती है । " इस वाक्य में हिमालय अपादान कारक हैं । " से " इसकी विभक्ति है । मलयालम में इस विभक्ति का नाम " प्रयोजिका " है । इसका विभक्ति प्रत्यय " आल् ", " इलनिन्नू " और " काल् " है । जैसे, " वण्टिकारन् काळये वटियाल् अटिक्कुन्नु ।" (गाडीवाला बैल को छडी से मारता है ।) " गंगा हिमालयत्तिल् निन्नु उद्भविक्कुन्नु । " (गंगा हिमालय से निकलती है ।) हिन्दी में अपादान कारक केलिए " से " प्रत्यय का ही प्रयोग होता है ।

" डरना " धातु के साथ हिन्दी में अपादान कारक का प्रयोग किया जाता है । लेकिन मलयालम में इसकेलिए कर्मकारक का प्रयोग होता है । जैसे,

राजू मुझ से डरता है । (हिन्दी)
राजू ऍन्ने पेटिक्कुन्नु । (मलयालम)

परे, होकर, दूर, बाहर आदि अव्ययों के साथ हिन्दी सम्बन्धकारक के बदले अपादान कारक आता है । जैसे, " घर से दूर ", " गाँव से आगे " आदि ।

मलयालम में इसके स्थान पर " न्नु " का प्रयोग किया जाता है । जैसे, " वीट्टिन्नु पुरत्तु ", " ग्रामत्तिन्नु पुरत्तु " आदि । कभी कभी अधिकरण के साथ मलयालम में " वच्चु " आता है । लेकिन हिन्दी में, अधिकरण के साथ "से" प्रत्यय का प्रयोग होता है। जैसे,

हिन्दुओं में से (हिन्दी)

हिन्दुक्कलिल वच्चु (मलयालम)

सम्बन्ध कारक :-

संज्ञा के उस रूप को जिसका सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों से हो, सम्बन्ध कारक कहते हैं । जैसे, " सीता की गुड़िया प्रदर्शिनी के लिए भेजी गई है । " इस वाक्य में सीता सम्बन्ध कारक है । " की " विभक्ति है । " राजू रमेश का दोस्त है । " इसमें " रमेश " सम्बन्धकारक है और " का " इसकी विभक्ति है । " रवि के दो लड़के हैं । " इस वाक्य में " रवि " सम्बन्ध कारक है और " के " इसकी विभक्ति है । अतः इसकी तीन विभक्तियाँ है - " का ", "के", " की " । सम्बन्ध पुल्लिंग है तो " का " स्त्रीलिंग है तो " की " और पुल्लिंग बहुवचन है तो " के " का प्रयोग किया जाता है । मलयालम में इसका नाम " सम्बन्धिक " है और विभक्ति प्रत्यय " उटे " और " न्टे " है । मगर लिंग के अनुसार कोई परिवर्तन इस प्रत्यय में नहीं होता । जैसे, " रामन्टे मकन् ", (राम का बेटा), " रामन्टे पुत्रन्मार " (राम के बेटे), रामन्टे पुत्रिमार (राम की बेटियाँ), सीतयुटे पेन (सीता की कलम) आदि । फिर भी कभी कभी मलयालम में सम्बन्धकारक के बदले सम्प्रदान आता है । जैसे, रामनु रंटु पुत्रन्मार उन्टायिरुन्नु (राम के दो थे) हिन्दी में इस प्रवृत्ति का सर्वथा अभाव है ।

संज्ञा से " होना ", " करना " आदि सहायक क्रियायें जोड़कर जहाँ क्रिया बनाई जाती है, वहाँ हिन्दी में सम्बन्ध कारक आता है । मलयालम में सम्बन्ध कारक के स्थान पर कर्म कारक ही अधिक आता है । क्योंकि मलयालम की संज्ञाओं में सहायक क्रियाएँ जोड़कर नहीं, प्रत्यय जोड़कर नामधातु बनाने का विशेष क्रम है । जैसे,

राजू मेरी मदद करता है । (हिन्दी)
राजू ऐन्ने सहायिक्कुन्नु (मलयालम)

अधिकरण कारक :-

संज्ञा का वह रूप जो क्रिया के आधार हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं । जैसे, " डाल पर कोयल कूकती है " या " कमरे में अतिथि बैठे है । " इन में " डाल ", और " कमरे " अधिकरण कारक में है तथा " पर " और " में " इसकी विभक्तियाँ हैं । मलयालम में इस विभक्ति का नाम " आधारिका " है । इसके विभक्ति प्रत्यय हैं - " इल् " और " मेल् " । जैसे, मेत्तयिल किटक्कुन्नु " (बिस्तर पर लेटता है ।), "चाय मेशमेल वक्कु " (चाय मेज़ पर रखो) आदि ।

मोल - तोल में हिन्दी में अधिकरण आता है, लेकिन मलयालम में अपादान का प्रयोग होता है । जैसे,

रमेश ने बीस रुपये में गाय ली । (हिन्दी)
रमेशन् इरुपतु उरुपयक्कु पशुविने वाङ्ङि । (मलयालम)

काल और स्थानवाचक क्रिया विशेषणों में अधिकरण लुप्त रहता है ।

जैसे, " इन दिनों वह कहाँ है", " उस समय मेरी बुद्धि ठिकाने न थी ", " दस बजे सभा हुई " आदि । लेकिन मलयालम में इसका प्रयोग इल्, क्क प्रत्यय के साथ ही किया जाता है । जैसे, " ई दिवसङ्ङळिल् अवन् एविडेयायिरुन्नु ", " पत्तु मणिक्कु सभा तुडङ्ङि " आदि ।

सम्बोधन कारक :-

संज्ञा के जिस रूप से किसी को " पुकारना ", " चेतावनी देना " या " सम्बोधित करना " आदि सूचित हो, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं । जैसे, " हे ईश्वर तुम्ही रक्षक हो । " इस वाक्य में ईश्वर सम्बोधन कारक है और इसकी विभक्ति है " हे " । हिन्दी में सम्बोधन कारक में आकारान्त एकवचन " ए " कार बन जाते हैं । बहुवचन में " ओ " जुड़ते हैं । जैसे, " हे बच्चे ", " हे भाइयों " आदि । सम्बोधन में हिन्दी की तरह मलयालम में " ए", " हे " आदि शब्दों के पहले लगाये जाते हैं । सम्बोधन का प्रयोग करते समय लिंग प्रत्यय " अन् " लुप्त हो जाता है और उसके स्थान पर पुल्लिंग में " आ " जोड़ते हैं । जैसे, रामा, कृष्णा, गुरुवायूरप्पा, लक्ष्मणा आदि । बहुवचन में " ए " जोड़ते हैं । जैसे, मनुष्यरे, आण्कुट्टिकळे, पेण्कुट्टिकळे आदि । स्त्रीलिंग और व्यंजनांत संज्ञाओं का " अ " कार, " ए " कार बन जाता है । जैसे, स्त्रीलिंग में अम्मे, राधे, सीते, शकुन्तले, प्रियंवदे आदि । व्यंजनांत संज्ञाएँ मकने, मकळे, कुट्टिकळे, पेरुमाळे आदि ।

कारक विभक्तियों की समस्याओं का विवेचन :-

कारक विभक्तियों के प्रयोग करते वक्त केरल के छात्रों के सामने काफी समस्यायें उपस्थित होती हैं । इसका प्रमुख कारण यह है कि हिन्दी की अर्थसंकल्पना और मलयालम की अर्थसंकल्पना का अन्तर है । मलयालम में प्रयुक्त विभक्ति प्रत्ययों तथा हिन्दी में प्रयुक्त विभक्ति प्रत्ययों में किसी भी तरह की समानता नहीं है । अतः वे अपनी मातृभाषा के प्रभाव के कारण जाने अनजाने मातृभाषा की संरचना का प्रयोग कर बैठते हैं । कारक विभक्तियों के प्रयोग से संज्ञा में उत्पन्न होने वाली समस्याओं को सुविधा के लिए निम्न प्रकार से विभाजित किया जा सकता है ।

" ने " सम्बन्धी समस्यायें :-

केरल में हिन्दी के अध्ययन करने वाले छात्रो के सामने अकसर कठिनाई उत्पन्न करने वाला विभक्ति प्रत्यय है " ने "। कभी कभी अनजाने में वे " ने " प्रत्यय का प्रयोग छोड़ देते हैं और कभी " ने " का अनावश्यक प्रयोग भी करते हैं ।

कर्ताकारक (निर्देशिका) का तीनों कालों में कोई विभक्ति प्रत्ययों का प्रयोग मलयालम में नहीं है । जैसे, " रमेशन् पन्तु कळिच्चु " (रमेश ने गेंद खेला) । इसलिए हिन्दी में कभी कभी वे " ने " प्रत्यय जोड़ना भूल जाते हैं । जैसे, " इसमें अज्ञेय जीनेएक बार फिर अपनी अखण्ड मानव आस्था को भारतीयता के नाम से प्रचलित रहस्यवादिता से दूर रखा है । " यहाँ क्रिया सकर्मक है और भूतकाल में प्रयुक्त की गई है इसलिए इसमें कर्ता के साथ ने " प्रत्यय अनिवार्य है ।

लेकिन यहाँ मलयालम भाषा में किसी प्रत्यय के इस्तेमाल न होने के कारण अनजाने में इसका प्रयोग " इसमें अज्ञेय जी ने एक बार फिर अपनी अखण्ड मानव आस्था को भारतीयता के नाम से प्रचलित रहस्यवादिता से दूर रखा है । " जैसे करते हैं । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. इन पंक्तियों में कवि दैनिक जीवन के सामान्य व्यापार के माध्यम से सृष्टि की संपूर्ण कहानी कह दी है ।
   (अशुद्ध)

   इन पंक्तियों में कवि ने दैनिक जीवन के सामान्य व्यापार के माध्यम से सृष्टि की संपूर्ण कहानी कह दी है ।
   (शुद्ध)

2. अज्ञेय " नदी के द्वीप में नये अलंकारों में मानवीकरण का सर्वाधिक प्रयोग किया है । (अशुद्ध)

   अज्ञेय ने " नदी के द्वीप " में नये अलंकारों में मानवीकरण का सर्वाधिक प्रयोग किया है । (शुद्ध)

दूसरी बात तो यह है कि मलयालम भाषा - भाषी कभी कभी " ने " का अनावश्यक प्रयोग कर डालता है । भूतकाल में अकर्मक क्रियाओं को छोड़कर सभी क्रियाओं के साथ " ने " का प्रयोग किया जाता है । लेकिन मलयालम भाषा - भाषी अक्सर अकर्मक क्रियाओं के साथ भी " ने " का प्रयोग कर बैठता है । इसलिए " आना " क्रियाधातु के भूतकालिक रूप के साथ " ने " का प्रयोग हमेशा करता है । जैसे, एक शिकारी ने वहाँ आया ।" यहाँ " आना " क्रियाधातु के भूतकालिक रूप " आया " का प्रयोग हुआ है । चूँकि आना अकर्मक क्रियाधातु है, इसलिए इसके साथ " का प्रयोग नहीं किया जाता ।

इस प्रकार की गलतियाँ करने का कारण यह हो सकता है कि हिन्दी में अकर्मक क्रियाओं के साथ प्रत्यय जोड़ने की विधि नहीं है । मलयालम भाषा - भाषी लापरवाही से अपवादों को नियमों के अन्दर समेटकर इस्तेमाल करता है । इसलिए अकर्मक क्रियाओं के साथ " ने " का प्रयोग किया गया है ।

हिन्दी में अपूर्ण भूतकाल और हेतुहेतुमत् भूतकाल के साथ " ने " का प्रयोग नहीं किया जाता । लेकिन मलयालम भाषा - भाषी अज्ञान से इसका प्रयोग अपूर्ण भूतकाल और हेतुहेतुमत् भूतकाल में भी करता है । जैसे, " दशरथ ने अयोध्या में शासन करता था । यहाँ क्रिया अपूर्ण भूतकाल में है । इसलिए कर्ता के साथ " ने " का प्रयोग नहीं किया जाता । सही वाक्य है - " दशरथ अयोध्या में शासन करते थे । " उसी प्रकार हेतुहेतुमत् भूतकाल में भी " ने " का प्रयोग किया जाता है । जैसे, अगर माँ ने दवा पीता तो अच्छा होता । इसमें भी ने का प्रयोग अनावश्यक है । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. पिताजी ने पहले सिगरेट पीता था । ﴾ अशुद्ध ﴿
   पिताजी पहले सिगरेट पीता था । ﴾ शुद्ध ﴿

2. यदि साहब ने निमंत्रण देते तो मैं उनके यहाँ ज़रूर जाता । ﴾ अशुद्ध ﴿

   यदि साहब निमंत्रण देते तो मैं उनके यहाँ ज़रूर जाता । ﴾ शुद्ध ﴿

कर्ता के साथ " ने प्रत्यय लगने से क्रिया कर्म के अनुसार चलती है । यह हिन्दी के खास नियम है ।

लेकिन आम तौर पर कर्ता के अनुसार क्रिया चलती है । इसलिए " ने " का प्रयोग करते वक्त मलयालम भाषा भाषी कर्ता के अनुसार ही क्रिया का प्रयोग लापरवाही से करता है, जैसे - " राजू और रमेश ने हिन्दी में बातचीत किये । " इसमें कर्ता के अनुसार क्रिया का प्रयोग किया गया है जो गलत है । उसका सही प्रयोग इस प्रकार होना चाहिए - " राजू और रमेश ने हिन्दी में बातचीत की । "

सकर्मक क्रियाओं में " ला ", " बोल ", भूल " आदि के साथ ने का प्रयोग नहीं होता है । मलयालम भाषा भाषी इसे भी नियमों के भीतर समेटकर इस्तेमाल करते हैं । जैसे, " पिता ने बच्चे केलिए एक खिलौना लाया । " इसमें " ला " क्रिया के भूतकालिक रूप " लाया " का प्रयोग हुआ है । इसलिए " ने " का प्रयोग अनजाने में यहाँ किया गया है जो अनावश्यक है । अतः सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए " पिता अपने बच्चे केलिए खिलौने लाये ।

हिन्दी में " सक ", " चुक " और " लग " सहायक क्रियाओं का प्रयोग करते समय " ने " का प्रयोग नहीं किया जाता । लेकिन मलयालम भाषा - भाषी अक्सर इन सहायक क्रियाओं के प्रयोग के समय भी " ने " का प्रयोग करता है जो सचमुच गलत है । जैसे, " शिकारी ने दुःखी होकर उसके पीछे दौड़ने लगा । चूँकि इसमें लग का प्रयोग हुआ है, इसलिए कर्ता (शिकारी) के साथ " ने " का प्रयोग अवांछित है । इसलिए उसका सही प्रयोग होना चाहिए शिकारी दुःखी होकर उसके पीछे दौड़ने लगा । इन सबका विश्लेषण क्रिया संबन्धी समस्याओं के अन्तर्गत विस्तार से किया जा रहा है ।

" को " सम्बन्धी समस्यायें :-

" को " विभक्ति प्रत्यय भी केरल के छात्रों के सामने कठिनाई उत्पन्न करता है । हिन्दी और मलयालम में अक्सर प्राणिवाचक संज्ञाओं के साथ " को " का प्रयोग किया जाता है और अप्राणिवाचक संज्ञाओं के साथ " को " का प्रयोग नहीं होता । लेकिन मलयालम भाषा भाषी अप्राणिवाचक संज्ञाओं के साथ हमेशा " को " जोड देते हैं जो बिलकुल अवांछित एवं अनावश्यक है । इससे वाक्य में त्रुटियाँ आ जाती है । जैसे, " इसमें सीता और राम के चरित्र को विस्तृत रूप में चित्रित किये गये हैं । " इसमें चरित्र अप्राणिवाचक संज्ञा है । इसके साथ " को " का प्रयोग अनावश्यक है । लेकिन केरल के छात्रों ने असावधानी के कारण उसके साथ " को " जोड दिया जिससे वाक्य में त्रुटि आ गयी । शुद्ध वाक्य इस प्रकार होना चाहिए - " इसमें सीता और राम के चरित्र विस्तृत रूप से चित्रित किये गये है । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. राम यातनाओं को सहता है । (अशुद्ध)
   राम यातनाएँ सहता है । (शुद्ध)
2. सब्जी को खूब पकी हुई होना चाहिए । (अशुद्ध)
   सब्जी खूब पकी हुई होना चाहिए । (शुद्ध)
3. तुलसीदास ने रामचरितमानस को रचा । (अशुद्ध)
   तुलसीदास ने रामचरितमानस रचा । (शुद्ध)
4. इस रहस्य को प्रकट नहीं किया जा सकता । (अशुद्ध)
   यह रहस्य प्रकट नहीं किया जा सकता । (शुद्ध)

चाहिए, पड़ना आदि आवश्यकताबोधक एवं विवशताबोधक सहायक क्रियाओं का प्रयोग करते समय " को " का प्रयोग अनिवार्य है । लेकिन केरल के छात्र अक्सर इनके साथ " को " का प्रयोग नहीं करते । क्योंकि मलयालम में इस प्रकार की क्रियायें कर्ताकारक प्रथम विभक्ति में आती है । चूँकि मलयालम में कर्ताकारक को द्योतित करने वाला कोई विभक्ति प्रत्यय नहीं, इसलिए हिन्दी में कर्ता को बिना किसी प्रत्यय के प्रयुक्त करते हैं । जैसे, " लड़कियाँ घर की सफ़ाई करनी चाहिए । इसमें कर्ता (लड़कियाँ) के साथ कोई विभक्ति प्रत्यय का प्रयोग नहीं किया गया है । शुद्ध वाक्य इस प्रकार होना चाहिए — " लड़कियों को घर की सफ़ाई करनी चाहिए । उसी प्रकार " पड़ना " विवशताबोधक सहायक क्रिया का प्रयोग करते समय भी इस प्रकार की त्रुटियाँ आ जाती हैं । जैसे, " गान्धीजी स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जेल जाना पडा । यहाँ कर्ता (गान्धीजी) के साथ कोई विभक्ति प्रत्यय का प्रयोग नहीं किया गया है । शुद्ध वाक्य इस प्रकार होना चाहिए — " गान्धीजी को स्वाधीनता संग्राम के दौरान जेल जाना पड़ा ।

सक " सहायक क्रिया का प्रयोग करते वक्त " को " का प्रयोग हिन्दी में अवांछित है । लेकिन मलयालम में इस प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग करते समय संप्रदान या उद्देशिक विभक्ति का प्रयोग किया जाता है । इस प्रवृत्ति के कारण केरल के छात्र " सक " का प्रयोग करते समय भी को का प्रयोग अनावश्यक कर डालते हैं । जैसे, शीला को हिन्दी पढ़ सकती है । इसमें " को " का प्रयोग शीला के साथ प्रयुक्त हुआ है जो बिलकुल अनावश्यक है । क्योंकि इस प्रकार का प्रयोग हिन्दी में नहीं ।

शुद्ध वाक्य होना चाहिए - " शीला हिन्दी पढ़ सकती है ।

हिन्दी में " को " का प्रयोग करते समय कर्ता के अनुसार नहीं कर्म के लिंग वचन से क्रिया प्रभावित होती है । लेकिन मलयालम में क्रिया, कर्ता या कर्म के लिंग, वचन से प्रभावित नहीं होता, बल्कि हर वाक्य में कर्ता की प्रमुखता रहती है । इसलिए हिन्दी में भी " को " का प्रयोग करते वक्त कर्ता के लिंग वचन के अनुसार क्रिया का प्रयोग करते हैं जिससे गलतियाँ पैदा हो जाती हैं । जैसे, " राजू को नयी कलम खरीदना पड़ा । " इसमें क्रिया का प्रयोग कर्ता के अनुसार किया । इसलिए पुल्लिंग के रूप में प्रयोग किया गया । शुद्ध वाक्य होना चाहिए -- " राजू को नयी कलम खरीदनी पड़ी । "

" से " सम्बन्धी समस्यायें :-

हिन्दी में कुछ संज्ञाएँ ऐसी हैं जिनके साथ से का प्रयोग नहीं किया जाता । जैसे - प्यास, भूख, हाथ, बहाना, कान, जल्दबाज़ी आदि । लेकिन मलयालम में इसकी समानार्थी संज्ञाओं क्रमशः दाहम्, विशप्प, कै, तिरक्कें आदि के साथ प्रत्यय जोड़ने की प्रवृत्ति है । इसलिए केरल के छात्र इन संज्ञाओं के साथ इसका प्रयोग करते हैं जो गलत एवं अवांछित है । जैसे,

1. हरि के हाथों से पत्र भिजवा दिया । (अशुद्ध)
   हरि के हाथों पत्र भिजवा दिया । (शुद्ध)

2. बस हाथों हाथ से काम हो गया । (अशुद्ध)
   बस हाथों हाथ काम हो गया । शुद्ध

3. जबरदस्ती से काम करना आपके बूते की बात नहीं ।
(अशुद्ध)

जबरदस्ती काम करना आपके बूते की बात नहीं ।
(शुद्ध)

4. चलो, इस बहाने से आप तो आ गये । (अशुद्ध)
चलो, इस बहाने आप तो आ गये । (शुद्ध)

कुछ प्रसंगों में जहाँ " से " का प्रयोग अपेक्षित है, वहाँ मलयालम में अधिकरण कारक (आधारिक) का अर्थबोध होता है । ऐसे स्थानों पर केरल के छात्र " में " का प्रयोग करते हैं । जैसे,

1. प्रत्येक कार्य में उसकी योग्यता झलकती है । (अशुद्ध)
प्रत्येक कार्य से उसकी योग्यता झलकती है । (शुद्ध)

2. कुत्ता क्रोध में अतिथि पर झपटा । (अशुद्ध)
कुत्ता क्रोध से अतिथि पर झपटा । (शुद्ध)

कुछ प्रसंगों में जहाँ " से " का ही प्रयोग अपेक्षित है, वहाँ कर्मकारक का अर्थबोध होता है । उस स्थान पर वे कर्मकारक का ही प्रयोग करके गलतियाँ पैदा करते हैं । जैसे,

1. तुम अब राजू को प्रेम करना छोड़ दो । (अशुद्ध)
तुम अब राजू से प्रेम करना छोड़ दो । (शुद्ध)

गुप्तजी रमेश को इस पुस्तक के सम्बन्ध में कहा करते थे कि यह एक उत्तम ग्रन्थ है । (अशुद्ध)

गुप्तजी रमेश से इस पुस्तक के सम्बन्ध में कहा करते थे कि यह एक उत्तम ग्रन्थ है । (शुद्ध)

किसी से तुलना करते वक्त हिन्दी में " से " का प्रयोग किया जाता है । लेकिन मलयालम में अधिकरण (आधारिक) इसके लिए प्रयुक्त होता है । इसलिए केरल के छात्र " से " के स्थान पर " में " का प्रयोग करते हैं । जैसे,

1. राजू सब में श्रेष्ठ है । (अशुद्ध)
   राजू सब से श्रेष्ठ है । (शुद्ध)

2. रमेश सब में अच्छा है । (अशुद्ध)
   रमेश सब से अच्छा है । (शुद्ध)

3. श्रीमती इन्दिरा गान्धी सब में कुशल प्रशासक है । (अशुद्ध)
   श्रीमती इन्दिरा गान्धी सब से कुशल प्रशासक है । (शुद्ध)

" का ", " के ", " की " सम्बन्धी समस्यायें :-

" का ", "के ", " की " प्रत्यय भी अक्सर कठिनाई उत्पन्न करते हैं । " का " का प्रयोग पुल्लिंग में और " की " का प्रयोग स्त्रीलिंग में किया जाता है । इसलिए यह जानना पड़ता है कि अमुक संज्ञा का प्रयोग पुल्लिंग में है या स्त्रीलिंग में । इस तरह की प्रवृत्ति मलयालम में नहीं । लिंग ज्ञान के बिना संज्ञा का प्रयोग मलयालम में होता है । इसलिए केरल के छात्र इसका प्रयोग करते वक्त गलतियाँ कर बैठते हैं । जैसे,

1. ईश्वर के शरण के अलावा मुक्ति का कोई और उपाय नहीं । (अशुद्ध)
   ईश्वर की शरण के अलावा मुक्ति का कोई और उपाय नहीं । (शुद्ध)

2. रामू की खेत पर घर के पास ही है । ﴾ अशुद्ध ﴿
   रामू का खेत घर के पास ही है । ﴾ शुद्ध ﴿

" के " सम्बन्धी गलतियाँ वचन सम्बन्धी समस्याओं से जुड़ी हुई हैं । क्योंकि इसका प्रयोग बहुवचन संज्ञाओं के पूर्व होता है । अर्थात् संज्ञाओं के बहुत्व को सूचित करने के लिए " के " का प्रयोग किया जाता है । हिन्दी की कुछ संज्ञाएँ ऐसी हैं जिनका प्रयोग हमेशा बहुवचन में होता है । उसका प्रयोग केरल के छात्र एकवचन समझकर करते हैं । जैसे, दर्शन, आँसू, होश, प्राण, बाल आदि । इनका प्रयोग वे एकवचन में करके गलतियाँ कर बैठते हैं । जैसे,

1. राम का प्राण निकल गया । ﴾ अशुद्ध ﴿
   राम के प्राण निकल गये । ﴾ शुद्ध ﴿

2. स्वामीजी से भक्त का दर्शन हो गया । ﴾ अशुद्ध ﴿
   स्वामीजी से भक्त के दर्शन हो गये । ﴾ शुद्ध ﴿

3. रमा का बाल लम्बा है । ﴾ अशुद्ध ﴿
   रमा के बाल लम्बे हैं । ﴾ शुद्ध ﴿

हिन्दी में स्वामित्व या अधिकार बोध कराने वाले शब्दों के साथ हमेशा " के " का प्रयोग किया जाता है चाहे संज्ञा एकवचन में ही क्यों न हो । लेकिन मलयालम में इस प्रकार के स्वामित्व बोध कराने के लिए कोई खास परसर्ग का प्रयोग नहीं किया जाता । इसलिए कभी कभी स्वामित्व या अधिकार बोधक संज्ञाओं का प्रयोग करते वक्त केरल के छात्र " के " का प्रयोग नहीं करता । बल्कि उसके स्थान पर का का प्रयोग ही करता है ।

जैसे,

1. राम का एक भैंस है । § अशुद्ध §
   राम के एक भैंस हैं । § शुद्ध §
2. गोपाल का एक लड़का है । § अशुद्ध §
   गोपाल के एक लड़का है । § शुद्ध §
3. आज राम का कीर्तन हुआ । § अशुद्ध §
   आज राम के कीर्तन हुए । § शुद्ध §
4. शीला का भाई आ रहा है । § अशुद्ध §
   शीला के भाई आ रहे हैं । § शुद्ध §

हिन्दी में आदर प्रकट करने केलिए एकवचन संज्ञाओं का प्रयोग बहुवचन में किया जाता है । केरल के छात्र इसका प्रयोग एकवचन में करते हैं जिससे समस्यायें उत्पन्न होती है । अतः वे ऐसी संज्ञाओं के पहले " का " का ही प्रयोग करते हैं । जैसे,

1. कबूतरों का राजा परिवार सहित आया । § अशुद्ध §
   कबूतरों के राजा परिवार सहित आये । § शुद्ध §
2. राधा का मामाजी आज बंबई से आयेगा । § अशुद्ध §
   राधा के मामाजी आज बंबई से आयेंगे । § शुद्ध §
3. राजू का भाई डाक्टर है । § अशुद्ध §
   राजू के भाई डाक्टर हैं । § शुद्ध §

" में " सम्बन्धी समस्यायें :-

अधिकरण कारक के लिए हिन्दी में " में और पर " विभक्ति प्रत्यय हैं । परन्तु इनके प्रयोग में बड़ा अन्तर है ।

केरल के छात्र दोनों का प्रयोग एक समझकर प्रयुक्त करते हैं जिससे गलतियाँ उत्पन्न होती हैं । जैसे,

1. राधा कुर्सी में बैठी है । § अशुद्ध §
   राधा कुर्सी पर बैठी है । § शुद्ध §
2. सोमन बिस्तर में लेटा है । § अशुद्ध §
   सोमन बिस्तर पर लेटा है । § शुद्ध §
3. रमा को सड़क में मिला । § अशुद्ध §
   रमा को सड़क पर मिला । § शुद्ध §
4. उस बच्चे में दया कीजिए । § अशुद्ध §
   उस बच्चे पर दया कीजिए । § शुद्ध §
5. पक्षी वृक्ष में बैठा है । § अशुद्ध §
   पक्षी वृक्ष पर बैठी है । § शुद्ध §
6. हनुमान की दृष्टि प्रभु में पड़ी है । § अशुद्ध §
   हनुमान की दृष्टि प्रभु पर पड़ी है । § शुद्ध §
7. घाव में मरहम लगा दो । § अशुद्ध §
   घाव पर मरहम लगा दो । § शुद्ध §
8. आज की बैठक आपके निवास में होगी । § अशुद्ध §
   आज की बैठक आपके निवास पर होगी । § शुद्ध §
9. अनेक स्थानों में स्पष्ट किया गया है । § अशुद्ध §
   अनेक स्थानों पर स्पष्ट किया गया है । § शुद्ध §

इस प्रकार की गलतियों का प्रमुख कारण दोनों भाषाओं की अर्थ संकल्पना का अन्तर है ।

हिन्दी में कुछ शब्दों के साथ " में " का प्रयोग अनावश्यक है । ऐसे स्थानों में केरल के छात्र " में " का प्रयोग करते हैं । दोनों भाषाओं की अर्थ संकल्पना के अन्तर के कारण इस प्रकार की गलतियाँ हो जाती हैं । जैसे,

1. आप भीतर में जाकर देख लो । {अशुद्ध}
   आप भीतर जाकर देख लो । {शुद्ध}
2. दर असल में उसने अपराध किया था । {अशुद्ध}
   दर असल उसने अपराध किया था । {शुद्ध}
3. दरहकीकत में वह काफी बढ़ता रहा । {अशुद्ध}
   दरहकीकत वह काफी बढ़ता रहा । {शुद्ध}
4. पिछले दिनों में वह काफी पढ़ता रहा । {अशुद्ध}
   पिछले दिनों वह काफी पढ़ता रहा । {शुद्ध}
5. उसने घर में से निकलकर भी नहीं देखा । {अशुद्ध}
   उसने घर से निकलकर भी नहीं देखा । {शुद्ध}
6. वह मन ही मन में रोने लगा । {अशुद्ध}
   वह मन ही मन रोने लगा । {शुद्ध}
7. सारी शक्ति उनके हाथों में सौंप दी । {अशुद्ध}
   सारी शक्ति उनके हाथों सौंप दी । {शुद्ध}
8. वह अपने सिर में खुजलाता है । {अशुद्ध}
   वह अपना सिर खुजलाता है । {शुद्ध}
9. बच्चे विद्यालय में जाते हैं । {अशुद्ध}
   बच्चे विद्यालय जाते हैं । {शुद्ध}

" पर " सम्बन्धी समस्यायें :-

हिन्दी और मलयालम भाषा की अर्थ संकल्पना के अन्तर के कारण केरल के छात्र कभी कभी " पर " का प्रयोग भी छोड़ देते हैं, कभी " पर " का अनावश्यक प्रयोग करते हैं और कभी अन्य प्रत्ययों केलिए इसका प्रयोग करते हैं । कभी कभी वे " पर " का प्रयोग छोड़ देते हैं । जैसे,

1. हम तो आपके भरोसे ज़िन्दा हैं । (अशुद्ध)
   हम तो आपके भरोसे पर ज़िन्दा हैं । (शुद्ध)
2. मैं उसे हाथों रखूँगा । (अशुद्ध)
   मैं उसे हाथों पर रखूँगा । (शुद्ध)
3. अपने पैरों खड़ा होना चाहिए । (अशुद्ध)
   अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए । (शुद्ध)
4. तुम ने अपने पाँवों स्वयं कुल्हाड़ी मार दी । (अशुद्ध)
   तुम ने अपने पाँवों पर स्वयं कुल्हाड़ी मार दी ।
   (शुद्ध)

कभी कभी " पर " का अनावश्यक प्रयोग भी करते हैं । जैसे,

1. सारा भार अपने सिर पर क्यों लेते हो ? (अशुद्ध)
   सारा भार अपने सिर क्यों लेते हो ? (शुद्ध)
2. आप वहीं पर रहें । (अशुद्ध)
   आप वहीं रहें । (शुद्ध)

3. आप कहाँ पर थे ? § अशुद्ध §
   आप कहाँ थे ? § शुद्ध §

कभी कभी अन्य विभक्तियों के स्थान पर " पर " का अनावश्यक प्रयोग लापरवाही से करते हैं । जैसे,

1. आजकल प्रशासनिक सेवा पर महत्व दिया जा रहा है । § अशुद्ध §
   आजकल प्रशासनिक सेवा को महत्व दिया जा रहा है । § शुद्ध §
2. राघव ने गणित पर अच्छा अनुभव प्राप्त किया । § अशुद्ध §
   राघव ने गणित का अच्छा अनुभव प्राप्त किया । § शुद्ध §
3. मुझे एक काम पर जाना है । § अशुद्ध §
   मुझे एक काम से जाना है । § शुद्ध §
4. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी पर बड़ा उपकार किया । § अशुद्ध §
   भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी का बड़ा उपकार किया । § शुद्ध §
5. विद्यालय पर नेताओं की बड़ी भरमार है । §अशुद्ध §
   विद्यालय में नेताओं की बड़ी भरमार है । § शुद्ध §

<u>अन्य समस्यायें</u> :-

हिन्दी में किसी एकवचन पुल्लिंग संज्ञा के पहले " का का प्रयोग करने के बाद किसी प्रत्यय का प्रयोग करने से पहले वाला का " के " हो जाता है ।

लेकिन मलयालम में इस प्रकार प्रत्ययों का परिवर्तन नहीं होता । हिन्दी के इस विशेष प्रयोग से परिचित होकर भी अनजाने में केरल के छात्र " का " का ही प्रयोग करते हैं । जैसे, " प्रेम का काव्यशास्त्रीय रूप पर दृष्टि डालने से पहले श्रृंगार रस की ओर ध्यान देना होगा । " इसमें काव्यशास्त्रीय रूप के पहले का " प्रयोग हुआ है और उसके तुरन्त बाद " पर " प्रत्यय भी आया है । इसलिए " का " का " के " होना अनिवार्य है । लेकिन अनजाने में " का " का ही प्रयोग किया गया है । सही प्रयोग इस प्रकार होना चाहिए -- " प्रेम के काव्यशास्त्रीय रूप पर दृष्टि डालने से पहले श्रृंगार रस की ओर ध्यान देना होगा । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. ऊर्मिला का विरह दुःख को स्पष्ट करते हुए कवि ने उसका चित्रण करने का प्रयास किया है । ﴾अशुद्ध﴿

   ऊर्मिला के विरह दुःख को स्पष्ट करते हुए कवि ने उसका चित्रण करने का प्रयास किया है । ﴾ शुद्ध ﴿

2. चित्रग्रीव का उपदेश के बावजूद सभी पक्षियों जाल को लेकर उड़ गए । ﴾ अशुद्ध ﴿

   चित्रग्रीव के उपदेश के बावजूद सभी पक्षियाँ जाल लेकर उड़ गयीं। (शुद्ध)

3. राजकाज का मामलों पर वह शाहजहाँ का हाथ बँटाया करती थी । ﴾ अशुद्ध ﴿

   राजकाज के मामलों पर वह शाहजहाँ का हाथ बँटाया करती थी । ﴾ शुद्ध ﴿

समस्याओं का निराकरण :-

कारक विभक्ति संबन्धी समस्याओं के विश्लेषण से पता चलता है कि विभक्ति सम्बन्धी नियमों का अध्ययन करने से इन समस्याओं का हल संभव नहीं है । सब से पहले इन आठों कारकों का तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन एवं विश्लेषण करके दोनों भाषाओं की कारक व्यवस्था के साम्य और वैषम्य को अच्छी तरह समझाना चाहिए । इससे दोनों भाषाओं के विशेष प्रयोग से अवगत होने का अवसर मिलेगा । केरल में इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन का कोई प्रावधान नहीं है । यहाँ शैक्षणिक संस्थाओं में पहले नियमों का अध्ययन होता है और उसे प्रयोग के ज़रिए लागू करने का प्रयोग किया जाता है । " आगमन प्रणाली " के ज़रिए इसका हल हो सकता है । इस प्रणाली के अनुसार पहले प्रयोग से अवगत होने का अवसर मिल जाता है और बाद में इन प्रयोगों के ज़रिए नियमों से अवगत हो जाता है । पाठ्यपुस्तकों में इसके प्रयोग पर ज़्यादा बल देने तथा हिन्दी अध्यापक और अध्यापिकाएँ इस तरह की गलतियों से अवगत होकर इन्हें दूर कराने का प्रयत्न करने से इस तरह की समस्याओं का हल आसानी से हो सकता है ।

निष्कर्ष :-

हिन्दी और मलयालम की संज्ञाओं के तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि दोनों भाषाओं में प्रयुक्त एक रूपी भिन्नार्थी संज्ञाओं के भिन्न [illegible] को समझकर हिन्दी में उनका प्रयोग किया जाना चाहिए । हिन्दी और मलयालम के लिंग संबन्धी नियमों तथा उनसे होनेवाले समस्याओं पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि लिंग संबन्धी समस्याओं के अनेक कारण हैं और कभी कभी

नियमों की बहुलता और नियमों के अपवादों के कारण केरल के छात्र असमंजस में पड़ जाते हैं कि अमुक लिंग का प्रयोग कौन से लिंग में करना है । लिंग संबन्धी समस्याओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी में संज्ञा के लिंग जानने के बाद ही उसका वाक्यों में प्रयोग होने के कारण केरल के छात्रों को लिंग निर्धारित करते समय सतर्क रहना होगा । हिन्दी और मलयालम के वचन सम्बन्धी नियमों तथा उनसे होने वाली समस्याओं पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि केरल के छात्रों की वचन सम्बन्धी समस्याओं का प्रमुख कारण लापरवाही असावधानी, मातृभाषा का अवांछित हस्तक्षेप आदि है । इसलिए वचन का प्रयोग करते समय केरल के छात्रों को सजग रहना होगा । हिन्दी और मलयालम की कारक व्यवस्था और उससे होने वाली समस्याओं पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इन समस्याओं का कारण दोनों भाषाओं की कारक व्यवस्था में दीख पड़नेवाले अन्तर तथा दोनों भाषाओं की अर्थ संकल्पना का अन्तर है । ने सम्बन्धी नियमों का अपवाद जले पर नमक छिडकता है । मलयालम भाषा - भाषियों के हिन्दी अध्ययन में जिन विभक्ति प्रत्ययें का प्रयोग नहीं हो पाता उसका मूल कारण मलयालम भाषा की कारक व्यवस्था का प्रभाव है । इसलिए दोनों भाषाओं की कारक व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए तथा जिन जिन वैषम्यों से हिन्दी के कारक प्रत्ययों के प्रयोग सम्बन्धी गलतियाँ हो जाती हैं उनकी ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए ।

चौथा अध्याय

केरल में हिन्दी अध्ययन की सर्वनाम और विशेषण संबन्धी समस्यायें

सर्वनाम और विशेषण ऐसे व्याकरणिक अंग हैं जो क्रमशः संज्ञा के बदले प्रयुक्त होते हैं और संज्ञा की विशेषता बताते हैं । हिन्दी और मलयालम के सर्वनाम और विशेषण में कुछ समानता के बावजूद कुछ विषमता भी पायी जाती है जो केरल में हिन्दी अध्ययन करनेवाले छात्र-छात्राओं को कुछ कठिनाईयाँ उपस्थित करती हैं । वे अपनी मातृभाषा मलयालम के अनुरूप इन दोनों का प्रयोग करने का प्रयास अनजाने ही करते हैं ।

सर्वनाम की परिभाषा:- हिन्दी और मलयालम में

एक ही संज्ञा को किसी वाक्य में बार बार दोहराना भद्दा मालूम होता है, अतः उसे बार बार न दोहराकर उसके स्थान पर दूसरे शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है । जैसे, मोहन बाजार गया है और मोहन नौ बजे वापस आएगा । यहाँ मोहन शब्द का प्रयोग दो बार किया गया है जिससे वाक्य की सुन्दरता नष्ट हो गयी है । मोहन शब्द को एक बार कहकर दूसरी बार "वह" सर्वनाम का प्रयोग करने से वाक्य और अधिक सुन्दर होगा । जैसे, मोहन बाजार गया है और वह नौ बजे वापस आएगा । इस प्रकार संज्ञा के स्थान पर उसके अर्थ को प्रकट करने केलिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं । अतः संज्ञा शब्द की पुनरुक्ति को दूर करने के लिए सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है । हिन्दी और मलयालम के व्याकरणों में अलग अलग

ढंग से इसकी परिभाषा दी गयी है। कामता प्रसाद गुरू ने इसकी परिभाषा [यों दी है:-] संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं जो पूर्वापर सम्बन्ध से किसी भी संज्ञा के बदले में आता है।"[1] किसी किसी ने इसकी परिभाषा यों की है -" वे विकारी शब्द जो संबोधन के अतिरिक्त अन्य कारकों में संज्ञा के स्थान ले सकते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं।"[2] जैसे - मैं, तू, यह, वह, जो, कुछ, कोई आदि ... लम के वैयाकरणों ने इसे संज्ञा के ही भेद ... । केरलपाणिनी के अनुसार सभी की संज्ञा [नाम] ... वाले शब्द सर्वनाम है।[3] एम. शेषगिरि प्रभु के अनुसार ... उस शब्द को कहते हैं जिसका स्वतंत्र ... अर्थ नही होता, लेकिन किसी संज्ञा के अर्थ के रूप में आ जाने से उसका अर्थ होता है।[4] अर्थात् हिन्दी और मलयालम में जो सर्वनाम है उसका प्रकार्य एक ही है। जैसे ञान [मैं], नी [तू], अवन् [वह - पुल्लिंग], अवळ् [वह-स्त्रीलिंग], अत् [वह-नपुंसक लिंग] आदि।

---

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरू पृ 64
2. हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण - डा लक्ष्मीनारायण शर्मा पृ 245
3. केरलपाणिनीयम् - केरलपाणिनी - पृ 145
4. व्याकरणमित्रम् - शेषगिरी प्रभु - पृ 96

केरल के हिन्दी अध्ययन में सर्वनाम सम्बन्धी कठिनाईयाँ काफी हद तक केरल के छात्रों के सामने समस्यायें उत्पन्न करती हैं। सर्वनाम और उससे सम्बन्धित समस्याओं का विश्लेषण आगे किया जा रहा है।

सर्वनामों के भेद - हिन्दी और मलयालम में

हिन्दी में सर्वनामों के छः भेद हैं जबकि मलयालम में इसके 12 भेद माने जाते हैं। आगे दोनों भाषाओं के सर्वनामों के भेदों की तुलना की गयी है और उसके बाद उससे संबन्धित समस्याओं का विश्लेषण भी किया गया है।

पुरुषवाचक सर्वनाम - हिन्दी और मलयालम में

वक्ता या लेखक बोलते या लिखते समय या तो अपने विषय में कुछ कहता है या सुननेवाले और पढनेवाले के विषय में। इन तीनों रूपों को व्याकरण में पुरुष कहते हैं। जो सर्वनाम बोलनेवाले, सुननेवाले और जिसके विषय में कुछ कहा जाय, उसका बोध कराते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। मलयालम में पुरुषवाचक नामक भेद नहीं हैं। लेकिन पुरुषवाचक सर्वनाम के जो तीन भेद हिन्दी में हैं वह अलग अलग भेद के रूप में मलयालम में भी है।

किसी किसी ने इसकी परिभाषा यों दी है -"पुरुषवाचक सर्वनाम श्रोता, वक्ता तथा विषय का बोध कराते हैं ।"[1] जैसे मैं, तुम, वह आदि । उदाहरण के लिए:-

हिन्दी	मलयालम
जब मैं बाजार गाया था तब तुम कहाँ गये ? क्या वह भी साथ था ।	ञान चन्तयिल् पोयप्पोल निडळ् एविटे पोयी ? अवनुं कुटेयुन्टायिरुन्नो ?

ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है कि हिन्दी और मलयालम में तीन पुरुष हैं । इसके आधार पर हिन्दी में पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं - उत्तम पुरुष सर्वनाम, मध्यम पुरुष सर्वनाम और अन्य पुरुष सर्वनाम । मलयालम में भी तीन भेद हैं जोकि मलयालम में 12 भेदों के अन्तर्गत आते हैं । लेकिन मलयालम में अन्य पुरुष को प्रथमपुरुष का नाम दिया गया है ।

1. हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण - डा. लक्ष्मीनारायण शर्मा - पृ 246.

उत्तम पुरुष सर्वनाम-हिन्दी और मलयालम में

बोलनेवाले या लिखनेवाले अपने लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग करते हैं, उसे उत्तम पुरुष सर्वनाम कहते हैं । जैसे, मैं (एकवचन)। मलयालम में भी उत्तम पुरुष सर्वनाम है । जैसे, ञान (मैं), ञङल, नाम् (हम) । "मैं" हिन्दी का उत्तम पुरुष सर्वनाम ञान का प्रयोग भी एकवचन में होता है । वक्ता या लेखक अपने ही संबन्ध में कुछ विधान करते समय इसका प्रयोग करता है । हम का प्रयोग उत्तम पुरुष के बहुवचन में प्रयुक्त होता है । मलयालम में हम के दो रूप है - ञङळ्, नाम् या नम्मुक्क इनमें से पहला श्रोता रहित बहुवचन रूप है जबकि दूसरा श्रोता सहित है । हिन्दी में दोनों के लिए हम ही व्यवहृत होता है । जैसे,

श्रोता सहित

मलयालम	हिन्दी
नाम् भ.रतीयराण्।	हम भारतीय हैं ।

श्रोता रहित

मलयालम	हिन्दी
ञङळुम् निङळुम् ओरु देशकाराण् ।	हम और तुम एक देश के हैं ।

मध्यम पुरुष सर्वनाम - हिन्दी और मलयालम में

जिस सर्वनाम का प्रयोग बोलनेवाला सुननेवालों के लिए करें, उसे मध्यम पुरुष सर्वनाम कहते हैं । जैसे तू, तुम, आप । मलयालम में इसके लिए समानार्थी मध्यमपुरुष सर्वनाम हैं -नी§तू§, निङळ्§तुम§, ताङळ्§आप§ आदि । उदाहरण के लिए :-

हिन्दी	मलयालम
तू कौन है ?	नी आराण् ?
तुम जानते हो ?	निङळ् अरियुमो ?
आप कहते हैं ।	ताङळ् परयुन्नु ।

अन्यपुरुष सर्वनाम - हिन्दी और मलयालम में

जो सर्वनाम वक्ता द्वारा अन्य व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हो, अन्यपुरुष सर्वनाम कहते हैं । जैसे :- वह, यह, वे, ये आदि । मलयालम में इसके लिए अनेक सर्वनाम हैं जिसे प्रथम पुरुष सर्वनाम कहते हैं । जैसे, अवन् §वह - पुलिंग, एकवचन§, अवळ् §वह-स्त्रीलिंग§, अत् §वह-नपुंसक§, अवर् §वे--पुलिंग,बहुवचन§, अद्देहम् §वे-आदरसूचक बहुवचन §, अव §वे-नपुंसक§, इवन्§यह-पुलिंग,

एकवचन), इवळ् (यह-स्त्रीलिंग), इत् (यह-नपुंसक), इवर (ये-पुलिंग, बहुवचन), इद्देहम् (ये-आदरसूचक बहुवचन), और इव (ये-नपुंसक) । जैसे :-

1. अवन् (वह)-पुलिंग

मलयालम	हिन्दी
अवन् वरुन्नु ।	वह आता है ।

2. अवळ् (वह)-स्त्रीलिंग

मलयालम	हिन्दी
अवळ् वरुन्नु ।	वह आती है ।

3. अवर (वे)-पुलिंग

मलयालम	हिन्दी
अवर वरुन्नु ।	वे आते हैं ।

4. अवर (वे)-स्त्रीलिंग

मलयालम	हिन्दी
अवर वरुन्नु ।	वे आती हैं ।

5. इवन (यह)-पुलिंग

मलयालम	हिन्दी
इवन वरुन्नु ।	यह आता है ।

6. इवळ् (यह)-स्त्रीलिंग

मलयालम	हिन्दी
इवळ् वरुन्नु ।	यह आती है ।

7. <u>इवर् (ये)-पुलिंग</u>

मलयालम	हिन्दी
इवर वरुन्नु ।	ये आते हैं ।

8. <u>इवर् (ये)-स्त्रीलिंग</u>

मलयालम	हिन्दी
इवर वरुन्नु ।	ये आती हैं ।

इससे स्पष्ट है कि हिन्दी में सजीव, निर्जिव, मनुष्य, पशु-पक्षी सभी के द्योतक सर्वनाम समान हैं । इसलिए कभी कभी दिक्कत हो सकती है । मगर मलयालम में मनुष्यों के स्त्री-पुरुष के लिए अलग अलग सर्वनाम है । जैसे , पुलिंग अन्यपुरुष सर्वनाम के लिए एकवचन में अवन (वह) इवन (यह), स्त्रीलिंग एकवचन के लिए अवळ् (वह), और इवळ् (यह), तथा पुलिंग और स्त्रीलिंग बहुवचन के लिए अवर् (वे), और इवर (ये) प्रयुक्त होते हैं । आदरार्थ सूचित करने के लिए पुलिंग एकवचन में इद्देहम (ये) अद्देहम (वे) का प्रयोग है जबकि हिन्दी में आदर सूचित करने के लिए बहुबचन ये और वे का प्रयोग ही चलता है । मलयालम में पशु-पक्षी तथा निर्जिव वस्तुओं के लिए अतु और इतु प्रयोग में आते हैं । अतः हम कह सकते हैं कि मलयालम में इस विषय में हिन्दी की तरह रूपों की कमी नहीं है ।

इससे उत्पन्न समस्याओं का उल्लेख आगे किया जायेगा ।

<u>निजवाचक सर्वनाम</u> - हिन्दी और मलयालम में

वक्ता जहाँ अपने लिए आप शब्द का या अपने आप शब्द का प्रयोग करता है तब वह निजवाचक सर्वनाम हो जाता है । मलयालम में इसके समानार्थी सर्वनाम तान का प्रयोग होता है जोकि मलयालम का आत्मवाची सर्वनाम है ।

मलयालम	हिन्दी
तन्टे कार्यम् तान तन्ने चेय्यणम ।	अपना काम आप ही करना होगा ।

<u>निश्चयवाचक सर्वनाम</u> - हिन्दी और मलयालम

"जिस सर्वनाम से वक्ता के पास अथवा दूर की वस्तु का बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है ।"[1] जैसे यह, वह, ये, वे, सो आदि । मलयालम में इसके लिए इत्, अत्, इव, अव आदि का प्रयोग होता है । इसे मलयालम में विवेचक सर्वनाम कहते हैं ।

मलयालम	हिन्दी
इत् शास्त्रत्तिन्टे वरदानमाण्।	यह विज्ञान का वरदान है ।

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु - पृ 74

<u>अनिश्चयवाचक सर्वनाम</u> - हिन्दी और मलयालम में

ये पास या दूर के किसी अनिश्चत विषय के बारे में बोध कराता है। कामता प्रसाद गुरु के अनुसार" किसी सर्वनाम से किसी विषय वस्तु का बोध नहीं होता, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।"[1] अनिश्वयवाचक सर्वनाम दो ही है - कोई और कुछ। मलयालम में इसके लिए दो प्रकार के सर्वनाम हैं - नानार्थक सर्वनाम और अनास्थावाची सर्वनाम। चिल§कुछ§ और पल §कई§ नानार्थक सर्वनाम हैं। आरेन्किलुम्, एन्तेंक्किलुम, वल्ला §कोई§ अनास्थावाची सर्वनाम हैं।

मलयालम	हिन्दी
करञुतुकोण्डु वल्ल फलवुमुण्डो।	रोने से कोई फायदा नहीं है।

<u>संबन्धवाचक सर्वनाम</u> - हिन्दी और मलयालम में

संबन्धवाचक सर्वनाम वे हैं जो एक बात का दूसरी बात से संबन्ध प्रकट करते हैं। अर्थात् संबन्धवाचक सर्वनाम वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से संबन्ध स्थापित करते हैं। कामता प्रसाद गुरु के अनुसार "संबन्धवाचक सर्वनाम उसे कहते हैं जो कही हुई संज्ञा से कुछ वर्णन मिलाता है।"[2] "जो" संबन्धवाचक कर्वनाम है। मलयालम में इसके लिए 'आतोरुवन', 'आतोरुवळ्', यातोरु आदि

1. 'हिन्दी व्याकरण : कामता प्रसाद गुरु : पृ.17
2. वही - पृ. 79

समानार्थी शब्दों का प्रयोग होता है । 'जो' के साथ हमेशा 'वह' का प्रयोग होता है । कभी कभी सो का प्रयोग किया जाता है । इस प्रकार सम्बन्ध कारक सर्वनाम का संबन्ध एक दूसरे वाक्य से दिखाने वाले वह, सो आदि को नित्य संबन्धी सवर्नाम कहते हैं । मलयालम में इसे व्यापेक्षक सर्वनाम कहते हैं । जैसे,

मलयालम	हिन्दी
यातोरवन सम्पादिक्कुन्नुवो अवन् भक्षिक्कुम् ।	जो कमायेगा, वह खायेगा ।

प्रश्नवाचक सर्वनाम - हिन्दी और मलयालम में

किसी व्यक्ति, पदार्थ या घटना आदि के बारे में प्रश्न का बोध करनेवाला सर्वनाम प्रश्नवाचक सर्वनाम है । कामता प्रसाद गुरु के अनुसार "प्रश्न करने के लिए जिन सर्वनाम का उपयोग होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं ।" [1] ये दो हैं - कौन और क्या । मलयालम में कौन के लिए आर् {कौन} और एन्तु् {क्या} का प्रयोग किया जाता जिसे मलयालम में चोद्यवाची सर्वनाम कहते हैं । जैसे,

मलयालम	हिन्दी
इवरिल् आर् संसारिच्चु ?	इनमें कौन बोला ?
निङ्गळ् आहारत्तिनु् इन्नु् एन्ताणु् उण्डाक्कियत् ?	तुमने आज भोजन के लिए क्या बनाया है ?

कभी कभी मलयालम में चोद्यवाची सर्वनामों के साथ "ओक्के" और

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु पृ. 8

"एल्लाम्" आता है । जैसे, आरोक्के (कौन-कौन) एन्तोक्के (क्या-क्या), आरेल्लाम् (कौन-कौन), एन्तल्लाम् (क्या-क्या) । हिन्दी में प्रश्नवाचक सर्वनामों की पुनरुक्ति का प्रयोग इसके समान प्रयुक्त है । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
कौन - कौन आये ?	आरोक्के वन्नु ?
क्या - क्या लाये ?	एन्तोक्के कोण्डुवन्नु ?

<u>सर्वनाम के रूपान्तर</u> - हिन्दी और मलयालम में

वचन और कारक के कारण संज्ञाओं की तरह सर्वनामों का भी रूपान्तर होते हैं । मलयालम में भी यही प्रवृत्ति पाई जाती है । जैसे,

	एकवचन	बहुवचन
हिन्दी	वह जा रहा है ।	वे जा रहे हैं ।
मलयालम	अवन् पोकुकयाकुन्नु ।	अवर् पोकुकयाकुन्नु ।

परन्तु लिंग के कारण इनका रूप हिन्दी में नहीं बदलता । मलयालम में तीनों लिंगों के आधार पर इनमें परिवर्तन होता है । जैसे,

	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	नपुंसक
हिन्दी	वह नाचती है ।	वह नाचता है ।	वह क्या है ?
मलयालम	अवळ् नृत्तं चेय्युन्नु ।	अवन् नृत्तं चेय्युन्नु ।	अत् एन्ताण् ?

कर्तकारक के विभक्ति रहित बहुवचन में मैं, तू, यह, वह के रूप क्रमशः हम, तुम, ये, वे, हो जाते हैं । मलयालम में ञान् (मैं), नी (तू), अवन्, अवळ्, अत् (वह), अवन्, इवळ्, इत् (यह) क्रमशः ञङ्ङळ्, नाम (हम), तुम (निङ्ङळ्), अवर, अव (वे), इवर, इव (ये), हो जाते हैं ।

कर्तकारक और संबन्ध कारक को छोडकर शेषकारकों के एकवचन में 'मैं' और 'तू' का रूप क्रमशः 'मुझे' और 'तुझे' और 'हम' और 'तुम' का क्रमशः 'हमें', 'तुम्हें' हो जाते हैं । मलयालम में इस प्रकार का परिवर्तन नहीं है । सर्वनामों के साथ विभक्ति प्रत्यय जोडकर लिखते हैं । जैसे, ङ्ङळ्क्कु, निङ्ङळ्क्कु आदि । संबन्धकारक में मैं और हम तथा तू और तुम का रूप क्रमशः मे, हमा, तथा ते, और तुम्हा हो जाता है और का, के, की के स्थान पर रा, रे, री जुडता है । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
मेरा, मेरे, मेरी	एन्टे
तेरा, तेरे, तेरी	निन्टे
हमारा, हमारे, हमारी	ङ्ङळुटे
तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी	निङ्ङळुटे

मलयालम में सिर्फ ञान् (मैं) में थोड़ा परिवर्तन होता है। ञान् का 'एन' हो जाता है और उसके बाद प्रत्यय जुड़ता है। जैसे, एन्टे (मेरा, मेरे, मेरी) एनिक्कु (मुझको) आदि।

मैं, तू, यह, वह, कौन, और सर्वनामों के कर्म और संप्रदान कारकों में को की जगह एकवचन में 'ए' और बहुवचन में एँ विभक्तियाँ भी लगती हैं। जैसे, मुझको, मुझे, हमको, हमें आदि। लेकिन मलयालम में सिर्फ उनके साथ प्रत्यय जुड़ता है और उसका दूसरा रूप नहीं बनता।

सब, कुछ, और क्या शब्दों का रूपान्तर नहीं होता। जैसे, सबने। मलयालम में किसी सर्वनाम के रूपों मे प्रत्यय जोडने से परिवर्तन नहीं होता।

सर्वनाम की कारक रचना में एकाध को छोडकर बाकी सभी में समानता है। दोनों में सर्वनाम के विकृत रूपों के साथ ही कारक जुड़ते हैं। जैसे, मैं + को=मुझको, ञान + ए= एन्ने।

कारक सम्बन्धी एक असमानता भी है । मलयालम चिह्नों के जुडने पर कारकों के रूप में सभी सर्वनामों के साथ समानता है । जैसे, अव + नु= अवनु, इव + नु=इवनु, अतु + नु= अतिनु, अव ् + क्कु= अवळक्कु, अवर् + क्कु=अवरक्कु ।

परन्तु हिन्दी के संबन्धकारक की विभक्तियाँ का, के,की कुछ सर्वनामों के साथ वैसे ही रहती है तो कुछ के साथ रा,रे, री हो जाती है । जैसे, आप + का= आपका, आप + के=आपके, आप + की= आपकी, मैं + का= मेरा, मैं + के=मेरे, मैं + की=मेरी, तुम + का= तुम्हारा, तुम + के=तुम्हारे, तुम + की= तुम्हारी । निजवाचक आपके साथ लगाकर ना, ने, नी हो जाती है । जैसे, आप + का=अपना, आप + के=अपने, आप + की= आपनी ।

हिन्दी में आप को छोडकर बाकी सर्वनामों के साथ को विभक्ति जुडने पर दो रूप होते हैं । जैसे, वह + को=उसको, उसे, तुम + को= तुमको, तुम्हें, मैं + को= मुझको, मुझे ।

<u>सर्वनाम संबन्धी समस्यायें</u>

केरल के हिन्दी अध्ययन में संज्ञा की तरह सर्वनाम का भी लिंग, वचन, और कारक के अनुसार समस्यायें उत्पन्न होती हैं । आगे सर्वनाम से उत्पन्न होनेवाली लिंग, वचन, एवं कारक संबन्धी तथा अन्य समस्याओं का विश्लेषण किया गया है ।

<u>सर्वनाम की लिंग संबन्धी समस्यायें</u>

पुनरुक्ति को दूर करने के लिए संज्ञा के बदले में प्रयुक्त शब्द है सर्वनाम । इसलिए सर्वनाम के लिंग भी संज्ञा के अनुसार ही होना चाहिए । मलयालम में संज्ञा के लिंग पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता न होने के कारण केरल के छात्र सर्वनाम का प्रयोग हमेशा पुलिंग में करते है । जैसे, "हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है । यह अधिकांश लोगों में बोला और समझा जाता है ।" यहाँ हिन्दी, जोकि इस वाक्य का कर्ता है, स्त्रीलिंग संज्ञा है । इस संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त सर्वनाम का प्रयोग भी स्त्रीलिंग में होना चाहिए । लेकिन मलयालम में लिंग पर विशेष ध्यान न देने के कारण यहाँ इसका प्रयोग पुलिंग में किया गया है जोकि बिलकुल गलत है । सही वाक्य होना चाहिए - "हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है । यह अधिकांश लोगों में बोली और समझी जाती है ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण :-

1. वहाँ पत्र व्यापार की शैली को एक विशेष शैली के रूप में विकसित किया गया है । वह तो एक अलग पुस्तक का विषय बन सकता है ।(अशुद्ध) ।

   वहाँ पत्र व्यापार की शैली को एक विशेष शैली के रूप में विकसित किया गया है । वह तो एक अलग पुस्तक का विषय बन सकती है । (शुद्ध)

2. राधा ने कहा :- "मैं प्रातः तुम्हारा घर गया था ।" (अशुद्ध)

   राधा ने कहा :- "मैं प्रातः तुम्हारे घर गयी थी ।" (शुद्ध)

3. घर के नौकरानियों ने मालिक से कहा कि हम आज से अधिक मजदूरी चाहते हैं । ॥ अशुद्ध ॥
घर की नौकरानियों ने मालिक से कहा कि हम आज से अधिक मजदूरी चाहती हैं । ॥ शुद्ध ॥

4. अम्बिका ने मल्लिका से कहा :- "तू बारिश में इस प्रकार नाचता रहेगा तो बुखर हो जायेगा ।॥अशुद्ध॥
अम्बिका ने मल्लिका से कहा :-"तू बारिश में इस प्रकार नाचती रहेगी तो बुखार हो जायेगा । ॥ शुद्ध ॥

5. अध्यापिका ने राधा से कहा कि तुम अच्छे अंक प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहो । ॥ अशुद्ध ॥
अध्यापिका ने राधा से कहा कि तुम अच्छे अंक प्राप्त करने का प्रयत्न करती रहो । ॥ शुद्ध ॥

6. बिजली आज मनुष्य की नौकरानी है । वह हमारे घरों को प्रकाशित करता है, भोजन पकाता है और मशीनों को चलाता है । ॥ अशुद्ध ॥
बिजली आज मनुष्य की नौकरानी है । वह हमारे घरों को प्रकाशित करती है, भोजन पकाती है और मशीनों को चलाती है । ॥ शुद्ध ॥

7. हिन्दी के माध्यम से भारत की संस्कृति को हम सुन्दर अभिव्यक्ति दे सकते हैं । यह प्रेम और एकता की भाषा के रूप में हमारे बीच उपस्थित होता है । ॥ अशुद्ध ॥
हिन्दी के माध्यम से भारत की संस्कृति को हम सुन्दर अभिव्यक्ति दे सकते हैं । यह प्रेम और एकता की भाषा के रूप में हमारे बीच उपस्थित होती है । ॥ शुद्ध ॥

इस प्रकार की गलतियों का कारण यह है कि केरल के छात्र सर्वनाम का प्रयोग करते समय अपनी भाषा में संज्ञा के लिंग पर ध्यान देने की आवश्यकता न होने के कारण उसके लिंग भूल जाते हैं और स्त्रीलिंग के स्थान पर पुलिंग का प्रयोग करते हैं । हिन्दी अध्ययन की प्रारंभिक अवस्था में इस प्रकार की गलतियाँ अधिक पाई जाती है, छात्रों को प्रारंभिक अवस्था में यह समझाना है कि यदि कर्ता के स्थान पर प्रयुक्त संज्ञा स्त्रीलिंग है तो सर्वनाम भी स्त्रीलिंग में होना चाहिए और उससे संबन्धित अभ्यास भी छात्रों से कराना चाहिए । इस प्रकार की गलतियों को सावधानी बरतने से दूर किया जा सकता है ।

सर्वनाम की वचन संबन्धी समस्यायें

हिन्दी और मलयालम में यदि कर्ता के रूप में प्रयुक्त संज्ञा बहुवचन में है तो उसके स्थान पर प्रयुक्त सर्वनाम भी बहुवचन में होना चाहिए । कभी कभी केरल के छात्र बहुवचन सर्वनाम के स्थान पर एकवचन सर्वनाम का प्रयोग करते हैं । जैसे, "जेल में यदि महात्मा गान्धी की मृत्यु हुई तो उसके लिए मैं आँसू नहीं बहाऊँगा ।" यहाँ महात्मा गान्धी आदर सूचक संज्ञा है । इसलिए उसका प्रयोग बहुवचन में होना चाहिए । लेकिन केरल के छात्रोंनेअपनी भाषा की प्रवृत्ति के अनुसार इसे एकवचन में प्रयुक्त किया है और इसलिए उनके के स्थान पर उसके का प्रयोग किया है । सही वाक्य होना चाहिए :- "जेल में यदि महात्मा गान्धी की मृत्यु हुई तो उन के लिए मैं आँसू

नहीं बहाऊँगा ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण है :-

1. जयशंकर प्रसाद, लक्ष्मीनारायण शर्मा और मोहन राकेश हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार हैं । उसके नाटक ऐतिहासिक एवं सामाजिक है । § अशुद्ध §

   जयशंकर प्रसाद, लक्ष्मीनारायण शर्मा और मोहन राकेश हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार हैं । उनके नाटक ऐतिहासिक एवं सामाजिक है § शुद्ध §

2. गुप्तजी के साहित्यिक जीवन की अवधि अर्ध शताब्दी से भी अधिक रही है । अतः उसका संबन्ध कुछ ऐसे साहित्यकारों से हुआ जिनका उसपर विशेष प्रभाव पडा ।§अशुद्ध§

   गुप्तजी के साहित्यिक जीवन की अवधि अर्ध शताब्दी से भी अधिक रही है । अतः उनका संबन्ध कुछ ऐसे साहित्यकारों से हुआ जिनका उसपर विशेष प्रभाव पडा ।§शुद्ध§

3. प्रसादजी का जन्म काशी में संवत् 1946 में हुआ था । उसका परिवार सूर्धनी साहु के नाम से प्रसिद्ध थे । § अशुद्ध §

   प्रसादजी का जन्म काशी में संवत् 1946 में हुआ था । उनका परिवार सूर्धनी साहु के नाम से प्रसिद्ध थे । § शुद्ध §

4. अपभ्रंश भाषा में चरित्र रूप में महाकाव्यों का सृजन हुआ है । इसमें किसी तीर्थंकर या महापुरुषों का महान चरित्र वर्णित है । § अशुद्ध §

   अपभ्रंश भाषा में चरित्र रूप में महाकाव्यों का सृजन हुआ है । इनमें किसी तीर्थंकर या महापुरुषों का महान चरित्र वर्णित है । § शुद्ध §

5. इस प्रकार हम कह सकते हैं कि साहित्यकार प्रसाद की भाषा शैली में इसकी चेतना का प्रतिनिधित्व देखा जा सकता है। ﴾ अशुद्ध ﴿

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि साहित्यकार प्रसाद की भाषा शैली में इनकी चेतना का प्रतिनिधित्व देखा जा सकता है ।

﴾ शुद्ध ﴿

यहाँ केरल के छात्रों ने अपनी भाषा मलयालम की प्रवृत्ति से प्रभावित होकर इस का प्रयोग एकवचन में किया है । दोनों भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन करके इस विशेष प्रवृत्ति से अवगत होने से इस तरह की गलतियाँ दूर हो सकती है ।

सर्वनाम की कारक संबन्धी समस्यायें

संज्ञा की तरह सर्वनाम के साथ कारक विभक्तियों का प्रयोग करते समय केरल के छात्रों के सामने काफी समस्यायें उपस्थित होती हैं । इसका कारण दोनों भाषाओं की अर्थ संकल्पना में दिखाई देनेवाला अन्तर है । इसलिए केरल के छात्र अपनी मातृभाषा के प्रभाव के कारण जाने अनजाने ही मातृभाषा की संरचना का प्रयोग कर बैठते हैं । कारक विभक्तियों के प्रयोग से सर्वनाम में उत्पन्न होनेवाली समस्याओं को सुविधा के लिए निम्न प्रकार से विभाजित किया जा सकता है ।

सर्वनाम की ने संबन्धी समस्यायें

केरल के छात्र कभी कभी अनजाने में संज्ञा की तरह सर्वनाम के साथ भी ने प्रत्यय का प्रयोग छोड़ देते हैं और

कभी ने का अनावश्यक प्रयोग भी करते है । जैसे, मै कोई न कोई पुस्तक पढा हूँ । यहाँ मलयालम में ने का प्रयोग न होने कारण हिन्दी में भी उसका प्रयोग नहीं किया है । सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए :- मैंने कोई न कोई पुस्तक पढी है । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण है :-

1. इन रचनाओं में वे भारतीय सर्वहारा समाज की दारुण स्थितियों का चित्रण किया है । ᳲ अशुद्ध ᳲ
   इन रचनाओं में उन्होंने भारतीय सर्वहारा समाज की दारुण स्थितियों का चित्रण किया है । ᳲ शुद्ध ᳲ
2. आप जिस उद्देश्य से मुझे हजारों मील दूर यहाँ भेजा है उसकी पूर्ति के लिए मैं जी तोड परिश्रम कर रहा हूँ । ᳲ अशुद्ध ᳲ
   आपने जिस उद्देश्य से मुझे हजारों मील दूर यहाँ भेजा है उसकी पूर्ति के लिए मैं जी तोड परिश्रम कर रहा हूँ । ᳲ शुद्ध ᳲ
3. प्रसादजी का जन्म काशी में संवत् 1946 में हुआ था । उसका परिवार सुंघनी साहु के नाम से प्रसिद्ध थे । ᳲ अशुद्ध ᳲ
   प्रसादजी का जन्म काशी में संवत् 1946 में हुआ था । उनका परिवार सुंघनी साहु के नाम से प्रसिद्ध थे । ᳲ शुद्ध ᳲ
4. तुम भी इस प्रतियोगिता में सफलता हासिल करने के लिए काफी अभ्यास किया है । ᳲ अशुद्ध ᳲ
   तुमने भी इस प्रतियोगिता में सफलता हासिल करने के लिए काफी अभ्यास किया है । ᳲ शुद्ध ᳲ
5. वे अपनी लेखनी द्वारा सामाजिक प्रश्नों को साहित्य से संपृक्त करने का महान कार्य किया है । ᳲ अशुद्ध ᳲ
   उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा सामाजिक प्रश्नों को साहित्य से संपृक्त करने का महान कार्य किया है । ᳲ शुद्ध ᳲ

मलयालम भाषा-भाषी कभी कभी सर्वनाम के साथ ने का अनावश्यक प्रयोग करता है । हिन्दी में अपूर्ण भूतकाल और हेतुहेतुमत भूतकाल के सभी क्रियायें और ला, बोल, भूल आदि सकर्मक क्रिया के अन्य ने का प्रयोग अनावश्यक है । लेकिन केरल के छात्र इन अपवादों को नजरअदाज करके इन क्रियाओं के साथ ने का प्रयोग करते हैं । जैसे - "उसने नये कपडे पहनकर इधर आया" । यहाँ आना सकर्मक क्रिया है । इसलिए सर्वनाम के साथ ने का प्रयोग अवाछित है । यहाँ केरल के छात्रोंनेनियमों को अपवादों के अन्दर समेटकर इस्तेमाल किया है । इसलिए आना सकर्मक क्रिया के साथ ने का अनावश्यक प्रयोग किया है । सही वाक्य होना चाहिए - "वह नये कपडे पहनकर इधर आया । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण है :-

1. उसने आमरूद देखकर हँस दिया । (अशुद्ध)
   वह आमरूद देखकर हँस दिया । (शुद्ध)
2. उसने तेल लगाने के बाद नहाया । (अशुद्ध)
   वह तेल लगाने के बाद नहाया । (शुद्ध)
3. लेकिन डाक्टर साहब के प्रयत्नों के फलस्वरूप मैंने पुनः जीवन प्राप्त कर सका । (अशुद्ध)
   लेकिन डाक्टर साहब के प्रयत्नों के फलस्वरूप मैं पुनः जीवन प्राप्त कर सका । (शुद्ध)
4. दूसरे दिन सबेरे हमने आठ बजे बस में सवार हुए । (अशुद्ध)
   दूसरे दिन सबेरे हम आठ बजे बस में सवार हुए । (शुद्ध)
5. तुमने चिल्ला पडा और इतने में मेरी आँखे खुल गई । (अशुद्ध)
   तुम चिल्ला पडे और इतने में मेरी आँखे खुल गई । (शुद्ध)

6. एक दिन घरवालों को समझा बुझाकर आपने इधर आया था । §अशुद्ध§

एक दिन घरवालों को समझा बुझाकर आप इधर आये थे । §शुद्ध§

7. उसने सुबह आठ बजे उठता है । §अशुद्ध§

वह सुबह आठ बजे उठता है । §शुद्ध§

8. उन्होंने चश्मा लाना भूल गया । §अशुद्ध§

वे चश्मा लाना भूल गये । §शुद्ध§

9. अगर उसने यहाँ आता तो पैसे मिल जाता । §अशुद्ध§

अगर वह यहाँ आता तो पैसे मिल जाते । §शुद्ध§

10. उन्होंने दो घंटे भाषण कर सके । §अशुद्ध§

वे दो घंटे भाषण कर सके । §शुद्ध§

सर्वनाम की को संबन्धी समस्यायें

चाहिए, पडना, आदि आवश्यकताबोधक क्रियाओं का प्रयोग करते समय को का प्रयोग अनिवार्य है, लेकिन मलयालम में इस प्रकार की क्रियायें कर्ताकारक प्रथम विभक्ति में आती है। जैसे,

हिन्दी	मलयालम
आपको कल उधर आना है ।	ताङळ् नाले अविटे वरणम् ।

यहाँ मलयालम में सर्वनाम के साथ को प्रत्यय नहीं जोडा गया । इसी प्रवृत्तिसेप्रेरित होकर वे हिन्दी में भी को छोड देते हैं । जैसे, "मैं कल कपडा खरीदना चाहिए ।" यहाँ चाहिए सहायक क्रिया आने के कारण सर्वनाम मैं के साथ को प्रत्यय जोडना

अनिवार्य है । अतः सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए - "मुझे कल कपड़ा खरीदना चाहिए ।" इस प्रकार "पड़ना" विवशताबोधक सहायक क्रिया का प्रयोग करते समय 'को' प्रत्यय छोड़ देते हैं । जैसे, "वह कल भूखा रहना पड़ा ।" सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए :- "उसे कल भूखा रहना पड़ा ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण है :-

1. मैं माता पिता की सेवा करना चाहिए । (अशुद्ध)
   मुझे माता पिता की सेवा करना चाहिए । (शुद्ध)
2. इसलिए हम चाहिए कि बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के लिए नियम लागू करें । (अशुद्ध)
   इसलिए हमें चाहिए कि बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के लिए नियम लागू करें । (शुद्ध)
3. तू इस कहानी को कान खोलकर सुनना चाहिए । (अशुद्ध)
   तुझे इस कहानी को कान खोलकर सुनना चाहिए । (शुद्ध)
4. तुम जरूर प्रेमचन्द की कहानी पढ़ना चाहिए । (अशुद्ध)
   तुम्हें जरूर प्रेमचन्द की कहानी पढ़नी चाहिए । (शुद्ध)
5. आप समय पर भोजन करना चाहिए । (अशुद्ध)
   आपको समय पर भोजन करना चाहिए । (शुद्ध)
6. बुखार होने पर भी वह स्कूल जाना पड़ा । (अशुद्ध)
   बुखार होने पर भी उसे स्कूल जाना पड़ा । (शुद्ध)
7. वे पुस्तकें उठाकर ले आना पड़ा । (अशुद्ध)
   उन्हें पुस्तकें उठाकर ले आना पड़ा । (शुद्ध)
8. भरी सभा में वह नाचनी पड़ी । (अशुद्ध)
   भरी सभा में उसे नाचना पड़ा । (शुद्ध)

'सक' सहायक क्रिया का प्रयोग करते समय हिन्दी में सर्वनाम के साथ को का प्रयोग अवांछित है । लेकिन मलयालम में इस प्रकार की सहायक क्रिया का प्रयोग करते समय सर्वनाम के साथ उद्देशिका या सम्प्रदान की विभक्ति का प्रयोग किया जाता है । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
मैं तोड सकता हूँ ।	एनिक्कु पंरिक्कुवान् कषियुम् ।

मलयालम की इस प्रवृत्ति से प्रभावित होकर वे हिन्दी में भी सर्वनाम के साथ को का प्रयोग करते हैं । जैसे, "मुझे हिन्दी आसानी से पढ सकता हूँ ।" यहाँ सर्वनाम के साथ को प्रत्यय अनावश्यक है । सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए :- "मैं हिन्दी आसानी से पढ सकता हूँ ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण है :-

1. हमें वह काम कर सका । {अशुद्ध}
   हम वह काम कर सके । {शुद्ध}
2. तुझे अलिबाबा की कहानी सुना सकते है । {अशुद्ध}
   तू अलिबाबा की कहानी सुना सकता है । {शुद्ध}
3. तुमको अच्छी तरह कविता लिख सकते हैं । {अशुद्ध}
   तुम अच्छी तरह कविता लिख सकते हैं । {शुद्ध}
4. क्या किसी को यह कहानी पढ सकता है ? {अशुद्ध}
   क्या कोई यह कहानी पढ सकता है ? {शुद्ध}
5. उसको यहाँ आ सकता है । {अशुद्ध}
   वह यहाँ आ सकता है । {शुद्ध}

हिन्दी में संपादक और ग्रन्थकार बहुधा अपने लिए "मैं" के स्थान पर हम का प्रयोग करते हैं । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
हम आगे सर्वनाम की व्याख्या करेंगे ।	नमुक्कुँ इनि सर्वनामत्तिने व्याख्यानिक्काम् ।

यहाँ मलयालम में उत्तम पुरुष सर्वनाम प्रत्यय सहित प्रयुक्त हुआ है जबकि हिन्दी में प्रत्यय रहित है । इसलिए केरल के छात्र और छात्राएँ इसे प्रत्यय सहित प्रयुक्त करके गलतियाँ कर बैठते हैं । जैसे, "हमें आगे उर्वशी में चित्रित भारतीय नारी सम्बधी दृष्टिकोण पर विचार करेंगे । उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम हम के साथ मलयालम के प्रभाव के कारण को प्रत्यय जोडा गया है जो बिलकुल गलत है । सही वाक्य होना चाहिए :- "हम आगे उर्वशी में चित्रित भारतीय नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण पर विचार करेंगे ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं :-

1. हमें आगे अभिव्यंजनावाद के बारे में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दिये गये मतों की चर्चा करेंगे । (अशुद्ध)
   हम आगे अभिव्यंजनावाद के बारे में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दिये गये मतों की चर्चा करेंगे । (शुद्ध)
2. हमें गोदान में चित्रित भारतीय कृषक जीवन की अभिव्यक्ति पर विचार करेंगे । (अशुद्ध)
   हमें गोदान में चित्रित भारतीय कृषक जीवन की अभिव्यक्ति पर विचार करेंगे । (शुद्ध)

<u>सर्वनाम की से संबन्धी समस्यायें</u>

कुछ प्रसगों में जहाँ 'से' का प्रयोग अपेक्षित है, वहाँ मलयालम में कर्तकारक का अर्थबोध होता है । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
वह उससे प्रेम करता है ।	अवन् अवळे प्रेमिक्कुन्नु ।

इस प्रवृत्ति से प्रेरित होकर केरल के छात्र और छात्राएँ कभी कभी ऐसे प्रसगों में 'को' का ही प्रयोग कर बैठते हैं । जैसे, तुम अब उसको प्रेम करना छाड दो । यहाँ 'को' का प्रयोग किया गया है जो गलत है । सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए :- "तुम अब उससे प्रेम करना छोड दो ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण है :-

1. अध्यापक <u>उसको</u> इस पुस्तक के संबन्ध में कहा करते थे । (अशुद्ध)
   अध्यापक <u>उससे</u> इस पुस्तक के संबन्ध में कहा करते थे । (शुद्ध)
2. कालिदास ने अब <u>उनको</u> बात करना छोड दिया । (अशुद्ध)
   कालिदास ने अब <u>उनसे</u> बात करना छोड दिया । (शुद्ध)
3. राधा <u>उनको</u> यह कहना भूल गया । (अशुद्ध)
   राधा <u>उनसे</u> यह कहना भूल गयी । (शुद्ध)
4. चद्र ने चाँदनी बिछाकर <u>उन को</u> कहा कि यह मेरी प्रेम की निशानी है । (अशुद्ध)
   चद्र ने चाँदनी बिछाकर <u>उनसे</u> कहा कि यह मेरे प्रेम की निशानी है । (शुद्ध)

5. <u>उसको</u> कहा गया था कि पिताजी कल चेन्नाई से आ रहे हैं । {अशुद्ध}

<u>उससे</u> कहा गया था कि पिताजी कल चेन्नाई से आ रहे हैं । {शुद्ध}

<u>सर्वनाम की का,के,की संबन्धी समस्यायें</u>

सर्वनाम के साथ का,के,की का प्रयोग करते समय भी केरल के छात्र-छात्राओं के सामने समस्यायें उपस्थित होती हैं । सर्वनाम और संबन्धकारक प्रत्यय के बाद में आनेवाले संज्ञा के अनुसार का,के,की का प्रयोग किया जाता है । का प्रयोग पुल्लिंग एकवचन संज्ञा के पहले और की का प्रयोग स्त्रीलिंग संज्ञा के पहले किया जाता है । यदि संज्ञा पुल्लिंग बहुवचन में है तो उसके पहले के का प्रयोग किया जाता है । इस तरह की प्रवृत्ति मलयालम में नही है । लिंग ज्ञान के बिना ही संज्ञा का प्रयोग मलयालम में होता है। इसलिए केरल के छात्र और छात्राएँ कभी कभी की के स्थान पर का और के का प्रयोग करते हैं । जैसे, "साकेत के नवम सर्ग में ऊर्मिला का विरह वर्णन करते समय गुप्तजी ने <u>उसका</u> मानसिक स्थिति का गूढ विश्लेषण किया है ।" यहाँ स्थिति स्त्रीलिंग है । लेकिन उसके पहले मानसिक {विशेषण} आने से केरल के छात्र-छात्रओं ने स्थिति को नजरअंदाज करते हुए की के स्थान पर का का प्रयोग किया है जोकि बिलकुल गलत है । सही वाक्य होना चाहिए :-"साकेत के नवम सर्ग में ऊर्मिला का विरह वर्णन करते समय गुप्तजी ने <u>उसकी</u> मानसिक स्थिति का गूढ विश्लेषण किया है ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण है :-

1. उसका मूल प्रति अप्राप्य है । (अशुद्ध)
   उसकी मूल प्रति अप्राप्य है । (शुद्ध)
2. उनका - सा समय-धारा हिन्दी साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है । (अशुद्ध)
   उनकी - सी समय-धारा हिन्दी साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है । (शुद्ध)
3. इनका एक पुत्री राजाभाई भी बताई जाती है । (अशुद्ध)
   इनकी एक पुत्री राजाभाई भी बताई जाती है । (शुद्ध)
4. आपका इस महती कृपा के लिए मैं आजीवन आभारी रहूँगा । (अशुद्ध)
   आपकी इस महती कृपा के लिए मैं आजीवन आभारी रहूँगा । (शुद्ध)

इसी प्रकार कभी कभी वे 'के' के स्थान पर 'का' का प्रयोग करते हैं । जैसे, "उनका मतानुसार चंद ने रासो की रचना की होती तो इसका प्रभाव अन्य चरित काव्यों पर पड़ता ।" यहाँ के का प्रयोग किया जाना अपेक्षित है । सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए :- "उनके मतानुसार चंद ने रासो की रचना की होती तो इसका प्रभाव अन्य चरित काव्यों पर पड़ता ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं :-

1. भक्तिकाल का यह साहित्य उस काल का सामाज का दर्पण है । (अशुद्ध)
   भक्तिकाल का यह साहित्य उस काल के सामाज का दर्पण है । (शुद्ध)

2. इसका विपरीत आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षित विद्यार्थी नौकरी न मिलने पर निस्सहाय रहता है । (अशुद्ध)
इसके विपरीत आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षित विद्यार्थी नौकरी न मिलने पर निस्सहाय रहता है । (शुद्ध)
3. मेरा जीवन का दृष्टिकोण बदल गया । (अशुद्ध)
मेरे जीवन का दृष्टिकोण बदल गया । (शुद्ध)
4. हमारा समाज में भेद और अभेद दोनों हैं । (अशुद्ध)
हमारे समाज में भेद और अभेद दोनों हैं । (शुद्ध)
5. तुम्हारा घर के दो बिल्ली के बच्चे कितने प्यारे और कितने भोले-भाले है । (अशुद्ध)
तुम्हारे घर की बिल्ली के दो बच्चे कितने प्यारे और कितने भोले-भाले है । (शुद्ध)

सर्वनाम की अधिकरण कारक संबन्धी समस्यायें

अधिकरण कारक के लिए हिन्दी में में और पर का प्रयोग है । केरल के छात्र-छात्राएँ दोनों का प्रयोग एक समझकर करते हैं जिससे गलतियाँ उत्पन्न होती है । जैसे,

1. सोमन उसमें लेटा है । (अशुद्ध)
सोमन उसपर लेटा है । (शुद्ध)
2. उसमें दया कीजिए । (अशुद्ध)
उसपर दया कीजिए । (शुद्ध)
3. मास्टरजी की दृष्टि उसमें पडी । (अशुद्ध)
मास्टरजी की दृष्टि उसपर पडी । (शुद्ध)

4. आपकी मुझमें पर कृपा करें । (अशुद्ध)
   आप मुझ पर कृपा करें । (शुद्ध)
5. आप उसी स्थान में रहें । (अशुद्ध)
   आप उसी स्थान पर रहें । (शुद्ध)

अन्य कुछ समस्यायें

उपर्युक्त समस्याओं के अतिरिक्त कुछ अन्य समस्यायें भी हैं जिनका विश्लेषण आगे किया जा रहा है ।

एक रूप के स्थान पर दूसरे रूप के प्रयोग से उत्पन्न समस्यायें

सर्वनाम के साथ विभक्ति प्रत्यय आने से हिन्दी में उसका रूप बदल जाता है। एकवचन में एक रूप है तो बहुवचन में उसका रूप दूसरा है । जैसे,

एकवचन	बहुवचन
वह + का=उसका	वे + का=उनका

एकवचन	बहुवचन
यह + का=इसका	ये + का= इनका
कोई + का=किसीका	कोई + का= किन्हींका
जो + का=जिसका	जो + का= जिनका

मलयालम में एकवचन और बहुवचन में एक ही रूप है । इसलिए केरल के छात्र कभी कभी बहुवचन रूप के स्थान पर एकवचन रूप का ही प्रयोग करते हैं और एकवचन रूप के स्थान पर बहुवचन रूप का

भी । जैसे, "इस काल के कवियों ने बाहरी प्रलोभनों से दूर रहकर साहित्य सर्जना की । फलतः उसका साहित्य अमृतमय है ।" यहाँ कवि जो है बहुवचन में प्रयुक्त हुआ है, इसलिए उसके लिए प्रयुक्त सर्वनाम भी बहुवचन में होना चाहिए । लेकिन केरल के छात्र-छात्राओं ने मलयालम के प्रभाव के कारण इसका प्रयोग एकवचन में किया है जोकि सचमुच गलत है । सही वाक्य होना चाहिए :- "इस काल के कवियों ने बाहरी प्रलोभनों से दूर रहकर साहित्य सर्जना की है । फलतः उनका साहित्य अमृतमय है ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं :-

1. बौद्धिकता के कारण से साकेत में घटनाओं की पूर्ण स्वाभाविकता प्राप्त है और उसका विकास एक निश्चित अकृत्रिम रूप से होता चला जाता है । §अशुद्ध§
   बौद्धिकता के कारण से साकेत में घटनाओं की पूर्ण स्वाभाविकता प्राप्त है और उनका विकास एक निश्चित अकृत्रिम रूप से होता चला जाता है । §शुद्ध§

2. भक्ति काल के साहित्य की स्वर्णयुग की दृष्टि से चर्चा करने पर उनमें जातीय जीवन की पूरी झाँकी के दर्शन होते हैं । §अशुद्ध§
   भक्ति काल के साहित्य की स्वर्णयुग की दृष्टि से चर्चा करने पर उसमें जातीय जीवन की पूरी झाँकी के दर्शन होते हैं । §शुद्ध§

3. चंदबरदायी द्वारा लिखित पृथ्वीराज रासो की गणना भी अपभ्रंश के महाकाव्यों में होती है । इनमें डिंगल, पिंगल, ब्रज, पंजाबी, अपभ्रंश आदि विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग है । §अशुद्ध§
   चंदबरदायी द्वारा लिखित पृथ्वीराज रासो की गणना भी अपभ्रंश के महाकाव्यों में होती है । इसमें डिंगल, पिंगल,

व्रज, पंजाबी, अपभ्रंश आदि विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग है । §शुद्ध§

कभी कभी एक ही सर्वनाम का रूप एक विभक्ति प्रत्यय जुडने से एक होता है तो दूसरा जोडने से दूसरा हो जाता है । जैसे, मैं + का =मेरा, मैं +को = मुझे/मुझको, मैं + पर=मुझपर, तू + का= तेरा, तू + को= तुझे/तुझको, तू + पर= तुझपर । मलयालम में हमेशा हर विभक्ति प्रत्यय जोडने से एक रूप होता है । इसलिए केरल के छात्र कभी कभी इनमें से किसी एक का प्रयोग करते हैं तो कभी कभी दूसरे का । जैसे, "इसलिए डाक्टर बनकर दुःखियों की सेवा करने की बडी इच्छा मुझके मन में है ।" हिन्दी में मैं । के साथ प्रत्यय जुडने से मुझ और मेदो रूप होते हैं । लेकिन मलयालम में इसके समानार्थी ञान का केवल एन रूप ही है । इसके कारण वे मेरा, मेरी, मेरे के स्थान पर कभी कभी मुझका, मुझकी, मुझके का प्रयोग करते हैं । यहाँ भी मे रूप के स्थान पर मुझ रूप का प्रयोग किया है जोकि बिलकुल गलत है । सही वाक्य होना चाहिए :- "इसलिए डाक्टर बनकर दुःखियों की सेवा करने की बडी इच्छा मेरे मन में है । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं :-

1. वह मुझकें पास आ गई और हाथ पकड लिया । {अशुद्ध}
   वह मेरे पास आ गई और हाथ पकड लिया । {शुद्ध}
2. मेरे पर इलजाम मत लगाओ । {अशुद्ध}
   मुझपर इलजाम मत लगाओ । {शुद्ध}
3. तुझकी खुबसुरती से मैं आकर्षित हो गया । {अशुद्ध}
   तेरी खूबसूरती से मैं आकर्षित हो गया । {शुद्ध}
4. तेरे से बात करना भी अच्छा नही है । {अशुद्ध}
   तुझसे बात करना भी अच्छा नही है । {शुद्ध}

परिवर्तन के बिना प्रत्यय जोडने से उत्पन्न समस्यायें

केरल के छात्र हिन्दी में कोई परिवर्तन के बिना ही मैं के साथ विभिन्न प्रत्यय जोडते हैं । क्योंकि केरल के छात्रों के मन में पहले कर्ताकारक का प्रत्यय ने का बोध उत्पन्न होता है जिसे जोडते समय मैं में कोई परिवर्तन किये बिना ही ने प्रत्यय जोडते हैं । इसी अवबोध से प्रेरित होकर वे सर्वनाम के साथ में, पर, को, से, का आदि को जोडते समय कभी कभी उसमें परिसर्वन किये बिना ही प्रत्यय जोडते हैं । जैसे, "मैं की सेवा करनी चाहिए ।" यहाँ उपर्युक्त अवधारणा से प्रेरित होकर मैं में किसी परिवर्तन किसे बिना ही को प्रत्यय जोडा गया है जो सचमुच गलत है । सही वाक्य होना चाहिए :- "मेरी सेवा करनी चाहिए । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं :-

1. तू की अभिलाषा अब मैं की अभिलाषा बन गई है । {अशुद्ध}
   तेरी अभिलाषा अब मेरी अभिलाषा बन गई है । {शुद्ध}

2. गृहस्थी के बन्धनों ने तुम के पैरों को जकड रखा है । §अशुद्ध§
   गृहस्थी के बन्धनों ने तुम्हारे पैरों को जकड रखा है । §शुद्ध§
3. वैज्ञानिक आविष्कारों का सदुपयोग करें तो यह में
   कोई संदेह नहीं कि पृथ्वी पर स्वर्ग उतर आयेगा । §अशुद्ध§
   वैज्ञानिक आविष्कारों का सदुपयोग करें तो इसमें कोई
   संदेह नहीं पृथ्वी पर स्वर्ग उतर आयेगा । §शुद्ध§
4. सडक के आडे एक लम्बा गड्ढा पडा है जो में गाडियों
   के आने जाने में रुकावट होती है । §अशुद्ध§
   सडक के आडे एक लम्बा गड्ढा पडा है जिसमें गाडियों के
   आने जाने में रुकावट होती है । §शुद्ध§
5. यह से उनका स्वास्थ्य गिर जाता है । §अशुद्ध§
   इससे उनका स्वास्थ्य गिर जाता है । §शुद्ध§

निजवाचक सर्वनाम संबन्धी समस्यायें

हिन्दी निजवाचक सर्वनाम के साथ संबन्ध कारक प्रत्यय का, के, की जोडने से निजवाचक सर्वनाम आप में जो और वह ह्रस्व हो जाता है और कारके प्रत्यय ना, ने नी बन जाते हैं । जैसे आप + का= अपना, आप + के= अपने, आप + की=अपनी । मलयालम में आत्मवाची सर्वनाम तान्, तन् , बन जाने के बाद ही संबन्ध कारक प्रत्यय न्टे, उटे आदि जुडते है । जैसे तन्टे, तन्नुटे । हिन्दी में अपना, अपने, अपनी का प्रयोग पुरुषवाचक सर्वनामों केलिए होता है । जैसे, "हम अपना काम करते हैं ।

यहाँ अपना का प्रयोग हम सर्वनाम केलिए हुआ है जिससे हमारा का हीबोध होता है । लेकिन मलयालम में तन्टे या तन्नुटे का प्रयोग पुरुषवाचक सर्वनामों केलिए नहीं होता । जैसे तान तन्टे जोली चेय्यु । {तू अपना काम कर} मलयालम में अपना, अपने, अपने के स्थान पर पुरुषवाचक सर्वनाम के संबन्ध कारकीय रूप का प्रयोग होता है । अर्थात् निजवाचक सर्वनाम के बदले पुरुषवाचक सर्वनाम को प्रयोग होता है । जैसे निङ्ङळ निङ्ङळुटे पेन एटुक्कु {तुम अपनी कलम लो} इस प्रकार हिन्दी की अपेक्षा मलयालम में आत्मवाची सर्वनाम के संबन्ध कारक रूप का प्रयोग सीमित होने के कारण केरल के छात्र हिन्दी में भी निजवाचक सर्वनाम के संबन्ध कारकीय रूप के बदले पुरुषवाचक सर्वनाम के संबन्ध कारकीय रूप का प्रयोग करके गलती कर बैठते हैं । जैसे, "तुम तुम्हारे रास्ते लगे ।" यहाँ मलयालम के प्रभाव के कारण आत्मवाची सर्वनाम के संबन्ध कारक रूप "अपने" के बदले पुरुषवाचक सर्वनाम के संबन्ध कारक रूप {तुम्हारे} का प्रयोग किया गया है जो गलत है । सही वाक्य होना चाहिए :- "तुम अपने रास्ते लगे ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं ।

1. हमें अब हमारा काम देखना चाहिए । {अशुद्ध}
   हमें अब अपना काम देखना चाहिए । {शुद्ध}
2. क्या आपको आपकी भाई की चिंता है ? {अशुद्ध}
   क्या आपको अपने भाई की चिंता है ? {शुद्ध}

3. प्रत्युत्तर में आगतुक श्रद्धा उत्कंठित मनु को संतुलित शब्दों में सोत्साह उसका परिचय देती है -- "मैं गान्धार देश के राजा मेरे पिता की प्यारी सन्तान हूँ । {अशुद्ध}

प्रत्युत्तर में आगतुक श्रद्धा उत्कठित मनु को संतुलित शब्दों में सोत्साह अपना परिचय देती है -- "मैं गान्धार देश के राजा, अपने पिता की प्यारी सन्तान हूँ । {शुद्ध}

4. वह उसकी व्यवहार कुशलता के कारण मनु के अवसाद में धैर्यपूर्वक सहानुभूति प्रकर करती है । {अशुद्ध}

वह अपनी व्यवहार कुशलता के कारण मनु के अवसाद में धैर्यपूर्वक सहानुभूति प्रकट करती है ।

5. इसके लिए श्रद्धा उसके हृदय के सम्पूर्ण आशावादिता के साथ मंगल-कामना करती है कि मानवीय भावों की सत्यरूप चेतना का इतिहास विश्व के हृदय पर अंकित हो जाय । {अशुद्ध}

इसके लिए श्रद्धा अपने हृदय के संपूर्ण आशावादिता के साथ मंगल कामना करती है कि मानवीय भाषा की सत्यरूप चेतना का इतिहास विश्व के हृदय में अंकित हो जाय ।

6. उन्होंने स्वंय अपना काल विभाजन की पूणल, न्यूनता एवं त्रुटियों से परिचित थे । {अशुद्ध}

वे स्वय अपने काल विभाजन की पूर्णता, न्यूनता एवं त्रुटियों से परिचित थे ।

जैसे कि पहले बताया गया कि निजवाचक आपके साथ का,के,की प्रत्यय जुड़ने से कारक प्रत्यय लिंग, वचन के अनुसार ना, ने, नी हो जाता है। जैसे आप + का=अपना, आप + की=अपनी, आप + के=अपने। मलयालम में कहीं भी इस तरह लिंग, वचन के अनुसार रूप बदलता नहीं। इसलिए केरल के छात्र अपने के स्थान पर अपना या अपनी का प्रयोग करते हैं या अपनी के स्थान पर अपना या अपने का प्रयोग करते हैं। जैसे, - "लगभग चालीस वर्ष के अनवरत साहित्यसेवा के पश्चात 84 पुस्तकों के लेखक ने जब "वैषाली की नगर वधू उपन्यास लिखा, तब वे अपने इस कृति पर इतने मुग्ध हुए कि अपना पूर्व रचित 40 वर्षों की साहित्य - सम्पदा को रद्द घोषित कर इसी को अपना प्रथम कृति के रूप में पाठकों की सेवा में प्रस्तुत की।" यहाँ तीन स्थानों पर निजवाचक सर्वनामों का प्रयोग गलत रूप में किया गया है। पहले इस कृति शब्द के पहले "अपने" का प्रयोग किया गया है जो गलत है। क्योंकि कृति शब्द स्त्रीलिंग है। इसके साथ "इस" सार्वनामिक विशेषण आने से उस विशेषण के प्रभाव से उसमें "अपने" का प्रयोग किया गया है जो गलत है। दूसरी गलती यह है कि पूर्व रचित 40 वर्षों की साहित्य - सपदा में सपंदा संज्ञा है और उत्तर प्रयोग स्त्रीलिंग में किया जाना चाहिए। इसलिए इससे पूर्व अपना के स्थान पर अपनी का प्रयोग ठीक होगा। तीसरी गलती "प्रथम

कृति के पहले है । यहाँ कृति स्त्रीलिंग है । इसके पहले "प्रथम" विशेषण आने से अपना का प्रयोग ठीक नहीं होगा । सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए —"लगभग चालीस वर्षों की अनवरत साहित्य सेवा के पश्चात 84 पुस्तकों के लेखक ने जब "वैशाली की नगर वधु" उपन्यास लिखा, तब उन्हों ने अपनी पूर्व रचित 40 वर्षों की साहित्य सपंदा को रद्द घोषित करके इसी को अपनी प्रथम कृति के रूप में पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं ।

1. दिवेदी युगीन काव्य धारा अपनी समय की परिस्थितियों से उपनी हुई होकर भी उसके उपचार और प्रतिकार केलिए प्रयत्न शील है । (अशुद्ध)

   दिवेदी युगीन काव्य धारा अपने समय की परिरिथतियों से उपनी हुई होकर भी उसके उपचार और प्रतिकार केलिए प्रयत्न शील है । (शुद्ध)

2. सात्विक वातावरण में जन्म लेकर गुप्त जी ने अपने वश का भी नहीं, अपने जन्म भूमि का भी पुस्तक उन्नत किया ।

   (अशुद्ध)

   सात्विक वातावरण में जन्म लेकर गुप्ताजी ने अपने वंश का ही नहीं अपनी जन्म भूमि का भी मस्तक उन्नत किया है । (शुद्ध)

3. "मैं" के माध्यम से कवि ने अपने आत्मकथा को प्रस्तुत किया है । [अशुद्ध]

"मैं" के माध्यम से कवि ने अपनी आत्मकथा को प्रस्तुत किया है । [शुद्ध]

4. वैसे तो हिन्दी साहित्य के इतिहास में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक अनेक कवियों ने अपने भावधारा से हिन्दी साहित्य के विशाल भाव समुद्र को भरा है ।

[अशुद्ध]

वैसे तो हिन्दी साहित्य के इतिहास में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक अनेक कवियों ने अपनी भावधारा से हिन्दी साहित्य के विशाल भाव समुद्र को भरा है ।

[शुद्ध]

हर कोई का प्रयोग और उससे सम्बन्धित समस्यायें

कोई के पहले "हर" आने से उसका अर्थ "प्रत्येक" [ओरो रुत्तरुम] हो जाता है । हर कोई हिन्दी में एक वचन के रूप में प्रयुक्त किया जाता है । लेकिन केरल के छात्र इसका प्रयोग बहुवचन में करके भूल कर बैठते हैं । क्योंकि हिन्दी में सब कोई बहुवचन शब्द है । [इस] समानता के कारण वे इसका प्रयोग बहुवचन के रूप में करते हैं । इसका कारण यह हो सकता है कि मलयालम में इस शब्द से जुडी हुई क्रिया में वचन भेद दिखाई नहीं पडता। ओरोरुत्तरुम में अनेक व्यक्तियों में से "एक" का बोध होता है जिसे बहुवचन समझकर हिन्दी में भी इसका प्रयोग बहुवचन में करते हैं जैसे —"हर काम हर

कोई नहीं कर सकते ।" यह बिलकुल गलत है । इसका प्रयोग होना चाहिए — "हर काम हर कोई नहीं कर सकता ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं —

1. हर कोई इसे राष्ट्रीय कार्य समझकर पर्यावरण को स्वच्छ और सुरक्षित रखने में योगदान दे सकते हैं । (अशुद्ध)
   हर कोई इसे राष्ट्रीय कार्य समझकर पर्यावरण को स्वच्छ और सुरक्षित रखने में योगदान दे सकता है । (शुद्ध)
2. हर कोई अपने बारे में ज्यादा और दूसरों के बारे में कम सोचते हैं । (अशुद्ध)
   हर कोई अपने बारे में ज्यादा और दूसरों के बारे में कम सोचता है । (शुद्ध)
3. हर कोई परंपराओं की पगडंडी पर एक स्थिर कर दूसरे पैर से नए सूर्य का नया सवेरा खोजना चाहते हैं । (अशुद्ध)
   हर कोई परंपराओं की पगडंडी पर एक पैर स्थिर कर दूसरे पैर से नए सूर्य का नया सवेरा खोजना चाहता है । (शुद्ध)
4. हर कोई यह मानते हैं कि सृजनात्मक लेखन के लिए गहरी संवेदनशीलता और अनुभूति की नितांत तीव्रता आवश्यक है । (अशुद्ध)
   हर कोई यह मानता है कि सृजनात्मक लेखन केलिए गहरी संवेदशीलता और अनुभूति की नितांत तीव्रता आवश्यक है । (शुद्ध)

हिन्दी और मलयालम के प्रयोगों में जो अन्तर है उसे ठीक ठीक समझने से और उसका अभ्यास करने से ये गलतियाँ दूर हो सकती हैं ।

जो .... वह सम्बन्धी समस्यायें

यह सम्बन्ध वाचक सर्वनाम है । इसके लिए "एतोरुवन .... अवन" का प्रयोग मलयालम में होता है । जैसे,

जो कमाएगा वह खाएगा । {हिन्दी}

एतोरुवन सम्पादिक्कुन्नुवो अवन भक्षिक्कुम् {मलयालम}

हिन्दी में जो ...... वह का सामान्य प्रयोग भी होता है । अर्थात् ऐसे वाक्यों से चिरन्तन सत्य का बोध होता है, विशेष व्यक्ति या वस्तु का नहीं । इस प्रकार के वाक्य में पुल्लिंग एकवचन क्रिया का प्रयोग होता है । केरल के छात्र इस नियम को नजर अदाज़ करते हुए क्रिया का प्रयोग कभी कभी बहुवचन में करते हैं । जैसे, "जो जन्म देते हैं, वह दूध भी देता है ।" यहाँ क्रिया का प्रयोग बहुवचन में किया गया है जो गलत है । सही वाक्य होना चाहिए — "जो जन्म देता है, वह दूध भी देता है । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैः-

1. जो अन्याय करते उसे उसका फल भोगना पड़ता है ।
§अशुद्ध§

जो अन्याय करता है, उसे उसका फल भोगना पड़ता है ।
§शुद्ध§

2. जो अच्छी तरह पढ़ते है, वह परीक्षा में पास होते हैं ।
§अशुद्ध§

जो अच्छी तरह पढ़ता है, वह परीक्षा में पास होता है ।
§शुद्ध§

3. जो मेहनत करेंगे, वह खूब धन कमाएगे । §अशुद्ध§

जो मेहनत करेगा, वह खूब धन कमाएगा । §शुद्ध§

4. जो काम करेंगे, वह खाएगे । §अशुद्ध§

जो काम करेगा, वह खाएगा । §शुद्ध§

<u>कौन और क्या का प्रयोग और उससे सम्बन्धित समस्यायें</u>

कौन का प्रयोग प्रायः प्राणियों के लिए और क्या का प्रयोग प्रायः अप्राणिवाचक शब्दों के लिए होता है । क्या का प्रयोग अज्ञात वस्तु केलिए एकवचन पुल्लिंग में होता है और "कौन" का प्रयोग अज्ञात व्यक्तियों के लिए एकवचन पुल्लिंग में ।[1] जैसे,

1. वहाँ क्या हो रहा है । §हिन्दी§

अविटे एन्ताणुन्टायिकोण्टिरिक्कुन्नत् । §मलयालम§

2. दरवाजे पर कौन खड़ा है । §हिन्दी§

वातिलिल् आराण् निलक्कुन्नत् । §मलयालम§

- - - - -

1. हिन्दी व्याकरण – गुरु आर आर्या और बालचन्द्र आप्टे – पृ 48-49

प्रसंग के अनुरूप स्त्रियों के लिए "कौन" के साथ स्त्रीलिंग का प्रयोग हो सकता है । जैसे,

यहाँ पाँच महिलाएँ हैं, पर इस काम के लिए कौन आगे बढ़ेगी । §हिन्दी§

इविटे अन्चु स्त्रीकळुण्टु, एन्नाल् ई जोली चेय्यान आरु मुम्पोट्ट वरुम् ।

लेकिन क्या का प्रयोग स्त्रीलिंग में नहीं हो सकता । मलयालम में इस प्रकार के नियम होने के कारण "क्या" का प्रयोग करते समय स्त्रीलिंग में इसका प्रयोग करते हैं जो बिलकुल गलत है । जैसे, "कल तो बहुत हल्ला हुआ था, क्या हुई थी ।" इसमें क्या के साथ हुई का प्रयोग अशुद्ध है । यहाँ हुई थी के बदले हुआ था का प्रयोग होना चाहिए । सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए -" कल तो बहुत हल्ला हुआ था, क्या हुआ था ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं —

1. वहाँ क्या हो रही है । §अशुद्ध§
   वहाँ क्या हो रहा है । §शुद्ध§
2. आपने आज क्या खायी है । §अशुद्ध§
   आपने आज क्या खाया है । §शुद्ध§
3. उस कमरे में क्या हो रही है । §अशुद्ध§
   उस कमरे में क्या हो रहा है । §शुद्ध§

व्यक्तियों की भिन्नता या चयन के अर्थ में कौन कौन का प्रयोग होता है और वस्तुओं की भिन्नता के अर्थ में क्या क्या का । ऐसे वाक्यों में कौन कौन का प्रयोग

बहुवचन में होता है और क्या क्या का एकवचन में । जैसे,

1. वहाँ कौन-कौन आये थे । {हिन्दी}

अविटे आरेल्लाम वन्निरुन्नु । {मलयालम}

2. उसने क्या क्या पढा है ? {हिन्दी}

अवन् एन्तेल्लाम् पठिच्चिट्टुण्ड । {मलयालम}

लेकिन "एन्तेल्लाम्" शब्द मलयालम में बहुवचन द्योतक होने के कारण केरल के छात्र-छात्राएँ क्या क्या का प्रयोग भी बहुवचन में करते हैं जो गलत है । जैसे, "आपने आज क्या क्या देखे है ।" यहाँ किया का प्रयोग बहुवचन में किया गया है । सही वाक्य इस प्रकार का होना चाहिए —"आपने आज क्या क्या देखा है ।" इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं —

1. उसने क्या क्या पढे हैं ? {अशुद्ध}

उसने क्या क्या पढा है । {शुद्ध}

2. मेले में आपने क्या क्या देखे ? {अशुद्ध}

मेले में आपने क्या क्या देखा ? {शुद्ध}

<u>विशेषण: हिन्दी और मलयालम में और उससे सम्बन्धित समस्यायें:</u>

जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता का बोध हो, उसे विशेषण कहते हैं । कामता प्रसाद गुरु के अनुसार, "जिस विकारी शब्द से संज्ञा की व्याप्ति मर्यादित होती है उसे विशेषण कहते हैं ।[1] विशेषण के लिए केरलपाणिनी ने "भेदकम्" शब्द दिया है । उन्होंने दूसरों से भिन्नता दिखाने के लिए प्रयुक्त शब्दों को "भेदकम्" कहा है ।[2] जैसे,

---

1. कामता प्रसाद गुरु - हिन्दी व्याकरण पृ 87
2. केरळपाणिनी - केरळपाणिनीयम पृ 144

हाथी बड़ा जानवर है । ﴾हिन्दी﴿

आन वलिय मृगमाकुन्नु । ﴾मलयालम﴿

इन दोनों में बड़ा और वलिय विशेषण है ।

विशेषण जिसकी विशेषता बताता है, उसे "विशेष्य" कहते हैं । मलयालम में इसे "विशेष्यम्" कहते हैं । जैसे,

अच्छा विद्यार्थी । ﴾हिन्दी﴿

नल्ल विद्यार्थी । ﴾मलयालम﴿

इन दोनों में "विद्यार्थी "विशेष्य" है ।

कुछ शब्द विशेषण की विशेषता बताते हैं । हिन्दी में उसे "प्रविशेषण" कहते हैं । मलयालम में उसे "विशेषण विशेष्यम" कहते हैं । जैसे,

बहुत अच्छे विद्यार्थी । ﴾हिन्दी﴿

वळरे नल्ल विद्यार्थी । ﴾मलयालम﴿

इनमें बहुत "प्रविशेषण" है और वळरे "विशेषण विशेष्यम" है ।

दोनों भाषाओं में विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से होता है- एक विशेष्य से पहले और एक विशेष्य के बाद । जैसे,

1. विशेषण के पहले

ऐसा सुन्दर फूल मैं ने कभी नहीं देखा ।

इत्तरम् सुन्दरमाय पूवें ञान् इतुवरे कण्डिट्टेयिल्ला ।

2. <u>विशेषण के बाद</u>

वह फूल बडा सुन्दर है ।

आ पूवु वळरे मनोहरमाण् ।

हिन्दी में जो विशेषण विशेष्य के पहले आता है, उसे विधेय विशेषण कहते हैं । मलयालम में इसके लिए कोई खास नाम नहीं दिया गया है ।

<u>विशेषण के प्रकार और उससे सम्बन्धित समस्यायें</u>

दोनों भाषाओं के व्याकरणिक ग्रन्थों में विशेषण के विभाजन मिलते हैं जिनमें से कुछ में समानता है एवं कुछ में भिन्नता । भिन्नता के कारण अध्ययन में कुछ समस्यायें उत्पन्न होती हैं जो कि केरल के छात्रों के लिए कठिनाइयाँ उपस्थित करती हैं ।

<u>गुणवाचक विशेषण और उससे सम्बन्धित समस्यायें</u>

जिस विशेषण द्वारा संज्ञा या सर्वनाम में गुण, आकार, स्थल, समय तथा देश आदि की विशेषता पाई जाती है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं । जैसे,

रंग - काला, पीला, नीला

आकार - गोल, सुडौल

दशा - पतला, मोटा

देश - हिन्दुस्तानी, चीनी (इ प्रत्यय जुडता है)

दिशा - पूर्वी, दक्षिणी

गुण - अच्छा, बुरा

काल - नया, पुराना

इसके समानार्थी मलयालमभेदो विशेषण हैं — शुद्धम, और विभावकम् । शुद्धम् का अर्थ है शुद्ध । यह प्रकृति के रूप में मिलता है । यह विशेष्य के साथ जुडकर रहता है ।

जैसे,

प्रकृति	संज्ञा	रूप
चेम् §लाल§	निरम् §रंग§	चेन्निरम §लाल रंग§
नरु §ताजा§	मण्म्§चन्ध§	नरुमणम् §ताजा गन्ध§
चेरु §छोटा§	पयर §दाल§	चेरुमयर §मूंग§

हिन्दी में इस तरह विशेष्य और विशेषण एक साथ जुडकर नहीं आते ।

विभावक विशेषण वस्तुओं के चरित्र को सूचित करता है । जैसे,

समर्थनाय कुट्टि §होशियार लडका§

सुन्दरमाय पुष्पम् §सुन्दर फूल§

मलयालम के विभावक विशेषण में कभी कभी लिंग भेद पाया जाता है और उस समय विशेषण के साथ आया जोडते हैं । जैसे,

मिटुक्कनाय आण्कुट्टि §होशियार लडका§

मिट्टक्कियाय पेण्कुट्टि §होशियार लडकी§

स्पष्ट है कि हिन्दी के विशेषण में कुछ जुडता नहीं है । मलयालम में उल्ल जोडने से लिंग भेद नहीं रहता । जैसे,

मिटुक्कुळ आणक्कुट्टि §होशियार लडका§

मिटुक्कुळ पेणक्कुट्टि । §होशियार लडकी§

यहाँ भी हिन्दी के विशेषण में कोई परिवर्तन नहीं है । हिन्दी अध्ययन की प्रारंभिक अवस्था में केरल के छात्र मलयालम में जो परिवर्तन होता है, उसी के अनुरूप हिन्दी में भी परिवर्तन करके प्रयुक्त करते हैं जो गलत है । जैसे, होशियारी लड़की । क्योंकि हिन्दी में आदर्शवादी, प्रयोगवादी, छायावादी जैसे इकारन्त विशेषण का प्रयोग होता है जिससे समानता होने के कारण वे इस प्रकार की गलतीयाँ करते है । इस तरह के अन्य कुछ उदाहरण हैं —

	अशुद्ध	शुद्ध
1.	ग्रामीणी भाषा	- ग्रामीण भाषा
2.	आधुनिकि शिक्षा	- आधुनिक शिक्षा
3.	प्राचीनी सभ्यता	- प्राचीन सभ्यता
4.	बेवकूफी लडकी	- बेवकूफ लडकी
5.	अनपढ़ी युवती	- अनपढ युवती
6.	अपराजेयी सृजन शक्ति	- अपराजेय सृजन शक्ति
7.	आन्तरिकी प्रवृत्ति	- अन्तरिक प्रवृत्ति

<u>अकारान्त विशेषण और उससे सम्बन्धित समस्यायें</u>

हिन्दी में विशेष्य के लिए वचन के अनुसार अकारान्त विशेषणों में रूपान्तर होता है । मगर मलयालम में संस्कृत तत्सम शब्द को छोड़कर (जैसे, सुन्दर, सुन्दरी, सुन्दरन्) कहीं रूपान्तर नहीं होता । जैसे,

1. अच्छा लड़का । {हिन्दी}
   नल्ल आण्कुट्टि । {मलयालम}
   पुल्लिंग

2. अच्छी लड़की । {हिन्दी}
   नल्ल पेण्कुट्टि। {मलयालम}
   स्त्रीलिंग

3. अच्छे लड़के । {हिन्दी}
   नल्ल आण्कुट्टिकळ । {मलयालम}
   बहुवचन

केरल के छात्र मलयालम में इस तरह की प्रवृत्ति न होने के कारण कभी कभी पुल्लिंग एकवचन में इसका प्रयोग करते हैं । जैसे, "छूत् छात की प्रथा बहुत ही बुरा है ।" यहाँ विशेष्य प्रथा है जो स्त्रीलिंग शब्द है । इसलिए यहाँ प्रयुक्त वि॰य विशेषण भी स्त्रीलिंग होना चाहिए । सही वाक्य है —"छूतछात की प्रथा बहुत ही बुरी है ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. उन्हें वह लम्बा काया रूपिणी रमणी हृदय की उदार अनुकृति लगती है जो गाधार देश के मेषों के चर्म का नील परिधान पहने है । {अशुद्ध}

   उन्हें वह लम्बी काया रूपिणी रमणी हृदय की उदार अनुकृति लगती है जो गान्धार देश के मेषों के चर्म का नील परिधान पहने हैं । {शुद्ध}

2. अपना अनन्त करुणा और कोमलता के कारण मनु के विक्षुब्ध हृदय को देख द्रवित हो उठी थी । {अशुद्ध}
   अपनी अनन्त करुणा और कोमलता के कारण मनु के विक्षुब्ध हृदय को देख द्रवित हो उठी थी । {शुद्ध}

3. काला गाय देखने में सुन्दर है । (अशुद्ध)
   काली गाय देखने में सुन्दर है । (शुद्ध)
4. ये पत्तियाँ हरे हैं । (अशुद्ध)
   ये पत्तियाँ हरी है । (शुद्ध)
5. काला घोडे पर सैनिक बैठा था । (अशुद्ध)
   काले घोडे पर सैनिक बैठा था । (शुद्ध)
6. महादेव की पूजा अच्छा सफेद फूलों से करो । (अशुद्ध)
   महादेव की पूजा अच्छे सफेद फूलों से करो । (शुद्ध)
7. उन्होंने काल विभाजन को एक नया दिशा दी । (अशुद्ध)
   उन्होंने काल विभाजन को एक नयी दिशा दी । (शुद्ध)

दोनों भाषाओं के नियमों का तुलनात्मक एव व्यतिरेकी अध्ययन करके उनकी भिन्नता को आत्मसात् करके प्रयोग करने से इस तरह की गलतियों को दूर किया जा सकता है ।

<u>संख्यावाचक विशेषण और उससे सम्बन्धित समस्यायें</u>

जो विशेषण किसी संज्ञा या सर्वनाम के गणना, क्रम और समूह का बोध करते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं । मलयालम में इसे सांख्यम् कहते हैं । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
एक	- ओन्नु
दूसरा	- रण्डामत्ते
तीसरा	- मून्नामत्ते
दुगुना	- रण्डुमडडु. (रण्डिरण्डी) ?
तिगुना	- मून्निरट्टि, मून्नुमडडु.
दोनों	- रण्डुम्
तीनों	- मून्नुम्

हिन्दी में सख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के हैं - निश्चित सख्यावाचक और अनिश्चित सख्यावाचक । मलयालम में इस तरह का भेद नहीं है ।

निश्चित सख्यावाचक विशेषण वे हैं जिनसे निश्चित संख्या का ज्ञान होता है और अनिश्चित संख्यावाचक वे हैं जिनसे निश्चित सख्या का ज्ञान नहीं होता । जैसे,

निश्चित संख्यावाचक - चार, आठवा आदि

अनिश्चित संख्यावाचक - कई, बहुत से, कुछ, थोडा

निश्चित संख्यावाचक के प्रयोग और उसकी समस्यायें

दोनों भाषाओं में एक (ओन्नु) को छोडकर सभी संख्यावाचक विशेषण सदा बहुवचन रहते हैं । लेकिन संज्ञा के लिंग का प्रभाव इन पर नहीं पड़ता । जैसे,

दानों लड़के पढ रहे हैं ।

रण्ड् आणकुट्टिकळुम, पठिच्चु कोण्डिरिक्कुयाणा

मलयालम में इसका रूप विकृत नहीं होता, लेकिन हिन्दी में इसके विकृत रूप का प्रयोग होता है ।

क्रमवाचक निश्चयवाचक विशेषणों के साथ हिन्दी में सदा एकवचन संज्ञा का प्रयोग होता है । इन पर संज्ञा के लिंग का प्रभाव पड़ता है । लेकिन मलयालम में लिंग का प्रभाव इन पर नहीं पड़ता । जैसे,

1. यह तीसरी घण्टी है ।

इदु मून्नामत्ते मणियाणु ।

2. यह तीसरे लड़के हैं ।

इर्व् मून्नामत्ते आपक्कुट्टियाप् ।

लिंग के प्रभाव मलयालम में होने कारण केरल के छात्र इसका हमेशा पुल्लिंग में प्रयोग करते हैं । क्योंकि मलयालम में दोनों लिंगों में इसके एक ही रूप का प्रयोग होता है । जैसे,

1. पहला लड़की §अशुद्ध§

 पहली लड़की §शुद्ध§

2. दूसरा गाय §अशुद्ध§

 दूसरी गाय §शुद्ध§

3. तीसरा साड़ी §अशुद्ध§

 तीसरी साड़ी §शुद्ध§

लेकिन आवृत्ति वाचक निश्चित संख्यावाचक विशेषण संज्ञा के लिंग वचन के अनुसार बदल जाते हैं । लेकिन मलयालम में कोई परिवर्तन नहीं होता । जैसे,

1. आज दुगुनी लड़कियाँ आयी हैं ।

 इन्नं रण्डिरट्टि पेणक्कुटिकळ् वन्नु ।

2. आज दुगुने लड़के आये है ।

 इन्नें रण्डिरट्टि आण्कुट्टिकळ् वन्नु ।

केरल के छात्र-छात्राएँ मलयालम के अनुसार इसका प्रयोग एकवचन में करते हैं । जैसे,

आज तिगुना लड़कियाँ आयी हैं । §अशुद्ध§

आज तिगुनी लड़कियाँ आयी हैं । §शुद्ध§

पूर्ण संख्यावाचक विशेषण संबन्धी समस्यायें

मलयालम के संख्यावाचक विशेषण बिलकुल सरल और सुबोध है । जैसे, ओन्नु, रण्डु, मून्नु, नालु, अंचु, आरु, एषु, एट्टु, ओन्पतु , पत्तु आदि । उसके बाद दस, बीस, तीस आदि दुहाई शब्द आने पर उसके आगे एक, दो आदि संख्याएँ लिखने पर उनकी जोड़ की संख्या मिलती है । जैसे,

इरुपत्तियोन्न् §21§ - §इक्कीस§

मुप्पत्तिरण्डॅ §32§ - §बत्तीस§

दुहाई शब्दों के निर्माण के लिए भी नियम हैं । मलयालम में दस के लिए पत्तु कहते हैं । बीस §2×10§ के लिए दस के लिए प्रयुक्त शब्द के पहले "दो" के लिए मलयालम में प्रयुक्त रण्डु लगाना काफी है । तब सन्धि से बीस के लिए मलयालम शब्द मिलता है । वैसे ही तीस, चालीस आदि । जैसे,

इरु + पत्तु = इरुपत्तु §बीस§

मून्नु + पत्तु = मुप्पत्तु §तीस§

नालु + पत्तु = नाल्पत्तु §चालीस§

हिन्दी और मलयालम में आठ तक की संख्याओं की बनावट में समानता है । वे दोनों भाषाओं में मूल शब्द है । हिन्दी में "नौ" भी मूल है, लेकिन मलयालम में "ओनपतु" समास शब्द है । अर्थात् §ओन + पत्तु§ दस के एक पहले ।

हिन्दी में दस के ऊपर की संख्या गिनने में एक विशेष तरीका अपनाया जाता है जो मलयालम से सच्चे अर्थों में भिन्न कहा जा सकता है । दस + एक - हिन्दी में ग्यारह बनता है जिससे दस से या एक से कोई रूपगत संम्बन्ध नहीं दिखाई

पड़ता । बारह में भी यही बात देखी जा सकती है । लेकिन मलयालम में ग्यारह के लिए पत्तु + ओन्नु {एक}= पतिन्नोन्नु {ग्यारह} और बारह के लिए पत्तु + रण्डु {दो}= पतिरण्डु, पत्रण्डु {बारह} जिनका दस और एक और दस और दो से रूपगत संम्बन्ध दिखाई पड़ता है। इसी प्रकार उन्नीस के लिए उन + बीस, उनतीस के लिए उन + तीस का प्रयोग का हिन्दी में होता है तो उसका क्रमशः सम्बन्ध दस और बीस से न होकर बीस और तीस से हो जाता है । मलयालम में उन्नीस और उनतीस क्रमशः दस और बीस से संम्बन्धित रहते हैं ।
पत्तु + ओन्पतु = पत्तोन्पतु, इरुपतु + ओन्पतु = इरुपतोन्पतु।
मलयालम भाषी विद्यार्थियों केलिए यह एक समया बन जाती है । गिनती से सम्बन्धित इन रूपों को वे आसानी से याद नहीं रख सकते । मलयालम के पत्तोन्पतु शब्द केलिए हिन्दी अनुवाद सही रूप में देने में उन्हें दिक्कत पडती है । वह ग्यारह से गिनना शुरु कर देते हैं और अन्त में जाकर गिनती के क्रम में उन्नीस का क्रम सामनें रखते हैं ।

<u>अपूर्ण सख्यावाचक विशेषण संम्बन्धी समस्यायें</u>

अपूर्ण सख्यावाचक विशेषण पाव, आधा और पौने के सम्बन्ध में हिन्दी और मलयालम में कोई अन्तर नहीं है । मलयालम में भी "कालु","अर" और मुक्कालु शब्द इनके लिए क्रमशः रखे जाते है । लेकिन पूर्ण सख्याओं के साथ इनको लगाने की प्रथा मलयालम में सरल है । 1/4, 2 1/4, 3 1/4 के लिए मलयालम में उस सख्या के साथ कालु जोडकर बताना काफी है । लेकिन हिन्दी में 1/4 के लिए सवा शब्द है ।

$2\frac{1}{4}$ के लिए सवा दो $3\frac{1}{4}$ के लिए सवा तीन है । यह क्रम जारी रहता है । इस असमानता के कारण केरल के छात्र असमंजस में पड जाते हैं । क्योंकि मलयालम में $\frac{1}{4}$ के लिए जो काल् §पाव§ शब्द है उसका प्रयोग §ओन्नेकाल-सवा §रण्डेकाल-सवा दो§ आदि में जारी रहता है । लेकिन हिन्दी में काल् के लिए प्रयुक्त "पाव" शब्द का प्रयोग आगे जारी नहीं रहता । $1\frac{1}{4}$ के लिए सवा एक, $2\frac{1}{4}$ के लिए सवा दो आदि जारी रहता है जिसमें सवा "पाव" के स्थान पर प्रयुक्त होता है । मलयालम में $\frac{1}{4}$ के लिए अलग अलग शब्द का प्रयोग न होने के कारण केरल के छात्र सवा के स्थान पर पाव का प्रयोग करने की संभावना हैं । जैसे, "एक किलो चावल का दाम पाव दो रुपये हैं ।" इसके समानार्थी वाक्य—"रण्डु किलो अरियुटे विल रण्डे काल रूपयाण्"— में जो काल शब्द है उसके हिन्दी समानार्थी शब्द पाव का प्रयोग यहाँ किया गया है जो गलत है । क्योंकि हिन्दी में $\frac{1}{4}$ के लिए स्वतंत्र शब्द पाव का प्रयोग होता है और $1\frac{1}{4}$ से लेकर $\frac{1}{4}$ के लिए सवा शब्द का प्रयोग होता है । इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं –

1. पाव दो मीटर कपडे खरीदो । §अशुद्ध§
   सवा दो मीटर कपडे खरीदो । §शुद्ध§
2. यहाँ से लगभग पाव तीन किलोमीटर दूर है । §अशुद्ध§
   यहाँ से लगभग सवा तीन किलोमीटर दूर है । §शुद्ध§

वैसे $1\frac{1}{2}$ और $2\frac{1}{2}$ केलिए डेद और ढाई शब्द हैं जिनका पूर्ण सख्याओं के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है । उसके बाद साढ़े के आगे कोई भी पूर्ण सख्या रखकर उस पूर्ण सख्या के साथ आधा जोड़ा फल प्राप्त करते हैं । लेकिन मलयालम में इसके लिए अर\ §आधा§ शब्द का प्रयोग होता है । जैसे, ओन्नरा ($1\frac{1}{2}$) रण्डरा ($2\frac{1}{2}$), मून्नरा ($3\frac{1}{2}$) आदि । अर्थात् हिन्दी की तरह भिन्न शब्दों का प्रयोग आधा के लिए मलयालम में नहीं है । इसलिए केरल के छात्र $1\frac{1}{2}$ केलिए आधा एक, $2\frac{1}{2}$ के लिए आधा दो, $3\frac{1}{2}$ के लिए आधा तीन, $4\frac{1}{2}$ के लिए आधा चार आदि कहने लगते हैं जो गलत है ।

मलयालम में $1\frac{3}{4}$, $2\frac{3}{4}$, $3\frac{3}{4}$ आदि के लिए मुक्काल के आगे वही पूर्ण संख्या का इस्तेमाल होता है । जैसे, ओन्ने मुक्काल §पौने दो§, रण्डे मुक्काल §पौने तीन§ आदि । लेकिन हिन्दी के $1\frac{3}{4}$ और $2\frac{3}{4}$ के लिए क्रमशः पौने दो, पौने तीन का प्रयोग होता है। इसका मतलब है - पाव + ऊना + एक अर्थात् एक में पाव कम । इस प्रकार $2\frac{3}{4}$ के लिए पौने तीन §तीन में पाँव कम§, $3\frac{3}{4}$ के लिए पौने चार §चार में पाव कम§ आदि का प्रयोग होता है । अर्थात् मलयालम में जहाँ $1\frac{3}{4}$ एक से सम्बंधित है वहाँ हिन्दी में वह दो से संबन्धित रहता है । इसलिए वे $1\frac{3}{4}$, $2\frac{3}{4}$, $3\frac{3}{4}$ आदि के लिए पौने एक, पौने दो, पौने तीन का प्रयोग करते हैं ।

<u>परिमाणवाचक विशेषण</u> :-

जिस विशेषण से किसी वस्तु के माप, तोल या परिमाण का पता लगे, वह परिमाण वाचक विशलेषण कहलाता है । इसको मलयालम में पारिमाणिकम् करते हैं । जैसे,

1. थोडा पानी §हिन्दी§
   अल्पं वेळ्ळम् §मलयालम§
2. एक किलो चावल §हिन्दी§
   ओरु किलो अरि §मलयालम§

हिन्दी में परिमाण वाचक विशेषण के दो भेद किए गए हैं - निश्चित परिमाण वाचक और अनिश्चित परिमाण वाचक ।

जिससे किसी निश्चित परिमाण का पता लगे, उसे निश्चित परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं । जैसे, तीन मीटर कपडा । मून्नु मीटर तुणी ।

किसी निश्चित परिमाण का पता न लगे, उसे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं । जैसे कुछ, बहुत, ज्यादा थोडा, कम आदि ।

मलयालम के व्याकरणों में इस प्रकार के विभाजन नहीं है ।

सब, बहुत, थोडा, अधिक, कम, सारा, कुछ इत्यादि विशेषण हिन्दी में निश्चित परिमाण वाचक भी है और अनिश्चित सख्यावाचक भी । जब वे एकवचन संज्ञा के साथ आते हैं तब वे अनिश्चित परिमाण वाचक होते हैं । जब बहुवचन संज्ञा के साथ आते हैं तब अनिश्चित सख्यावाचक होता है । जैसे, प्रान्त भर के सारे नगरों में हडताल मनाई, सारा नगर खूब सजाया गया । इन दोनों वाक्यों में निश्चित परिमाणवाचक तथा अनिश्चित परिमाण वाचक का भेद स्पष्ट है । लेकिन मलयालम में इसका वचन स्पष्ट नहीं है । इसलिए केरल के छात्र इसका प्रयोग बहुवचन में करते हैं, क्योंकि इन सभी शब्दों के समानार्थी शब्द एल्लाँ §सब§

धारालम्, §बहुत§ आदि बहुवचन द्योतक है । इसलिए वे इसे अनिश्चित परिमाण वाचक §प्रयुक्त§ बहुवचन के रूप में प्रयुक्त करते हैं । जैसे, "थोडा बहुत लाभ तो हर व्यवसाय में होते ही हैं ।" यहाँ "थोडा", जो कि आनिश्चत वाचक सर्वनाम है, का प्रयोग बहुवचन में किया गया है जो गलत है । सही वाक्य होना चाहिए-"थोडा बहुत लाभ हर व्यावहाय में होता है ।"

1. सब दूध फट गये । §अशुद्ध§
   सब दूध फट गया । §शुद्ध§
2. थोडा खीर फट गये । §अशुद्ध§
   थोडी खीर फट गयी । §शुद्ध§
3. कुछ दूध नीचे गिर गये । §अशुद्ध§
   कुछ दूध नीचे गिर गया । §शुद्ध§

अनिश्चित परिमाणवाचक और अनिश्चित सख्यावाचक में अन्तर यह है कि जब ये किसी ऐसी वस्तु के साथ आये जो गिनी जा सकें तब अनिश्चित सख्यावाचक होंगे और ऐसी वस्तु के साथ आये जो गिनी न जा सके अपितु तोली या मापी जा सके तब अनिश्चित परिणामवाचक होंगे ।

<u>सार्वनामिक विशेषण</u> :-

जिस विशेषण से किसी ओर निर्देश या संकेत किया जाता है, उसे सार्वनानिक विशेषण कहते हैं । मलयालम इसे सार्वनामिकम् कहते हैं । जैसे,

यह पुस्तक पढ़ी है । §हिन्दी§
ई पुस्तक वायिच्चिण्टुण्ड । §मलयालम§

इसमें यह और ई सार्वनामिक विशेषण हैं, क्योंकि इन शब्दों से पुस्तक ‹पुस्तकं› की ओर इशारा पाया जाता है ।

सर्वनाम शब्द जब अकेले प्रयुक्त हो तो वह सर्वनाम होते हैं और जब वह किसी संज्ञा से पहले हो तो विशेषण होते हैं । सर्वनामों की तरह इसका कारक प्रत्यय लगानें पर रूप बदल जाता है । जैसे इस, ऐसा, इतना, उतना, जितना, किस, मुझ आदि । लेकिन मलयालम में इसका रूप परिवर्तन नहीं होता है । हिन्दी में यदि संज्ञा बहुतचन में है तो इसके पहले आनेवाला सार्वनामिक विशेषण भी बहुवचन में होना चाहिए । लेकिन मलयालम में इस तरह का परिवर्तन नहीं है । जैसे

ये लोग । ‹हिन्दी›

ई जनङ्ङळ् । ‹मलयालम›

केरल के छात्र मलयालम के अनुरूप हिन्दी में बहुवचन संज्ञा के पहले एकवचन के सार्वनामिक विशेषण का प्रयोग करते हैं । जैसे, "कनुप्रिया के वक्तव्य की यह पक्तियाँ अत्यन्त सार्थक है ।" "यहाँ पक्तियाँ बहुवचन शब्द है । इसलिए इसके पहले "ये" सार्वनामक विशेषण का प्रयोग होना चाहिए । सही वाक्य इस प्रकार है - "कनुप्रिया के वक्तव्य की ये पक्तियाँ अत्यन्त सार्थक है ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. वर्णनात्मक काव्य में यह दोनों शैलियों का विशेष महत्व है । ‹अशुद्ध›

   वर्णनात्मक काव्य में इन दोनों शैलियों का विशेष महत्व है । ‹शुद्ध›

2. इस कारणों की वजह से फसल पर असर हो रहा है । (अशुद्ध)
इन कारणों की वजह फसल पर असर हो रहा है । (शुद्ध)

3. सूर ने वात्सल्य के इसी मनोहारी चित्रों के सैन्दर्य से अपने काव्य के सजाया है । (अशुद्ध)
सूर ने वात्सल्य के इन्हीं मनोहारी चित्रों के सौन्दर्य से अपने काव्य को सजाया है । (शुद्ध)

4. सूर ने यह सभी बालसुलभ चेष्टाओं और भावनाओं के बड़े ही प्रभावात्मक रूप में अभिव्यक्ति देकर अपने काव्य को प्राणवान बना दिया । (अशुद्ध)
सूर ने इन्हीं सभी बालसुलभ चेष्टाओं और भावनाओं को बड़े ही प्रभावात्मक रूप में अभिव्यक्ति देकर अपने काव्य के प्राणवान बना दिया है । (शुद्ध)

<u>संख्यावाचक विशेषण "एक" से संबन्धित समस्यायें</u>

कभी कभी केरल के छात्र संख्यावाचक विशेषण एक का अनावश्यक प्रयोग करके गलती कर बैठते हैं । जैसे, "एक माता का पूर्ण वात्सल्य बच्चों को वहाँ मिलता है ।" इस तरह के सन्दर्भों में मलयालम में संख्यावाचक एक के समानार्थी ओरु का प्रयोग होता है । जैसे, "ओरु माताविन्टे पूर्ण वात्सल्य कुट्टिकळ्क्कु अविटे किट्टुन्नु ।" मलयालम के प्रभाव के कारण हिन्दी में भी "एक" का प्रयोग किया गया है । इस तरह के अन्य

कुछ उदाहरण हैं -

1. राधा एक अच्छी अध्यापिका है । (अशुद्ध)
   राधा अच्छी अध्यापिका है । (शुद्ध)
2. वह तापसी पथिक को एक माता के रूप में आश्रय देती है । (अशुद्ध)
   वह तापसी पथिक को माता के रूप में आश्रय देती है । (शुद्ध)
3. करुणा रस एक कविता को उदात्त बनाने में समर्थ है । (अशुद्ध)
   करुणा रस कविता को उदात्त बनाने में समर्थ है । (शुद्ध)
4. इस कविता में कविवर पन्त ने परिवर्तन के एक महान मानकर इसे अनेक रूपों में दिखाया है । (अशुद्ध)
   इस कविता में कविवर पन्त ने परिवर्तन को महान मानकर उसे अनेक रूपों में दिखाया है । (शुद्ध)

समस्याओं का निराकरण

अन्य व्याकरणिक अंगों के समान सर्वनाम और विशेषण संबन्धी समस्याओं को दूर करने के लिए दोनों भाषाओं के सर्वनाम और विशेषण का व्यतिरेकी अध्ययन करके दोनों में पाई जानेवाली असमानताओं को आत्मसात् करना होगा । उन असमानताओं के आधार पर गलतियों का विश्लेषण करके उससे उत्पन्न समस्याओं को काफी हद तक दूर किया जा सकता है । गिनती सम्बन्धी समस्याओं को दूर करने के लिए दोनों भाषाओं की गिनतियों को साथ साथ रटकर (एक-ओन्नु, दो रण्डु) सीखना अच्छा होगा । इसका अनुसरण करके केरल के छात्र-छात्राएँ गिनती सम्बन्धी समस्याओं को सफलता पूर्वक दूर कर सकते हैं ।

अध्ययन के प्रारंभ से सर्वनामों और विशेषणों की पद व्याख्या करके सीखने से इन समस्याओं को दूर किया जा सकता है । सर्वनाम की पद व्याख्या करने का एक नमूना इस प्रकार है —

"मैं अपना काम करता हूँ । - इसमें मैं और अपना दो सर्वनाम आये हैं । इसकी पद व्याख्या इस प्रकार करना है ।

मैं - पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, एक वचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक, करता हूँ क्रिया का कर्ता। अपना - निजवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, पुंल्लिंग , एकवचन, सम्बन्ध कारक, अपना का सम्बन्ध "काम" से है ।

सर्वनाम की पद व्याख्या करते समय सर्वनाम किस प्रकार का सर्वनाम है, किस पुरुष में प्रयुक्त हुआ है, कौन से लिंग में है, किस कारक में है और वाक्य में सर्वनाम का प्रकार्य क्या है इन बातों को स्पष्ट करना होगा । इसका निरंतर अभ्यास करने से समस्यायें दूर हो सकती हैं ।

विशेषण की पद व्याख्या के लिए निम्न - बातों की आवश्यकता होती है —

1. प्रकार - गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाण वाचक और सार्वनामिक
2. लिंग - पुल्लिंग या स्त्रीलिंग
3. वचन - एकवचन या बहुवचन
4. प्रकार्य - किस विशेष्य का विशेषण बताना ।

निष्कर्ष

हिन्दी और मलयालम के सर्वनाम और विशेषण के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि दोनों भाषाओं के सर्वनाम और विशेषण में समानता के साथ ही भिन्नता भी है । जब तक केरल में हिन्दी के अध्ययन करने वाले छात्र इन समानताओं और विषमताओं का अध्ययन करके उनसे अवगत नहीं होते तब तक कई समस्यायें पैदा होने की सभावनाएँ हैं । उदाहरणों के जरिए यह साबित होता है कि इनके द्वारा सर्वनाम और विशेषण सम्बन्धी कई गलतियाँ होती रहती है और उन्हें इन गलतियों से अवगत कराके समस्याओं को सुलझाना अत्यन्त आवश्यक बन जाता है । नियमों व प्रयोगों के जरिए व्याकरणिक नियमों का अध्ययन किया जाय तो वे इन गलतियों को समझकर उसे दूर रहने का प्रयत्न कर सकते हैं । सर्वनाम और विशेषण के विभिन्न प्रयोगों से सम्बन्धित इस प्रकार की गलतियाँ, उनका विश्लेषण एवं इन समस्याओं का समाधान ही प्रस्तुत अध्ययन का विषय रहा ।

पाँचवाँ अध्याय

केरल में हिन्दी अध्ययन की क्रिया सम्बन्धी समस्यायें

वाक्य में अनेक शब्द होते हैं जिनसे अर्थ पूर्ण रूप से स्पष्ट होता है । वाक्य में जिस शब्द या शब्द समूह से कर्ता द्वारा किए जानेवाला कार्य - व्यवहार का पता चलता है, उसे क्रिया कहते हैं । चूँकि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से क्रिया की सत्ता वाक्य में अपेक्षित हैं, इसलिए वाक्य रचना की दृष्टि से क्रिया अनिवार्य तत्त्व या वाक्य का मूलाधार कहा जाता है । हिन्दी और मलयालम में क्रिया पद वाक्यान्त में आता है । इसलिए क्रिया " समापिका क्रिया " कहलाती है । जैसे,

बच्चा खिलौने से खेल रहा है । (हिन्दी)
कुट्टि कळिपाट्टम् कोण्डु कळिक्कुकयाकुन्नु । (मलयालम)

इन दोनों वाक्य में क्रमशः खेल रहा है " और " कलिक्कुकयाकुन्नु " क्रिया है जो वाक्यान्त में है ।

क्रिया की परिभाषा

वैयाकरणों ने क्रिया की परिभाषा भिन्न भिन्न प्रकार से की है । फिर भी एक सर्वमान्य परिभाषा कामता प्रसाद गुरु ने यों दी है - " जिस विकारी शब्द के प्रयोग से किसी वस्तु के विषय में विधान किया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं । [1]
जैसे, " बाबू लिखता है । इस वाक्य में " बाबू " के विषय में " लिखता है " शब्द के द्वारा विधान किया गया है ।

---

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु पृ- 106

इसलिए " लिखता है " क्रिया है । केरलपाणिनी ने अपनी पुस्तक केरळपाणिनीयम् में क्रिया केलिए " कृति " शब्द का प्रयोग किया है । उनके अनुसार " जिस शब्द से किसी वस्तु द्वारा किये जाने वाले व्यापार का पता चलता है, उसे " कृति " कहते हैं । [1] दोनों भाषाओं के वैयाकरणों ने क्रिया की परिभाषा भिन्न भिन्न प्रकार से की है, फिर भी दोनों इसी बात को स्पष्ट करते हैं कि क्रिया शब्द से करने अथवा होने का बोध होता है । दोनों भाषाओं की क्रियाओं में भिन्नता भी है । हिन्दी के क्रिया शब्द लिंग, वचन और कारक के अनुसार परिवर्तित होने के कारण विकारी शब्द हैं । जैसे, " बाबू लिखता है । ", " अम्बिका लिखती है । ", बाबू और अनिल लिखते हैं । किन्तु मलयालम में इस प्रकार का परिवर्तन नहीं होता । जैसे, " बाबू एषुतुन्नु । (बाबू लिखता है ।), " अम्बिका एषुतुन्नु । " (अम्बिका लिखती है ।) , बाबुवुं अनिलुं एषुतुन्नु । (बाबू और अनिल लिखते हैं ।)

क्रिया सम्बन्धी समस्यायें :-

केरल में हिन्दी अध्ययन करनेवाले छात्रों को क्रिया से काफी समस्यायें होती हैं जिनका विश्लेषण आगे किया जा रहा है ।

क्रियाधातु और उससे सम्बन्धित समस्यायें :-

प्रत्येक क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं । धातु क्रियापद के उस अंश को कहते हैं जो किसी क्रिया के प्रायः सभी रूपों में पाया जाता है ।

---

1. केरलपाणनीयम् केरलपाणिनी पृष्ठ संख्या - 143

धातु की परिभाषा कामता प्रसाद गुरु ने यों दी हैं- " जिस मूल शब्द में विकार होने से क्रिया बनती है, उसे धातु कहते हैं । [1] केरलपाणिनी के अनुसार, " धातु शब्द क्रिया से जुड़कर रहने के कारण क्रिया द्योतक शब्द है । " [2] जैसे,

हिन्दी	मलयालम
आ	वरॅ
जा	पो

हिन्दी में धातुओं के अन्त में " ना " जोड़कर क्रियाएँ बनाती है । जैसे, पढ़ से पढ़ना, लिख से लिखना, सुन से सुनना आदि । धातुओं में " ना " जोड़कर बनाने वाले शब्द क्रिया का साधारण रूप कहलाता है । मलयालम में धातुओं के साथ " अ ", " क ", उक" इनमें से कोई प्रत्यय जोड़कर यह रूप बनाया जाता है । लेकिन मलयालम में हिन्दी की तरह सभी क्रियापद धातुओं के साथ प्रत्यय सीधे जोडा नहीं जाता । उदाहरणार्थ, पर + य + उक = परयुक ॥ कहना ॥, पठ् + इ + उक = पठिक्कुक ॥ पढ़ना ॥ आदि। इसे मलयालम में "इटनिल" ॥ मध्यस्थ ॥ कहते हैं । विद्वानों के अनुसार मध्यस्थ इसलिए जोड़ा जाता है कि धातु और प्रत्यय को मिलाने में सुविधा हो । [3] इस प्रकार के अन्तर के कारण केरल के छात्र हिन्दी में इस प्रकार का जोड़ हिन्दी अध्ययन की प्रारंभिक अवस्था में करते हैं । जैसे, रामू पाठ लिखिता है ।" यहाँ अनावश्यक रूप से "इ" को जोड़ा गया है । सही वाक्य है - " रामू पाठ लिखता है ।

---

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु पृ. 106
2. केरलपाणिनीयम् केरलपाणिनी पृ. 143

इस प्रकार के कुछ उदाहरण हैं -

अशुद्ध	शुद्ध
खेलिना	खेलना
गूँथिना	गूँथना
गेलना	गलना
घूमेना	घूमना
केहलवाना	कहलवाना

हिन्दी और मलयालम की सकर्मक क्रिया और उससे संबन्धित समस्यायें:-

सकर्मक क्रियायें ऐसी क्रियायें हैं जिनसे सूचित होनेवाला व्यापार कर्ता करता है और उसका फल कर्म पर पड़ता है। कामता प्रसाद गुरु ने इसकी परिभाषा यों दी है " जिस क्रिया से सूचित होने वाले व्यापार का फल कर्ता से निकलकर किसी दूसरी वस्तु पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। [1] जैसे, " बाबू किताब पढ़ रहा है। इस वाक्य में " पढ़ना " क्रिया है जिसके व्यापार का फल किताब कर्म पर पड़ता है। इसलिए वह सकर्मक है। मलयालम में " बाबू पुस्तकं वायिच्चुकोण्डिरिक्कुन्नु " (बाबू पुस्तक पढ़ रहा है) में " वायिक्कुक " क्रिया का फल पुस्तक कर्म पर पड़ता है, इसलिए वह सकर्मक है। केरलपाणिनी के अनुसार " कर्म से युक्त क्रियायें सकर्मक हैं। [2] जैसे, उण्णुक (खाना), कुटिक्कुक (पीना), अटिक्कुक (मारना) आदि। हिन्दी में सकर्मक क्रिया का कर्म " क्या" या "किसको" या "किनका" का उत्तर होता है।

---

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु पृ. 108

जैसे, " अध्यापक छात्रों को पढ़ा रहा है । ", " राजू आम खा रहा है । " आदि वाक्यों में किनको और क्या पूछने से क्रमशः " छात्रों को ", " आम " आदि उत्तर मिलता है जो क्रमशः उस वाक्य की क्रिया के कर्म हैं । मलयालम में सकर्मक क्रिया के कर्म एन्त् ‖ क्या ‖ या आरे ‖ किसको, किनको ‖ प्रश्न का उत्तर होता है । जैसे, अध्यापकन् विद्यार्थिकळे पठिप्पिक्कुकयाकुन्नु । ‖ अध्यापक छात्रों को पढ़ा रहा है ‖, " राजू माङ्ङा कष़िक्कुकयाकुन्नु । ‖ राजू आम खा रहा है ‖ आदि वाक्यों में क्रमशः " आरे पठिप्पिक्कुकयाकुन्नु ? " ‖ किसको पढ़ा रहा है ? ‖ एन्तु कष़िक्कुकयाकुन्नु ? ‖ क्या खा रहा है ? ‖ आदि प्रश्न पूछने से क्रमशः विद्यार्थिकळे ‖ छात्रों को ‖, माङ्ङा ‖ आम]आदि उत्तर मिलता है जो क्रमशः मलयालम के उन वाक्यों की क्रिया के कर्म हैं ।

सकर्मक क्रियाओं के प्रकार और उससे सम्बन्धित समस्यायें :-

सकर्मक क्रियाओं के दो भेद हैं — एक कर्मक क्रिया और द्विकर्मक क्रिया । एक कर्मक क्रियायें वे हैं जो वाक्य में प्राणिवाचक या अप्राणिवाचक में से एक मुख्य कर्म ही लेती हैं । जैसे,

कुत्ते ने बकरी को काट लिया । ‖ हिन्दी ‖
पट्टि आटिने कटिच्चु । ‖ मलयालम ‖

इसमें एक ही कर्म है । हिन्दी वाक्य में " बकरी " कर्म है और मलयालम में " आट् " ।

द्विकर्मक क्रियायें वे हैं जो वाक्य में एक साथ गौण कर्म तथा मुख्य कर्म दोनों लेती हैं । जैसे,

बाबू एन्ने पाट्टु केळ्प्पिच्चु । ‖ मलयालम ‖

इसमें मुझे ‖ हिन्दी में ‖, एन्ने ‖ मलयालम में ‖ गौण कर्म है । इसलिए इसके साथ कर्मकारक का प्रत्यय आया है । गीत ‖ हिन्दी में ‖, पाट्टु ‖ मलयालम में ‖ मुख्य कर्म होने के कारण विभक्ति प्रत्ययों के बिना प्रयुक्त होता है । इसके सम्बन्ध में चौथे अध्याय में विस्तार से चर्चा की जा चुकी है ।

अपूर्ण भूतकाल और हेतु हेतुमत भूतकाल को छोड़कर बाकी सभी भूतकालों में सकर्मक क्रिया आने पर हिन्दी में कर्ता के साथ " ने " प्रत्यय होता है । लेकिन मलयालम में कर्ता के साथ कोई प्रत्यय नहीं होता । जैसे,

राम ने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी । ‖ हिन्दी ‖
रामन् तन्टे प्रतिज्ञा लंघिच्चु । ‖ मलयालम ‖

मलयालम में कर्ता के साथ प्रत्यय का प्रयोग न होने के कारण केरल के छात्र हिन्दी में भी " ने " का प्रयोग छोड़ देते हैं जो बिलकुल गलत है । इससे सम्बन्धित समस्यायें तीसरे और चौथे अध्याय में दी गई हैं । इस अध्याय में सकर्मक क्रियाओं के साथ " ने " का प्रयोग करते समय क्रियाओं में कर्म के अनुसार होनेवाले परिवर्तन और उससे सम्बन्धित समस्याओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है । हिन्दी में कर्ता के साथ " ने " प्रत्यय आने से सकर्मक क्रियाएँ लिंग और वचन के अनुसार बदलती हैं । लेकिन मलयालम में ऐसा कोई बदलाव नहीं है । जैसे,

उसने थालियाँ मेज़ पर रख दीं । ‖ हिन्दी ‖
अवन् तालङ्ङळ् मेज़प्पुरत्तें वच्चु । ‖ मलयालम ‖

यहाँ हिन्दी में " थालियाँ " (कर्म) स्त्रीलिंग होने के कारण " रख देना " क्रिया के स्त्रीलिंग रूप का ही प्रयोग हुआ है । लेकिन मलयालम में इस प्रकार का बदलाव नहीं है । विभिन्न लिंग के कर्म आने पर भी क्रिया का रूप बदलता नहीं है । केरल के छात्र मलयालम की इसी प्रवृत्ति के अनुसार हिन्दी में भी एकवचन क्रिया रूप का प्रयोग करते हैं । जैसे, " साहित्यिक दृष्टि से उस काल में सिद्धों, नाथों तथा नामदेव, जयदेव एवं रामानन्द की रचनाएँ थीं, जिन्होंने किसी न किसी रूप में कबीर के लिए साहित्यिक पृष्ठभूमि प्रदान किया । यहाँ पृष्ठभूमि स्त्रीलिंग शब्द है । इसलिए क्रिया रूप प्रदान की " होना चाहिए । सही वाक्य है - " साहित्यिक दृष्टि से उस काल में सिद्धों, नाथों तथा नामदेव, जयदेव एवं रामानन्द की रचनाएँ थीं जिन्होंने किसी न किसी रूप में कबीर के लिए साहित्यिक पृष्ठभूमि प्रदान की । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. कबीर सूफियों से भी अपने काम की काफी बातें ग्रहण किया । (अशुद्ध)

   कबीर ने सूफियों से भी अपने काम की काफी बातें ग्रहण कीं । (शुद्ध)

2. उन्होंने दोनों काव्यों का तुलनात्मक व्याख्या प्रस्तुत किया है । (अशुद्ध)

   उन्होंने दोनों काव्यों की तुलनात्मक व्याख्या प्रस्तुत की है । (शुद्ध)

उसी तरह कर्म बहुवचन है तो हिन्दी में क्रिया भी बहुवचन में होगी । मलयालम में क्रिया में कोई परिवर्तन नहीं होता ।

जैसे,

उसने दो आम खाये । § हिन्दी §

अवन् रण्डु माङ्.ङ. कषिच्चु । § मलयालम §

मलयालम के प्रभाव के कारण केरल के छात्र हिन्दी में इस संदर्भ में क्रिया का प्रयोग एकवचन के बदले बहुवचन के रूप में करते हैं । जैसे, " शंकर ने तीन विचार दिया जिनका तुलसी ने अपने अनुसार समन्वय किया । यहाँ तीन विचार " बहुवचन है । इसलिए क्रिया भी बहुवचन में § दिये § होनी चाहिए । सही वाक्य है – " शंकर ने तीन विचार दिये जिनका तुलसी ने अपने अनुसार समन्वय किया । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं –

1. सन्तों की अभिव्यक्ति कला ने उनकी बानियों में चार चाँद लगा दिया । § अशुद्ध §

   सन्तों की अभिव्यक्ति कला ने उनकी बानियों में चार चाँद लगा दिये । § शुद्ध §

2. रीतिकालीन कवियों ने इन बत्तीसों अंगों के शतशत चित्र प्रस्तुत किया है । § अशुद्ध §

   रीतिकालीन कवियों ने इन बत्तीसों अंगों के शतशत चित्र प्रस्तुत किये हैं । § शुद्ध §

हिन्दी में इसी संदर्भ में कर्म के साथ को प्रत्यय आने से क्रिया पुल्लिंग एकवचन में प्रयुक्त होती है । लेकिन मलयालम में इस तरह का खास परिवर्तन नहीं है, हमेशा एक जैसा रहती है । जैसे,

उसने गाय को मारा । § हिन्दी §

अवन् पशुविने अटिच्चु । § मलयालम §

इसी प्रभाव के कारण केरल के छात्र इस संदर्भ में भी कभी कभी स्त्रीलिंग का प्रयोग करते हैं । जैसे, " रामकाव्यधारा के महान कवि गोस्वामी तुलसीदास ने अपने समय की किसी भी काव्य-परंपरा, पद्धति और शैली को अछूता नहीं छोड़ी है । " यहाँ क्रिया का प्रयोग " काव्य परंपरा, पद्धति और शैली" " के अनुसार स्त्रीलिंग में की गई है जो सचमुच गलत है । सही वाक्य है - " राम काव्यधारा के महान कवि गोस्वामी तुलसीदास ने अपने समय की किसी भी काव्य परंपरा, पद्धति और शैली को अछूता नहीं छोड़ा है । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. उन्होंने हिन्दी में एक सर्वथा मौलिक गंभीर और गवेषणात्मक आलोचना प्रणाली को जन्म दी । ﴾ अशुद्ध ﴿

   उन्होंने हिन्दी में एक सर्वथा मौलिक, गंभीर और गवेषणात्मक आलोचना प्रणाली को जन्म दिया । ﴾ शुद्ध ﴿

2. लोदिवंश वालों ने भी इन्हीं परंपराओं को आगे बढ़ायी हैं । ﴾ अशुद्ध ﴿

   लोदिवंश वालों ने भी इन्हीं परंपराओं को आगे बढ़ाया है । ﴾ शुद्ध ﴿

अकर्मक क्रिया और उससे सम्बन्धित समस्यायें :-

जिस क्रिया से सूचित होनेवाले व्यापार और उसका फल ﴾ दोनों भी ﴿ कर्ता पर ही पड़ते हैं, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं । जैसे,

इन वाक्यों में चली और पोयी क्रियाओं का व्यापार और फल कर्ता पर ही पड़ता है । ये दोनों क्रियायें कर्म रहित हैं, इसलिए उन्हें अकर्मक कहते हैं । कामता प्रसाद गुरू ने इसकी परिभाषा यों दी है - " जिस क्रिया से सूचित होने वाले व्यापार और उसका फल कर्ता ही पर पड़े, उसे अकर्मक कहते हैं । [1] केरलपाणिनी के अनुसार " कर्म से रहित क्रियायें अकर्मक क्रियायें हैं । [2] हिन्दी में अकर्मक कियाओं के साथ " ने " प्रत्यय का प्रयोग नहीं होता । इससे सम्बन्धित समस्याओं पर तृतीय अध्याय तथा चतुर्थ अध्याय में विचार किया गया है ।

अकर्मक और सकर्मक से सम्बन्धित बातें और उससे संबन्धित समस्यायें :-

हिन्दी में कुछ क्रियायें प्रयोग के अनुसार अकर्मक और सकर्मक दोनों होती हैं । इसे " उभयविध क्रिया " कह सकते हैं । जैसे, खुजलाना, घबड़ाना, ललचाना, भरना, घिसना, बदलना, ऐठंना, भूलना, कसना, फॉदना, लहराना आदि । मलयालम में भी इसी तरह की प्रवृत्ति पायी जाती है । जैसे,

1. उसका पैर खुजलाता है । (अकर्मक)
   अवन्टे काल् चोरियुन्नु ।

2. वह अपना पैर खुजलाता है । (सकर्मक)
   अवन् तन्टे काल् चोरियुन्नु ।

इस प्रकार की समानतायें होते हुए भी मलयालम में क्रिया रूप नहीं बदलता । इस अवसर पर केरल के छात्र असमंजस में पड़ जाते हैं और सकर्मक और अकर्मक पहचानने में उन्हें कठिनाई होती है ।

---

1. हिन्दी व्याकरण - कामता प्रसाद गुरू - पृ. 108
2. केरलपाणिनीयम् - केरलपाणिनी - पृ. 143

कभी कभी वे सकर्मक को अकर्मक समझकर प्रयोग करते हैं जोकि गलत है । जैसे,

1. सुशीला ने बी.ए में मेरे साथ पढ़े । ﴾ अशुद्ध ﴿
   सुशीला बी.ए में मेरे साथ पढ़ी । ﴾ शुद्ध ﴿
2. मैं ने उसका नाम भूल गया । ﴾ अशुद्ध ﴿
   मैं उसका नाम भूल गया । ﴾ शुद्ध ﴿
3. पिताजी मिठाई दिखाकर उसे ललचाया । ﴾ अशुद्ध ﴿
   पिताजी ने मिठाई दिखाकर उसे ललचायी । ﴾ शुद्ध ﴿
4. मैं कप् में चाय भरी है । ﴾ अशुद्ध ﴿
   मैं ने कप् में चाय भरी है । ﴾ शुद्ध ﴿
5. नौकर सुबह रस्सी ऐंठा । ﴾ अशुद्ध ﴿
   नौकर ने सुबह रस्सी ऐंठी । ﴾ शुद्ध ﴿

हिन्दी में अकर्मक क्रियाओं के साथ प्रधान कर्मवत शब्द प्रयुक्त होने से वे अकर्मक बन जाती हैं । जैसे, " बोलना " अकर्मक है । लेकिन " धावा बोलना " सकर्मक है । क्योंकि धावा कर्मवत् शब्द है । लेकिन मलयालम में इस प्रकार कर्मवत् शब्द के साथ क्रियाओं का प्रयोग नहीं होता । उदाहरण केलिए " कळि कळिक्कुक " जैसे क्रिया का प्रयोग मलयालम में नहीं है । इसलिए केरल के छात्र इसका प्रयोग अकर्मक के रूप में करते हैं । जैसे, " वह मुझे धावा बोला । " यहाँ क्रिया के पहले धावा क्रियावत् शब्द आया है । इसलिए इसका प्रयोग सकर्मक के रूप में होना चाहिए । अतः सही वाक्य होना चाहिए – " उसने मुझपर धावा बोला । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं –

1. वे ऐसा चाल चला कि मैं देखते ही रह गया । ﴾ अशुद्ध ﴿

उन्होंने ऐसी चाल चली कि मैं देखते ही रह गया ।
(शुद्ध)

2. इस सत्ता के विरुद्ध अनेक लड़ाईयाँ हम लड़े । (अशुद्ध)
इस सत्ता के विरुद्ध अनेक लड़ाईयाँ हमने लड़ी ।
(शुद्ध)

सरल क्रिया (केवल क्रिया) और उससे सम्बन्धित समस्यायें :-

सरल धातु से बनी क्रियायें सरल या साधारण क्रियायें हैं । जैसे पढ़ना, लिखना, लेना आदि । कामता प्रसाद गुरु के अनुसार " सरल (मूल) क्रियायें वे हैं जो किसी दूसरे शब्द से न बनी हों ।[1] हिन्दी में इसे स्वार्थिक क्रिया भी कहते हैं । क्योंकि ये किसी प्रेरणा के बिना की जाती हैं । मलयालम में इसकेलिए " केवल क्रिया " शब्द चलता है । केरलपाणिनी के अनुसार " किसी की प्रेरणा के बिना की जाने वाली सामान्य क्रिया केवल क्रिया है ।[2]

हिन्दी में कर्ता तथा क्रिया या कर्म तथा क्रिया का अन्वय सामान्य क्रिया केलिए भी लागू होता है । अर्थात् आम तौर पर क्रिया कर्ता के लिंग तथा वचन के अनुसार होती है । " ने " प्रत्यय वाली सकर्मक क्रियाओं में क्रिया कर्म का अनुसरण करती है । लेकिन मलयालम में इस तरह की प्रवृत्ति नहीं है । जैसे,

1. मैं चाय नहीं पीती । (हिन्दी)
ञान् चाय कुटिक्किल्ला । (मलयालम)
2. मैं ने चाय नहीं पी ।
ञान चाय कुटिच्चिल्ला ।

---

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु पृ. 10
2. केरलपाणिनीयम् केरलपाणिनी पृ. 143

केरल के छात्र मलयालम की प्रवृत्ति के प्रभाव के कारण एकवचन में ही क्रिया का प्रयोग करते हैं । जैसे, " उसी तरह उम्र के चढ़ते समय याने युवावस्था में प्रवेश करते समय कुछ लोग विषयवासनाओं में डूबता है । " यहाँ कर्ता लोग है जो बहुवचन शब्द है । इसके साथ आयी क्रिया भी बहुवचन में होनी चाहिए । सही वाक्य हैं - " उसी तरह उम्र के चढ़ते समय याने युवावस्था में प्रवेश करते समय कुछ लोग विषयवासनाओं में डूबते हैं । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. कबीरदास ने वर्षों पहले यह बातें कहा । ‖ अशुद्ध ‖
   कबीरदास ने वर्षों पहले ये बातें कहीं । ‖ शुद्ध ‖
2. जिस प्रकार जल से अलग होते ही मछली अपने प्राण देता है, वैसे ये कर नहीं सका । ‖ अशुद्ध ‖
   जिस प्रकार जल से अलग होते ही मछली अपने प्राण देती हैं, वैसे ये कर नहीं सकें । ‖ शुद्ध ‖

<u>प्रेरणार्थक क्रिया ‖ प्रयोजक प्रकृति ‖ तथा उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

जिस क्रिया के व्यापार में कर्ता पर किसी की प्रेरणा की जाती है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं । कामता प्रसाद गुरु के अनुसार " मूल क्रिया के जिस विकृत रूप से क्रिया के व्यापार में किसी कर्ता पर किसी की प्रेरणा समझी जाती है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं । "[1] मलयालम में इसे " प्रयोजक प्रकृति " की संज्ञा दी है । केरलपाणिनी के अनुसार " प्रेरणार्थ से युक्त क्रियायें प्रयोजक क्रियायें हैं । "[2]

---

1. हिन्दी व्याकरण - कामता प्रसाद गुरु - पृ. 10
2. केरलपाणिनीयम् - केरलपाणिनी - पृ. 143

जैसे,

बाबू राजू से पुस्तक पढ़वाता है । ﴾ हिन्दी ﴿

बाबू राजुविने कोन्ट्टू पुस्तकं वायिप्पिक्कुन्नु । ﴾ मलयालम ﴿

हिन्दी में जो कर्ता दूसरों पर प्रेरणा करता है, उसे प्रेरक कर्ता कहते हैं और जिस पर प्रेरणा की जाती है, उसे प्रेरित कर्ता कहते हैं । मलयालम में इसे क्रमशः " प्रयोजक कर्ता " और " प्रयोज्य कर्ता " कहते हैं । उपर्युक्त वाक्य में पढ़वाता है " प्रेरणार्थक क्रिया " है । वायिक्कुन्नु प्रयोजक क्रिया है । दोनों में " बाबू " प्रेरक कर्ता और प्रयोजक कर्ता है । राजू प्रेरित कर्ता और प्रयोज्य कर्ता है । प्रेरक या प्रयोजक कर्ता का प्रयोग कर्ताकारक में और प्रेरित कर्ता का प्रयोग करणकारक में होता है । निम्नलिखित क्रियाओं से प्रेरणार्थ क्रियायें नहीं बनती । लेकिन मलयालम में इसकेलिए कभी कभी प्रयोजक क्रियायें उपलब्ध होती है ।

हिन्दी	मलयालम	मलयालम की प्रयोजक क्रिया
आना	वरुक	वरुत्तुक
होना	उण्डाकुक	उण्डाक्किक्कुक
कुम्हलाना	वाटुक	वाट्टुक
गर्जना	गर्जिक्कुक	गर्जिप्पिक्कुक
टकराना	कूट्टिमुट्टुक	कूट्टिमुट्टिक्कुक
तुतलाना	कोञ्चुक	कोञ्चिक्कुक
पड़ना	वीषुक, किटक्कुक	वीषिक्कुक, किटप्पिक्कुक

उपर्युक्त प्रयोजक क्रियाओं के लिए हिन्दी में अलग सी क्रियायें कभी कभी मिल जाती है । जैसे, उण्डाक्कुक के लिए बनाना । इसलिए ये क्रियायें केरल के छात्रों केलिए कोई परेशानी उत्पन्न नहीं करतीं ।

इसी तरह दोनों भाषाओं में ऐसी क्रियायें भी मिल जाती हैं जिनकी प्रेरणार्थक क्रियायें दोनों भाषाओं में नहीं है । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
जाना	पोकुक
सकना	कष़ियुक
पाना	नेटुक
पछताना	पश्चात्तपिक्कुक
सिसकना	एड्.ड्.क / एन्तुक

हिन्दी में प्रेरणार्थक क्रिया के दो रूप माने गए हैं - प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया और द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया । प्रथम प्रेरणार्थक तो बहुधा सकर्मक क्रिया का ही रूप होता है । अतः यथार्थ प्रेरणार्थक तो द्वितीय प्रेरणार्थक ही होता है । जैसे,

सामान्य रूप	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
सुनना	सुनाना	सुनवाना
चलना	चलाना	चलवाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
गिरना	गिराना	गिरवाना

यद्यपि मलयालम के वैयाकरणों ने " प्रयोजक कृति " का विभाजन नहीं किया है, फिर भी मलयालम में कभी कभी दो प्रकार की " प्रयोजक कृतियाँ " मिल जाती हैं ।

जैसे,

सामान्य रूप	प्रथम	द्वितीय
करयुक § रोना §	करयिक्कुक	करयिप्पिक्कुक

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया प्रेरक कर्ता द्वारा की जाती है जबकि द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया प्रेरक कर्ता की प्रेरणा से प्रयोज्य कर्ता द्वारा की जाती है । जैसे,

1. अध्यापक विद्यार्थियों को पाठ पढ़ाता है ।
   अध्यापकन् विद्यार्थिकळे पाठम् पठिप्पिक्कुन्नु । } प्रथम

2. अध्यापक विद्यार्थियों से पाठ पढ़वाता है ।
   अध्यापकन् विद्यार्थिकळे कोण्डु पाठम् वायिप्पिक्कुन्नु । } द्वितीय

यहाँ ध्यान देने से पता चलता है कि प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया में प्रयोजक कर्ता का प्रयोग कर्म कारक में तथा द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया में प्रयोजक कर्ता का प्रयोग करण कारक में हुआ है जबकि प्रेरक कर्ता दोनों में कर्ता कारक में ही प्रयुक्त हुआ है । दो प्रकार के प्रेरणार्थक क्रियायें अक्सर केरल के छात्रों केलिए समस्यायें उत्पन्न करती हैं । मलयालम में इस तरह का विभाजन न होने के कारण वे द्वितीय के स्थान पर कभी कभी प्रथम का प्रयोग कर बैठते हैं जोकि सचमुच गलत है । जैसे, " वे सेवक से अंग्रेज़ को अंग्रेज़ी में तथा मुसलमानों को फारसी में पत्र लिखाते थे । " यहाँ प्रयोज्य कर्ता § सेवक § का प्रयोग करण कारक में हुआ है । इसलिए क्रिया द्वितीय प्रेरणार्थ में होनी चाहिए । सही वाक्य होना चाहिए - " वे सेवक से अंग्रेज़ों को अंग्रेज़ी में तथा मुसलमानों में फारसी में पत्र लिखवाते थे ।

इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. राजा ने सेवकों से द्वार खुलाता है । (अशुद्ध)
   राजा ने सेवकों से द्वार खुलवाता है । (शुद्ध)

2. आजकल की माँ अपने बच्चे को नौकरानियों से दूध पिलाती है । (अशुद्ध)

   आजकल की माँ अपने बच्चों को नौकरानियों से दूध पिलवाती है । (शुद्ध)

मलयालम में क्रिया के सामान्य धातु में 'इक्क' या 'त्तु' जोड़ने से प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया बनती है और 'पिक्क' या 'इत्ति' जोड़ने से द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया । जैसे,

सामान्य	प्रथम	द्वितीय
इरिक्कुक (बैठ)	इरुत्तुक (बिठाना)	इरुत्तिप्पिक्कुक (बिठवाना)
परयुक (कह)	परयिक्कुक (कहलाना)	परयिप्पिक्कुक (कहलवाना)

लेकिन मलयालम में कुछ धातुओं का एक ही प्रेरणार्थक रूप है जिसे बनाने के लिए " पिक्कुक " जोड़ता है । जैसे, केळ् (सुन) से केळ्प्पिक्कुक (सुनाना) ।

हिन्दी की पहली प्रेरणार्थक धातु में 'आ' और दूसरी में 'व' जुड़ जाता है । जैसे,

सामान्य रूप	धातु	प्रथम	द्वितीय
गिरना	गिर	गिराना	गिरवाना
चलना	चल	चलाना	चलवाना

धातु के बीच में यदि दीर्घ स्वर होता है तो वह ह्रस्व हो जाता है । जैसे,

धातु	प्रथम	द्वितीय
जाग	जगाना	जगवाना
नाच	नचाना	नचवाना

मलयालम में इस तरह के परिवर्तन न होने के कारण केरल के छात्र प्रथम रूप तथा दूसरे रूप में धातु के बीच में आने वाले दीर्घ स्वर को ह्रस्व किए बिना ही प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक बनाते हैं । जैसे, " जगाना " के स्थान पर जागाना तथा " नचाना " के स्थान पर नाचवाना । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

अशुद्ध	शुद्ध
जागवाना	जगवाना
नाचवाना	नचवाना
गालना	गलाना
चाखवाना	चखवाना

धातु के बीच में " ए " और " ऐ " हो तो इ और ओ तथा औ हो तो उ हो जाता है । जैसे,

क्रिया धातु	प्रथम	द्वितीय
बैठ	बिठाना	बिठवाना
खोद	खुदाना	खुदवाना ।

मलयालम में इस तरह का विशेष परिवर्तन न होने के कारण केरल के छात्र धातु के साथ सीधे आ या व जोड़ते हैं । इ या उ

करके आ या वा जोड़ते नहीं है । जैसे, " बिठाना " के स्थान पर बैठाना, " खुदवाना " के स्थान पर खोदवाना । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

अशुद्ध	शुद्ध
बैठवाना	बिठवाना
खोदाना	खुदवाना
घुँटाना	घोटना
घुलाना	घोलना
ठुकनाना	ठोकना

धातु के अन्त में यदि दीर्घ स्वर हो तो उसे ह्रस्व करके प्रायः ला जोड़ा जाता है । जैसे,

क्रियाधातु	प्रथम	द्वितीय
पी	पिलाना	पिलवाना
जी	जिलाना	जिलवाना

विशेष परिवर्तन मलयालम में न होने के कारण वे ह्रस्व किये बिना ही ला जोड़ते हैं । जैसे, पिलाने के स्थान पर पीलाना, जिलाने के स्थान पर जीलाना । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

अशुद्ध	शुद्ध
पीलवाना	पिलवाना
जीलवाना	जिलवाना
सीलवाना	सिलवाना
छीजाना	छिजाना
जीमवाना	जिमवाना

हिन्दी में सामान्यत: प्रेरक कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार प्रेरणार्थक क्रिया में परिवर्तन होता है । प्रेरक कर्ता पुल्लिंग है तो प्रेरणार्थक क्रिया भी पुल्लिंग में तथा स्त्रीलिंग है तो स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होती है । मलयालम में इस तरह का परिवर्तन नहीं है । जैसे,

1. अध्यापक छात्रों को पढ़ाता है । (हिन्दी)
   अध्यापकन् विद्यार्थिकळे पठिप्पिक्कुन्नु । (मलयालम)
2. अध्यापिका छात्रों को पढ़ाती हैं । (हिन्दी)
   अध्यापिका विद्यार्थिकळे पठिप्पिक्कुन्नु । (मलयालम)

मलयालम की प्रेरणार्थक क्रिया में कोई परिवर्तन न होने के कारण केरल के छात्र हिन्दी में भी बहुवचन क्रिया का प्रयोग एकवचन में ही करते हैं । जैसे, " वे आज मुख पर कफन डालकर मुख छिपाता है । " यहाँ प्रेरक कर्ता बहुवचन में है । मलयालम के प्रभाव के कारण प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग एकवचन में किया गया है जोकि सचमुच गलत है । सही वाक्य है - " वे आज मुख पर कफन डालकर मुख छिपाते हैं । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. वे ऐसी शोभा दिखाता है मानो पर्वत पर लाल छटा छा रही है । (अशुद्ध)
   वे ऐसी शोभा दिखाते हैं मानों पर्वत पर लाल छटा छा रही है । (शुद्ध)
2. आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक भावना से ओतप्रोत होकर लोग होली का आनन्द उठाता है । (अशुद्ध)
   आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक भावना से ओतप्रोत होकर लोग होली का आनन्द उठाते हैं । (शुद्ध)

इसी तरह वे स्त्रीलिंग के स्थान पर पुल्लिंग का ही प्रयोग करते हैं । जैसे, " प्रेमिका अपनी प्रियतम को समझाता है । " यहाँ कर्ता ﴾ प्रेमिका ﴿ स्त्रीलिंग है, इसलिए क्रिया भी स्त्रीलिंग में होनी चाहिए । सही वाक्य हैं - " प्रेमिका अपने प्रियतम को समझाती है । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. जीभ ही अनेक तरह के व्यापारों को चलाता है ।
   ﴾ अशुद्ध ﴿
   जीभ ही अनेक तरह के व्यापारों को चलाती है ।
   ﴾ शुद्ध ﴿

2. यह शरद की चाँदनी अच्छी तरह सब जगह फैली है,
   कृष्ण के किरीट पर भी यह अपूर्व शोभा दिखाता है ।
   ﴾ अशुद्ध ﴿
   यह शरद की चाँदनी अच्छी तरह सब जगह फैली है,
   कृष्ण के किरीट पर भी यह अपूर्व शोभा दिखाती है ।
   ﴾ शुद्ध ﴿

कर्ता के साथ ने प्रत्यय आने से प्रेरणार्थक क्रियायें कर्म के अनुसार बदलती है । मलयालम में इस तरह के बदलाव न होने के कारण वे हिन्दी में भी इसका प्रयोग पुल्लिंग में करते हैं । जैसे, " उसने स्त्रियों में पुनर्विवाह निषेध कर समाज में वेश्यावृत्ति फैलाया । " यहाँ कर्म ﴾ वेश्यावृत्ति ﴿ स्त्रीलिंग है । इसलिए क्रिया भी स्त्रीलिंग में होनी चाहिए । सही वाक्य इस प्रकार है - " उसने स्त्रियों में पुनर्विवाह निषेध कर समाज में वेश्यावृत्ति फैलायी । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. कबीर ने वर्णाश्रम धर्म के अवहेलना किया है और जाति - पाँति के विरुद्ध आवाज़ उठाया । ﴾ अशुद्ध ﴿

कबीर ने वर्णाश्रम धर्म की अवहेलना की और जाति - पाँति के विरुद्ध आवाज़ उठायी । [शुद्ध]

2. ऊर्मिला चिर उपेक्षिता है जिस पर न तो वाल्मीकि ने और न ही तुलसी दास ने कलम उठाया है । [अशुद्ध]

   ऊर्मिला चिर उपेक्षित है जिस पर न तो वाल्मीकि ने और न ही तुलसीदास ने कलम उठायी है । [शुद्ध]

हिन्दी में कर्म के साथ को प्रत्यय आने से प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग पुल्लिंग एकवचन में किया जाता है । मलयालम में इस तरह का खास प्रयोग न होने के कारण वे इसका प्रयोग कभी कभी कर्म के लिंग और वचन के अनुसार करते हैं । जैसे, " यमुना जल ने रासलीला में मग्न कृष्ण के किशोर की कान्ती को दिखायी है । यहाँ कर्म [कान्ती] स्त्रीलिंग है, लेकिन इसके साथ को प्रत्यय आया है । इसलिए क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होनी चाहिए । सही वाक्य इस प्रकार है - " यमुना जल ने रास लीला में मग्न कृष्ण के किशोर की कान्ति को दिखाया है । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. मर्यादा विहीन एवं पाप परायण समाज के सामने श्रद्धा भक्तिपूरित काव्य की रचना करके तुलसी ने समाज को पतन के गर्त में गिरने से बचाये हैं । [अशुद्ध]

   मर्यादा विहीन एवं पाप परायण समाज के सामने श्रद्धा भक्तिपूरित काव्य की रचना करके तुलसी ने समाज को पतन के गर्त में गिरने से बचाया है । [शुद्ध]

2. ये कतारे ऐसी दीखती है मानों यमुना नदी ने अपने अनेक हाथों से प्रियतम को बुलायी है । [अशुद्ध]

वे कतारें ऐसी दीखती हैं मानों यमुना नदी ने अपने
अनेक हाथों से प्रियतम को बुलाया है । ﴾ शुद्ध ﴿

कभी कभी केरल के छात्र प्रेरणार्थक क्रिया के स्थान पर सरल क्रिया का भी प्रयोग अनजाने करते हैं । जैसे,

1. तीसरे प्रकार के पुस्तकालय राष्ट्रीय पुस्तकालय कहते हैं । ﴾ अशुद्ध ﴿
   तीसरे प्रकार के पुस्तकालय राष्ट्रीय पुस्तकालय कहलाते हैं । ﴾ शुद्ध ﴿

2. इस शाखा के कवि सूफी कहते हैं । ﴾ अशुद्ध ﴿
   इस शाखा के कवि सूफी कहलाते हैं । ﴾ शुद्ध ﴿

3. वे अपने पति के कार्यों में बराबर हिस्सा लेती थीं और इसी कारण अर्धाङ्गिनी कहती थी । ﴾ अशुद्ध ﴿
   वे अपने पति के कार्यों में बराबर हिस्सा लेती थीं और इसी कारण अर्धाङ्गिनी कहलाती थीं । ﴾ शुद्ध ﴿

4. सभ्यता के अंतर में प्रवाहित होने वाली धारा संस्कृति कहती है । ﴾ अशुद्ध ﴿
   सभ्यता के अंतर में प्रवाहित होने वाली धारा संस्कृति कहलाती है । ﴾ शुद्ध ﴿

संयुक्त क्रिया और उससे सम्बन्धित समस्यायें :-

किसी विशेष अर्थ को प्रकट करने के लिए जब दो या अधिक क्रियायें मिलकर किसी एक पूर्ण क्रिया का निर्माण करती हैं तो उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं । जैसे,

नरेश परीक्षा दे चुका है ।

पानी बरसने लगा ।

तुम पुस्तक ले जा सकते हो ।

इन वाक्यों में " दे चुका है ", " बरसने लगा ", तथा " ले जा सकते हो " संयुक्त क्रियायें हैं । क्योंकि वे " दे + चुका ", " बरसने + लगा " तथा " ले + जा + सकते + हो " आदि एक से अधिक धातुओं से बनी है । इन क्रियाओं में पहली क्रिया मुख्य और दूसरी गौण (सहायक) होती है । गौण क्रिया कभी कभी अपना अर्थ साथ रखकर भी मुख्य क्रिया से मिलकर उसके अर्थ में कुछ विशेषता उत्पन्न करती है । कामता प्रसाद गुरु ने इसकी परिभाषा यों दी है - " धातुओं के कुछ विशेष कृदंतों के आगे कोई कोई क्रियायें जोड़ने से जो क्रियायें बनती है, उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं । " [1]

मलयालम में भी संयुक्त क्रियायें हैं । जैसे, भक्षिच्चु तीर्क्कुक, पठिच्चु ऴयिक्कुक आदि । इसके दो भेद हैं - मुट्टुविना और पट्टुविना । वाक्य में प्रयुक्त मुख्य क्रिया को मुट्टुविना कहते हैं । जैसे, भक्षिच्चु तीर्क्कुक में तीर्क्कुक मुट्टुविना है और भक्षिच्चु पट्टुविना है । केरल पाणिनी के अनुसार " वाक्य में दूसरे शब्दों से अन्वय करते समय दूसरे शब्दों के अधीन न होने वाली मुख्य क्रिया मुट्टुविना है और शब्दों के अधीन होनेवाली गौण कृति पट्टुविना है । " [2] पट्टुविना के दो भेद हैं - पेरच्चम और विनयच्चम । संज्ञा की विशेषता बतानेवाली पट्टुविना पेरच्चम् हैं और कृति या क्रिया की विशेषता बतानेवाली पट्टुविना विनयेच्चम् है । [3]

---

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु : पृ. 263
2. केरलपाणिनीयम् केरलपाणिनी पृ. 144
3. वही पृ. 144

जैसे,

पेरच्चम के उदाहरण

मलयालम	हिन्दी
परञ कार्यम्	कही,हुई बात
कोटुत्त वस्तु	दी हुई वस्तु
करयुन्न बालन्	रोनेवाला बालक

इससे स्पष्ट है कि हिन्दी में संज्ञा के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया में परिवर्तन होता है । चूँकि मलयालम में इस तरह का परिवर्तन नहीं है, इसलिए केरल के छात्र कभी कभी हिन्दी में भी क्रिया का प्रयोग पुल्लिंग एकवचन में ही करते हैं जो सचमुच गलत है । जैसे, " सूरदास ने आचार्यों द्वारा गिनाया गया भावों और अनुभवों में ही बँधकर महाकाव्य की रचना नहीं की थी । " यहाँ भावों और अनुभवों बहुवचन है । इसलिए इसके पहले " गिनाए गए " आना चाहिए । सही वाक्य इस प्रकार है - " सूरदास ने आचार्यों द्वारा गिनाए गए भावों और अनुभवों में ही बँधकर महाकाव्य की रचना नहीं की थी । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. फलतः आगे आनेवाला कवियों के लिए शेष कुछ भी नहीं बचा है । { अशुद्ध }

   फलतः आगे आनेवाले कवियों के लिए शेष कुछ भी नहीं बचा है । { शुद्ध }

2. अब तो मेरे पास बीता हुआ पिछली यादें ही संपत्ति बन कर रह गयी । { अशुद्ध }

अब तो मेरे पास बीती हुई पिछली यादें ही संपत्ति बनकर रह गयी । ‡ शुद्ध ‡

<u>विनयेच्चम् के उदाहरण</u>

पठिच्चु जयिच्चु - पढ़ते हुए जीता ।
पर केट्टु - कहते हुए सुना ।

इससे संबन्धित समस्याओं का विश्लेषण आगे कृदंतों से संबन्धित समस्याओं के अन्तर्गत किया जा रहा है ।

<u>संयुक्त क्रियाओं के प्रकार और उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

संयुक्त क्रियायें तथा उससे संबन्धित समस्याओं का विश्लेषण आगे किया जा रहा है ।

1. <u>आरंभबोधक क्रिया और उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

हिन्दी में मुख्य क्रिया के सामान्य रूप के " ना " को ने करके आगे " लगना " जोड़ देने से आरंभबोधक क्रिया बन जाती है । जैसे,

सूरज की किरणें फैलने लगीं ।

मलयालम में मुख्य क्रिया के सामान्य रूप के अन्त में आनेवाले " क " को छोड़कर उसके आगे तुडङ्डुक जोड़ देते हैं । जैसे,

परक्कुक - परक्कुवान तुडङ्ङि. ।

हिन्दी में इसका प्रयोग अकर्मक के समान है । अर्थात् मुख्य क्रिया सकर्मक होते हुए भी कर्ता के साथ " ने " प्रत्यय नहीं जोड़ता ।

मलयालम में कर्ताकारक प्रत्यय नहीं है । जैसे,

फूल खिलने लगा । - पूवॅ् विटरान तुडङ्ङि. ।

हिन्दी के आरंभबोधक क्रियाओं में कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तन होता है । लेकिन मलयालम में इस तरह का परिवर्तन लिंग और वचन के कारण न होने के कारण केरल के छात्र क्रिया का प्रयोग एकवचन में ही करते हैं । जैसे, " इस प्रकार की गंभीर आकाशवाणी मेरे मन में सुनाई पड़ने लगा । " यहाँ कर्ता आकाशवाणी स्त्रीलिंग है । इसलिए आरंभबोधक क्रिया भी (लगा) स्त्रीलिंग में होनी चाहिए । सही वाक्य इस प्रकार है - " इस प्रकार की गंभीर आकाशवाणी मेरे मन में सुनाई पड़ने लगी । इस तरह के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. आशा के उदय होने पर जीवन की प्रेरणा होने लगा है । (अशुद्ध)

   आशा के उदय होने पर जीवन की प्रेरणा होने लगी है । (शुद्ध)

2. नवयौवनायें फैशन का अर्थ अंग-प्रदर्शन करना ही समझने लगा है । (अशुद्ध)

   नवयौवनायें फैशन का अर्थ अंग-प्रदर्शन करना ही समझने लगी हैं । (शुद्ध)

इस प्रकार वे बहुवचन के स्थान पर अक्सर एकवचन का प्रयोग करते हैं जो बिलकुल गलत है । जैसे, - " आनन्द और जलन दोनों होने लगा है । यहाँ एकवचन का प्रयोग बहुवचन के स्थान पर किया गया है जो गलत है । क्योंकि आनन्द और जलन बहुवचन कर्ता है ।

सही वाक्य है - " आनन्द और जलन दोनों होने लगे हैं । "
इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. वे अपनी प्रतिभा से साहित्य के भंडार को भरने लगा । (अशुद्ध)

   वे अपनी प्रतिभा से साहित्य के भण्डार को भरने लगे । (शुद्ध)

2. कवि की इच्छा पूरी नहीं हो पाती और उसके हृदय में वीणा से वेदना के स्वर झंकृत होने लगता है । (अशुद्ध)

   कवि की इच्छा पूरा नहीं हो पाती और उसके हृदय में वीणा से वेदना के स्वर झंकृत होने लगते हैं । (शुद्ध)

मलयालम में आरंभबोधक क्रिया का प्रयोग निषेधार्थक रूप में भी होता है । लेकिन हिन्दी में इसका प्रयोग निषेध अर्थ में नहीं होता । उदाहरण के लिए

अवन् पणि चेय्यान तुडङ्ङियिल्ला । (मलयालम)
उसने काम करना शुरू नहीं किया । (हिन्दी)

केरल के छात्र मलयालम के समान हिन्दी में भी इसका प्रयोग निषेधार्थ में करते हैं । जैसे, " पुलीस चोर के पीछे दौड़ने नहीं लगा । " इसमें नहीं का प्रयोग गलत है । सही वाक्य होना चाहिए - " पुलीस ने चोर के पीछे दौड़ने शुरू नहीं किया । "
इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. लड़के मैदान में खेलने नहीं लगे । (अशुद्ध)
   लड़कों ने मैदान में खेलना शुरू नहीं किया । (शुद्ध)

2. लड़कियाँ हिन्दी पढ़ने नहीं लगी । (अशुद्ध)
   लड़कियों ने हिन्दी पढ़ना शुरू नहीं किया । (शुद्ध)

केरल के छात्र " लगना " का प्रयोग करते समय कर्ता के साथ " ने " प्रत्यय जोड़ते हैं जो सचमुच वाँछित नहीं है । जैसे, " किसान ने खेत में काम करने लगे । यहाँ ने " का प्रयोग गलत है । सही वाक्य होना चाहिए - " किसान खेत में काम करने लगा । " इसका विश्लेषण कारक संबन्धी समस्याओं के अन्तर्गत विस्तार से किया गया है ।

हिन्दी और मलयालम की समाप्ति बोधक क्रियायें और उससे सम्बन्धित समस्यायें :-

हिन्दी में मुख्य क्रिया धातु के आगे " चुकना " जोड़ने से समाप्तिबोधक क्रियाएँ बनती हैं । मलयालम में मुख्य क्रिया के भूतकालिक रूप के आगे कषिञु या तीरुक जोड़ते हैं । जैसे,

मैं लिख चुका । (हिन्दी)
ञान वायिच्चु कषिञु । (मलयालम)

समाप्तिबोधक सहायक क्रिया का प्रयोग किसी कार्य की समाप्ति सूचित करने के लिए किया जाता है । हिन्दी में "चुकना" का प्रयोग करते समय कर्ता के साथ 'ने' और 'को' प्रत्यय नहीं जुड़ता । मलयालम में भी प्रत्यय का प्रयोग नहीं है । चुकना का प्रयोग करते समय केरल के छात्र कर्ता के साथ " ने " प्रत्यय जोड़कर प्रयोग करते हैं जो बिल्कुल वाँछित नहीं है । जैसे, " कमला ने गीत गा चुकी है । " इस तरह के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. मैं ने यह उपन्यास पढ़ चुका । (अशुद्ध)

मैं यह उपन्यास पढ़ चुका । § शुद्ध §

2. राधा और अंबिका ने दौड़ चुकीं । § अशुद्ध §
राधा और अंबिका दौड़ चुकीं । § शुद्ध §

मलयालम में लिंग और वचन के अनुसार क्रिया में कोई बदलाव न होने के कारण केरल के छात्र अक्सर बहुवचन और स्त्रीलिंग क्रिया रूप के स्थान पर एकवचन पुल्लिंग का ही प्रयोग करते हैं । जैसे, " मगर हम जीवन के इस अमर सत्य को, अमर सन्देश को भूल चुका है । " कर्ता § हम § बहुवचन में होने के कारण यहाँ " चुका " के बदले " चुके " का प्रयोग अपेक्षित है । सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए - " मगर हम जीवन के इस अमर सत्य को, अमर सन्देश को भूल चुके हैं । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. मेढ़क ने कहा कि मछुओं की सारी बातें हम सुन ही चुका है । § अशुद्ध §
मेढ़क ने कहा कि मछुओं की सारी बातें हम सुन ही चुके हैं । § शुद्ध §

2. इतिहास में हम तीन बार विश्वासघात के शिकार हो चुका है । § अशुद्ध §
इतिहास में हम तीन बार विश्वासघात के शिकार हो चुके हैं । § शुद्ध §

यहाँ भी वे स्त्रीलिंग के स्थान पर पुल्लिंग क्रिया का ही प्रयोग अक्सर करते हैं । जैसे, " बिहारी से पूर्व संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश से होती हुई दोहा पद्धति हिन्दी तक आ चुका था और पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त कर चुका था । यहाँ " चुकी " के स्थान पर चुका का प्रयोग किया गया है जो गलत है ।

क्योंकि यहाँ कर्ता दोहा पद्धति और लोकप्रियता स्त्रीलिंग हैं। सही वाक्य इस प्रकार है - " बिहारी से पूर्व संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश से होती हुई दोहा पद्धति हिन्दी तक आ चुकी थी और पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी थी।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. ऐसी रचनाएँ गुण और मात्रा दोनों ही दृष्टियों में विपुल और महत्वपूर्ण सिद्ध किया जा चुका है।
   ﴾ अशुद्ध ﴿
   ऐसी रचनाएँ गुण और मात्रा दोनों ही दृष्टियों में विपुल और महत्वपूर्ण सिद्ध की जा चुकी है। ﴾ शुद्ध ﴿
2. बारहवीं शताब्दी में यह साहित्य की प्रमुख भाषा बन चुका था। ﴾ अशुद्ध ﴿
   बारहवीं शताब्दी में यह साहित्य की प्रमुख भाषा बन चुकी थी। ﴾ शुद्ध ﴿

<u>हिन्दी और मलयालम में शक्तिबोधक क्रियायें और उससे उत्पन्न समस्यायें :-</u>

कार्य करने की क्षमता ﴾ सामर्थ्य ﴿ सूचित करने वाली सहायक क्रिया शक्तिबोधक सहायक क्रिया हैं। मुख्य क्रिया के आगे "सकना" जोड़ने से शक्तिबोधक क्रिया बनती है। मलयालम में मुख्य क्रिया के सामान्य रूप के " उक " छोड़कर उसके आगे वान और कषियुक जोड़ते हैं। जैसे,

मैं हिन्दी बोल सकता हूँ। ﴾ हिन्दी ﴿
एनिक्कु हिन्दी संसारिक्कान कषियुम्। ﴾ मलयालम ﴿

हिन्दी में सकना का प्रयोग करते समय कर्ता के साथ " ने ", " को " आदि प्रत्यय नहीं जुड़ते हैं । मलयालम में कर्ता के साथ कर्मकारक प्रत्यय " नें ", " क्कु " आदि आते हैं । जैसे,

1. मछली पानी में तैर सकती है । {हिन्दी}
   मत्स्यत्तिनें जलत्तिल नीन्तुवान कषियुम् । {मलयालम}

2. कुछ कीडे उड सकते हैं । {हिन्दी}
   चिल कीड्ड.ळक्कु परक्कान कषियुम् । {मलयालम}

मलयालम की प्रवृत्ति के कारण सक के प्रयोग करते समय केरल के छात्र " को " का प्रयोग कर्ता के साथ करके गलतियाँ कर बैठते हैं । जैसे, " षीला को हिन्दी पढ़ सकता है । " इसके कर्ता के साथ को प्रत्यय आया है जो वांछित नहीं है । सही वाक्य होना चाहिए - " षीला हिन्दी पढ़ सकती है । " इसका विस्तार से विश्लेषण कारक संबन्धी समस्याओं के अन्तर्गत किया गया है ।

अनुमति के अर्थ में भी सक का प्रयोग किया जाता है । जैसे,

अब तुम जा सकते हो । {हिन्दी}
इनि निड्.ळक्कु पोकाम् । {मलयालम}

यहाँ मलयालम में कर्म के साथ प्रत्यय आया है जबकि हिन्दी में नहीं है । इसी भिन्नता के कारण कर्म के साथ " को " प्रत्यय जोड़ने की प्रवृत्ति भी अक्सर पाई जाती है । जैसे, " मैं अन्दर को आ सकता हूँ । " यहाँ मलयालम के प्रभाव के कारण अन्दर के बाद को प्रत्यय जोड़ा हैं जो गलत है । सही वाक्य होना चाहिए - " मैं अन्दर आ सकता हूँ । " इसका भी विस्तार से विश्लेषण कारक के सन्दर्भ में किया गया है ।

" सकना " के सन्दर्भ में भी वे पुल्लिंग बहुवचन या स्त्रीलिंग क्रिया रूप के स्थान पर पुल्लिंग एकवचन का प्रयोग करते हैं । जैसे, " वे सब घर के अन्धकार को मिटा नहीं सकता । यहाँ कर्ता बहुवचन में है । इसलिए पुल्लिंग क्रिया (सकता) के स्थान पर बहुवचन क्रिया (सकते) का प्रयोग होना चाहिए । सही वाक्य इस प्रकार हैं - " वे सब घर के अन्धकार को मिटा नहीं सकते । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

<u>पुल्लिंग बहुवचन के उदाहरण</u> :-

1. पापी, अन्यायी और अत्याचारी रावण महाशक्ति को प्राप्त कर सका तो आप ऐसा क्यों नहीं कर सकता ? (अशुद्ध)
   पापी, अन्यायी और अत्याचारी रावण महाशक्ति को प्राप्त कर सका तो आप ऐसा क्यों नहीं कर सकते ? (शुद्ध)
2. कवि के सम्मुख एक ही समस्या हो तो वे विषय चयन में एकरूपता स्थापित कर सकता है । (अशुद्ध)
   कवि के सम्मुख एक ही समस्या हो तो वे विषय चयन में एकरूपता स्थापित कर सकते हैं । (शुद्ध)

<u>स्त्रीलिंग के उदाहरण</u> :-

1. हे सखी ! अपने पति के आगमन के बाद ही मैं तुझे छोड़ सकूँगा । (अशुद्ध)

   हे सखी ! अपने पति के आगमन के बाद ही मैं तुझे छोड़ सकूँगी । (शुद्ध)

1. नायक-नायिका के माध्यम से जितनी भी यथार्थ और संभावित घटनाएँ घट सकता है, सब पर कवि की सूक्ष्म दृष्टि पहूँची है । ﴾ अशुद्ध ﴿

   नायक-नायिका के माध्यम से जितनी भी यथार्थ और संभावित घटनाएँ घट सकती है, सब पर कवि की सूक्ष्म दृष्टि पहूँची है । ﴾ शुद्ध ﴿

2. व्यर्थ का काम करने से जान भी जा सकता है । ﴾ अशुद्ध

   व्यर्थ का काम करने से जान भी जा सकती है । ﴾ शुद्ध ﴿

<u>हिन्दी और मलयालम में विवशताबोधक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

हिन्दी में मुख्य क्रिया के सामान्य रूप के साथ कर्म के लिंग और वचन के अनुसार " ना ", " ने ", और " नी " करके आगे " पड़ना " जोड़ने से विवशताबोधक क्रिया बनती है । मलयालम में मुख्य क्रिया के सामान्य रूप के अन्त के " उक " छोड़कर उसे एकारान्त बना देता है और उसके बाद उसके साथ " न्टि " जोड़कर आगे " वरुक " जोड़ देता है । जैसे,

1. हमें होटल में ठहरना पड़ा । ﴾ हिन्दी ﴿

   ञङ्ङळ्क्कु होट्टलिल तङ्डे. न्टिवन्नु । ﴾ मलयालम ﴿

2. पिताजी को तृशूर जाना पड़ा । ﴾ हिन्दी ﴿

   अच्छन् तृशूरिल पोकेन्टिवन्नु । ﴾ मलयालम ﴿

" पड़ना " का प्रयोग करते समय कर्ता के साथ कर्मकारक प्रत्यय जोड़ना अनिवार्य है । इसका प्रयोग करते समय क्रिया कर्म के लिंग. वचन के अनुसार परिवर्तित होती है । लेकिन मलयालम में इस प्रकार

का परिवर्तन नहीं होता । जैसे,

मुझे नयी साड़ी खरीदनी पड़ी । ॥ हिन्दी ॥

एनिक्कु पुतिय सारी वाङ्. डेन्टिवन्नु । ॥ मलयालम ॥

इस भिन्नता के कारण केरल के छात्र पड़ना का प्रयोग करते समय क्रिया को कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार बदलते हैं । जैसे, " उस समय वे थक कर सो जाने के बाद जागकर शीतल जल से मुँह धोते हुए दिखाई पड़ता था । " इसमें क्रिया का प्रयोग पुल्लिंग में किया गया है जो गलत है । सही वाक्य होना चाहिए - " उस समय वे थक कर सो जाने के बाद जागकर शीतल जल से मुँह धोते हुए दिखाई पड़ते थे । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. फलतः उसका प्रभाव तत्कालीन कवियों पर पड़ा और उनके हृदय से कविता फूट पड़ा । ॥ अशुद्ध ॥

   फलतः उसका प्रभाव तत्कालीन कवियों पर पड़ा और उनके हृदय से कविता फूट पड़ी । ॥ शुद्ध ॥

2. मनु कह रहे हैं कि फूलों से लदे हुए लता मंडपों में होने वाले आलिंगनों के दृश्य भी अब कहीं नहीं दीख पड़ता है । ॥ अशुद्ध ॥

   मनु कह रहे हैं कि फूलों से लदे हुए लता मंडपों में होने वाले आलिंगनों के दृश्य भी कहीं नहीं दीख पड़ते हैं । ॥ शुद्ध ॥

हिन्दी और मलयालम में नित्यताबोधक क्रियायें और उससे सम्बन्धित समस्यायें :-

नित्यताबोधक क्रियायें कार्य की निरंतरता सूचित करने के लिए प्रयुक्त की जाती हैं । हिन्दी में मुख्य क्रिया के सामान्य रूप के आगे " करना " जोड़ने से नित्यताबोधक क्रिया बनती है । मलयालम में मुख्य क्रिया के सामान्य रूप के आगे " पतिवाण् " जोड़ते हैं । जैसे,

हम रोज़ सबेरे चाय पिया करते हैं । ﴾ हिन्दी ﴿
ञङ्ङळ् दिवसवुम राविले चाय कुटिक्कुक पतिवाण् ।
﴾ मलयालम ﴿

नित्यताबोधक क्रिया वर्तमान, भूत और भविष्य में भी आती है । जैसे,

वर्तमानकाल में

मैं रोज़ नहाया करता हूँ । ﴾ हिन्दी ﴿
ञान् दिवसेन कुळिक्कुक पतिवाण् । ﴾ मलयालम ﴿

भविष्यत्काल में

मैं पाँच बजे उठा करूँगा । ﴾ हिन्दी ﴿
ञान् पतिवायी अञ्चु मणिक्कु एष़ुन्नेल्क्कुम् । ﴾ मलयालम ﴿

भूतकाल में

वे बस से स्कूल जाया करते थे । ﴾ हिन्दी ﴿
अवर बस्सिल स्कूलिल पोकुक पतिवायिरुन्नु । ﴾ मलयालम ﴿

मलयालम में क्रिया रूप में लिंग और वचन में कोई परिवर्तन न होने के कारण केरल के छात्र पुल्लिंग एकवचन में इसका प्रयोग करके गलतियाँ कर बैठते हैं । जैसे, " बहुत सारे लोग इस वन में घूमा करता है । " यहाँ कर्ता (लोग) बहुवचन में होने के कारण क्रिया भी बहुवचन में होनी चाहिए । सही वाक्य होना चाहिए - " बहुत सारे लोग इस वन में घूमा करते थे । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. हम बचपन में बकरी का दूध पिया करता था ।

   (अशुद्ध)

   हम बचपन में बकरी का दूध पिया करते थे ।

   (शुद्ध)

2. बहनें इसी दिन राखी खरीदने के लिए बाज़ार जाया करती है । (अशुद्ध)

   बहनें इसी दिन राखी खरीदने के लिए बाज़ार जाया करती हैं । (शुद्ध)

<u>हिन्दी और मलयालम में इच्छाबोधक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

हिन्दी में मुख्य क्रिया के सामान्य रूप के आगे " चाहना " जोड़ने से इच्छाबोधक क्रिया बनती हैं । मलयालम में मुख्य क्रिया के सामान्य रूप के " उक " छोड़कर उसके साथ आन जोड़ता है और उसके आगे " आग्रहिक्कुक " रखते हैं । जैसे,

मैं सिनेमा देखना चाहता हूँ । (हिन्दी)

ञान् सिनेमा काणान् आग्रहिक्कुन्नु । (मलयालम)

हिन्दी में इसका प्रयोग सकर्मक क्रिया के रूप में होता है । इसलिए इसका प्रयोग करते समय भूतकाल में कर्ता के साथ " ने " जोड़ना अनिवार्य है । " ने " प्रत्यय जोड़ते समय क्रिया कर्म के लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तित होती है । कर्म पुल्लिंग एकवचन है तो क्रियाधातु के साथ " ने ", स्त्रीलिंग है तो " नी " और पुल्लिंग बहुवचन है तो " ने " जोड़ते है । मलयालम की क्रियाओं में कोई परिवर्तन नहीं होता । जैसे,

1. प्रवीण ने सिनेमा देखना चाहा । ﴾ हिन्दी ﴿
   प्रवीण सिनेमा काणान् आग्रहिच्चु । ﴾ मलयालम ﴿
2. मैं ने दो फल खाने चाहे । ﴾ हिन्दी ﴿
   आन् रण्डु पषम् तिन्नान आग्रहिच्चु । ﴾ मलयालम ﴿
3. हमने हिन्दी पढ़नी चाही । ﴾ हिन्दी ﴿
   अङ्ङळ् हिन्दी पठिक्कान् आग्रहिच्चु । ﴾ मलयालम ﴿

केरल के छात्र मलयालम के प्रभाव के कारण ने के प्रयोग के साथ क्रिया का प्रयोग अक्सर पुल्लिंग के रूप में करते हैं । जैसे, " श्रद्धा मनु की चिरपुष्ट भावना ग्रंथियों को तोड़कर उनका विकास करना चाहता है । यहाँ पुल्लिंग क्रिया रूप का प्रयोग किया गया है जोकि सचमुच गलत है । क्योंकि कर्ता ﴾ श्रद्धा ﴿ स्त्रीलिंग होने के कारण क्रिया भी स्त्रीलिंग में होनी चाहिए । सही वाक्य है - " श्रद्धा मनु की चिरपुष्ट भावना ग्रंथियों को तोड़कर उनका विकास करना चाहती है । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. उन समस्याओं को वे इस भाव भूमि में अभिव्यक्त करना चाहता है । ﴾ अशुद्ध ﴿

   उन समस्याओं को वे इस भाव भूमि में अभिव्यक्त करना चाहती है । ﴾ शुद्ध ﴿

2. इस प्रकार कवि के सम्मुख अनेक ज्वलंत समस्यायें है और उन समस्याओं को वे नव भूमि में अभिव्यक्त करना चाहता है । ﴾ अशुद्ध ﴿

इस प्रकार कवि के सम्मुख अनेक ज्वलंत समस्यायें है और उन समस्याओं को वे अभिव्यक्त करना चाहते हैं । ﴾ शुद्ध ﴿

आवश्यकताबोधक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें :-

हिन्दी में मुख्य क्रिया के सामान्य रूप के आगे " चाहिए " जोड़कर आवश्यकताबोधक क्रिया बनती है । मलयालम में सामान्य क्रिया रूप से " उक " अलग करके ﴾ छोड़कर ﴿ उसके स्थान पर " णम् " जोड़ते हैं । जैसे,

मुझे क्या करना चाहिए । ﴾ हिन्दी ﴿
ञान् एन्तु चेय्यणम् । ﴾ मलयालम ﴿

" चाहिए " का प्रयोग करते समय हिन्दी में कर्ता के साथ को जोड़ना अनिवार्य है । लेकिन मलयालम में कोई प्रत्यय का प्रयोग इसके लिए नहीं होता । जैसे,

तुम्हें अभी सोना चाहिए । ﴾ हिन्दी ﴿
निङ्ङळ इप्पोल उरङ्ङणम् । ﴾ मलयालम ﴿

हिन्दी वाक्य के कर्ता के साथ " को " जोड़ा है । मलयालम में कर्ता निङ्ङळ् के साथ कोई प्रत्यय नहीं जोड़ा है । उसी प्रकार " चाहिए " का प्रयोग करते समय हिन्दी में क्रियाधातु के लिंग, वचन के अनुसार ना, ने, नी जोड़ता है । यदि कर्म पुल्लिंग एकवचन है तो क्रियाधातु के साथ ने जोड़ता है । यदि कर्म पुल्लिंग बहुवचन

है तो ने और यदि स्त्रीलिंग है तो नी प्रत्यय जोड़ता है । लेकिन मलयालम में इस प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं है । जैसे,

1. हम को हिन्दी पढ़नी चाहिए । ﴾ हिन्दी ﴿
   नाम् हिन्दी पठिक्कणम् । ﴾ मलयालम ﴿
2. उसे दो पाठ पढ़ने चाहिए । ﴾ हिन्दी ﴿
   अवँन रण्डु पाठङ्ङळ् पठिक्कणम् । ﴾ मलयालम ﴿

इन भिन्नताओं के कारण केरल के छात्र हिन्दी में " चाहिए " का प्रयोग करते समय " को " छोड़ते हैं और क्रिया में कोई परिवर्तन नहीं करते । जैसे, " सबसे पहले जनमानस में भारतीयता की भावना भरनेवाली सांस्कृतिक शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दिलाने की अविलम्ब व्यवस्था करना चाहिए । इसमें " को " को छोड़ दिया है और कर्म के अनुसार क्रिया में कोई परिवर्तन भी नहीं किया है । इसलिए सही वाक्य होना चाहिए - " हमें सबसे पहले जनमानस में भारतीयता की भावना भरनेवाली सांस्कृतिक शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दिलाने की अविलम्ब व्यवस्था करनी चाहिए । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. वैसे तो यह पद्धति कवि की कठोर कसौटी है, क्योंकि इसमें सफलता प्राप्त करने के लिए कवि में गागर में सागर भरने की क्षमता होना चाहिए । ﴾ अशुद्ध ﴿
   वैसे तो यह पद्धति कवि की कठोर कसौटी है, क्योंकि इसमें सफलता प्राप्त करने के लिए कवि में गागर में सागर भरने की क्षमता होनी चाहिए । (शुद्ध)
2. यदि हमें पर्यावरण को सुरक्षित रखना है तो जंगल के पेड़ नहीं काटना चाहिए । ﴾ अशुद्ध ﴿

यदि हमें पर्यावरण को सुरक्षित रखना है तो जंगल के पेड़ नहीं काटने चाहिए । § शुद्ध §

" जाना " क्रिया के खास प्रयोग एवं उससे संबन्धित समस्यायें :-

हिन्दी में मुख्य क्रिया के धातु के आगे " जाना " के उचित रूप का प्रयोग होता है । मलयालम में मुख्य क्रिया के सामान्य भूतकालिक रूप के आगे " पोकुक " रखा जाता है । जैसे,

बच्चा सो गया । § हिन्दी §

कुट्टि उरङ्ङि प्पोयि । § मलयालम §

हिन्दी में इसका प्रयोग अकर्मक क्रिया के रूप में होता है । इसलिए इसका प्रयोग करते समय कर्ता के साथ ने का प्रयोग नहीं किया जाता और क्रिया हमेशा कर्ता के अनुसार होती है । केरल के छात्र अक्सर कर्ता के साथ ने और स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग बहुवचन के स्थान पर पुल्लिंग एकवचन का ही प्रयोग करते हैं । जैसे, " उससे हारी हुई कालरात्री ने जल में विलीन हो गया । यहाँ काल रात्री स्त्रीलिंग है, इसलिए क्रिया भी स्त्रीलिंग में होनी चाहिए और कर्ता के साथ ने का प्रयोग भी अवाँछित है । सही वाक्य होना चाहिए - " उससे हारी हुई काल रात्री जल में विलीन हो गयी । इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. उनकी हालत वायु के वेग से तितर बितर होने वाले मेघों के समान हो जाता है । § अशुद्ध §

   उनकी हालत वायु के वेग से तितर बितर होने वाले मेघों के समान हो जाती है । § शुद्ध §

2. तुम्हारी क्रूरता के कारण बड़े बड़े नगर निर्जन हो जाता है । ॥ अशुद्ध ॥
   तुम्हारी क्रूरता के कारण बड़े बड़े नगर निर्जन हो जाते हैं । ॥ शुद्ध ॥

" लेना " क्रिया के खास प्रयोग और उससे संबन्धित समस्यायें :-

हिन्दी में मुख्य क्रिया के धातु के आगे लेना जोड़ना है । मलयालम में इस प्रकार का खास प्रयोग नहीं मिलता । जैसे,

प्रमोद, अपना काम कर लो । ॥ हिन्दी ॥
प्रमोद, निङ्.ळुटे जोली चेय्यू । ॥ मलयालम ॥

" लेना " का प्रयोग करते समय कर्ता के साथ ने प्रत्यय होना चाहिए तथा ने आने से क्रिया कर्म का अनुसरण करती है । केरल के छात्र " लेना " का प्रयोग करते समय मलयालम के प्रभाव के कारण हिन्दी में ने का प्रयोग नहीं करता और लेना का प्रयोग अक्सर पुल्लिंग एकवचन में ही करते हैं । जैसे, " सिपाही बन्दूक उठा लिया । " यहाँ कर्ता के साथ ने प्रत्यय नहीं जोड़ा है तथा क्रिया पुल्लिंग एकवचन में है जोकि गलत है । क्योंकि यहाँ कर्म ॥ बन्दूक ॥ स्त्रीलिंग में है । सही वाक्य होना चाहिए - " सिपाही ने बन्दूक उठा ली । इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. वे दो फल खरीद लिया । ॥ अशुद्ध ॥
   उन्होंने दो फल खरीद लिये । ॥ शुद्ध ॥

2. वे किताब पढ़ लिये । ॥ हिन्दी ॥
   उन्होंने किताब पढ़ ली । ॥ मलयालम ॥

निरंतरताबोधक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें :-

हिन्दी में जाना या रहना के पहले वर्तमानकालिक कृदंत रूप

जोड़कर निरंतरताबोधक क्रियायें बनायी जाती हैं । मलयालम में इसके लिए " कोन्टिरिक्कुक " का प्रयोग होता है । जैसे,

गाडी चलती गई । § हिन्दी §

वण्डी पोयिक्कोन्डेयिरुन्नु । § मलयालम §

कर्ता के अनुसार इस क्रियाओं में परिवर्तन होती है । केरल के छात्र यहाँ इसका प्रयोग पुल्लिंग एकवचन के रूप में करते हैं । जैसे, " वार्तालाप के समय तो एक बात दूसरी बात से अपने आप निकलता जाता है । " यहाँ बात, जोकि कर्ता है स्त्रीलिंग है, इसलिए क्रिया भी स्त्रीलिंग में होनी चाहिए । सही वाक्य हैं - " वार्तालाप के समय तो एक बात दूसरी बात से अपने आप निकलती जाती है । " इस प्रकार के एक ओर उदाहरण है :-

गाडी चलता गया और मैं स्टेशन पर देखता रह गया ।

§ अशुद्ध §

गाडी चलती गई और मैं स्टेशन पर देखता रह गया ।

§ शुद्ध §

<u>आकस्मिताबोधक क्रिया और उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

उठना, बैठना के पहले धातु रूप रखकर आकस्मिकताबोधक क्रियायें बनती हैं । मलयालम में इसके लिए खास प्रयोग नहीं मिलता । जैसे,

बच्चा बोल उठा ।

इसका प्रयोग अकर्मक क्रिया के रूप में होता है । इसका प्रयोग करते समय ने का प्रयोग कर्ता के साथ नहीं होता । कर्ता के लिंग वचन के अनुसार इस क्रिया में भी बदलाव आता है । लेकिन मलयालम में इस तरह का बदलाव नहीं है । इसलिए वे कभी कभी

कर्ता के साथ ने तथा कभी कभी स्त्रीलिंग के स्थान पर पुल्लिंग और बहुवचन के स्थान पर एकवचन का प्रयोग करके गलती कर बैठते हैं। जैसे, " उस विचित्र गर्जन को सुनकर उन्होंने आतंकित हो उठा। " यहाँ कर्ता के साथ ने का प्रयोग किया गया है तथा क्रिया पुल्लिंग एकवचन में है जो गलत है। सही वाक्य है - " उस विचित्र गर्जन को सुनकर वे आतंकित हो उठे। " इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. राजा की इच्छा समझकर आसपास के जीव-जंतु ने हटकर दूर जा बैठा। (अशुद्ध)
   राजा की इच्छा समझकर आसपास के जीव-जंतु हटकर दूर जा बैठे। (शुद्ध)
2. शंका के कारण राजा के मन में दंतिल के प्रति घृणा जाग उठा। (अशुद्ध)
   शंका के कारण राजा के मन में दंतिल के प्रति घृणा जाग उठी। (शुद्ध)

<u>नामबोधक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

" मूल धातु को छोड़कर संज्ञा तथा विशेषण के साथ क्रिया को जोड़ने से जो संयुक्त क्रिया बनती है, उन्हें नामबोधक क्रिया कहते हैं। "[1] मलयालम में इसे नामधातु क्रिया कहते हैं। मलयालम में सिर्फ संज्ञा से बनी क्रिया को नामधातु क्रिया कहते हैं।[2] जैसे,

मैं आपको क्षमा करता हूँ। (हिन्दी)
ञान् तान्कलोट क्षमिच्चिरिक्कुन्नु। (मलयालम)

---

1. सरल हिन्दी व्याकरण - तनसुखराम गुप्त - पृ. 108
2. केरलपाणनीयम् - केरलपाणिनी - पृ. 233

इस वाक्य में क्षमा संज्ञा है और करना के साथ मिलकर क्रिया पद बन गए हैं । अतः ये नामबोधक क्रियाएँ हैं। भस्म करना, दुखी होना, निराश होना आदि नामबोधक क्रियायें हैं ।

नामबोधक क्रिया के सन्दर्भ में भी केरल के छात्रों को लिंग और वचन की समस्यायें परेशान करती हैं । जैसे, " इन्होंने काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध आदि विधाओं पर सफलतापूर्वक लेखनी चलाया है । इसमें लेखनी, जोकि कर्म है, स्त्रीलिंग है । इसलिए क्रिया भी स्त्रीलिंग में होनी चाहिए । सही वाक्य है - " इन्होंने काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध आदि विधाओं पर सफलतापूर्वक लेखनी चलायी है । " इस तरह के अन्य कुछ उदाहरण हैं:-

1. प्रकृति के सामीप्य में उनके भावुक हृदय को कविता का प्रेरणा मिला । ﴾ अशुद्ध ﴿
   प्रकृति के सामीप्य में उनके भावुक हृदय हो कविता की प्रेरणा मिली । ﴾ शुद्ध ﴿
2. विद्वान होने के कारण ही उस चोर ने अपनी जान देकर उन ब्राह्मणों का रक्षा किया । ﴾ अशुद्ध ﴿
   विद्वान होने के कारण ही उस चोर ने अपनी जान देकर उन ब्राह्मणों की रक्षा की । ﴾ शुद्ध ﴿

<u>द्विरुक्त क्रिया और उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

" जब एक ही अर्थवाली या ध्वनिवाली क्रिया का प्रयोग एक साथ दो बार होता है तब उसे द्विरुक्त क्रिया कहते हैं । " [1] मलयालम में यद्यपि इस तरह का विभाजन नहीं है, फिर भी उसमें द्विरुक्त क्रियायें भी मिलती हैं ।

---

1. सरल हिन्दी व्याकरण - तनसुखराम गुप्त - पृ. 108

जैसे,

सीता चलते चलते थक गई थी । § हिन्दी §

सीता नटन्नु नटन्नु क्षीणिच्चिरुन्नु । § मलयालम §

इसमें चलते / चलते, नटन्नु नटन्नु क्रिया की आधिक्य का ज्ञान करा रही है ।

केरल के छात्र द्विरुक्त क्रिया का प्रयोग करते समय एकार के बदले अकार का ही प्रयोग करते हैं । जैसे, देखते देखते के स्थान पर देखता-देखता । उदाहरण के लिए " एक बार घटे को देखता देखता वह कल्पना करने लगा । यहाँ देखते देखता का प्रयोग सही है । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. होता यह था कि बात करता करता भी सन्यासी ताम्रचूड रात को मुझे जगाने में लगा रहता था । §अशुद्ध §

   होता यह था कि बात करते करते भी सन्यासी ताम्रचूड़ रात को मुझे जगाने में लगा रहता था । § शुद्ध §

2. केकड़ ने बगुले की पीठ पर बैठा बैठा ही चट्टान पर हड्डियाँ पडी देखी । § अशुद्ध §

   केकड़ ने बगुले की पीठ पर बैठे बैठे ही चट्टान पर हड्डियाँ पड़ी देखी । § शुद्ध §

<u>अधिकार द्योतक क्रिया और उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

जिस क्रिया से विधेय पर उद्देश्य के अधिकार की सूचना मिलती है, उसे अधिकार द्योतक क्रिया कहते हैं । इस क्रिया का प्रयोग करते समय क्रिया के पहले आने वाले कर्म का प्रयोग हमेशा पुल्लिंग बहुवचन में होता है, चाहे वे स्त्रीलिंग में भी क्यों न हो ।

मलयालम में इस तरह की प्रवृत्ति नहीं है । जैसे,

दशरथ के तीन रानियाँ थीं । § हिन्दी §

दशरथन् मून्नु राणिमार उण्डायिरुन्नु । § मलयालम §

केरल के छात्र इसका प्रयोग हमेशा कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार करते हैं । जैसे, " दशरथ की तीन रानियाँ थीं । " इसमें रानियाँ स्त्रीलिंग हैं । इसलिए उसके पहले स्त्रीलिंग प्रत्यय का प्रयोग किया गया है और क्रिया भी स्त्रीलिंग में प्रयुक्त की गई है। सही वाक्य होना चाहिए - " दशरथ के तीन रानियाँ थीं । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. उस किसान की चार गायें थी । § अशुद्ध §
   उस किसान के चार गायें थीं । § शुद्ध §

2. रामू की तीन बहनें थीं । § अशुद्ध §
   रामू के तीन बहनें थीं । § शुद्ध §

मलयालम में सम्बन्ध कारक के स्थान पर कर्मकारक का प्रयोग कर्ता के साथ इस सन्दर्भ में होने के कारण वे कभी कभी कर्ता के साथ " को " का प्रयोग भी करते हैं । जैसे, " पाँचाली को पाँच पति थे । " यहाँ मलयालम के अनुवाद के रूप में " पांचाली कर्ता के साथ को जोड़ा गया है जो गलत है ।

क्रियार्थक संज्ञा और उससे संबन्धित समस्यायें :-

क्रियाधातु के साथ " ना " जोड़कर जो रूप बनता है, वह कभी कभी संज्ञा के समान प्रयुक्त होता है । तब उसे क्रियार्थक संज्ञा कहते हैं । कामता प्रसाद गुरु के अनुसार " विधिकाल के रूप को छोड़कर क्रिया के साधारण रूप का प्रयोग संज्ञा के समान प्रयुक्त होने

पर उसे क्रियार्थक संज्ञा कहते हैं । "[1]

मलयालम में इसके लिए क्रियानामम् कहते हैं । [2] जैसे,

झूठ बोलना पाप है । § हिन्दी §
कळ्ळम् परयुन्नतु पापमाण् । § मलयालम §

हिन्दी में क्रियार्थक संज्ञाएँ पुल्लिंग एकवचन के समान प्रयुक्त होती हैं । मलयालम में इसका भेद स्पष्ट नहीं है । जैसे,

आपका वहाँ जाना ठीक नहीं है । § हिन्दी §
ताङ्ङळ् अविटे पोकुन्नतु शरियल्ल । § मलयालम §

क्रियार्थक संज्ञा का विशेषण संबन्धकारक में होता है । लेकिन मलयालम में इस प्रकार का प्रयोग नहीं है । जैसे,

तुम्हारा दफ़्तर जाना ज़रूरी है । § हिन्दी §
निङ्ङळ ओफिसिल पोकेण्डत् अत्यावश्यमाण् § मलयालम §

इसमें " तुम्हारा दफ़्तर जाना " में संबन्धकारक " का " का प्रयोग हुआ है । मलयालम में यह प्रवृत्ति नहीं होने के कारण केरल के छात्र संबन्धकारक प्रत्यय के बिना इसका प्रयोग करते हैं । जैसे, " तुम स्कूल जाना ज़रूरी नहीं है । " इसमें तुम के साथ संबन्धकारक प्रत्यय नहीं जोड़ा गया है जो गलत है । सही वाक्य होना चाहिए - " तुम्हारा स्कूल जाना ज़रूरी नहीं है । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. बच्चे रोज़ सिनेमा देखना बुरा है । § अशुद्ध §
   बच्चों का रोज़ सिनेमा देखना बुरा है । § शुद्ध §

---

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु - पृ. 107
2. व्याकरण मित्रम् शेषगिरि प्रभु - पृ. 149

2. कुछ लोग राष्ट्रभाषा न पढ़ना उचित नहीं है । §अशुद्ध §
   कुछ लोगों का राष्ट्रभाषा न पढ़ना उचित नहीं
   है । § शुद्ध §

आज्ञार्थक क्रियायें और उससे संबन्धित समस्यायें :-

किसी आज्ञा या अनुरोध को सूचित करने वाला क्रिया रूप आज्ञार्थक क्रिया है । इसे विधि रूप कहते हैं । मलयालम में इस प्रकार का विभाजन नहीं है । तू, तुम और आप के साथ आज्ञार्थक क्रियाओं का प्रयोग होता है । तू के साथ क्रिया धातु का प्रयोग किया जाता है । जैसे,

तू जा § हिन्दी §
नी पो § मलयालम §

तुम कर्ता के रूप में आते समय क्रियाधातु के साथ "ओ" जोड़ दिया जाता है । मलयालम में क्रियाधातु के साथ " विन् " जोड़ते हैं । जैसे,

तुम आओ । § हिन्दी §
निङ्ङळ् वरुविन् । § मलयालम §

यदि " आप " कर्ता है तो क्रियाधातु के साथ " इ जोड़ते हैं । मलयालम में यदि कर्ता " ताङ्ङळ् " है तो " नालुम " जोड़ते हैं । जैसे,

आप बैठिए । § हिन्दी §
ताङ्ङळ् इरुन्नालुम् । § मलयालम §

कभी कभी केरल के छात्र " तू " आते समय क्रियाधातु के साथ " ओ " जोड़कर गलती करते हैं । जैसे, " तू ज़मीन पर बैठो । " यहाँ तू कर्ता है, इसलिए क्रियाधातु का प्रयोग वांछित

है । सही वाक्य होना चाहिए - " तू ज़मीन पर बैठ । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. तू उस कुरसी पर बैठो और किताब पढ़ो । §अशुद्ध §
   तू उस कुरसी पर बैठ और किताब पढ़ । §शुद्ध §
2. तू अन्दर आओ और मेरे पास बैठो । § अशुद्ध §
   तू अन्दर आ और मेरे पास बैठ । § शुद्ध §

कभी कभी केरल के छात्र आप कर्ता के रूप में आने पर क्रियाधातु के साथ " इए " के बदले " ओ " ही जोड़ते हैं । जैसे, " आप एक बार मेरे घर आने की कृपा करो । " यहाँ आप कर्ता है । इसलिए करो का प्रयोग गलत है । इसके स्थान पर कीजिए का प्रयोग होना चाहिए । सही वाक्य है - " आप एक बार मेरे घर आने की कृपा कीजिए । " इस प्रकार के कुछ उदाहरण हैं -

1. आप दोनों आपस में झगड़ा न करो । § अशुद्ध §
   आप दोनों आपस में झगडा न कीजिए । § शुद्ध §
2. आप यह तस्वीर मत देखो । § अशुद्ध §
   आप यह तस्वीर मत देखिए । § शुद्ध §

कर, दे, पी, ले आदि धातुओं का प्रयोग आप कर्ता के साथ करते समय क्रमशः कीजिए, दीजिए, पीजिए, लीजिए आदि होती हैं । " तुम " कर्ता के साथ प्रयुक्त करते समय क्रमशः करो, दो, लो, पिओ हो जाता है । मलयालम में इसके समानार्थी क्रिया धातुओं के लिए खास क्रिया रूप का प्रयोग नहीं है । इसलिए केरल के छात्र इस अपवाद को नज़रअंदाज़ करते हुए इसका प्रयोग मूल नियम के अनुसार क्रमशः देओ, लोओ, पीओ, करिए, देइए, लेइए, पीइए आदि करते हैं । जैसे, " तुम यह पुस्तक लेओ । " यहाँ लेओ का प्रयोग हिन्दी में नहीं है । इसलिए यह प्रयोग गलत है । सही वाक्य होना चाहिए - " तुम यह पुस्तक लो । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण

हैं -

1. आप दूध पीइए । (अशुद्ध)
   आप दूध पीजिए । (शुद्ध)

2. तुम पैसे देओ । (अशुद्ध)
   तुम पैसे दो । (शुद्ध)

3. आप यह काम करिए । (अशुद्ध)
   आप यह काम कीजिए । (शुद्ध)

4. आप कलम लेइए । (अशुद्ध)
   आप कलम लीजिए । (शुद्ध)

हिन्दी और मलयालम क्रियाओं के रूपान्तर और उससे संबन्धित समस्यायें :-

विकारी शब्दों में क्रिया का मुख्य स्थान है और वाक्य में वह सबसे प्रधान शब्द होता है । यद्यपि हिन्दी और मलयालम भाषाओं में वह विकारी रूप में प्रयुक्त होती है तो भी उसके विकारों में और प्रयोगों में अनेक अन्तर दिखाई पड़ते हैं ।

प्रथम दृष्टि से यह स्पष्ट हो जाता है कि पुरुष, लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तन न होने के कारण मलयालम की क्रिया रचना पद्धति अत्यन्त सरल है और पुरुष, लिंग, वचन के अनुसार विकार होने के कारण हिन्दी की क्रिया रचना पद्धति कुछ जटिल है । इसके अतिरिक्त क्रियाओं में काल, वाच्य, प्रयोग और प्रकार की सूचना के विधान भी है । इनमें दोनों भाषाएँ कुछ समानताएँ प्रकट करती हैं तो भी दोनों में कई अन्तर हैं ।

काल और उससे संबन्धित समस्यायें :-

जिस शब्द से काम करने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं। काम किसी समय में भी हो सकता है। ऐसा कोई काम नहीं हो सकता जिसका कोई समय ही न हो। समय का प्रभाव प्रत्येक वस्तु पर पड़ता है और इसके फलस्वरूप प्रत्येक वस्तु का रूप बदल जाता है। अत: रूप देखकर समय का बोध होता है। क्रिया के साथ भी यही सामान्य नियम लागू होता है। समय की छाप क्रिया के रूप पर भी पड़ती है और इसके रूप में परिवर्तन ला देती है। इसलिए व्याकरण में काल का अर्थ होता है - समय के बोध के लिए क्रिया का रूप परिवर्तन या रूपान्तर। कामता प्रसाद गुरु के अनुसार " क्रिया के उस रूपान्तरण को काल कहते हैं जिससे क्रिया के व्यापार का समय तथा उसकी पूर्ण व अपूर्ण अवस्था का बोध होता है। " [1] केरलपाणिनी के अनुसार " व्यापार का काल या समय दिखाने वाला क्रिया रूप काल है। " [2]

हिन्दी और मलयालम में काल के तीन भेद हैं - वर्तमानकाल, भूत और भविष्य।

वर्तमानकाल और उससे संबन्धित समस्यायें :-

जिन क्रियाओं का व्यापार अब भी चल रहा है, उसे वर्तमान काल की क्रियायें कहते हैं। कामता प्रसाद गुरु ने इसकी परिभाषा यों दी हैं - " जिस समय वक्ता व लेखक बोलता व लिखता हो उस समय को वर्तमानकाल कहते हैं। " [3]

---

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु - पृ. 121
2. केरलपाणिनीयम् केरलपाणिनी - पृ. 198
3. हिन्दी व्याकरणम् कामता प्रसाद गुरु - पृ. 121

केरल पाणिनी के अनुसार " जो हो रहा है वह वर्तमान है । "[1]
अर्थात् इससे क्रिया के होने वाले समय का बोध होता है । जैसे,

वह आता है । ﴾ हिन्दी ﴿
अवन् वरून्नु । ﴾ मलयालम ﴿

हिन्दी में इसके तीन भेद हैं - सामान्य, तात्कालिक और संदिग्ध । मलयालम में इस प्रकार विभाजन नहीं है ।

<u>सामान्य वर्तमान काल और उससे संबन्धित समस्याय :-</u>

क्रिया का वह रूप जिससे सामान्य रूप से क्रिया का वर्तमान काल में होना पाया जाय, सामान्य वर्तमान काल कहते हैं ।
जैसे,

1. वह आता है । ﴾ हिन्दी ﴿
   अवन् वरून्नु । ﴾ मलयालम ﴿
2. सूरज निकलता है । ﴾ हिन्दी ﴿
   सूर्यन् उदिक्कुन्नु । ﴾ मलयालम ﴿

कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार क्रियाधातु के साथ ता है, ते हैं, ती है, ती हैं और ते हो जोड़ने से सामान्य वर्तमान काल का रूप मिलता है । मलयालम में क्रियाधातु के साथ अन्नु प्रत्यय जोड़कर सामान्य वर्तमानकाल बनाया जाता है । जैसे,

---

1. केरलपाणिनीयम् केरलपाणिनी पृ. 121

जैसे,

हिन्दी	मलयालम
आ + ता है = आता है	वरु + न्नु = वरून्नु
जा + ती है = जाती है ।	पोकु + उन्नु = पोकुन्नु
बैठ + ते हो = बैठते हो ।	इरि + उन्नु = इरिक्कुन्नु
चल + ती हो = चलती हो ।	नट + उन्नु = नटक्कुन्नु
रो + ते हैं = रोते हैं ।	कर + उन्नु = करयुन्नु
लिख + ती हैं = लिखती हैं ।	एषु + उन्नु = एषुतुन्नु

हिन्दी में पुल्लिंग एकवचन में क्रियाधातु के साथ ता है, स्त्रीलिंग एकवचन के साथ ती है, पुल्लिंग बहुवचन के साथ ते हैं, स्त्रीलिंग बहुवचन के साथ ती हैं जोड़ते हैं । मलयालम में लिंग, वचन के अनुसार क्रिया में कोई परिवर्तन नहीं होता । क्रिया रूप हमेशा एक ही रहता है । इसी कारण से केरल के छात्र वर्तमान काल के रूप चाहे पुल्लिंग हो या स्त्रीलिंग, चाहे एकवचन हो या बहुवचन, पुल्लिंग एकवचन का प्रयोग करके गलतियाँ कर बैठते हैं । जैसे, सूर के काव्य में नियमित भाव सुमन वाटिका के मनोहारी दृश्य की रमणीयता मिलता है । यहाँ कर्ता (रमणीयता) स्त्रीलिंग है । मलयालम के एक ही क्रिया रूप से प्रभावित होकर उसने यहाँ पुल्लिंग एकवचन क्रिया रूप का प्रयोग किया है जो सचमुच गलत है । सही वाक्य होना चाहिए - " सूर के काव्य में नियमित भाव-सुमन वाटिका के मनोहारी दृश्य की रमणीयता मिलती है । इस तरह के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. उनके काव्य कृतियों का अनुशीलन करने पर निम्नलिखित

विशेषताएँ परिलक्षित होता है । § अशुद्ध §

उनकी काव्य कृतियों का अनुशीलन करने पर निम्नलिखित विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं । § शुद्ध §

2. संगीतपूर्ण सुमधुर ध्वनि के साथ मार्मिक अनुभूति के सरस चित्र इसमें विशेष रूप से मिलता है । § अशुद्ध §

संगीतपूर्ण सुमधुर ध्वनि के साथ मार्मिक अनुभूति के सरस चित्र इसमें विशेष रूप से मिलते हैं । § शुद्ध §

हिन्दी में तुम कर्ता है तो सामान्य वर्तमान काल के साथ पुल्लिंग एकवचन में " ते हो " जोड़ते हैं । मलयालम में सभी के लिए एक ही क्रिया रूप होता है । केरल के छात्र इसका प्रयोग करते समय एकवचन में इसका प्रयोग करते हैं और " ते हो " के बदले " ता है " करता है । जैसे, जो धन तुम्हारा है ही नहीं उसको क्या तुम एक पल के लिए भी भोग सकता है ? " इसमें " ता है " का प्रयोग किया गया है जो गलत है, क्योंकि तुम कर्ता होने पर क्रियाधातु के साथ सामान्य वर्तमान काल में " ते हो " जोड़ना है । सही वाक्य होना चाहिए - " जो धन तुम्हारा है ही नहीं उसको क्या तुम एक पल के लिए भी भोग सकते हो ? " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. इस तरह संकट में पड़ने पर तुम मेरी सहायता करता है । § अशुद्ध §

इस तरह संकट में पड़ने पर तुम मेरी सहायता करते हो । § शुद्ध §

2. जब तुम अपने स्वामी को मरवा सकता है तो मेरे जैसे व्यक्ति की क्या भलाई करना ? § अशुद्ध §

जब तुम अपने स्वामी को मरवा सकते हो तो मेरे
जैसे व्यक्ति की क्या भलाई करना ? § शुद्ध §

हिन्दी में मैं का प्रयोग करते समय सामान्य वर्तमान काल में "ता हूँ" का प्रयोग अनिवार्य है। लेकिन मलयालम में मैं के समानार्थी "ञान" का प्रयोग करते समय खास वर्तमान कालिक सहायक क्रिया का प्रयोग न होने के कारण केरल के छात्र "हूँ" के स्थान पर है का ही प्रयोग करते हैं जो सचमुच गलत है। जैसे, "जायसी कहते हैं कि मैं सबसे पहले उस एक कर्ता अर्थात ईश्वर का स्मरण करता है जिसने सृष्टि को जीवन दान दिया और संसार की रचना की।" इस वाक्य में "मैं आया है, इसलिए हूँ का प्रयोग करना चाहिए। सही वाक्य है - "जायसी कहते हैं कि मैं सबसे पहले उस एक कर्ता अर्थात ईश्वर का स्मरण करता हूँ जिसने सृष्टि को जीवन दान दिया और संसार की रचना की।" इसी प्रकार मलयालम में नुक्ता चिहन §बिन्दी§ युक्त सहायक क्रिया का प्रयोग न होने के कारण वे ते हैं के स्थान पर ते है का प्रयोग करते हैं। जैसे केरल के लोग श्रावण के महीने में बड़ी खुशी के साथ ओणम मनाते है। इसमें "केरल के लोग" बहुवचन होने के कारण "हैं" का प्रयोग करना है। सही वाक्य है - केरल के लोग श्रावण के महीने में बड़ी खुशी के साथ ओणम मनाते हैं।

निषेधार्थ को सूचित करते समय है, हूँ, हैं, हो आदि सहायक क्रियायें हिन्दी में छोड़ देते हैं। मलयालम में निषेधार्थक शब्द को जोड़ते समय कुछ छोड़ते नहीं है। जैसे,

मैं डरती नहीं। § हिन्दी §
ञान् पेटिक्कुन्निल्ला। § मलयालम §

केरल के छात्र मलयालम के नियम के अनुसार हिन्दी में सहायक

क्रियाओं को छोड़ते नहीं हैं । जैसे, " लोग रथ को आगे जाने नहीं देता है । यहाँ " नहीं " निषेधार्थ आया है, इसलिए " है " सहायक क्रिया अवांछित है । सही वाक्य होना चाहिए - " लोग रथ को आगे जाने नहीं देते । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. लोग उसके बलिदान को महत्व नहीं देता है । (अशुद्ध)
   लोग उसके बलिदान को महत्व नहीं देते । (शुद्ध)
2. वे घर के आधार को मिटा नहीं सकती है । (अशुद्ध)
   वे घर के आधार को मिटा नहीं सकतीं । (शुद्ध)

निषेधार्थ " नहीं " का प्रयोग करते समय कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन में है तो सहायक क्रिया (हैं) छोड़ने के साथ " ती " के स्थान पर बिन्दी वाला " तीं " जोड़ते हैं । मलयालम में इस प्रकार का प्रयोग नहीं है । जैसे,

लड़कियाँ नहीं खेलतीं । (हिन्दी)
पेण्कुट्टिकल कळिक्कुन्निल्ला । (मलयालम)

केरल के छात्र हिन्दी में बिन्दीवाला क्रिया रूप न होने के कारण बिन्दी के बिना ही इसका प्रयोग करते हैं । जैसे, " गोपिकाएँ योग और निर्गुणोपासना की बातें समझने का प्रयास नहीं करती । " यहाँ क्रिया बिना बिन्दी के प्रयुक्त किया गया है। सही वाक्य होना चाहिए - " गोपिकाएँ योग और निर्गुणोपासना की बातें समझने का प्रयास नहीं करतीं । "

<u>तात्कालिक वर्तमान काल और उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

इस वर्तमान काल से यह पता चलता है कि क्रिया वर्तमान

काल में हो रही है । जैसे,

1. तुम कहाँ जा रहे हो । § हिन्दी §
   निङ्ङळ एविटे पोकुकयाण् । § मलयालम §
2. मैं बाज़ार जा रहा हूँ । § हिन्दी §
   ञान् चन्तयिल पोकुकयाण् । § मलयालम §
3. बच्चा सो रहा है । § हिन्दी §
   कुट्टि उरङ्ङुकयाण् । § मलयालम §
4. अम्बिका नहा रही है । § हिन्दी §
5. अम्बिका कुळिक्कुकयाणु् । § मलयालम §
5. लड़के मैदान में खेल रहे हैं । § हिन्दी §
   कुट्टिकळ मैदानत्तिल कळिक्कुकयाणु् । § मलयालम §

बहुत समय से प्रारंभ होकर अब भी चलनेवाले व्यापार को सूचित करने के लिए इसका प्रयोग होता है । जैसे,

मैं पिछले चार साल से हिन्दी सीख रहा हूँ । § हिन्दी §
ञान कष़िञ्ञ नालु वर्षङ्ङळायी हिन्दी पठिच्चुकोण्डिरिक्कुकयाणु् । § मलयालम §

निकट भविष्य में होनेवाले व्यापार को सूचित करने के लिए भी इसका प्रयोग होता है । जैसे,

वे कल सबेरे जा रहे हैं । § हिन्दी §
अवर् नाळे राविले पोकुकयाणु् । § मलयालम §

कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार क्रियाधातु के साथ रहा है, रहे हैं, रही है, रही हैं आदि जोड़कर इसका रूप बनाते हैं । मलयालम में सामान्य क्रिया रूप के साथ "आण्" जोड़कर यह रूप बनाते हैं ।

जैसे,

हिन्दी	मलयालम
1. जा रहा है ।	पोकुकयाण्
2. जा रही है ।	पोकुकयाणे
3. जा रहे हैं ।	पोकुकयाणे
4. जा रही हैं ।	पोकुकयाणे

यहाँ हिन्दी में लिंग और वचन के अनुसार तात्कालिक वर्तमान काल के क्रिया रूप बदलते हैं । लेकिन मलयालम में कोई बदलाव नहीं है । मलयालम की इस प्रवृत्ति से प्रभावित होकर केरल के छात्र हमेशा पुल्लिंग एकवचन का प्रयोग स्त्रीलिंग एकवचन, स्त्रीलिंग बहुवचन तथा पुल्लिंग बहुवचन के स्थान पर करते हैं जो सचमुच गलत हैं । जैसे, " हम आज भारतीय संस्कृति के उस पवित्र एवं उच्चतम रूप को भूल रहा है । " यहाँ कर्ता " हम " है जो पुलिंग बहुवचन है । लेकिन यहाँ मलयालम के एक ही तात्कालिक क्रिया रूप से प्रभावित होकर पुल्लिंग एकवचन का प्रयोग किया गया है जो सचमुच गलत है । सही वाक्य होना चाहिए - " हम भारतीय संस्कृति के उस पवित्र एवं उच्चतम रूप को भूल रहे हैं । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. इस प्रकार मनु को निज जीवन विकसित कर अपने उद्देश्यों की पूर्ति और कर्तव्य करने की इच्छा हो रहा है ।
   (अशुद्ध)

   इस प्रकार मनु को निज जीवन विकसित कर अपने उद्देश्यों की पूर्ति और कर्तव्य करने की इच्छा हो रही है ।
   (शुद्ध)

2. अब वे अपने जीवित बचे रहने की कथा सुनाते हुए कर रहा है । ॥ अशुद्ध ॥
अब वे अपने जीवित बचे रहने की कथा सुनाते हुए कह रहे हैं । ॥ शुद्ध ॥

तात्कालिक वर्तमान काल में " तुम " कर्ता है तो पुल्लिंग एकवचन में " रहे हो " जोड़ते हैं । मलयालम में सभी के लिए एक ही क्रिया रूप होता है । केरल के छात्र इसका प्रयोग एकवचन में करते हैं और "रहे हो" के बदले " रहा है " करता है । जैसे, " क्या तुम वास्तव में वहाँ जाने की सोच रहा है ? " इसमें " रहा है " का प्रयोग किया गया है जो गलत है, क्योंकि तुम कर्ता होने पर क्रिया धातु के साथ तात्कालिक वर्तमान काल में " रहे हो " जोड़ना है । सही वाक्य होना चाहिए - " क्या तुम वास्तव में वहाँ जाने की सोच रहे हो ? " इस प्रकार के अन्य कुछ दाहरण हैं -

1. तुम मुझे देखकर इस तरह क्यों भाग रहा है ? ॥अशुद्ध॥
तुम मुझे देखकर इस तरह क्यों भाग रहे हो ? ॥शुद्ध॥

2. इतना लाभ देखते हुए भी तुम मुझे दोष दे रही है । ॥ अशुद्ध ॥
इतना लाभ देखते हुए भी तुम मुझे दोष दे रही हो । ॥ शुद्ध ॥

हिन्दी में मैं कर्ता होने पर तात्कालिक वर्तमान काल में रहा हूँ या रही हूँ का प्रयोग होता है । लेकिन मलयालम में इसके समानार्थी "आन् " का प्रयोग होते समय कोई खास वर्तमानकालिक सहायक क्रिया का प्रयोग न होने के कारण वे हूँ के स्थान पर है का प्रयोग करते हैं । जैसे, " ऐसी विकट परिस्थिति में आफतों को भी

पथ का पाथेय बनाकर मैं अज्ञात देश का राहगीर होकर चला जा रहा है । " यहाँ मैं कर्ता है । इसलिए हूँ का प्रयोग होना चाहिए । सही वाक्य है - " ऐसी विकट परिस्थिति में आफतों को भी पथ का पाथेय बनाकर मैं अज्ञात देश का राहगीर होकर चला जा रहा हूँ । " उसी तरह नुक्ता चिह्न युक्त (बिन्दी युक्त) सहायक क्रिया का प्रयोग मलयालम में न होने के कारण वे रहे हैं के स्थान पर रहे है का प्रयोग करते हैं । जैसे, आप तो निराश भरी बात कर रहे है । " यहाँ रहे हैं के बदले रहे है का प्रयोग किया गया है जो गलत है ।

संदिग्ध वर्तमान काल और उससे संबन्धित समस्यायें :-

जिससे क्रिया के होने में संदेह प्रकट हो, पर उसकी वर्तमानता में सन्देह न हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं । जैसे,

लड़का चलता होगा । (हिन्दी)
आण्कुट्टि नटक्कुन्नुण्डावुम् । (मलयालम)

स्त्रीलिंग एकवचन में " ती होगी ", पुल्लिंग एकवचन में " ता होगा ", पुल्लिंग बहुवचन में " ते होंगे ", स्त्रीलिंग बहुवचन में " ती होंगी ", मैं कर्ता है तो " ते होंगे (स्त्रीलिंग में ती हूँगी), तुम कर्ता है तो " ते होगे " (स्त्रीलिंग में ती हो) जोड़कर संदिग्ध वर्तमान काल का रूप बनाते हैं । मलयालम में क्रियाधातु के साथ " न्नुण्डावुम् " जोड़कर इसका रूप बनाते हैं ।

जैसे,

हिन्दी	मलयालम
वह जाता होगा ।	अवन् पोकुन्नुण्डावुम्
वह जाती होगी ।	अवळ् पोकुन्नुण्डावुम्
वे जाते होंगे ।	अवर् पोकुन्नुण्डावुम्
वे जाती होंगी ।	अवर् पोकुन्नुण्डावुम्
मैं जाता हूँगा ।	ञान् पोकुन्नुण्डावुम्
मैं जाती हूँगी ।	ञान् पोकुन्नुण्डावुम्
तुम जाती होगी ।	निङ्ङळ पोकुन्नुण्डावुम्
तुम जाते होगे ।	निङ्ङळ पोकुन्नुण्डावुम्
बाबू जाता होगा ।	बाबू पोकुन्नुण्डावुम्
अम्बिका जाती होगी ।	अम्बिका पोकुन्नुण्डावुम्
बाबू और प्रदीप जाते होंगे ।	बाबुवुम् प्रदीपुम् पोकुन्नुण्डावुम्
अम्बिका और राधा जाती होंगी ।	अम्बिकयुम् राधयुम् पोकुन्नुण्डावुम्

रहा, रहे, रही के साथ हूँगा, हूँगी, होगे, होंगे, होंगी, होगा, होगी आदि जोड़कर भी ये रूप बनाये जाते हैं । मलयालम में इसके लिए " न्नुण्डायिरिक्कुम् " जोड़ते हैं । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
मैं जा रहा हूँगा ।	ञान् पोकुन्नुण्डायिरिक्कुम् ।
मैं जा रही हूँगी ।	ञान् पोकुन्नुण्डायिरिक्कुम् ।
तुम जा रहे होंगे ।	निङ्ङळ पोकुन्नुण्डायिरिक्कुम् ।
तुम जा रही होगी ।	निङ्ङळ पोकुन्नुण्डायिरिक्कुम् ।

वह जा रहा होगा । अवन् पोकुन्नुण्डायिरिक्कुम्

वह जा रही होगी । अवळ् पोकुन्नुण्डायिरिक्कुम् ।

वे जा रहे होंगे । अवर् पोकुन्नुण्डायिरिक्कुम् ।

वे जा रही होंगे । अवर् पोकुन्नुण्डायिरिक्कुम् ।

इन उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी में लिंग, वचन के अनुसार संदिग्ध वर्तमान काल रूप में परिवर्तन होता है जबकि मलयालम में कोई परिवर्तन नहीं होता । मलयालम में संदिग्ध काल के एक ही रूप से प्रभावित होकर वे हिन्दी में स्त्रीलिंग एकवचन, स्त्रीलिंग बहुवचन और पुल्लिंग बहुवचन के स्थान पर पुल्लिंग एकवचन का ही प्रयोग करते हैं । जैसे, " वे साईकिल चलाना जानता होगा । यहाँ वे बहुवचन है, इसलिए क्रिया रूप भी बहुवचन में होना चाहिए । लेकिन यहाँ मलयालम के क्रियारूपों से प्रभावित होकर इसका प्रयोग पुल्लिंग में किया गया है जोकि सचमुच गलत है । सही वाक्य होना चाहिए - " वे साईकिल चलाना जानते होंगे । " इस प्रकार का अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. पिताजी शाम को बाज़ार जाता होगा । (अशुद्ध)
   पिताजी शाम को बाज़ार जाते होंगे । (शुद्ध)
2. गाडी अभी आ रहा होगा । (अशुद्ध)
   गाडी अभी आ रही होगी । (शुद्ध)

मलयालम में संदिग्ध वर्तमान काल के बहुवचन रूप हिन्दी की तरह ऊपर बिन्दी डालकर (जैसे, होंगे, होंगी) लिखने की प्रवृत्ति न होने के कारण वे इनका प्रयोग बिन्दी के बिना भी कभी कभी करते हैं । जैसे, " बेचारी को शीतलता देने केलिए गुलाब जल का

छिडकाव करते समय दासियाँ तथा सखियाँ हैरत में पड जाती होगी । " यहाँ दासियाँ और सखियाँ कर्ता हैं जोकि बहुवचन में हैं । इसलिए यहाँ होगी का प्रयोग गलत है । इसके स्थान पर होंगी का प्रयोग अपेक्षित है । सही वाक्य है - " बेचारी को शीतलता देने के लिए गुलाब जल का छिडकाव करते समय दासियाँ तथा सखियाँ हैरत में पड जाती होंगी । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. आप बंबई में काफी पैसे कमाते होगे । ﴾ अशुद्ध ﴿
   आप बंबई में काफी पैसे कमाते होंगे । ﴾ शुद्ध ﴿

2. अम्बिका और राधा इस गाडी में आ रही होगी । ﴾ अशुद्ध ﴿
   अम्बिका और राधा इस गाडी में आ रही होंगी । ﴾ शुद्ध ﴿

संदिग्ध वर्तमान काल के क्रिया रूपों के अन्त में आने वाले होगा, होगे, होगी, होंगे, हूँगा, हूँगी आदि में से होगे और हूँगा आदि क्रियायें ज़्यादा समस्यायें पैदा करती हैं जो तुम और मैं कर्ता होने पर क्रिया के साथ आती हैं । चूँकि मलयालम में इस तरह के अनेक प्रकार के रूप नहीं है, इसलिए वे हूँगा और होगे के स्थान पर होगा का ही प्रयोग करके गलतियाँ कर बैठते हैं । जैसे, " उस समय मैं उसके सौंदर्य पर मुग्ध होकर अपना सब कुछ न्योछावर कर रहा होगा । " यहाँ " मैं " कर्ता है । इसलिए हूँगा का प्रयोग होना चाहिए । मलयालम के क्रिया रूपों से प्रभावित होकर उन्होंने हूँगा के स्थान पर होगा का प्रयोग किया है । सही वाक्य है - " उस समय मैं उसके सौंदर्य पर मुग्ध होकर अपना सब कुछ न्योछावर कर रहा हूँगा । इसी प्रकार वे कभी कभी तुम कर्ता होने पर होगे के स्थान पर होगा करके भी गलतियाँ कर बैठते हैं ।

जैसे, " तुम यहाँ सुख का संसार साथ लेकर विस्मित एवं अलसायी नेत्रों से आया होगा । " यहाँ तुम कर्ता होने के कारण " आया होगा " के स्थान पर " आये होगे " का प्रयोग अपेक्षित है । सही वाक्य है - " तुम यहाँ सुख का संसार साथ लेकर विस्मित एवं अलसायी नेत्रों से आये होगे । "

भूतकाल और उससे संबन्धित समस्यायें :-

जिन क्रियाओं का व्यापार अब से पहले समाप्त हो चुका है उन्हें भूतकाल की क्रियायें कहते हैं । कामता प्रसाद गुरु के अनुसार " वक्ता या लेखक बोलने या लिखने के पहले का समय भूतकाल है ।"[1] केरल पाणिनी के अनुसार " जो क्रिया बीत चुकी है, वह भूत है ।"[2]

हिन्दी में भूतकाल के छः भेद माने गए हैं - सामान्य, आसन्न, संदिग्ध, पूर्ण, अपूर्ण और हेतु हेतुमत । मलयालम में इन भेदों की चर्चा नहीं होती । किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हिन्दी के इन भेदों की अभिव्यक्ति मलयालम में नहीं हो सकती । इन काल रूपों की अभिव्यक्ति के लिए अलग क्रिया रूपों का प्रयोग किया जाता है ।

सामान्य भूतकाल एवं उससे संबन्धित समस्यायें :-

क्रिया के जिस रूप से भूतकाल के किसी विशेष समय का निश्चय नहीं होता, उसे सामान्यभूत कहते हैं । इससे जाना जाता है कि व्यापार बोलने व लिखने के पहले हुआ है । जैसे,

बाबू ने पाँच रूपये दिए । ﴾ हिन्दी ﴿

---

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु - पृ. 121
2. केरलपाणनीयम् केरलपाणिनी - पृ. 198

बाबू अंचु रूपा तन्नु ।) मलयालम)

यदि क्रिया धातु स्वरान्त है तो सामान्य भूतकाल में उसके साथ " या " आता है । मलयालम में " तु " या " इ " जोड़ते हैं और संन्धि के कारण कई परिवर्तन भी होते हैं । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
आ + या = आया	वर् + तु = वन्नु
खा + या = खाया	ति + तु = तिन्नु
सो + या = सोया	उरङ्डि

यदि क्रिया धातु व्यंजनांत है, तो क्रिया धातु के साथ " आ " जोड़ते हैं । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
पढ़ + आ = पढ़ा	वायिच्चु
चल + आ = चला	नटन्नु
लिख + आ = लिखा	एषुति
बैठ + आ = बैठा	इरून्नु

ईकारान्त और अकारान्त क्रियाधातुओं को हृस्व करने के बाद ही उसके साथ " आ " अथवा " या " जोड़ते हैं । जैसे,

पी + या = पिया) कुटिच्चु)

छू + आ = छुआ) तोट्टु)

सामान्य भूतकाल की अकर्मक क्रियाओं में कर्ता पुल्लिंग बहुवचन है तो आ और या, ए और ये हो जाता है । मलयालम में इस

तरह का परिवर्तन नहीं है । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
वे आये ।	अवर् वन्नु ।
लडके बैठे ।	आण्कुट्टिकळ् इरून्नु ।

कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन है, तो आ और या, ई और यी बन जाते हैं । बहुवचन है तो ईं , यीं बन जाते हैं । मलयालम में इस तरह का परिवर्तन नहीं है । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
लड़की आयी ।	पेण्कुट्टि वन्नु ।
लड़कियाँ आयी ।	पेण्कुट्टिकळ् वन्नु ।
सीता बैठी ।	सीता इरून्नु ।
औरतें बैठीं ।	स्त्रीकळ् इरून्नु ।

उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी के भूतकाल की अकर्मक क्रियायें कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार बदलती हैं । लेकिन मलयालम में इस तरह का कोई परिवर्तन नहीं है । इसलिए केरल के छात्र पुल्लिंग बहुवचन कर्ता और स्त्रीलिंग एकवचन तथा बहुवचन कर्ता के स्थान पर पुल्लिंग एकवचन का ही प्रयोग करते हैं । यह भी नहीं अक्सर कर्ता के साथ " ने " प्रत्यय भी जोड़ते हैं जो वांछित नहीं है । जैसे, " उन्होंने रंगमहल के समीप आया । " यहाँ अकर्मक क्रिया होने के कारण कर्ता के साथ ने प्रत्यय की आवश्यकता नहीं है । कर्ता बहुवचन होने के कारण अकर्मक क्रिया भी यहाँ बहुवचन में होनी चाहिए । सही वाक्य है - " वे रंगमहल के समीप

आ गए । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. भारतेन्दु ने आर्थिक दुश्चिन्ताओं से घिर गया ।
   § अशुद्ध §
   भारतेन्दु आर्थिक दुश्चिन्ताओं से घिर गए । § शुद्ध §
2. राजपुत्रों को लेकर विष्णु शर्मा ने अपने आश्रम पहूँचा ।
   § अशुद्ध §
   राजपुत्रों को लेकर विष्णु शर्मा अपने आश्रम पहूँचे ।
   § शुद्ध §

सामान्य भूतकाल में सकर्मक क्रियायें कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार बदलती है और कर्ता के साथ ने प्रत्यय भी आता है । मलयालम की क्रियाओं में इस तरह का बदलाव नहीं है और कर्ताकारक में किसी प्रत्यय का प्रयोग भी नहीं है । जैसे,

मैंने फिल्म देखी ।
ञान् सिनेमा कण्डु ।

मलयालम में इस नियम से प्रभावित होकर वे ने का प्रयोग छोड देते हैं और कभी कभी कर्ता के अनुसार क्रिया का लिंग परिवर्तन भी करते हैं । जैसे , " वे वात्सल्य और शृंगार की रसधारा प्रभावित किए । " यहाँ कर्ता के साथ ने का प्रयोग नहीं किया गया है और बहुवचन कर्ता के अनुसार क्रिया का परिवर्तन भी किया गया है जोकि सचमुच गलत है । सही वाक्य होना चाहिए - " उन्होंने वात्सल्य और शृंगार की रसधारा प्रवाहित की । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. वे जाति-पाँति के विरुद्ध आवाज़ उठाये । § अशुद्ध §

उन्होंने जाति-पाँति के विरुद्ध आवाज़ उठायी ।
§ शुद्ध §

2. प्रारंभ में स्वयं भारतेन्दु भी ब्रज भाषा में श्रृंगार रस की भावभीनी कविताएँ लिखें । § अशुद्ध §
प्रारंभ में स्वयं भारतेन्दु ने भी ब्रज भाषा में श्रृंगार रस की भावभीनी कविताएँ लिखीं । § शुद्ध §

स्त्रीलिंग एकवचन में सामान्य भूतकाल की क्रिया में बिन्दी नहीं होती जबकि स्त्रीलिंग बहुवचन में बिन्दी का प्रयोग होती है । मलयालम में इस तरह बिन्दी युक्त क्रिया रूप नहीं है । इसलिए वे स्त्रीलिंग बहुवचन में बिन्दी के बिना ही क्रिया रूप का प्रयोग करते हैं । जैसे, " मैं ने चार रोटियाँ खायी । " यहाँ खायीं के बदले खायी का प्रयोग किया है जो कि गलत है । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. उन्होंने अनेक कविताएँ लिखी । § अशुद्ध §
उन्होंने अनेक कविताएँ लिखीं । § शुद्ध §

2. राधा ने कई कहानियाँ पढ़ी । § अशुद्ध §
राधा ने कईं कहानियाँ पढ़ीं । § शुद्ध §

<u>आसन्न भूतकाल एवं उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के व्यापार का समय आसन्न § निकट § में समाप्त हुआ समझा जाय, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं । जैसे,

1. वे दफ़्तर गए हैं । § हिन्दी §

अद्देहम् आफिसिल पोयतेयुळ्ळु । (मलयालम)

2. मैं ने आम खाया है । (हिन्दी)

ञान् माङ्. तिन्नतेयुळ्ळु । (मलयालम)

इस भूतकाल में पुरुष, वचन के अनुसार सामान्य भूतकाल रूप के साथ है, हैं, हूँ, हो जोड़ते हैं । मलयालम में भूतकाल रूप के साथ " तेयुळ्ळु " जोडते हैं ।

आया + है = आया है । (वन्नेयुळ्ळु)

गया + है = गया है । (पोयेयुळ्ळु)

सामान्य भूतकाल के समान इसमें भी " ने " प्रत्यय सकर्मक क्रियाओं के साथ जोड़ना है । " ने " जोड़ने के बाद कर्म के लिंग वचन के अनुसार क्रिया बदलती है । जैसे,

1. मैं ने अभी आम खाया है । (हिन्दी)

ञान् माङ. तिन्नतेयुळ्ळु । (मलयालम)

2. लड़के ने दो रोटी खायी हैं । (हिन्दी)

आण्कुट्टिकळ् रण्डु अप्पम् तिन्नतेयुळ्ळु । (मलयालम)

3. लड़कियों ने दो आम खाये हैं । (हिन्दी)

पेण्कुट्टिकळ् रण्डु माङ. तिन्नतेयुळ्ळु । (मलयालम)

हिन्दी में क्रिया कर्म के लिंग, वचन के अनुसार बदलती है और मलयालम में कोई बदलाव नहीं है । इसलिए वे कर्ता के अनुसार क्रिया में परिवर्तन करते हैं । जैसे, " उन्होंने केवल बाल्य और यौवन से संबद्ध जीवन की झाँकियाँ दिखाया है । यहाँ कर्म (झाकियाँ) स्त्रीलिंग है । लेकिन मलयालम के प्रभाव के कारण इसमें उसका प्रयोग पुल्लिंग में किया गया है । सही वाक्य होना

चाहिए - " उन्होंने केवल बाल्य और यौवन से संबद्ध जीवन की झाँकियाँ दिखायी हैं । इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. गुप्त जी ने प्रकृति के भी सुन्दर चित्र अंकित किया है । ┋ अशुद्ध ┋

   गुप्त जी ने प्रकृति के भी सुन्दर चित्र अंकित किए हैं । ┋ शुद्ध ┋

2. कामायनी में कवि ने श्रद्धा के माध्यम से नारी जीवन की गरिमा की अभिव्यक्ति किया है । ┋ अशुद्ध ┋
   कामायनी में कवि श्रद्धा के माध्यम से नारी जीवन की गरिमा की अभिव्यक्ति की है । ┋ शुद्ध ┋

मलयालम में कर्ताकारक प्रत्यय न होने के कारण वे कभी " ने " का प्रयोग छोड़ देते हैं और कर्ता के अनुसार क्रिया में परिवर्तन भी करते हैं । जैसे, " मानव तथा पशु भूख की निवृत्ति केलिए युग युग में नाना प्रकार के कार्य किया है । " यहाँ " ने " का प्रयोग छोड़ दिया गया है और कर्ता के अनुसार क्रिया में परिवर्तन भी किया गया है जो गलत है । सही वाक्य है - " मानव तथा पशु ने भूख की निवृत्ति केलिए युग युग में नाना प्रकार के कार्य किये हैं । " इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. " कामायनी " में कवि आनन्दवादी दर्शन की मान्यताओं को भी काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान किया है । ┋ अशुद्ध ┋

   " कामायनी " में कवि ने आनन्दवादी दर्शन की मान्यताओं को भी काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है । ┋ शुद्ध ┋

2. इसके अलावा वे दो आलोचनात्मक निबन्ध भी लिखा है । ﴾ अशुद्ध ﴿

   इसके अलावा उन्होंने दो आलोचनात्मक निबन्ध भी लिखे हैं । ﴾ शुद्ध ﴿

संदिग्ध भूतकाल और उससे संबन्धित समस्यायें :-

क्रिया के जिस रूप से भूतकाल तो पाया जाये, किन्तु उसके होने में कुछ संदेह हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं । जैसे,

लड़के ने खाया होगा । ﴾ हिन्दी ﴿
आण्कुट्टि तिन्निट्टुण्डावुम् । ﴾ मलयालम ﴿

क्रिया के सामान्य भूतकाल रूप के साथ होगा, होंगे, होगी, होंगी, हूँगा, हूँगी, होगे आदि जोड़कर हिन्दी में इसका रूप बनाते हैं । मलयालम में क्रियाधातु के साथ " उण्डावुम् " जोड़ते हैं । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
मैं गया हूँगा ।	ञान् पोयिट्टुण्डावुम् ।
मैं गयी हूँगी ।	ञान् पोयिट्टुण्डावुम् ।
वह गयी होगी ।	अवळ् पोयिट्टुण्डावुम् ।
वह गया होगा ।	अवन् पोयिट्टुण्डावुम् ।
वे गये होंगे ।	अवर् पोयिट्टुण्डावुम् ।
वे गयी होंगी ।	अवर् पोयिट्टुण्डावुम् ।
तुम गये होगे ।	निङ.ळ् पोयिट्टुण्डावुम् ।
तुम गयी होगी ।	निङ.ळ् पोयिट्टुण्डावुम् ।

सकर्मक क्रिया संदिग्ध भूतकाल में प्रयुक्त करते समय " ने " जोड़ना है और उस समय ने से संबन्धित सभी नियम भी लागू होते हैं । लेकिन केरल के छात्र इसे भविष्यत् काल समझकर इसका प्रयोग करते हैं, क्योंकि इस क्रिया में संदिग्धता का आभास मिलता है । जैसे, " भैया कलम खरीदा होगा । " यहाँ कर्ता के साथ ने प्रत्यय नहीं किया गया है और कर्म के अनुसार क्रिया का परिवर्तन भी नहीं किया गया है । सही वाक्य है - " भैया ने कलम खरीदी होगी । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. कमला पाठ पढ़ी होगी । (अशुद्ध)
   कमला ने पाठ पढ़ी होगी । (शुद्ध)
2. वह किताब खरीदा होगा । (अशुद्ध)
   उसने किताब खरीदी होगी । (शुद्ध)

मलयालम में बिन्दी वाली भूतकालिक सहायक क्रिया न होने के कारण वे बहुवचन क्रिया का प्रयोग करते समय अक्सर वे बिन्दी रहित क्रिया रूप का ही प्रयोग करते हैं । जैसे, " राधा और अम्बिका घर पहूँची होगी । " यहाँ होगी का प्रयोग गलत है, क्योंकि कर्ता (राधा और अम्बिका) बहुवचन में है । सही वाक्य है - " राधा और अम्बिका घर पहूँची होंगी । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. बाबू ने दो आम खाये होगे । (अशुद्ध)
   बाबू ने दो आम खाये होंगे । (शुद्ध)
2. राधा ने धोबी को कपड़े दिये होगे । (अशुद्ध)
   राधा ने धोबी को कपड़े दिये होंगे । (शुद्ध)

संदिग्ध भूतकाल में जब मैं और तुम कर्ता होने पर क्रमशः हूँगा और होगे आते हैं तब कुछ समस्यायें उत्पन्न होती है । मलयालम में इस प्रकार के अलग अलग रूप न होने के कारण एकवचन में ही इसका प्रयोग करते हैं । इस तरह होनेवाली कुछ समस्यायें हैं -

1. मैं उस वक्त गया होगा । ≬ अशुद्ध ≬
   मैं उस वक्त गया हूँगा । ≬ शुद्ध ≬
2. तुम सब भूल गया होगा । ≬ अशुद्ध ≬
   तुम सब भूल गये होंगे । ≬ शुद्ध ≬
3. तुम वहाँ पहूँचा होगा । ≬ अशुद्ध ≬
   तुम वहाँ पहूँचे होगे । ≬ शुद्ध ≬
4. मैं शायद मैसूर गया होगा । ≬ अशुद्ध ≬
   मैं शायद मैसूर गया हूँगा । ≬ शुद्ध ≬

<u>पूर्ण भूतकाल और उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसके व्यापार को समाप्त हुए बहुत समय गुज़र चुका है उसे पूर्ण भूतकाल कहता है । जैसे,

मैं बेंगलूर गया था । ≬ हिन्दी ≬
ञान् बेंगलूर पोयिरुन्नु । ≬ मलयालम ≬

इसमें क्रिया के सामान्य भूतकाल रूप के साथ था, थे, थी, थीं जोड़कर पूर्ण भूतकाल रूप बनाते हैं । मलयालम में सामान्य भूतकाल रूप के साथ " इरुन्नु " अथवा " उण्डायिरुन्नु " जोड़कर यह रूप बनाते हैं ।

जैसे,

गया + था = गया था । § हिन्दी §

पोयि + इरुन्नु = पोयिरुन्नु । § मलयालम §

हिन्दी में कर्ता पुल्लिंग एकवचन में है तो " था " का प्रयोग करते हैं । जैसे, " गया था " § पोयिरुन्नु § । कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन है तो " थी " का प्रयोग करते हैं । जैसे, " गयी थी " § पोयिरुन्नु § । कर्ता पुल्लिंग बहुवचन है तो " थे " जोड़ते हैं । जैसे, " गये थे " § पोयिरुन्नु § । कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन है तो " थीं " जोड़ते हैं । जैसे, " गयी थीं " § पोयिरुन्नु § । मलयालम में था, थे, थी के समान प्रयुक्त सहायक क्रिया हमेशा एक ही होती है । इससे संबन्धित समस्याओं का विश्लेषण इसी अध्याय में भूतकालिक सहायक क्रियाओं से संबन्धित समस्याओं के अन्दर किया गया है ।

" ने " संबन्धी सभी नियम इस भूतकालिक रूप में भी लागू होता है । केरल के छात्र " ने " का प्रयोग इसमें भी छोड़ देते हैं और कर्ता के अनुसार क्रिया का अन्वय भी करते हैं । जैसे, " वे देश को जागृत करने केलिए एक योजना प्रस्तुत किये थे । " यहाँ कर्ता के साथ ने का प्रयोग भी नहीं किया गया है और कर्ता के अनुसार क्रिया का परिवर्तन भी किया गया है जो सचमुच गलत है । सही वाक्य है - " उन्होंने देश को जागृत करने केलिए एक योजना प्रस्तुत की थी । " इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. गुप्त जी उत्तरदायित्व की विरासत संभवत: अपने पिताजी से ही प्राप्त किये थे । § अशुद्ध §

   गुप्त जी ने उत्तरदायित्व की विरासत संभवत: अपने पिताजी से ही प्राप्त की थी । § शुद्ध §

2. चन्द्रधरशर्मा गुलेरी " पुरानी हिन्दी " नामक ग्रन्थ में इसी दिशा में कुछ विचार रखा था । § अशुद्ध §

चन्द्रधरशर्मा गुलेरी ने " पुरानी हिन्दी " नामक ग्रन्थ में इसी दिशा में कुछ विचार रखे थे । § शुद्ध §

पूर्ण भूतकाल के अकर्मक क्रियाओं के साथ ने प्रत्यय अपेक्षित नहीं है । लेकिन वे अकर्मक क्रियाओं के साथ कभी कभी ने प्रत्यय जोड़ देते हैं । जैसे, " मैं ने पिछले साल बेंगलूर गया था । यहाँ " गया था " अकर्मक क्रिया होने के कारण ने प्रत्यय की ज़रूरत नहीं है । इसका विस्तार से विश्लेषण कारक संबन्धी समस्याओं के अन्तर किया गया है ।

<u>अपूर्ण भूतकाल एवं उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया भूतकाल में हो रही थी, पर उसकी समाप्ति का पता न लगे , वह अपूर्ण भूतकाल कहते हैं । जैसे,

वह पढ़ता था । § हिन्दी §
अवन् पठिच्चु कोण्डिरुन्नु । § मलयालम §

अपूर्ण भूतकाल रूप बनाने के लिए लिंग और वचन के अनुसार क्रिया धातु के साथ ता था, ते थे, ती थी, ती थीं तथा रहा था, रहे थे, रही थी, रही थीं जोड़ते हैं । मलयालम में भूतकालिक क्रिया के साथ कोण्डिरुन्नु, कोण्डिरिक्कुकयायिरुन्नु जोड़ते हैं ।

जैसे,

	हिन्दी	मलयालम
1.	जाता था ।	पोयिकोण्डिरुन्नु
2.	जाती थी ।	पोयिकोण्डिरुन्नु
3.	जाते थे ।	पोयिकोण्डिरुन्नु
4.	जाती थीं ।	पोयिकोण्डिरुन्नु
5.	जा रहा था ।	पोयिक्कोण्डिरिक्कुकयायिरुन्नु
6.	जा रही थी ।	पोयिकोण्डिरिक्कुकयायिरुन्नु
7.	जा रहे थे ।	पोयिकोण्डिरिक्कुकयायिरुन्नु
8.	जा रही थीं ।	पोयिकोण्डिरिक्कुकयायिरुन्नु

इसमें ने प्रत्यय जोड़ने की ज़रूरत नहीं है । लेकिन केरल के छात्र अक्सर ने प्रत्यय जोड़ते हैं और कर्म के अनुसार क्रिया का परिवर्तन भी करते हैं । जैसे, " उन्होंने निम्न वर्ग के हिन्दुओं पर अत्याचार करता था । " यहाँ कर्ता के साथ ने प्रत्यय का प्रयोग किया गया है और कर्म के अनुसार क्रिया का परिवर्तन भी किया गया है । सही वाक्य है - " वे निम्न वर्ग के हिन्दुओं पर अत्याचार करते थे । " इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. इन विधाओं ने संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश में चली आ रही थी । {अशुद्ध}

   ये विधाएँ संस्कृत, पाकृत तथा अपभ्रंश में चली आ रही थीं । {शुद्ध}

2. गुप्त जीने द्विवेदी जी को अपने काव्य गुरू मानता था । {अशुद्ध}

   गुप्त जी द्विवेदी जी को अपने काव्य गुरू मानते थे । {शुद्ध}

हेतु हेतुमत भूतकाल और उससे संबन्धित समस्यायें :-

क्रिया के जिस रूप से यह पाया जाता है कि कार्य भूतकाल में होना संभव था, किन्तु किसी कारण से न हो सका, उसे हेतु हेतुमत भूतकाल कहते हैं । जैसे,

अगर लड़का पढ़ता तो पास होता । ‡ हिन्दी ‡
कुट्टि पठिच्चिरुन्नेंकिल पासाकुमायिरुन्नु । ‡ मलयालम ‡

इससे पता चलता है कि वाक्य का पहला भाग कारण तथा दूसरा भाग कार्य को सूचित करता है । कारण के साथ अगर / यदि और कार्य के साथ तो जोड़ता है । इसमें क्रियाधातु के साथ ता, ते, ती जोड़कर क्रिया रूप बनाते हैं । अर्थात् लिंग और वचन के अनुसार ता, ते, ती जोड़ते हैं । मलयालम के लिंग और वचन के अनुसार अलग रूप नहीं है । इसके लिए " आयिरुन्नेंकिल " जोड़ते हैं । इससे प्रभावित होकर कभी कभी वे ता है का प्रयोग भी करते हैं जो सचमुच गलत है । जैसे, "अगर लड़का पढ़ता है तो पास होता है । " यहाँ " है " का प्रयोग गलत है । सही वाक्य है - " अगर लड़का पढ़ता तो पास होता । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. अगर मेरे पास पैसे होता है तो मैं आप को देता है । ‡ अशुद्ध ‡

   अगर मेरे पास पैसे होते तो मैं आप को देता । ‡ शुद्ध ‡

2. यदि वर्षा होता है तो फसल अच्छा होता है । ‡अशुद्ध‡

   यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती । ‡ शुद्ध ‡

भविष्यत् काल और उससे संबन्धित समस्यायें :-

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य भविष्य में हो, वह भविष्य काल है । कामता प्रसाद गुरु के अनुसार जिस क्रियाओं का व्यापार शुरु होना है, उसे भविष्यत् काल कहते हैं ।[1] मलयालम में इसे भावि काल कहते हैं । वह क्रिया व्यापार जो होने वाला है, वह भावि काल है ।[2]

हिन्दी में दो भविष्यत् काल है - सामान्य और संभाव्य ।

सामान्य भविष्यत् काल और उससे संबन्धित समस्यायें :-

क्रिया का वह रूप जिससे सामान्य रीति से क्रिया से क्रिया के आगे होने की सूचना मिले, वह सामान्य भविष्यत् काल है । मलयालम में भी सामान्य भाविकाल नामक भेद है । जैसे,

मैं कल मैसूर जाउँगा । ﴾ हिन्दी ﴿
ञान् नाळे मैसूरिल पोकुम् । ﴾ मलयालम ﴿

सामान्य भविष्यत् काल रूप में पुल्लिंग एकवचन में क्रिया धातु के साथ " एगा " और बहुवचन में " एंगे " जोड़ते हैं । मलयालम में " उम् " जोड़ते हैं । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
जा + एगा = जाएगा ।	पो + उम् = पोकुम् ।
जा + एंगे = जाएंगे ।	पो + उम् = पोकुम् ।

---

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु - पृ. 121
2. केरलपाणिनीयम् केरलपाणिनी - पृ. 198

कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन है तो " एगी " और स्त्रीलिंग बहुवचन है तो " ऐंगी " जोड़ते हैं । जैसे,

जाएगी - पोकुम्
जाएँगी - पोकुम्

मैं कर्ता के रूप में आने से पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग में ऊँगा, ऊँगी जोड़ते हैं । जैसे,

जाऊँगा - पोकुम्
जाऊँगी - पोकुम्

तुम कर्ता के रूप में आने से पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग में क्रमशः ओगे, ओगी जोड़ते हैं । जैसे,

जाओगे - पोकुम्
जाओगी - पोकुम्

ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि मलयालम में हमेशा क्रिया धातुओं में " उम् " जोड़ते हैं । लेकिन हिन्दी में लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार परिवर्तन आता है । इसलिए वे हमेशा इन रूपों के लिए एक ही रूप अर्थात् पुल्लिंग एकवचन का प्रयोग करते हैं । जैसे, " इन कहानियों की भावात्मक नाटकीयता निस्सन्देह हमें चकित भी करेगा । " यहाँ कर्ता स्त्रीलिंग है । इसलिए सामान्य भविष्यत् काल के क्रिया रूप भी स्त्रीलिंग में होने चाहिए । लेकिन मलयालम के एक ही क्रिया रूप से प्रभावित होकर यहाँ पुल्लिंग एकवचन का प्रयोग किया गया है । सही वाक्य है - " इन कहानिओं की भावात्मक नाटकीयता निस्सन्देह हमें चकित भी करेगी । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. जो वस्तु शिव है वह सुन्दर भी होगा । ॥ अशुद्ध ॥
   जो वस्तु शिव है वह सुन्दर भी होगी । ॥ शुद्ध ॥
2. तभी यह विधा संपन्न और समृद्ध हो सकेगा । ॥अशुद्ध॥
   तभी यह विधा संपन्न और समृद्ध हो सकेगी । ॥शुद्ध॥

सामान्य भविष्यत् काल में " मैं " कर्ता होने पर हूँगा, हूँगी तथा " तुम " कर्ता होने पर ओगे और ओगी जोड़ते हैं । यह समस्यायें पैदा करता है । मलयालम में इस प्रकार के भिन्न भिन्न रूप नहीं है । इसलिए केरल के छात्र इसका प्रयोग एकवचन में करते हैं जो गलत है । जैसे, " प्रसंग आयेगा, वैसी ही मैं बात करेगा । " यहाँ कर्ता मैं है, इसलिए उसके साथ केरगा नहीं करूँगा आना चाहिए । सही वाक्य है - " जैसा प्रसंग आयेगा, वैसे ही मैं बात करूँगा । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. मैं उसके पास जाकर उसके भय के कारण का पता करेगा । ॥ अशुद्ध ॥

   मैं उसके पास जाकर उसके भय के कारण का पता करूँगा । ॥ शुद्ध ॥
2. फिर भी तुम इन दोनों को अब अलग करने में कैसे समर्थ हो पायेगा ? ॥ अशुद्ध ॥

   फिर भी तुम इन दोनों को अब अलग करने में कैसे समर्थ हो पाओगे ? ॥ शुद्ध ॥

इन क्रिया रूपों में ऊँगा, ऊँगी, होंगे, होंगी है जिनके ऊपर चन्द्र बिन्दी का प्रयोग हुआ है । मलयालम में इस तरह का रूप नहीं है । इसलिए वे बिन्दी या चन्द्र बिन्दी के बिना इसका

प्रयोग करते हैं । जैसे, " ऐसा न हुआ तो नारी समुदाय से छोटे छोटे विस्फोट समाज में होगे । " यहाँ होंगे के स्थान पर होगे का प्रयोग किया गया है जो गलत है । सही वाक्य है – " ऐसा न हुआ तो नारी समुदाय से छोटे छोटे विस्फोट समाज में होंगे । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं –

1. मैं मूर्ति पूजा में विश्वास करेगा । (अशुद्ध)
   मैं मूर्ति पूजा में विश्वास करूँगा । (शुद्ध)

2. दूसरों से जितना प्रेम करेगे, उनके लिए जितना त्याग करेगे उतना ही उस प्रवृत्ति का परिष्कार होगा ।
   (अशुद्ध)

   दूसरों से जितना प्रेम करेंगे उनके लिए जितना त्याग करेंगे, उतना ही उस प्रवृत्ति का परिष्कार होगा ।
   ((शुद्ध)

3. उससे सामाजिक श्रृंखला की कड़ियाँ चटकने लगेगी ।
   (अशुद्ध)

   उससे सामाजिक श्रृंखला की कड़ियाँ चटकने लगेंगी ।
   (शुद्ध)

4. राजा की नज़रों में इसे गिरकर ही दम लूगा ।
   (अशुद्ध)

   राजा की नज़रों में इसे गिरकर ही दम लूँगा ।
   (शुद्ध)

संभाव्य भविष्यत् काल और उससे संबन्धित समस्यायें :-

संभाव्य भविष्यत् काल के जिस रूप से भविष्यत् की संभावना पायी जाती है वह संभाव्य भविष्यत् काल है । जैसे,

वह आये ।) हिन्दी)
अवन वरट्टे ।) मलयालम)

सामान्य भविष्यत् काल के रूप में जो होगा, होंगे, होगी, होंगी, ऊँगा, ओगा, ओगी है उनमें से " गा " छोड़कर भविष्यत् काल बनाते हैं । जैसे,

आऊँ - वरट्टे
जाए - पोकट्टे ।

यहाँ गा, गे, गी छोड़ते समय बहुवचन रूप में जो बिन्दी तथा मैं कर्ता होते समय " ऊँ " का बिन्दी का प्रयोग छोड़ने की ज़रूरत नहीं है । मलयालम में इस प्रकार के बिन्दी का प्रयोग न होने के कारण वे बिन्दी को छोड़ देते हैं । जैसे, " अब खराब होने की चीज़ों से बचने के उपाय बताए । यहाँ बताए के स्थान पर बताएँ का प्रयोग करना अपेक्षित है । सही वाक्य है - " अब खराब होने की चीज़ों से बचने के उपाय बताएँ । " इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. हम अपनी सभ्यता और संस्कृति को बरकरार रखे ।
) अशुद्ध)
   हम अपनी सभ्यता और संस्कृति को बरकरार रखें ।
) शुद्ध)

2. ऐसा मंगलमय कार्यक्रम गुरुपूजा से प्रारभ कर सके तो दुगुना धन्यता की बात होगी । {अशुद्ध}

ऐसा मंगलमय कार्यक्रम गुरुपूजा से प्रारंभ कर सकें तो दुगुना धन्यता की बात होगी । {शुद्ध}

3. उसके लिए शील और मर्यादा तथा नैतिकता की नई परिभाषाएँ बनायी जाए । {अशुद्ध}

उसके लिए शील और मर्यादा तथा नैतिकता की नई परिभाषाएँ बनायी जाएँ । {शुद्ध}

4. भलाई इसी में है कि मैं यह जंगल छोड़कर कहीं दूसरी जगह चला जाऊ । {अशुद्ध}

भलाई इसी में है कि मैं यह जंगल छोड़कर कहीं दूसरी जगह चला जाऊँ । {शुद्ध}

5. हम दूसरों से प्यार करे और उनके हित के लिए यथा-संभव प्रयत्न करें । {अशुद्ध}

हम दूसरों से प्यार करें और उनके हित के लिए यथा-संभव प्रयत्न करें । {शुद्ध}

<u>हिन्दी और मलयालम में वाच्य और उससे संबन्धित समस्यायें :-</u>

क्रिया व्यापार किसी न किसी प्रकार संपन्न हुआ करता है । कभी उस व्यापार की संपन्नता का स्पष्ट संबन्ध कर्ता से प्रत्यक्षतः दिखाई देता है । जैसे, " गाय घास चर रही है । " कभी परोक्षतः {जैसे, पत्र लिख दिया जाता है} और कभी यह संबन्ध निरपेक्ष होता है {जैसे, यहाँ कैसे बैठा जाए ?} यह संबन्धबोध क्रिया के वाच्य से होता है । कामता प्रसाद गुरु के

अनुसार " वाच्य क्रिया में उस रूपान्तर को कहते हैं जिनसे जाना जाता है कि वाक्य में कर्ता के विषय में विधान किया गया है व कर्म के विषय में अथवा केवल भाव के विषय में । " [1] जैसे,

लड़का दौड़ता है । (हिन्दी)
आण्कुट्टि ओटुन्नु । (मलयालम)
आम खाया जाता है । (हिन्दी)
माङ. तिन्नप्पेटुन्नु । (मलयालम)
मुझ से चला नहीं जाता । (हिन्दी)
एन्ने कोण्ड् नटक्कान पट्टुन्निल्ला । (मलयालम)

हिन्दी में जिसे वाच्य कहते हैं, उसे मलयालम में " प्रयोग " कहते हैं । केरलपाणिनी के अनुसार एक धातु का उपयोग करते समय किस कारक को प्रमुखता दी जाती है उसे कारक में उस धातु का प्रयोग माना जाता है । [2]

हिन्दी में वाच्य के तीन भेद हैं - कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य । मलयालम में प्रमुखतः दो भेद हैं - कर्तरि प्रयोग और कर्मणि प्रयोग । आधुनिक मलयालम वैयाकरणों ने भावे प्रयोग नामक तीसरे भेद की चर्चा भी की है । [3]

---

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु पृ. 217
2. केरल पाणिनीयम् केरलपाणिनी पृ. 26

कर्तृवाच्य और उससे संबन्धित समस्यायें :-

कर्तृवाच्य में क्रिया द्वारा किये गये विधान का मुख्य विषय कर्ता होता है । कर्तृवाच्य (कर्तरि प्रयोग) का अर्थ होता है क्रिया का कर्ता के अनुसार रूप बदलना, अर्थात् क्रिया के रूप कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होना । इसमें कर्ता की प्रधानता होती है और क्रिया का सीधा और प्रधान संबन्ध कर्ता से होता है । जैसे,

लड़का दौड़ता है । (हिन्दी)
कुट्टि ओडुन्नु । (मलयालम)

इसमें क्रिया कर्ता के अनुसार रहती है । इसलिए कर्ता कारक में है । अब तक जितनी भी समस्याओं का जिक्र किया गया है, उसका सम्बन्ध कर्तृवाच्य से है ।

कर्मवाच्य और उससे संबन्धित समस्यायें :-

इसमें क्रिया के विधान का मुख्य उद्देश्य कर्म होता है । " क्रियापद का वह रूप जिससे यह ज्ञात हो कि क्रिया व्यापार वास्तविक कर्ता से परोक्षतः संबन्धित है । "[1] मलयालम में इसे कर्मणि प्रयोग कहते हैं । इसकी परिभाषा यों दी गयी है " कर्म कारक को प्रधानता देनेवाला प्रयोग कर्मणि प्रयोग है ।[2] जैसे,

अर्जुन से कर्ण मारा गया । (हिन्दी)
अर्जुननाल् कर्णन् कोल्लप्पेट्टु । (मलयालम)

---

1. हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण डा. लक्ष्मीनारायण शर्मा - पृ. 305
2. मलयालम व्याकरणवुम् रचनयुं वट्टप्परम्बिल गोपिनाथ - पृ. 67

हिन्दी के वाक्यों के दो भाग है – प्रधान क्रिया और सहायक क्रिया । लेकिन मलयालम में क्रिया का एक ही भाग है ।

हिन्दी में कर्मवाच्य बनाते समय कर्ता के साथ " से " या द्वारा " जोड़कर निर्विभक्तिक कर्म रखा जाता है और कर्तृ वाच्य की प्रमुख क्रिया के सामान्य भूतकाल के साथ कर्मवाच्य के कालानुरूप जा क्रिया का रूप दिया जाता है । जैसे,

1. लड़का रोटी खाता है । ॥ कर्तृवाच्य ॥
   लड़के से रोटी खायी जाती है । ॥ कर्मवाच्य ॥
2. मोहन ने गीत गाया । ॥ कर्तृवाच्य ॥
   मोहन से गीत गाया गया । ॥ कर्मवाच्य ॥
3. मैं आम खाता हूँ । ॥ कर्तृवाच्य ॥
   मुझ से आम खाया जाता है । ॥ कर्मवाच्य ॥
4. लड़कियाँ नाच रही हैं । ॥ कर्तृवाच्य ॥
   लड़कियों से नाचा जा रहा है । ॥ कर्मवाच्य ॥
5. मैं ने पत्र लिखा है । ॥ कर्तृवाच्य ॥
   मुझ से पत्र लिखा जाता है । ॥ कर्मवाच्य ॥
6. चौबदार दौड़ रहे हैं । ॥ कर्तृवाच्य ॥
   चौबदारों से दौड़ा जा रहा है । ॥ कर्मवाच्य ॥
7. लड़के हँस रहे होंगे । ॥ कर्तृवाच्य ॥
   लड़कों से हँस जा रहा होगा । ॥ कर्मवाच्य ॥

हिन्दी के कर्मवाच्य में क्रिया हमेशा कर्म के लिंग, वचन के अनुसार बदलती है ।

मलयालम में कर्ता के साथ " आल् " विभक्ति रखी जाती है और क्रिया के साथ " पेट्टु " शब्द का प्रयोग होता है । जैसे,

1. कुट्टि रोट्टी तिन्नुन्नु - कर्तरि
   § बच्चा रोटी खाता है §

2. कुट्टियाल् रोट्टी तिन्नप्पेट्टुन्नु :- कर्मणी
   § बच्चे से रोटी खायी जाती है । §

हिन्दी के कर्मवाच्य का प्रयोग केरल के छात्रों के लिए समस्यायें पैदा करता है । हिन्दी में कर्मवाच्य का प्रयोग करते समय क्रिया कर्म के लिंग, वचन के अनुसार रहती है । मलयालम में इस प्रकार का प्रयोग नहीं है । इसलिए वे कर्ता के अनुसार क्रिया का प्रयोग कर बैठते हैं । जैसे, " मुस्लिम सिद्धान्त के अनुसार ये तत्व केवल चार माना गया । " यहाँ कर्म "ये तत्व" है जो बहुवचन में है । लेकिन मलयालम के एक ही क्रिया रूपों से प्रभावित होकर छात्रों ने इसका प्रयोग एकवचन में किया है । सही वाक्य है - " मुस्लिम सिद्धान्त के अनुसार ये तत्व केवल चार माने गये हैं । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. मुक्तक काव्य में शृंगार के भावपूर्ण प्रसंगों से लेकर नीति विषय नीरस उपदेश तक संवलित किया जा सकता है ।
   § अशुद्ध §

   मुक्तक काव्य में शृंगार के भावपूर्ण प्रसंगों से लेकर नीति विषयक नीरस उपदेश तक संवलित किए जा सकते हैं ।
   § शुद्ध §

2. अग्नि पुराण में मुक्तक की विशेषता इस प्रकार निर्दिष्ट किया गया है । § अशुद्ध §

अग्नि पुराण में मुक्तक की विशेषता इस प्रकार निर्दिष्ट की गई है । ॥ शुद्ध ॥

3. वियोग के दो भेद किया जाता है । ॥ अशुद्ध ॥
वियोग के दो भेद किये जाते हैं । ॥ शुद्ध ॥

4. इसमें उनकी सहृदयता तथा मनोवृत्तियों को सूक्ष्म चित्रण की बानगी देखा जा सकता है । ॥ अशुद्ध ॥
इसमें उनकी सहृदयता तथा मनोवृत्तियों के सूक्ष्म चित्रण की बानगी देखी जा सकती है । ॥ शुद्ध ॥

5. उसके युग में कुछ मस्जिदें तथा मकबरें बनाया गया था । ॥ अशुद्ध ॥
उसके युग में कुछ मस्जिदें तथा मकबरें बनाए गये थे । ॥ शुद्ध ॥

कभी कभी केरल के छात्र कर्तृवाच्य में भी कर्मवाच्य के क्रिया रूप का प्रयोग करके गलती करते हैं । जैसे, " हमने इसको अनेक भागों में विभाजित किया गया है । यहाँ कर्ताकारक " ने " का प्रयोग हुआ है । इसलिए " किया गया है " प्रयोग के स्थान पर किया है उचित रहेगा । सही वाक्य है - " हमने इसको अनेक भागों में विभाजित किया है । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. आलोचकों ने बिहारी की समीक्षा इस आधार पर की गई है । ॥ अशुद्ध ॥
आलोचकों ने बिहारी की समीक्षा इस प्रकार पर की है । ॥ शुद्ध ॥

2. कवि ने इन में नज़र डाल दी गई है । § अशुद्ध §
कवि ने इनमें नज़र डाली है । § शुद्ध §

हिन्दी और मलयालम में कृदंत और उससे संबन्धित समस्यायें :-

क्रिया के पीछे प्रत्यय जोड़ने से जिस नवीन शब्द की रचना की जाती है, उसे कृदंत कहते हैं ।[1] जैसे, आना, जाना आदि । मलयालम वैयाकरणों ने कृदंत नाम से किसी व्याकरणिक रूप की चर्चा नहीं की है । इसके बदले विविध प्रकार की अपूर्ण क्रियाओं § पट्टुविन § की चर्चा की है । शेषगिरि प्रभु और केरलपाणिनी आदि के व्याकरणों में कृदंत शब्द की चर्चा नहीं है ।

हिन्दी और मलयालम में वर्तमानकालिक कृदंत और उससे संबन्धित समस्यायें :-

इस कृदंत का उपयोग विशेषण व संज्ञा के समान होता है । क्रियाधातु के साथ " ता " जोड़कर वर्तमानकालिक कृदंत बनता है । जैसे,

बहता पानी । § हिन्दी §
ओषुकुन्न वेळ्ळम् । § मलयालम §

मलयालम में इसके लिए पेरच्चं § संज्ञा विशेषण अपूर्ण क्रिया § है ।

वर्तमानकालिक कृदंतों में अकारान्त की तरह विकार होते हैं । जैसे,

चलता लड़का - नटक्कुन्न आण्कुट्टि ।
चलती गाड़ी - ओटुन्न वन्टी ।

1 हिन्दी व्याकरण कामताप्रसाद गुरु पृ 401

चलते लड़के - नटक्कुन्न आण्कुट्टि ।

" ता " के साथ कभी कभी हुआ, हुए और हुई भी जोड़ते हैं । जैसे,

बहता हुआ पानी - ओष़ुक्कोण्टिरिक्कुन्न वेळ्ळम् ।
चलते हुए पंछि - करडि.कोण्टिरिक्कुन्न फान ।
चलती हुई गाड़ी - ओडिकोण्टिरिक्कुन्न वन्टी ।

स्पष्ट है कि मलयालम में इस प्रकार का विकार नहीं होता । इसलिए केरल के छात्र इसका प्रयोग बिना परिवर्तन के करते हैं जो गलत हो जाता है । जैसे, " हमारे देश के बढ़ते जनसंख्या की तरह अहिन्दी भाषी राज्यों में भी इसका विस्तार होता ही जा रहा है । यहाँ जनसंख्या स्त्रीलिंग है । इसलिए उसके पहले आये वर्तमानकालिक कृदंत भी स्त्रीलिंग होना चाहिए । सही वाक्य है - " हम ने देश की बढ़ती जनसंख्या की तरह अहिन्दी भाषी राज्यों में इसका विस्तार होता ही जा रहा है । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. बहता हुआ नदी की पानी पीने योग्य है । {अशुद्ध}
   बहती हुई नदी का पानी पीने योग्य है । {शुद्ध}
2. लड़के बोलता हुआ स्कूल जाता है । { अशुद्ध }
   लड़के बोलते हुए स्कूल जाते हैं । { शुद्ध }

भूतकालिक कृदंत और उससे संबन्धित समस्यायें :-

क्रियाधातु के साथ आ और या जोड़कर इसका रूप बनाया जाता है । कभी कभी इसके साथ हुआ, हुई, हुए जोड़ते हैं ।

जैसे,

मरा हुआ हाथी । - चत्त आना ।
सूखे पत्ते । - उउपडि. य इलकळ् ।
खिले हुए फूल । - विडर्न्न पूक्कळ् ।
जली हुई साड़ी । - कत्तिय सारी ।

स्पष्ट है कि वर्तमानकालिक कृदंतों की तरह भूतकालिक कृदंतों में भी अकारान्त की तरह विकार होता है जबकि मलयालम में इस प्रकार विकार नहीं होता । इसलिए केरल के छात्र-छात्राएँ इसका प्रयोग बिना परिवर्तन के करते हैं जो गलत हो जाता है । जैसे, " ज़मीन पर पडा पुस्तक मेरा है । " यहाँ पुस्तक स्त्रीलिंग है । इसलिए उसके पहले आये कृदंत भी स्त्रीलिंग में होना चाहिए । सही वाक्य है - " ज़मीन पर पड़ी पुस्तक मेरी है । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. मेरा खरीदा हुआ पुस्तक अच्छा है । § अशुद्ध §
   मेरी खरीदी हुई पुस्तक अच्छी है । § शुद्ध §

2. सुना हुआ बात पर विश्वास मत करो । § अशुद्ध §
   सुनी हुई बात पर विश्वास मत करो । § शुद्ध §

3. मैं बेचा हुआ चीज़ वापस नहीं लेता । § अशुद्ध §
   मैं बेची हुई चीज़ वापस नहीं लेता । § शुद्ध §

4. बैठा हुआ लोग डाक्टर को देखकर खडे हो गये ।
   § अशुद्ध §
   बैठे हुए लोग डाक्टर को देखकर खडे हो गये । §शुद्ध§

5. रामचरितमानस तुलसीदास का लिखा हुआ कविता है ।
   § अशुद्ध §

रामचरितमानस तुलसीदास की लिखी हुई कविता है । ﴾ शुद्ध ﴿

कर्तृवाचक कृदंत और उससे संबन्धित समस्यायें :-

क्रियार्थक संज्ञा के विकृत रूप के साथ " वाला " प्रत्यय जोड़कर कर्तृवाचक कृदंत बनाया जाता है । मलयालम में इसके लिए भूतकालिक कृदंत के साथ " अवन् " जुड़कर प्रयुक्त होता है । इस कृदंत का उपयोग संज्ञा अथवा विशेषण के समान होता है और आकारान्त संज्ञा अथवा विशेषण के समान इसका विकार होता है ।

लिखनेवाला कौन है ? ﴾ हिन्दी ﴿

एषुतुन्नवन् आराण् ? ﴾ मलयालम ﴿

विशेष्य के लिंग, वचन के अनुसार इसमें विकार आता है । जैसे,

आनेवाली गाड़ी ﴾ हिन्दी ﴿

वरून्न वण्डी ﴾ मलयालम ﴿

आनेवाले मेहमान ﴾ हिन्दी ﴿

वरून्न अथितिकळ् ﴾ मलयालम ﴿

आनेवाला लड़का ﴾ हिन्दी ﴿

वरून्न आण्कुट्टि ﴾ मलयालम ﴿

उदाहरणों से स्पष्ट है कि मलयालम के कृदंत रूपों में कोई परिवर्तन नहीं होता । इसलिए वे अक्सर वाले और वाली के स्थान पर वाला का प्रयोग करते हैं जो गलत है । जैसे, वहाँ शोर मचानेवाला लड़के कौन कौन हैं ? " इधर विशेष्य ﴾ लड़के ﴿ पुल्लिंग बहुवचन है । इसलिए यहाँ वाला के स्थान पर वाले का

प्रयोग करना है । लेकिन उन्होंने मलयालम के एक रूप के प्रभाव के कारण यहाँ वाला का ही प्रयोग किया है । सही वाक्य है - " वहाँ शोर मचानेवाले लड़के कौन कौन हैं ? " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. नाचने वाला गुडिया टूट गया । (अशुद्ध)
   नाचनेवाली गुडिया टूट गयी । (शुद्ध)
2. दूध देने वाला गाय को चोर ले गया । (अशुद्ध)
   दूध देने वाली गाय को चोर ले गया । (शुद्ध)
3. मेरे पिताजी कल यहाँ आनेवाला है । (अशुद्ध)
   मेरे पिताजी कल यहाँ आनेवाले हैं । (शुद्ध)
4. आज मेरे माँ-बाप आनेवाला है । (अशुद्ध)
   आज मेरे माँ-बाप आनेवाले हैं । (शुद्ध)

अपूर्णक्रियाद्योतक कृदंत और उससे संबन्धित समस्यायें :-

यह वर्तमानकालिक कृदंत का ही एक रूप है । लेकिन यह अविकारी है । वर्तमानकालिक कृदंत के " ता " को " ते " करने से अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत बनता है । इससे मुख्य क्रिया के साथ होने वाले व्यापार की अपूर्णता सूचित होती है । जैसे,

मुझे घर लौटते रात हो गयी । (हिन्दी)
ञान् वीट्टिल एत्तियप्पोषेक्कुम् रात्रियायि । (मलयालम)

केरल के छात्र अक्सर " ते " के स्थान पर " ता " का प्रयोग करके गलतियाँ कर बैठते हैं । जैसे, " पिंगलक ने दूर से ही दमनक को आता देख लिया । " यहाँ आता का प्रयोग गलत है ।

इसके स्थान पर आते का प्रयोग सही है । सही वाक्य है - "पिंगलक ने दूर से ही दमनक को आते देख लिया ।" इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. संजीवक को उस दशा में छोडता बडी पीडा हो रही थी । ﴾अशुद्ध﴿
   संजीवक को उस दशा में छोडते बडी पीडा हो रही थी । ﴾शुद्ध﴿
2. सुधा ने जाता समय कुछ नहीं कहा । ﴾अशुद्ध﴿
   सुधा ने जाते समय कुछ नहीं कहा । ﴾शुद्ध﴿

अपूर्ण क्रिया द्योतक कृदंत की द्विरुक्ति हो सकती है । जैसे
बातें करते करते वह थक गया । ﴾हिन्दी﴿
संसारिच्चें संसारिच्चें अवन्‌ क्षीणिच्चु पोयि । ﴾मलयालम﴿

यहाँ भी वे ते के स्थान पर ता का प्रयोग करते हैं । जैसे,

1. मोहन काम करता करता थक गया । ﴾अशुद्ध﴿
   मोहन काम करते करते थक गया । ﴾शुद्ध﴿
2. सुधा पढती पढती सो गया । ﴾अशुद्ध﴿
   सुधा पढते पढते सो गयी । ﴾शुद्ध﴿
3. सोचता सोचता सबेरा हो गया । ﴾अशुद्ध﴿
   सोचते सोचते सबेरा हो गया । ﴾शुद्ध﴿
4. नौ बजता बजता खाना शुरू हुआ । ﴾अशुद्ध﴿
   नौ बजते बजते खाना शुरू हुआ । ﴾शुद्ध﴿
5. घर पहुँचता पहुँचता ग्यारह बज गया । ﴾अशुद्ध﴿
   घर पहुँचते पहुँचते ग्यारह बज गया । ﴾शुद्ध﴿
6. खेलता खेलता वह थक गया । ﴾अशुद्ध﴿
   खेलते खेलते वह थक गया । ﴾शुद्ध﴿

पूर्वक्रियाद्योतक कृदंत और उससे संबन्धित समस्यायें :-

इस कृदंत से बहुधा मुख्य क्रिया के साथ होने वाले व्यापार की पूर्णता का बोध होता है । पूर्व क्रियाद्योतक कृदंत अव्यय होता है और भूतकालिक कृदंत के अन्य " आ " को " ए " आदेश करने से ही इसका प्रयोग होता है । मलयालम में भूतकालिक रूप के आगे " इण्ड " जोड़कर इसका रूप बनाया जा सकता है । जैसे,

किए - चेय्तिट्ट
गए - पोयिट्ट
इतनी रात गए तुम क्यों आये ? (हिन्दी)
इत्र रात्रियायिट्ट निङ्ङळ् एन्तिनु वन्नु । (मलयालम)

यहाँ भी कभी कभी वे भूतकालिक कृदंत का रूप करके गलतियाँ कर बैठते हैं । जैसे, " माँ के बुलाया वह आ गया । " यहाँ " बुलाये " के स्थान पर " बुलाया " का प्रयोग किया गया है जो गलत है । सही वाक्य है - " माँ के बुलाये वह आ गया । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. उन्हें यहाँ से गया दो महीने हुए । (अशुद्ध)
   उन्हें यहाँ से गये दो महीने हुए । (शुद्ध)
2. मुझे घर आया दो दिन हुए । (अशुद्ध)
   मुझे घर आये दो दिन हुए । (शुद्ध)
3. वह लड़की यहाँ बैठी बैठी थक गयी थी । (अशुद्ध)
   वह लड़की यहाँ बैठे बैठे थक गयी थी । (शुद्ध)
4. मेरा गया बिना काम नहीं बन सकता था । (अशुद्ध)
   मेरे गए बिना काम नहीं बन सकता था । (शुद्ध)

तात्कालिक कृदंत और उससे संबन्धित समस्यायें :-

इस कृदंत से मुख्य क्रिया के साथ ही होने वाली घटना का बोध होता है । यह अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत के अन्त में ही जोड़ने से बनता है । जैसे,

लड़का मुझे देखते ही छिपा जाता है । § हिन्दी §
आण्कुट्टि एन्ने कण्डयुटने तन्ने ओळिच्चु कळञ्ञु । §मलयालम§

मलयालम में इसके समानार्थी है तनविनयेच्चम् । जैसे,

ञान् परयवे तन्ने अवन् केट्टु । § मलयालम §
मेरे कहते ही वे सुने । § हिन्दी §

इस तरह के प्रयोग आधुनिक मलयालम में कम चलते हैं । बोलचाल की भाषा में बिलकुल नहीं है । उसके स्थान पर भविष्य काल रूप के साथ काल सूचक " पोल " प्रत्यय जोड़कर रूप बनाये जाते हैं जिनको कृदंत नहीं मान सकते । जैसे,

ञान् परयुम्पोल तन्ने अवन् केट्टु । § मलयालम §
मेरे कहते ही उसने सुना । § हिन्दी §

इसके प्रयोग के सम्बन्ध में भी वे गलतियाँ करते हैं । " ते ही " के स्थान पर अक्सर " ता ही " का प्रयोग करते हैं । जैसे, " भोर होता ही सारा रक्षक वहाँ से भागे । यहाँ " होते ही " के स्थान पर " होता ही " का प्रयोग किया है जो गलत है । सही वाक्य है - " भोर होते ही सारे रक्षक वहाँ से भागे । " इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. कील हटता ही कुंदे के दोनों खंड जोर से जुड गया ।
§ अशुद्ध §

कील हटते ही कुंदे के दोनों खंड ज़ोर से जुड गये ।
§ शुद्ध §

2. बच्चा भिखारी को देखता ही भाग गया । §अशुद्ध§
बच्चे भिखारी को देखते ही भाग गया । § शुद्ध §

3. लड़कियाँ मेरी बात सुनता ही हँस पडी । §अशुद्ध§
लड़कियाँ मेरी बात सुनते ही हँस पडी । § शुद्ध §

4. गिरता ही चश्मा टूट गया । § अशुद्ध §
गिरते ही चश्मा टूट गया । § शुद्ध §

5. बिजली आती ही पँखे चलने लगे । § अशुद्ध §
बिजली आते ही पँखे चलने लगे । § शुद्ध §

6. देखता ही देखता चोर गायब हो गया । § अशुद्ध §
देखते ही देखते चोर गायब हो गया । § शुद्ध §

पूर्वकालिक कृदंत :-

पूर्वकालिक कृदंत धातु के अन्त में के, कर और करके लगाकर बनाया जाता है । यह क्रिया की भाँति सकर्मक और अकर्मक हो सकती है । जैसे,

लिख के, लिख कर, लिख करके § एषुति § । जैसे,

प्रमोद खाना खाकर स्कूल गया । § हिन्दी §
प्रमोद भक्षणम् कषिच्चुं स्कूळिल् पोयी । § मलयालम §

इसके समानार्थी मलयालम कृदंत हैं मुनविनयेच्चम् । पूर्व क्रिया के पहले पूर्ण होने वाली क्रिया को सूचित करने वाला कृदंत है मुनविनयेच्चम् । यह प्राय: क्रियाओं का भूतरूप ही है । याने

यह आगे क्रिया के पहले होने वाली क्रिया को सूचित करता है ।

केरलपाणिनी के अनुसार मुनविनयेच्चम् दिखाने के लिए पूर्ण क्रिया के भूतकाल रूप को दुर्बलान्त करके बनाया जाता है । [1] उनके मतानुसार क्रिया के दुर्बल रूप बनाने के लिए संवृतीकरण, विवृतीकरण आदि को स्वीकार करना चाहिए । जैसे,

ञड्ङळ् इविटे वन्नु चेन्नु । (संवृतीकरण)
हम यहाँ आ पहुँचे ।
ञान् अविटे चेन्नु नोक्की । (विवृतीकरण)
मैं ने वहाँ जाके देखा ।

मुनविनयेच्चं का प्रत्यय " इ " या " उ " है । इनके साथ विकल्प रूप में " इट्टु " भी आ सकता है । तब अर्थ स्वतः " के बाद " होता है ।

यहाँ पूर्वकालिक कृदंत के बाद मुख्य क्रिया आती है । मुख्य क्रिया के आधार पर कर्ता के साथ प्रत्यय जोड़ते हैं । लेकिन कभी कभी वे यदि पूर्वकालिक कृदंत सकर्मक है तो कर्ता के साथ " ने " प्रत्यय जोड़ते हैं चाहे मुख्य क्रिया अकर्मक ही क्यों न हो । जैसे, " प्रमोद ने खाना खाकर स्कूल गया । " यहाँ मुख्य क्रिया " गया " है । लेकिन " खाना " सकर्मक क्रिया होने के कारण कर्ता के साथ " ने " प्रत्यय जोड़ा गया है जोकि गलत है । सही वाक्य है - " प्रमोद खाना खाकर स्कूल गया । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. लड़कों ने शोर सुनकर चौक पडा । (अशुद्ध)

---

1. केरलपाणनीयम् केरलपाणिनी - पृ. 26 ।

लड़के ने शोर सुनकर चौंक पड़ा । ¤ शुद्ध ¤

2. अम्बिका ने नयी साडी पहनकर कालेज गयी । ¤अशुद्ध¤
अम्बिका नयी साड़ी पहनकर कालेज गयी । ¤ शुद्ध ¤

3. लड़के ने नाश्ता करके स्कूल गया । ¤ अशुद्ध ¤
लड़का नाश्ता करके स्कूल गया । ¤ शुद्ध ¤

4. हम ने एक बार जंगल में होकर किसी गाँव को जाते थे । ¤ अशुद्ध ¤
हम एक बार जंगल में होकर किसी गाँव में जाते थे । ¤ शुद्ध ¤

5. मैं ने खाना खाकर अखबार पढ़ता था । ¤ अशुद्ध ¤
मैं खाना खाकर अखबार पढ़ता था । ¤ शुद्ध ¤

समस्याओं का निराकरण :-

केरल के छात्र-छात्राओं के सामने उपस्थित होने वाली क्रिया सम्बन्धी समस्यायें हिन्दी और मलयालम की क्रियाओं का तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन से दूर किया जा सकता है ।

केरल के हिन्दी अध्ययन में अन्य व्याकरणिक अंगों के समान दोनों भाषाओं का सम्यक रूप से तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी विश्लेषण अनिवार्य है । साथ ही साथ कुछ सावधानी बरतकर उसका अध्ययन करने की भी आवश्यकता है । क्रिया की पद व्याख्या करके क्रिया का अध्ययन करना भी ज़रूरी है । क्रिया की पदव्याख्या निम्नानुसार करनी चाहिए ।

¤ 1 ¤ प्रकार ¤ क ¤ सकर्मक

(ख) अकर्मक

(ग) द्विकर्मक

(घ) प्रेरणार्थक

(2) वाच्य

(क) कर्तृवाच्य

(ख) कर्मवाच्य

(ग) भाववाच्य

(3) काल

(क) वर्तमानकाल

(ख) भूतकाल

(ग) भविष्यत्काल

(4) वचन

(क) एकवचन

(ख) बहुवचन

(5) लिंग

(क) पुल्लिंग

(ख) स्त्रीलिंग

(6) सम्बन्ध - कर्ता तथा कर्म से सम्बन्ध बताना ।

उदाहरण - " राम खाना खा रहा था । इसमें " खा रहा था " क्रिया है । इसकी पदव्याख्या निम्नानुसार करनी है -

खा रहा था - (1) सकर्मक क्रिया

§ 2 § कर्तृवाच्य

§ 3 § अपूर्ण भूतकाल

§ 4 § एकवचन

§ 5 § पुल्लिंग

§ 6 § इस क्रिया का कर्ता " राम " है । क्रिया इसके अनुसार है ।

निष्कर्ष :-

हिन्दी और मलयालम की क्रियाओं के सांगोपांग विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि दोनों भाषाओं के क्रिया संबन्धी नियम एवं प्रयोग जहाँ जहाँ थोडी समानताएँ दिखाते हैं तो उससे भी अधिक विषमताओं से युक्त हैं । जब तक केरल में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र हिन्दी और मलयालम की क्रिया संबन्धी इन व्याकरणिक प्रवृत्तियों का सम्यक् रूप से तुलनात्मक विश्लेषण एवं अध्ययन न करें तब तक वे इन विशेष प्रवृत्तियों से अवगत नहीं रहते । ऐसी हालत में कई समस्यायें पैदा होने की संभावनाएँ हैं । उदाहरणों के ज़रिए यह साबित हो जाता है कि इन विद्यार्थियों के द्वारा कई गलतियाँ प्रयोग में होती रहती हैं और उन्हें इन गलतियों से अवगत कराना अत्यन्त आवश्यक रह जाता है । व्याकरणिक नियमों एवं प्रयोगों के ज़रिए यह किया जाय तो औसतन विद्यार्थी ऐसी गलतियों को समझ कर उनसे दूर रहने का प्रयत्न करते हैं और सफल भी हो जाते हैं । क्रिया के विभिन्न रूपों से संबन्धित इस प्रकार की समस्याएँ उनका विश्लेषण एवं इन समस्याओं का समाधान ही प्रस्तुत अध्याय का विषय रहा ।

छठा अध्याय

केरल में हिन्दी अध्ययन की अव्यय संबन्धी समस्यायें

शब्दों में कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका लिंग, वचन और कारक के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं होता । उन्हें हिन्दी में अव्यय कहा जाता है । किसी किसी के अनुसार वाक्य में वे शब्द या शब्दांश अव्यय कहलाते हैं जिनकी मूलावस्था में वाक्य स्तर पर कोई विकार नहीं होता, अर्थात उन्हें रूपान्तर की प्रक्रिया प्रभावित नहीं करती ।[1] जैसे, सहित, भी, केवल आदि । कामता प्रसाद गुरू के अनुसार,"जिस शब्द के रूप में कोई विकार नहीं होता, उसे अव्यय कहते हैं ।"[2] हिन्दी में क्रिया विशेषण, संबन्धसूचक, समुच्चय बोधक और विस्मयादि बोधक अव्यय हैं ।

मलयालम में इसके समान "द्योतकम्" नामक भेद मिलता है जो शब्दों के बीच का संबन्ध दिखानेवाला शब्द है । केरल पाणिनी ने मलयालम में शब्द के "वाचकम्" और "द्योतकम्" नामक भेदों की चर्चा की है ।[3] स्वतंत्र अर्थ देने वाला शब्द मलयालम में "वाचकम्" है । नामम् (संज्ञा), कृति (क्रिया) और भेदकम (विशेषण) मलयालम के वाचकम है जो हिन्दी के विकारी शब्द है ।

---

1. हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण:डा. लक्ष्मीनारायण शर्मा पृ 327
2. हिन्दी व्याकरण: कामता प्रसाद गुरू. पृ.
3. शब्दशोधिनी - केरल पाणिनी - पृ ।।

शब्दों के बीच का संबन्ध दिखानेवाला शब्द ही मलयालम के द्योतकम् हैं । द्योतकम् ही हिन्दी के अविकारी शब्द हैं । मलयालम में द्योतकम् के अव्यय और निपात नामक दो भेद हैं । केवल संबन्ध दिखानेवाला द्योतकम् ही निपातम् है । [1] अर्थ लुप्त होकर द्योतकम् बनने वाला शब्द अव्यय है । ए. शेषगिरी प्रभु ने इसकी परिभाषा यों की है - आख्या [Subject] और आख्यातम् [Predicate] के रूप में रहने की शक्ति जिन शब्दों में नहीं है, उन्हें अव्यय कहते हैं । [2] द्योतकम् तीन प्रकार हैं - गति, घटकम् और व्याक्षेपकम् । गति हिन्दी का संबन्ध सूचक है, घटकम् हिन्दी का समुच्चय बोधक है और व्याक्षेपकम् विस्मयादि बोधक है । आगे इन अव्ययों {द्योतकम} से संबन्धित समस्याओं का विश्लेषण किया जा रहा है ।

<u>क्रिया विशेषण और उससे संबन्धित समस्यायें</u>

जो शब्द क्रिया के अर्थ में विशेषता प्रकट करते हैं, वे क्रिया विशेषण कहलाते हैं । कामता प्रसाद गुरू के अनुसार, "जिस अव्यय से क्रिया की विशेषता जानी जाती है, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं । [3] जैसे, यहाँ, जल्दी, धीरे आदि । ए शेषगिरी प्रभु ने इसकी परिभाषा यों की है - "क्रिया के समय स्थान, प्रकार, परिमाण, समानता, गुण, निश्चय और कारण आदि अर्थ व्यक्त करने वाला शब्द क्रिया विशेषण है । [4] जैसे, वेगम {जल्दी} इप्पोल् {अब} आदि । स्पष्ट है कि एक ही बात को दोनों भाषाओं में भिन्न भिन्न प्रकार से अभिव्यक्त किया है ।

---

1. आधुनिक व्याकरणवुम रचनयुम्-वट्टपरम्बिल गोपिनाथन पिल्लै - पृ 23
2. व्याकरणमित्रम - ए. शेषगिरी प्रभु - पृ 12
3. हिन्दी व्याकरण कामताप्रसाद गुरु - पृ 117
4. व्याकरणमित्रम् शेषगिरी प्रभु पृ 12

मलयालम में क्रिया विशेषण का वर्गीकरण नहीं किया गया है । हिन्दी में इसका तीन आधार पर वर्गीकरण किया गया है - प्रयोग, रूप और अर्थ । प्रयोग के आधार पर क्रिया विशेषण के तीन भेद है - साधरण क्रिया विशेषण (इनका प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र रूप में होता है), संयोजक क्रिया विशेषण (इनका संबन्ध किसी उपवाक्य से रहता है) और अनुबन्ध क्रिया विशेषण (इनका प्रयोग अवधारण के लिए किसी भी शब्द भेद के साथ होता है) । अर्थ के आधार पर चार चार भेद किए जा सकते हैं - कालवाचक, स्थानवाचक रीतिवाचक और परिमाण वाचक । रूप के आधार पर क्रिया विशेषण तीन प्रकार के होते हैं - मूल, यौगिक और स्थानीय । इन क्रिया विशेषणों से संबन्धित समस्याओं का विश्लेषण निम्न प्रकार से किया जा सकता है ।

<u>क्रिया विशेषण के साथ अनावश्यक प्रत्यय जोड़कर प्रयुक्त करने से उत्पन्न समस्यायें</u>

कुछ क्रिया विशेषणों के साथ हिन्दी में किसी प्रत्यय का प्रयोग नहीं होता । अर्थात् उनका प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र रूप में होता है । लेकिन इसके समानार्थी मलयालम विशेषण के साथ प्रत्यय का प्रयोग होता है । जैसे,

यह काम <u>जल्दी</u> करो । (हिन्दी)

ई जोलि वेगत्तिल चेय्यू । (मलयालम)

यहाँ जल्दी (हिन्दी में) और वेगत्तिल (मलयालम में) क्रिया विशेषण है । मलयालम में क्रिया विशेषण के साथ अधिकरण

प्रत्यय जुड़कर प्रयुक्त हुआ है जबकि हिन्दीमेंइसके साथ प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ है। मलयालम की इसी प्रवृत्ति के कारण छात्र हिन्दी में भी प्रत्यय का प्रयोग करते हैं। जैसे, "उधर यमुना तट की शीतल बयार से संजीवक धीरे धीरे में स्वस्थ हो चला।" इधर धीरे धीरे, जो कि क्रिया विशेषण है, के बाद "में" प्रत्यय मलयालम के प्रभाव के कारण आ गया है जो सचमुच गलत है। सही वाक्य है -"उधर यमुना तट की शीतल बयार से संजीवक धीरे धीरे स्वस्थ हो चला।" इस प्रकार के अन्य उदाहरण है -

1. अब वह प्राय: इधर उधर में भटकता रहता था। (अशुद्ध)
   अब वह प्राय: इधर उधर भटकता रहता था। (शुद्ध)
2. वह घने जंगल के बीच एक वट वृक्ष के नीचे में बैठ गया। (अशुद्ध)
   वह घने जंगल के बीच एक वट वृक्ष के नीचे बैठ गया। (शुद्ध)
3. किन्तु वे सदा वनराज पिगंलक के आगे पीछे में ही रहते थे। (अशुद्ध)
   किन्तु वे सदा वनराज पिगंलक के आगे पीछे में ही रहते थे। (शुद्ध)
4. वह खडों के बीचों बीच में बैठ गया। (अशुद्ध)
   वह खडों के बीचों बीच बैठ गया। (शुद्ध)
5. यही सोचता सोचता वह लौटकर पिगलंक के पास में पहुँचा। (अशुद्ध)
   यही सोचता सोचता वह लौटकर पिगंलक के पास पहुँचा। (शुद्ध)

6. विपत्तियाँ तो आगे में आयेगी । (अशुद्ध)
   विपत्तियाँ तो आगे आयेगी । (शुद्ध)
7. सुख के दिन पीछे में रह गया । (अशुद्ध)
   सुख के दिन पीछे रह गये । (शुद्ध)
8. नीचे में रखा है । (अशुद्ध)
   नीचे रखा है । (शुद्ध)
9. वह अचानक में आ धमका (अशुद्ध)
   वह अचानक आ धमका । (शुद्ध)
10. चोर जल्दी में भाग गया । (अशुद्ध)
    चोर जल्दी भाग गया । (शुद्ध)

संयोजक क्रिया विशेषण "जहाँ तक.....वहाँ तक" सम्बन्धी समस्यायें

"जहाँ तक........वहाँ तक" कभी कभी केरल के छात्रों के सामने समस्याएँ उपस्थित करती हैं । एक उदाहरण से इ स्पष्ट किया जा सकता है ।

जहाँ तक दृष्टि जाती है वहाँ तक रेगिस्तान है । (हिन्दी)
एविटवरे दृष्टि एन्तुन्नुवो अविटवरे मरुभूमियाण् (मलयालम)

यहाँ मलयालम में "जहाँ तक" के लिए "एविटेवरे" शब्द का प्रयोग किया गया है । हिन्दी में "एविटे" के लिए "कहाँ" शब्द प्रयुक्त होता है । केरल के छात्र अकसर "जहाँ तक" के स्थान पर "कहाँ तक" का प्रयोग करते हैं । जैसे, कहाँ तक अभी समुद्र है, वहाँ तक किसी समय घने जगल था ।" यहाँ उन्होंने "एविटवरे" के समानार्थी शब्द कहाँ तक" का प्रयोग किया है जो गलत है । सही वाक्य है -"जहाँ तक अभी समुद्र है वहाँ

तक किसी समय घने जंगल था ।" इस प्रकार का एक और उदाहरण है - कहाँ तक दृष्टि जाती है वहाँ तक रेगिस्थान है ।" यहाँ भी "जहाँ तक" के स्थान पर "कहाँ तक" का प्रयोग किया गया है । सही वाक्य है - "जहाँ तक दृष्टि जाती है वहाँ तक रेगिस्थान है ।"

संयोजक क्रियाविशेषण जब तक.......तब तक संबन्धी समस्यायें

"जहाँ तक........वहाँ तक" की तरह "जब तक....तब तक" भी अकसर केरल के छात्रों के लिए समस्यायें उत्पन्न करता है । उदाहरण से यह स्पष्ट किया जा सकता है :-

जब तक मेरे मन में प्राण तब तक मैं जिन्दा रहूँगा । (हिन्दी)
एप्पोळ् वरे एन्टे शरीरत्तिल प्राणुन्टो अप्पोल वरे ञान् जीविच्चिरिक्कुम् (मलयालम)

यहाँ मलयालम में "जब तक" के लिए "एप्पोल वरे" का प्रयोग किया गया है । हिन्दी में "एप्पोल" के लिए कब शब्द प्रयुक्त होता है । केरल के छात्र अकसर "जब तक" के स्थान पर "कब तक" का प्रयोग करते हैं । जैसे, कब तक तुम राजा का खून पी नहीं लोगे, तब तक मैं खून नहीं पीऊँगा । यहाँ "एप्पोल वरे" के समानार्थी शब्द "कब तक" का प्रयोग किया गया है जो गलत है । सही वाक्य है - "जब तक तुम राजा का खून पी नहीं लोगे तब तक मैं खून नहीं पीऊँगा ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं ।

1. कब तक मैं न जाऊँ तब तक तुम तो सावधान होकर यही रहना । (अशुद्ध)
   जब तक मैं न जाऊँ तब तक तुम तो सावधान होकर यहीं रहना । (शुद्ध)

2. कब तक स्वामी नहीं लौटते तब तक तुम ऊँट का माँस
खाकर अपनी भूख मिटा लो । {अशुद्ध}
जब तक स्वामी नहीं लौटते तब तक तुम ऊँट का माँस
खाकर अपनी भूख मिटा लो । {शुद्ध}

<u>क्रिया विशेषण प्रत्यय के बिना प्रयुक्त होने से उत्पन्न समस्यायें</u>

दिन, रात, तारीख तथा हफ्ता के नाम के साथ हिन्दी में को प्रत्यय आता है जबकि मलयालम में इस तरह के शब्दों के साथ कोई प्रत्यय नहीं जुडता । जैसे

पिताजी शनिवार को आएँगे {हिन्दी}
अच्छन् शनियाष्च्च वरुम् । {मलयालम}

इसी भिन्नता के कारण केरल के छात्र इन शब्दों का प्रयोग विभक्ति के बिना ही करते हैं जो हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुसार गलत है । जैसे "दस तारीख नाटक होगा ।" इसका मलयालम अनुवाद है - पत्तां <u>तीयती</u> नाटकं उण्डावुम ।" मलयालम में तारीख के लिए प्रयुक्त शब्द है "तीयती" जिसके साथ यहाँ कोई प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ है । इसलिए यहाँ हिन्दी में भी बिना प्रत्यय प्रयुक्त किया गया है जो गलत है । सही वाक्य है - "दस तारीख को नाटक होगा ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. वह दोपहर आती है । {अशुद्ध}
वह दोपहर को आती है । {शुद्ध}
2. राधा ने सोमवार पत्र लिखा । {अशुद्ध}
राधा ने सोमवार को पत्र लिखा । {शुद्ध}
3. बाबू रात काम करता है । {अशुद्ध}
बाबू रात को काम करता है । {शुद्ध}

4. गणेश पन्द्रहवीं तारीख आया । §अशुद्ध§
   गणेश पन्द्रहवीं तारीख को आया । §शुद्ध§
5. शनिवार छुट्टि है । §अशुद्ध§
   शनिवार को छुट्टि है । §शुद्ध§

__क्रिया विशेषण के साथ एक प्रत्यय के स्थान पर दूसरे प्रत्यय का प्रयोग करने से उत्पन्न समस्यायें__

हिन्दी में जब महीने तथा ऋतुओं के नाम क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं तब उसके साथ "में" विभक्ति प्रत्यय आता है और मलयालम में इल् प्रत्यय आता है । अर्थात् दोनों में अधिकरण प्रत्यय का प्रयोग होता है । जैसे,

फूल वसन्त में खिलते हैं । §हिन्दी§
वसन्तत्तिल पूक्कळ् विरियुन्नु । §मलयालम§

यहाँ दोनों में अधिकरण कारक का ही प्रयोग किया गया है । लेकिन कभी कभी केरल के छात्र इसी सन्दर्भ में "में" के स्थान पर "को" का प्रयोग अनजाने में ही करते हैं । जैसे, ओणम् का त्योहार श्रावण के महिने को आता है । यहाँ "महीने" के साथ "को" का प्रयोग अनजाने में ही किया गया है । सही वाक्य है - "ओणम का त्योहार श्रावण के महीने में आता है ।" इस प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण हैं -

1. ग्रीष्म को वर्षा नहीं होती । §अशुद्ध§
   ग्रीष्म में वर्षा नहीं होती । §शुद्ध§

2. मकान जून को तैयार हुआ । {अशुद्ध}

मकान जून में तैयार हुआ । {शुद्ध}

तिथि के साथ आने वाले महीने तथा वर्ष जब क्रिया विशेषण के रूप में हिन्दी में प्रयुक्त होता है तब उसके साथ "को" प्रत्यय जोड़ा जाता है । मलयालम में इसके लिए "नें" जोडा जाता है । जैसे,

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ । {हिन्दी}

1947 अगस्त 15 नें भारतं स्वतंत्रमायि । {मलयालम}

यहाँ भी वे इसके साथ "में" प्रत्यय जोडकर गलती कर बैठते हैं । जैसे, "30 जनवरी 1948 में गान्धीजी की हत्या हुई ।" यहाँ महीने के तथा वर्ष के बाद को का प्रयोग किया गया है जो गलत है । सही वाक्य है - 30 जनवरी 1948 को गान्धीजी की हत्या हुई । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. अगस्त चौदह सन् 1947 में नेहरूजी ने तिरंगा फहराया । {अशुद्ध}

अगस्त चौदह सन् 1947 को नेहरूजी ने तिरंगा फहराया । {शुद्ध}

2. अज्ञेय जी का जन्म 7 मार्च सन् 1911 में उत्तर प्रदेश के शिविर जिला देवरिया के कसियान नामक गाँव में हुआ था । {अशुद्ध}

अज्ञेय जी का जन्म 7 मार्च सन् 1911 को उत्तर प्रदेश के शिविर जिला देवरिया के कसियान नामक गाँव में हुआ था । {अशुद्ध}

3. उनका जन्म 30 जनवरी 1972 में हुआ । {अशुद्ध}

उनका जन्म 30 जनवरी 1972 को हुआ । {शुद्ध}

4. 23 मई 1962 में उनका देहान्त हुआ । (अशुद्ध)

23 मई 1962 को उनका देहान्त हुआ । (शुद्ध)

5. 26 जनवरी 1950 में यहाँ प्रजातंत्र शासन लागू हो गया । (अशुद्ध)

26 जनवरी 1950 को यहाँ प्रजातंत्र शासन लागू हो गया । (शुद्ध)

अधिकांश रीति वाचक क्रिया विशेषण के साथ से प्रत्यय आता है । जैसे

वह सरलता से पढ़ने लगा । (हिन्दी)

अवन् एळुप्पत्तिल् पठिक्कान् तुडङि (मलयालम)

यहाँ हिन्दी में करण कारक प्रत्यय (से) का प्रयोग हुआ है जबकि मलयालम में अधिकरण कारक का । इसलिए कभी कभी वे जहाँ से प्रत्यय जोड़ना है वहाँ "में" प्रत्यय जोड़कर गलती करते हैं । जैसे, "इन वाक्यों को ध्यान में पढ़िए ।" यहाँ ध्यान के साथ "में" प्रत्यय जोडा गया है जो गलत है । सही वाक्य है - "इन वाक्यों को ध्यान से पढ़िए ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. नौकर सावधानी में काम करता है । (अशुद्ध)

नौकर सावधानी से काम करता है । (शुद्ध)

2. ये लड़कियाँ अनिच्छा में पढ़ रही है । (अशुद्ध)

ये लड़कियाँ अनिच्छा से पढ़ रही है । (शुद्ध)

3. वह कठिनता में आ पाया । (अशुद्ध)

वह कठिनता से आ पाया । (शुद्ध)

4. वह सरलता में पढ़ने लगा । (अशुद्ध)

वह सरलता से पढ़ने लगा । (शुद्ध)

कभी कभी हिन्दी के रीति वाचक क्रिया विशेषणों के साथ "पूर्वक" आता है और मलयालम में "पूर्वम्" आता है जो उसकी पूर्णता का बोध करता है । जैसे

हिन्दी	मलयालम
ध्यान पूर्वक	श्रद्धापूर्वम्
स्नेह पूर्वक	स्नेह पूर्वम्

यहाँ स्नेह पूर्वक में स्नेह का पूर्ण होने का बोध होता है । ध्यान पूर्वक में ध्यान नामक भाव का पूर्ण रूप से होने का बोध होता है । इसलिए वे कभी कभी पूर्वक के स्थान पर पूर्ण का प्रयोग करके गलती कर बैठते हैं । जैसे, "माताजी प्रेम पूर्ण बोल रही है ।" यहाँ प्रेम का भाव पूर्ण रूप से द्योतित करने के लिए प्रेम के साथ पूर्ण का प्रयोग किया गया है जो गलत है । सही वाक्य है " माताजी प्रेमपूर्वक बोल रही है ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. नौकरानी ध्यानपूर्ण इडली बना रही है । (अशुद्ध)
   नौकरानी ध्यान पूर्वक इडली बना रही है । (शुद्ध)
2. पुजारी श्रद्धा पूर्ण पूजा कर रहा है । (अशुद्ध)
   पुजारी श्रद्धा पूर्वक पूजा कर रहा है । (शुद्ध)

अन्य समस्यायें

जोर देने के लिए रीतिवाचक क्रिया विशेषणों के साथ हिन्दी में "ही" और मलयालम में "तन्ने" जोडते हैं । लेकिन हिन्दी में "ही" जोडने से कुछ परिवर्तन होता है जबकि मलयालम में कोई परिवर्तन नहीं होता । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
अब + भी = अभी	इप्पोल + तन्ने= इप्पोलत्तन्ने
वह + भी = वहीं	अविटे + तन्ने = अविटेत्तन्ने

मलयालम की प्रवृत्ति से अवगत होने के कारण वे बिना परिवर्तन के इसका प्रयोग करते हैं । जैसे, "गाड़ी अब ही आ गई ।" यहाँ अब और ही को अलग अलग और बिना परिवर्तन के प्रयुक्त किया गया है । सही वाक्य होना चाहिए "गाडी अभी आयी ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण है -

1. हम अब ही जायेंगे {अशुद्ध}
   हम अभी जायेंगे । {शुद्ध}
2. वह यह ही रहता था । {अशुद्ध}
   वह यहीं रहता था । {शुद्ध}
3. मै अब ही आया हूँ । {अशुद्ध}
   मैं अभी आया हूँ । {शुद्ध}
4. वहाँ ही प्रमोद का भाई है । {अशुद्ध}
   वहीं प्रमोद का भाई है । {शुद्ध}
5. यह ही मैं काम करता हूँ । {अशुद्ध}
   यहीं मैं काम करता हूँ । {शुद्ध}

कभी कभी परिवर्तन करने के बाद भी ही का प्रयोग करते हैं । जैसे"अभी ही यह सिद्ध हुआ है ।" यहाँ "अभी के बाद ही का प्रयोग किया गया है जो अनावश्यक है । सही वाक्य है - अभी यह सिद्ध हुआ है । इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. साहित्य की बँधी हुई श्रृंखला में चलना उन्होंने कभी ही स्वीकार नहीं किया । {अशुद्ध}
   साहित्य की बँधी हुई श्रृखला में चलना उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया । {शुद्ध}

2. उसके पास कोई समझदार व्यक्ति कभीहीनहीं जायेगा । (अशुद्ध)
   उसके पास समझदार व्यक्ति कभी नहीं जायेगा । (शुद्ध)
3. फिर कभी ही मिलेगा । (अशुद्ध)
   फिर कभी मिलेंगे । (शुद्ध)
4. वहीं ही रहने को कह दीजिए । (अशुद्ध)
   वहीं रहने को कह दीजिए । (शुद्ध)
5. यहीं ही सब कुछ मिल जायेगा । (अशुद्ध)
   यहीं सब कुछ मिल जायेगा । (शुद्ध)

<u>संबन्धबोधक अव्यय (गति) और उससे संबन्धित समस्यायें</u>

जो शब्द सर्वनाम या सर्वनाम के पीछे आकर संबन्ध सूचित करते हैं उन्हें संबन्धबोधक अव्यय कहते हैं । कामता प्रसाद गुरू के अनुसार "जो अव्यय संज्ञा अथवा संज्ञा के समान उपयोग में आनेवाले शब्द के बहुधा पीछे आकर उसका संबन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ जुडता है, इसे संबन्ध सूचक कहते हैं ।" [1] मलयालम में इसके लिए गति कहते हैं । केरल पाणिनी के अनुसार विभक्ति के साथ जुड़कर इस विभक्ति के अर्थ को परिष्कृत करने वाला शब्द "गति" है । [2] जैसे

1. धन के <u>बिना</u> काम नहीं चलता । (हिन्दी)
   पणमिल्लाते कार्यम् नटक्कुकयिल्ला । (मलयालम)
2. नौकर गाँव तक गया । (हिन्दी)
   वेलक्कारन ग्रामं वरे पोयि । (मलयालम)
3. रात भर जागना अच्छा नहीं है । (हिन्दी)
   रात्रि मुषुवन उणर्न्निरिक्कुन्नतु नल्लतल्ला । (मलयालम)

---

1. हिन्दी व्याकरण-कामता प्रसाद गुरू - पृ 133
2. केरल पाणिनी - केरलपाणिनीयम - पृ 140

इन वाक्यों में के बिना {इल्लाते} तक {वरे}, भर {मुषवन} शब्द क्रमश धन {पणम्}, नौकर {वेलक्कारन}, रात {रात्रि} आदि संज्ञाओं के साथ आकर उनका संबन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ बता रहे हैं। अतः के बिना {वरे}, भर {मुषुवन}, आदि संबन्ध बोधक अव्यय {गति} है।

संबन्धबोधक के प्रकार

प्रयोग और अर्थ के आधार पर इसका विभाजन किया जा सकता है। प्रयोग के अनुसार हिन्दी में इसके दो भेद हैं - संबद्ध और अनुबद्ध। मलयालम में इस तरह का विभाजन नहीं है। संम्बद्ध संम्बन्धक बोधक संज्ञाओं की विभक्तियों के साथ आते हैं। जैसे,

1. धन के बिना। {हिन्दी}
   पणमिल्लाते। {मलयालम}
2. पूजा से पहले। {हिन्दी}
   पूजक्कु मुम्पे। {मलयालम}

अनुबद्ध संम्बन्ध सूचक संज्ञा के विकृत रूप के साथ आते हैं। मलयालम में संज्ञा के विकृत रूप के साथ संम्बन्ध बोधक नहीं आता।

अर्थ के अनुसार हिन्दी में इनके कई भेद हैं। मलयालम में इस तरह का विभाजन नहीं है।

1. काल वाचक

हिन्दी	मलयालम
के आगे	मुंपिल
के बाद	शेषं
से पहले	मुम्प

2. <u>स्थान वाचक</u>

<u>हिन्दी</u>	<u>मलयालम</u>
के ऊपर	मुकळिल्
के नीचे	ताषे
के सामने	मुम्पिंल

3. <u>दिशा वाचक</u>

<u>हिन्दी</u>	<u>मलयालम</u>
के आसपास	अडुत्त्
के पार	अप्पुरं

4. <u>साधन वाचक</u>

<u>हिन्दी</u>	<u>मलयालम</u>
के सहारे	सहायत्ताल

5. <u>हेतु वाचक</u>

<u>हिन्दी</u>	<u>मलयालम</u>
हेतु के कारण	कारणम्

6. <u>विषय वाचक</u>

के भरोसे - विश्वासत्तिल

7. <u>व्यतिरेक वाचक</u>

के अलावा - कूडाते

के बिना - इल्लाते

8. <u>विनिमय बोधक</u>

के बदले - पकरम्

9. <u>सादृश्य वाचक</u>

के समान - पोले

की भाँति - पोले

के अनुसार - अनुसरिच्य

10. <u>विरोध वाचक</u>

के विरुद्ध - विरुद्धम

के खिलाफ -

के विपरीत - विपरीतम्

11. <u>सहचार वाचक</u>

के साथ - कूटे

के समेत - समेतं

के सहित - साहितम्

12. <u>संग्रह वाचक</u>

तक - वरे

भर - मुषुवन्

मात्र - मात्रम्

13. <u>तुलना वाचक</u>

की अपेक्षा - अपेक्षिच्चें

की तुलना -

<u>संबन्ध बोधक अव्यय संबन्धित समस्यायें</u>

ऊपर के विवरण से यह स्पष्ट होता है कि जो अव्यय संज्ञा को क्रिया के साथ जोड़ते हैं उन्हें सम्बन्ध सूचक कहते हैं । कुछ

संबन्ध सूचक अव्ययों के पहले "के" प्रत्यय आता है । जैसे, के साथ, के पास, के अन्दर । लेकिन मलयालम में इसके साथ प्रत्यय संज्ञा या सर्वनाम से जुड़कर आता है । जैसे

रामन्टे कुटे - राम के साथ
बाबुन्टि अट्टत्तु - बाबू के पास
वीट्टीन्टे अकत्तें - घर के अन्दर

इस भिन्नता के कारण वे कभी कभ प्रत्यय को संबन्ध बोधक के साथ जोड़कर लिखते हैं । जैसे - "हमारे स्कूल के सामने एक बगीचा है ।" यहाँ "के सामने" संबन्ध बोधक है, लेकिन उसे एक साथ जोड़कर लिखा है जो गलत है । सही वाक्य है - "हमारे स्कूल के सामने एक बगीचा है ।" इस प्रकार के अन्य उदाहरण है -

1. बगीचे केपास एक कुआँ है । §अशुद्ध§
   बगीचे के पास एक कुआँ है । §शुद्ध§
2. सेना केआगे सेनापति चल रहा था । §अशुद्ध§
   सेना के आगे सेनापति चल रहा था । §शुद्ध§
3. मेज़ केनीचे एक किताब पडी है । §अशुद्ध§
   मेज़ के नीचे एक किताब पडी है । §शुद्ध§
4. मदिंर केआसपास कई दूकानें है । §अशुद्ध§
   मदिंर के आसपास कई दूकाने हैं । §शुद्ध§
5. वह भाषण केबीच में प्रश्न करने लगा । §अशुद्ध§
   वह भाषण के बीच प्रश्न करने लगा । §शुद्ध§

कुछ संबन्ध बोधक अव्यय के पहले "से" प्रत्यय आता है । जैसे,

पूजा से पहले । §हिन्दी§

पूजक्कु मुम्पे । §मलयालम§

यहाँ हिन्दी में करण कारक का प्रयोग हुआ है । लेकिन इसके लिए मलयालम में उद्देशिका §संप्रदान कारक§ का प्रयोग होता है। इसलिए वे असमंजस में पड जाते हैं कि कौन सा प्रत्यय का प्रयोग करना है । अक्सर वे "से" के स्थान पर के का ही प्रयोग करता है । जैसे "मैं यहाँ आने के पूर्व बेंगलूर में था ।" यहाँ पूर्व, जो कि संबन्ध बोधक है, उसके पहले "के" का प्रयोग किया गया है जो कि गलत है । सही वाक्य हैं - "मैं यहाँ आने से पूर्व बंगलूर में था ।" इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. कुछ दिनों के पहले मैं मैसूर गया था । §अशुद्ध§
   कुछ दिनों से पहले मैं मैसूर गया था । §शुद्ध§
2. पूजा के पहले वे ध्यान करने लगे । §अशुद्ध§
   पूजा से पहले वे ध्यान करने लगे । §शुद्ध§
3. हम राजा के दूर रहकर तो रही-रही इज्जत भी गाँवा देंगे । §अशुद्ध§
   हम राजा से दूर रहकर तो रही-रही इज्जत भी गाँव देंगे । §शुद्ध§
4. पुरखो का स्थान छोड़ने के पूर्व पता तो करना चाहिए । §अशुद्ध§
   पुरखों का स्थान छोड़ने से पूर्व पता तो करना चाहिए । §शुद्ध§
5. इसके पहले ही यहाँ से भाग जाओ । §अशुद्ध§
   इससे पहले ही यहाँ से भाग जाओं । §शुद्ध§

जैसे कि पहले बताया जा चुका है कि कुछ सम्बन्ध बोधक अव्यय के पहले "की" प्रत्यय आता हैं जो स्त्रीलिंग का द्योतक है । मलयालम में स्त्रीलिंग द्योतित करने के लिए कोई सम्बन्ध कारक प्रत्यय

नहीं है । इसलिए वे "की" के स्थान पर "के" का ही प्रयोग करके गलती करते हैं । जैसे "चाय" के जगह दूध का इस्तेमाल करो । यहाँ जगह शब्द स्त्रीलिंग है जो यहाँ सम्बन्ध बोधक के रूप में आया हैं । लेकिन उन्होंने मलयालम में स्त्रीलिंग के लिए कोई सम्बन्ध कारक प्रत्यय न होने के कारण के का प्रयोग किया है जो बिलकुल गलत है । सही वाक्य है – चाय की जगह दूध का इस्तेमाल करो । इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं ।

1. रेलगाडी बस गाडी के अपेक्षा अधिक सुविधाजनक है । §अशुद्ध§
   रेलगाडी बस गाडी की अपेक्षा अधिक सुविधाजनक है । §शुद्ध§
2. अंग्रेजी के तुलना में हिन्दी बहुत सरल भाषा है । §अशुद्ध§
   अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी बहुत सरल भाषा है । §शुध्द§
3. इसके बावत कुछ कहना अभी उचित नहीं है । §अशुद्ध§
   इसकी बावत कुछ कहना अभी उचित नहीं है । §शुध्द§
4. मैंने अपने पेट के खातिर यह सब किया । §अशुध्द§
   मैंने अपने पेट के खातिर यह सब किया । §शुद्ध§
5. आपके बदौलत मुझे एक नौकरी मिली है । §अशुद्ध§
   आपकी बदौलत मुझे एक नौकरी मिली है । §शुद्ध§

"के बिना" जोकि सबद्ध तथा व्यतिरेक वाचक संबन्ध बोधक अव्यय है, केरल के छात्र छात्राओं के लिए अकसर समस्यायें पैदा करता है । हिन्दी के प्रत्यय बिना के पहले आता है । मलयालम में प्रत्यय पहले नहीं आता । इल्लाते कूटाते में ए प्रत्यय उसके बाद आया है । यह भी नहीं कूटाते और इल्लाते बिना प्रत्यय वाले स्वतंत्र शब्द के समान मालूम पडता है । इसलिए केरल के छात्र छात्राएँ बिना प्रत्यय के "बिना" का प्रयोग करते हैं । जैसे-

"भोजन बिना हम जी नहीं सकते ।' यहाँ मलयालम के प्रभाव के कारण बिना के पहले "के" प्रत्यय छोड दिया गया है । सही वाक्य है – "भोजन के बिना हम जी नहीं सकते ।' इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं –

1. हवा बिना हम जी नहीं सकते । §अशुद्ध§
   हवा के बिना हम जी नहीं सकते । §शुद्ध§
2. चीनी बिना चाय अच्छी नहीं लगती । §अशुद्ध§
   चीनी के बिना चाय अच्छी नहीं लगती । §शुद्ध§
3. गोपाल बिना आज मज़ा नहीं आता । §अशुद्ध§
   गोपाल के बिना आज मज़ा नहीं आता । §शुद्ध§
4. पैसे बिना किताब नहीं मिलेगी । §अशुद्ध§
   पैसे के बिना किताब नहीं मिलेगी । §शुद्ध§
5. तुम बिना मेरा और कोई नहीं है । §अशुद्ध§
   तुम्हारे बिना मेरा और कोई नहीं है । §शुद्ध§

हिन्दी में भूतकालिक कृदंत के साथ बिना आने पर उसके साथ प्रत्यय का प्रयोग नहीं होता । जैसे

बच्चा दूध पिए बिना सो गया । §हिन्दी§

कुट्टि पाल् कुटिक्काते उरङ्ङिप्पोयि । §मलयालम§

मलयालम में कूटाते, इल्लाते, जोरि के बिना केलिए प्रयुक्त है उसके बदले यहाँ "आते" का प्रयोग हुआ है। लेकिन प्रत्यय जैसा लगता है । केरल के छात्र इस सन्दर्भ में असमंजस में पड़ जाते हैं और कभी कभी के का अनावश्यक प्रयोग भी कर बैठते हैं । जैसे "वह बिना पानी के पीए ही लेट पडा । यहाँ "पिए" भूतकालिक कृदंत है

उसके आगे के का प्रयोग किया गया है, क्योंकि वाक्य में बिना आने के कारण उनके मन में यह धारणा उत्पन्न होती है कि बिना के साथ के प्रत्यय जोड़ना है। सही वाक्य है - "वह पानी पिए बिना ही लेट गया।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. वह पैसे के दिए बिना किताब ले गया। (अशुद्ध)
   वह पैसे दिए बिना किताब ले गया। (शुद्ध)
2. काम के पूरे किए बिना तुमको पैसा नहीं मिलेगा। (अशुद्ध)
   काम पूरे किए बिना तुमको पैसा नहीं मिलेगा। (शुद्ध)
3. इस प्रकार बिना प्रयत्न के किए आपको घर बैठे भोजन मिल जाएगा। (अशुद्ध)
   इस प्रकार बिना प्रयत्न किए आपको घर बैठे भोजन मिल जाएगा। (शुद्ध)
4. उसने अपने साफ तिल बिना साफ किए गए के तिल से बदलने चाहे। (अशुद्ध)
   उसने अपने साफ तिल बिना साफ किए गए तिल से बदलने चाहें। (शुद्ध)
5. शत्रु के बल जाने के बिना आपका वहाँ जाना ठीक नहीं। (अशुद्ध)
   शत्रु के बल जाने बिना आपका वहाँ जाना ठीक नहीं (शुद्ध)
6. जो पुरुष अपने बैरी की शक्ति को पूरी तरह के समझे बिना उससे लड़ता है, उसे पराजय का सम्मना करना पड़ता है। (अशुद्ध)
   जो पुरुष अपने बैरी की शक्ति को पूरी तरह समझे बिना उससे लड़ता है, उसे पराजय का सामना करना पड़ता है। (शुद्ध)

7. पूरी बात के सोचे समझे बिना कोई काम करने पर वैसे ही पछताना पड़ता है जैसे नेवले के मारने पर ब्राहमण को पछताना पडा । (अशुद्ध)

पूरी बात सोचे समझे बिना कोई काम करने पर वैसे ही पछताना पड़ता है जैसे नेवले के मारने पर ब्राहमण को पछताना पडा । (शुद्ध)

8. बिना अच्छी तरह के देखे, बिना अच्छी तरह के सुने, बिना अच्छी तरह के परीक्षा किए कोई काम करने से ऐसा ही फल भुगतना पड़ता है । (अशुद्ध)

बिना अच्छी तरह देखे, बिना अच्छी तरह सुने, बिना अच्छी तरह परीक्षा किए कोई काम करने से ऐसा ही फल भुगतना पड़ता है । (शुद्ध)

हिन्दी में "बिना" कभी कभी संज्ञा या सर्वनाम के पहले भी आते हैं । लेकिन संज्ञा या सर्वनाम के बाद भी विभक्ति प्रत्यय आता है । मलयालम में संज्ञा या सर्वनाम के बाद ही कूटाते या इल्लाते आता है । जैसे

हिन्दी	मलयालम
बिना प्रयास के	- प्रयासं कुटाते ।

यहाँ भी अकसर केरल के छात्र असमंजस में पड़ जाते हैं और के प्रत्यय छोड देते हैं । जैसे - "फलतः एक अनिश्चय दुविधापूर्ण स्थिति में बिना किसी स्पष्ट स्थिति मुक्तिबोध का काव्य संधि जल पर खड़ा प्रतीत होता है ।" यहाँ बिना के बाद जो संज्ञा "स्थिति" का प्रयोग किया है, उसके साथ के प्रत्यय का प्रयोग अनावश्यक छोड दिया है। सही वाक्य है - "फलतः एक अनिश्चय दुविधापूर्ण स्थिति में बिना किसी स्पष्ट स्थिति के मुक्तिबोध का काव्य संधि जल पर खडा प्रतीत होता है ।" इस के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. बिना किसी मतलब काम नहीं करना चाहिए । §अशुद्ध§
   बिना किसी मतलब के काम नहीं करना चाहिए । §शुद्ध§
2. बिना काम मैं आपके पास कैसे आता । §अशुद्ध§
   बिना काम के मैं आपके पास कैसे आता । §शुद्ध§
3. बिना कारण कोई कार्य नहीं हुआ करता । §अशुद्ध§
   बिना कारण के कोई कार्य नहीं हुआ करता । §शुद्ध§
4. बिना किसी कारण ही तो नहीं आयी थी । §अशुद्ध§
   बिना किसी कारण के ही तो नहीं आयी थी । §शुद्ध§
5. मैं तुमको बिना तकलीफ वहाँ तक पहुँचा दूगाँ । §अशुद्ध§
   मैं तुमको बिना तकलीफ के वहाँ तक पहुँचा दूगाँ । §शुद्ध§

ओर एवं और केरल के छात्रों के लिए समस्यायें पैदा करते हैं । इन दोनों में एक मात्रा का ही अन्तर है । दोनों देखने में भी एक जैसा ही लगता है । इसलिए केरल के छात्र छात्राएँ ओर के स्थान पर और तथा और के स्थान पर ओर का प्रयोग करते हैं । जैसे, कोई ऐसा उपाय करे कि ये निकम्मे राजपुत्र शिक्षित होकर विवेक और ज्ञान की और बढ़ें ।" यहाँ की ओर की जगह की और का प्रयोग सादृश्यता के आधार पर किया गया है । सही वाक्य है - कोई ऐसा उपाय करों कि ये निकम्में राजपुत्र शिक्षित होकर विवेक और ज्ञान की ओर बढ़ें ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण है -

1. द्वेष मानव को विनाश की और ले चलता है । §अशुद्ध§
   द्वेष मानव को विनाश की ओर ले चलता है । §शुद्ध§
2. वह मुगल बादशाह की और से लडाईयाँ लडा करते थे। §अशुद्ध§
   वह मुगल बादशाह की ओर से लडाईयाँ लडा करते थे । §शुद्ध§

3. इसी रीति भाव की और यदि व्यापक दृष्टि से देखे
   तो इनके दो विभाजन किए जा सकते हैं । §अशुद्ध§
   इसी रीति भाव की ओर यदि व्यापक दृष्टि से देखें
   तो इनके दो विभाजन किए जा सकते हैं । §शुद्ध§
4. अब हम पुन इनके विश्लेषण की और चलते है । §अशुद्ध§
   अब हम पुनः इनके विश्लेषण की ओर चलते हैं । §शुद्ध§
5. उसकी शैली ऐसा हो जो पाठकों के मन को अपनी और
   आकृष्ट करे । §अशुद्ध§
   उसकी शैली ऐसी हो जो पाठकों के मन को अपनी ओर
   आकृष्ट करें । §शुद्ध§

इसी प्रकार वे और के स्थान पर ओर का प्रयोग भी करते हैं । जैसे, "पर उसके उपरान्त कुछ ओर होता है"। यहाँ जो "और" का प्रयोग होना है वह समुच्चय बोधक "और" की तरह शब्द वाक्यांश और वाक्य को जोड़ता नहीं है । इसलिए भ्रम में आकर "और" की जगह ओर का प्रयोग किया गया है । सही वाक्य है - "पर उसके उपरान्त कुछ और होता है ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. असली कारण कुछ ओर ही है । §अशुद्ध§
   असली कारण कुछ और ही है । §शुद्ध§
2. कोई भी राजा अपने राज में किसी ओर का राज कैसे
   चलने देगा । §अशुद्ध§
   कोई भी राजा अपने राज में किसी और का राज कैसे
   चलने देगा । §शुद्ध§
3. पर उसका फल कुछ ओर भी हो सकता है । §अशुद्ध§
   पर उसका फल कुछ और भी हो सकता है । §शुद्ध§

4. संन्धि आदि छः उपायों से अलग एक उपाय और होता है ।
§अशुद्ध§

संन्धि आदि छः उपायों से अलग एक और उपाय होता है ।
§शुद्ध§

5. मित्र शर्मा थोडी दूर और गया था । §अशुद्ध§

मित्र शर्मा थोडी दूर और गया था । §शुद्ध§

समुच्चय बोधक §घटकम्§ और उससे संबन्धित समस्यायें

हरेक भाषा में ऐसे अनेक शब्द मिलते हैं जो शब्द, वाक्यांश और वाक्य को जोडकर उनके बीच अर्थपूर्ण संबन्ध व्यक्त करते हैं । ऐसे शब्दों को हिन्दी व्याकरण में समुच्चयबोधक और मलयालम में [घटकम्§ करते हैं ।

कामता प्रसाद गुरु के अनुसार "जो अव्यय क्रिया की विशेषता न बतलाकर एक वाक्य का संबन्ध दूसरे वाक्य से मिलाता है उसे समुच्चयबोधक कहते हैं ।"[1] जैसे "और", यदि तो, क्योंकि, इसलिए आदि । आधुनिक व्याकरण ग्रंथों में इसकी परिभाषा स्पष्ट रूप से यों दी गई है - "वे अव्यय जो दो या अधिक शब्दों, पदों, पदंबधों, उपवाक्यों को जोडते या अलग करते हैं और उनके मध्य अर्थ पूर्ण संबन्ध व्यक्त करते हैं, उन्हें समुच्चय बोधक कहते हैं ।"[2]

मलयालम के व्याकरण ग्रंथों में भी "घटकम्" की परिभाषा मिलती है । केरलपाणिनी के अनुसार दो वाक्यार्थ को जोड़ने वाला शब्द घटकम् है ।[3] स्पष्ट परिभाषा इस प्रकार यों मिलती है - "पदों, वाक्याशों या वाक्यों को जोड़ने वाला शब्द घटकम् है ।"[4] जैसे,

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु - पृ 143
2. हिन्दी का विवरणात्मक व्याकरण - लक्ष्मीनारायण शर्मा - पृ.335
3. केरळपाणिनियम् - केरळपाणिनी - पृ 335
4. मलयाळम् व्याकरणवुम् रचनयुम् वट्टपरम्बिल गोपिनाथन - पृ 79

1. मष़कालं वरुकयुं कुळङ़.ळ् निरयुकयुम चेयतु (मलयाळम)
बरसात आयी और तालाब भर गये । (हिन्दी)

2. अङ.ळ वेगम् नटन्नु, पक्षे वण्डि किट्टियिल्ला। (मलयालम)
हम जल्दी चले, पर गाडी नहीं मिली । (हिन्दी)

3. विशप्पु तोन्नियाल् अप्पं तिन्नणम् । (मलयालम)
यदि भूख लगी तो रोटी खा लेना । (हिन्दी)

इन वाक्यों में और (उम्), पर (पक्षे), यदि.......तो (आल्.......उम्) समुच्चय बोधक (घटकम्) है ।

मलयालम के वैयाकरणों ने इसका कोई विभाजन नहीं किया है जबकि हिन्दी में समुच्चय बोधक के मुख्य दो भेद हैं - समानाधिकरण (इसके द्वारा मुख्य वाक्य जोडे जाते हैं) और व्याधिकरण (इसके योग से एक वाक्य में एक या अधिक आश्रित वाक्य जोडे जाते हैं) । समानाधिकरण के चार उप भेद हैं - संयोजक (दो या अधिक शब्दों, पदों, वाक्यों या वाक्यांश जोड़ते हैं), विभाजक (इनसे किसी एक का ग्रहण या दोनों को त्याग होता है) विरोध दर्शक (ये दो वाक्यों में से पहले का निषेध या परिमिति सूचित करते हैं), और परिमाणदर्शक (इनसे पता चलता है कि इनके आगे के वाक्य का अर्थ पिछले वाक्य के अर्थ का फल होता है) व्याधिकरण के भी चार उपभेद हैं - कारणवाचक (इन अव्ययों से आरंभ होनेवाले वाक्य पूर्व वाक्य का समर्थन होता है), उद्देश्यवाचक (इनके पश्चात् आनेवाला वाक्य दूसरे वाक्य का उद्देश्य व हेतु सूचित करता है) स्वरूपवाचक (इनके द्वारा जुडे हुए शब्दों व वाक्यों में से पहले वाक्य का स्वरूप पिछले शब्द व वाक्य से जाना जाता है)[1] और

संकेत वाचक §इसमें पूर्व वाक्य में जिस घटना का वर्णन रहता है, उससे उत्तर वाक्य की घटना का संकेत मिलता है ।§ इन संबन्ध बोधक अव्ययों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का विश्लेषण आगे किया जा रहा है ।

"और" से संबन्धित समस्यायें

हिन्दी में शब्दों के बीच में संयोजक संबन्ध बोधक अव्यय "और" का प्रयोग करते समय कर्ता बहुवचन हो जाता है और क्रिया भी उसके अनुसार बहुवचन में प्रयुक्त होता है । जैसे, "रामू और रानी गए ।" यहाँ "रामू तथा रानी के बीच "और" आया है जिसके अनुसार कर्ता बहुवचन हो गया है और क्रिया भी बहुवचन रूप में प्रयुक्त हुआ है । लेकिन मलयालम में इस प्रकार क्रिया में परिवर्तन नहीं है तथा संज्ञाओं को "उम्" से जोड़ते समय कर्ता का बहुत्व का बोध वाक्य के किसी शब्द से मालूम भी नहीं होता । इसलिए हिन्दी में इसका प्रयोग एकवचन में ही करते हैं । जैसे, दो और दो चार होता है ।" यहाँ "और" आ जाने से कर्ता बहुवचन हो जाता है, इसलिए क्रिया भी बहुवचन में होनी चाहिए । सही वाक्य है - दो और दो चार होते हैं ।" इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. प्रदीप और प्रवीण स्कूल जा रहा है । §अशुद्ध§
   प्रदीप और प्रवीण स्कूल जा रहे हैं । §शुद्ध§
2. कुत्ता और बिल्ली एक साथ खेल रहा है । §अशुद्ध§
   कुत्ता और बिल्ली एक साथ खेल रहे हैं । §शुद्ध§
3. गाय और बैल घास चर रहा है । §अशुद्ध§
   गाय और बैल घास चर रहे हैं । §शुद्ध§

4. माता और पिता उससे बहुत प्यार करता था । (अशुद्ध)
   माता और पिता उससे बहुत प्यार करते थे । (शुद्ध)
5. रामू और राधा इस गाडी से आ रहे होगा । (अशुद्ध)
   रामू और राधा इस गाडी से आ रहे होंगे । (शुद्ध)

"या" से संबन्धित समस्यायें

विभाजक संबन्ध बोधक अव्यय "या" से किसी एक का ग्रहण अथवा दोने का त्याग होता है। दो एकवचन संज्ञा या सर्वनाम के बीच "या" आने से कर्ता एकवचन ही होता है और क्रिया भी एकवचन में होती है । लेकिन केरल के छात्र अकसर इसका प्रयोग बहुवचन में करते हैं । जैसे, पलंग की इस चादर में तो जरूर खटमल या जूँ हैं । यहाँ कर्ता का प्रयोग बहुवचन समझकर क्रिया का प्रयोग बहुवचन में किया गया है जो गलत है । सही वाक्य है - पलंग की चादर में तो जरूर खटमल या जूँ है । इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. रामू या राजू आ रहे हैं । (अशुद्ध)
   रामू या राजू आ रहा है । (शुद्ध)
2. जरूर शेखर या सोमन आयेंगे । (अशुद्ध)
   जरूर शेखर या सोमन आयेगा । (शुद्ध)

"यदि.......तो" से संबन्धित समस्यायें

संकेत वाचक संबन्धबोधक अव्यय "यदि.....तो" से युक्त वाक्य में एक घटना दूसरे घटने का आश्रित होता है । दोनों में कार्य कारण संबन्ध रहता है । इसके लिए "आयाल", "आणेक्किल" का प्रयोग मलयालम में किया जा सकता है । जैसे

यदि बारिश होगी तो मैं स्कूल नहीं जाऊँगा । (हिन्दी)
इन्नु मषयुण्डायाल ञान स्कूलिल पोकुकयिल्ला । (मलयालम)

इसके स्थान पर "अगर....तो का प्रयोग भी होता है । जैसे,

अगर वह खूब पढता तो पास हो जाता । ﴾हिन्दी﴿

अवेन् नल्लवण्णम् पठिच्चिरुन्नुवेंकिल जयिक्कुमायिरुन्नु ।

﴾मलयालम﴿

दोनों वाक्यों को देखने से पता चलता है कि मलयालम में यदि.....तो या अगर....तो के लिए एक शब्द का प्रयोग ﴾आया﴿ ही होता है । इससे प्रभावित होकर वे इनमें से एक छोड देते हैं । लेकिन इसमें में "अगर" या "यदि" छोडने से ज्यादतर गलती नहीं होती । जैसे बारिश होगी तो मैं स्कूल नहीं जाऊँगा ।" .....लेकिन तो छोड़ दिये जाने पर कुछ कमी वाक्य में महसूस होगी । जैसे अगर पानी बरसें आराम से सो सकेंगे । यहाँ 'तो' छोड देने से कुछ कमी महसुस होती हैं । सही वाक्य है —"अगर पानी बरसें तो आराम से सो सकेगा ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण है :-

1. यदि आगरा जाएँ ताजमहल देखें । ﴾अशुद्ध﴿

   यदि आगरा जाएँ तो ताजमहल देखें । ﴾शुद्ध﴿

2. अगर वह जाता गाडी ज़रूर मिलती । ﴾अशुद्ध﴿

   अगर वह जाता तो गाडी ज़रूर मिलती । ﴾शुद्ध﴿

3. यदि मोहन आयेगा मैं सिनेमा जाऊँगा । ﴾अशुद्ध﴿

   यदि मोहन आयेगा तो मैं सिनेमा जाऊँगा । ﴾शुद्ध﴿

4. अगर बच्चा सो रहा है उसको जगाओ मत । ﴾अशुद्ध﴿

   अगर बच्चा सो रहा है तो उसको जगाओं मत । ﴾शुद्ध﴿

5. यदि बस न मिले टैकसी में जाइए । {अशुद्ध}
   यदि बस न मिले तो टैक्सी में जाइए । {शुद्ध}

<u>यद्यपि..........तथापि सम्बन्धी समस्यायें</u>

इसमें पहला उपवाक्य से कारण का आभास होता है । दूसरे उपवाक्य में विपरीत घटना घटने की बात बताता है । इसके लिए मलयालम में "एन्निनट्टुम" का प्रयोग होता है ।

यद्यपि उसे बुखार था, फिर भी वह स्कूल गया । {हिन्दी}

अवन् पनिय्यायिरिन्निनट्टुम् स्कूलिल पोयी । {मलयालम}

यहाँ मलयालम में "पनियायिरिन्नुट्टुम्" के लिए हिन्दी में बुखार होने पर भी अनुवाद मिलता है । इसलिए वे यहाँ भी बुखार होने पर भी का प्रयोग गलती में करते हैं । जैसे "यद्यपि बुखार होने पर भी वह स्कूल गया ।" यहाँ सही वाक्य होना चाहिए - यद्यपि उसे बुखार हुआ था, फिर भी वह स्कूल गया ।" इस प्रकार के अन्य उदाहरण हैं -

1. यद्यपि आज हडताल होने पर भी क्लास चलाया गया । {अशुद्ध}
   यद्यपि आज हडताल थी, फिर भी क्लाज चलाया गया । {शुद्ध}
2. यद्यपि उसने अच्छी तरह पढने पर भी वह पास नहीं हुआ । {अशुद्ध}
   यद्यपि उसने अच्छी तरह पढा, फिर भी वह पास नहीं हुआ । {शुद्ध}
3. यद्यपि वह धनी होने पर भी सुखी नहीं है । {अशुद्ध}
   यद्यपि वह धनी है, फिर भी सुखी नहीं है । {शुद्ध}

4. यद्यपि खूब पानी बरसने पर भी गरमी कम नहीं हुई ।

(अशुद्ध)

यद्यपि खूब पानी बरसा तो भी गरमी कम नहीं हुई । (शुद्ध)

5. यद्यपि वह समय पर स्टेशन नहीं पहुँचने पर भी उसे गाडी मिल गयी । (अशुद्ध)

यद्यपि वह समय पर स्टेशन नहीं पहुँचा फिर भी उसे गाडी मिल गयी । (शुद्ध)

विकल्पबोधक और उससे संबन्धित समस्यायें

अनेक अर्थों में विकल्प प्रकट करने वाले अव्यय को विकल्प बोधक कहते हैं । जैसे, चाहे । हिन्दी में विकल्प बोधक वाक्य के पहले आता है और मलयालम अंत को । जैसे

चाहे वह पढ़े या न पढ़े ।

अवन् पठिच्चालुम पठिच्चिल्लेड्किलुं

लेकिन मलयालममें इसका प्रयोग वे "चाहे वह पढने पर भी या न पढ़ने पर भी" जैसा करता है । जैसे, एस एस एल सी क्लास में पढ़ने के बाद हमें स्कूल छोड़ना पड़ता है, परीक्षा में चाहें हमारी विजय होने पर भी या पराजय होने पर भी । यहाँ मलयालम के अनुवाद के अनुसार इसका प्रयोग हुआ है । सही वाक्य है- एस एस एल सी क्लास में पढ़ने के बाद हमें स्कूल छोड़ना पड़ता है, परीक्षा में चाहें हमारे विजय हो या पराजय । इस प्रकार के एक और उदाहरण है :-

1. जो प्रेम मार्ग को पसन्द करता है वह चाहे राजा होने या न होने पर भी अपने प्राणों का बलिदान करके त्याग को स्वीकार कर सब प्रकार के अहंकार को छोड़कर इसे प्राप्त कर सकता ।

(अशुद्ध)

जो प्रेम मार्ग को पसन्द करता है वह चाहे राजा हो या न हो अपने प्राणों का बलिदान करके त्याग को स्वीकार कर सब प्रकार के अंहकार को छोड़कर इसे प्राप्त कर सकता है । §शुद्ध§

विस्मयादि बोधक §व्याक्षेपकम§ और उससे संबन्धित समस्यायें

जिन शब्दों से बोलने वाले के विस्मय हर्ष, शोक, लज्जा, ग्लानि आदि मनोभाव प्रकट होते हैं, उन्हें विस्मयादि बोधक कहते हैं । कामता प्रसाद गुरु इसकी परिभाषा यों दी है - "जिन अव्ययों का सम्बन्ध वाक्य से नहीं रहता, जो वक्ता के केवल हर्ष, शोक आदि भाव सूचित करते हैं, उन्हें विस्मयादि बोधक अव्यय कहते हैं ।"[1] केरलपाणिनी के अनुसार, "एक ही वाक्य के समान रहकर किसी मनोभाव को व्यक्त करने वाला शब्द "व्याक्षेपकम्" है ।[2] जैसे,

हाय, ओह, वाह आदि

भिन्न भिन्न मनाविकार सूचित करने के लिए भिन्न भिन्न विस्मयादिबोधक का उपयोग दोनों भाषाओं में होता है । जैसे

हर्ष बोधक - आहा !, आह!
शोक बोधक - आह ! ऊँह ! उफ ! हाय !
आश्चर्य सूचक - वाह ! ओह ! ओ हो !
प्रशंसासूचक - वाह - वाह ! शबाश ! बहुत अच्छा !
अनुमोदन सुचक - हाँ हाँ ! भला !

---

1. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु - पृ 157
2. केरलपाणिनी - केरल पाणिनीयम् - पृ 140

तिरस्कार सूचक - छि !, हट ! भू !

स्वीकार बोधक - हाँ !, अच्छा !

संबोधन बोधक - अरे ! रे !

हिन्दी में स्त्रीलिंग है तो अरी और री तथा पुल्लिंग है तो रे और अरे का प्रयोग होता है । मलयालम के छात्र अरी के स्थान अरे और री के स्थान पर रे का ही प्रयोग अकसर करते हैं जो वांछित नहीं है । कभी कभी वे विस्मयादि बोधक का चिह्न (!) भी छोड देते है ।

<u>समस्याओं का निराकरण</u>

अव्यय संबन्धी समस्यायें विकारी शब्दों से सम्बन्धित समस्याओं की तुलना में कम है । दोनों भाषाओं के अव्ययों के तुलनात्मक एवं व्येतिरकि विश्लेषण करके इनके प्रयोगों में होनेवाले अन्तर समझने से इससे संबन्धित समस्याओं को एक हद तक दूर किया जा सकता है । अव्ययों की पद व्याख्या करना भी उचित होगा । जैसे,

<u>क्रिया विशेषणों की पद व्याख्या</u>

"बहुत शीघ्र मत चला करो ।" इसमे बहुत, शीघ्र, मत आदि क्रिया विशेषण है । उसका भेद और जिस क्रिया से इसका संबन्ध है, उसे स्पष्ट करना है । जैसे,

बहुत - परिणामवाचक, शीघ्र की विशेषण बताता है

शीघ्र - रीतिवाचक, क्रिया की रीति बताता है ।

मत - निषेधवाचक, निषेध सूचित करता है ।

संबन्ध बोधक अव्यय की पद व्याख्या

"नदी तक चलो ।" इसमें "तक" सम्बन्ध बोधक अव्यय है । इसका जिससे सम्बन्ध जोड़ता है यह बताना है । तक यहाँ नदी का चला से सम्बन्ध जोड़ता है ।

समुच्चय बोधक अव्यय की पद व्याख्या

इसमें केवल भेद और जिन शब्दों, या वाक्यांशों को जोड़ता है, उनकी व्याख्या करना है । जैसे

"मुरली यहाँ आया था, किन्तु तुम उपस्थित न थे ।" इसमें "किन्तु" समुच्चय बोधक अव्यय है ।

किन्तु - विरोध दर्शक, और दोनों वाक्यों को जोड़ते है तथा पहले वाक्य का निषेध या परिमिति सूचित करते हैं ।

विस्मयादि बोधक की पद व्याख्या

इसमें यह बताना होगा कि शब्द किस मनोभाव को सूचित करता है । जैसे

"ओहो ! आप यहीं है ।"
यहाँ "ओहो !" आश्चर्य सूचक है ।

निष्कर्ष

हिन्दी के अव्यय और उससे होने वाली समस्याओं पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि केरल के छात्रों के सामने उपस्थित समस्याओं को उत्पन्न करने वाला प्रमुख कारण दोनों

भाषाओं के अव्ययों के प्रयोग में दीख पडने वाला अन्तर है । इससे संबन्धित नियमों व प्रयोग में समानताएँ होते हुए भी उससे संबन्धित विषमताएँ भी हैं । जब तक केरल के छात्र-छात्राएँ इन नियमों व प्रयोगों का तुलनात्मक एंव व्यतिरेकी अध्ययन नहीं करते तब तक इन अन्तरों से अवगत नहीं होते । उदाहरणों से यह व्यक्त होता है कि इन विद्यार्थियों के द्वारा कई गलतियाँ प्रयोग में रहती है और इन गलतियों से उन्हें अवगत कराना अत्यन्त आवश्यक रह जाता है ।

सातवाँ अभ्यास

केरल में हिन्दी अध्ययन की वाक्य सम्बन्धी समस्यायें

मनुष्य के विचारों को पूर्णता से प्रकट करने वाले पद समूह को वाक्य कहते हैं । वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप है । यदि शब्द भाषा की प्रारंभिक अवस्था है, तो वाक्य उसकी विकसित अवस्था का सूचक है । सभ्यता के विकास के साथ ही वाक्यों के विकास की वृद्धि होती गई, क्योंकि मनुष्य के भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति वाक्यों में ही होती है । शब्द तो साधन हैं, जो वाक्य की संरचना में सहायक होते हैं । वाक्य वह सार्थक ध्वनि है जिसके माध्यम से लेखक लिखकर तथा वक्ता बोलकर अपने भाव या विचार पाठक व श्रोता तक पहुँचाता है । "जैसे" "श्याम दूध पी रहा है ।" यह सार्थक ध्वनि है जिसे हम वाक्य कहते हैं । अतः सामान्य जीवन में वाक्य का विशेष महत्व है ।

सर्वसाधारण की अपेक्षा शिक्षितों की वाक्य संरचना में विशेषता रहती है । शिक्षितों की वाक्य रचना और वाक्य प्रयोग में एक प्रकार का क्रम और व्यवस्था रहती है जो व्याकरण के नियमों से अनुशासित होती है । शिक्षित व्यक्ति वाक्य का प्रयोग करते समय व्याकरण के सामान्य नियमों से परिचित रहता है । साधारण व्यक्ति जैसा चाहता है, शब्दों और वाक्यों का प्रयोग कर लेता है । किन्तु भाव की अभिव्यक्ति में जो वाक्य जितना अधिक सहायक होगा, वह उतना ही प्रभाव डालने वाला होगा । स्पष्टता वाक्य संरचना की एक बड़ी विशेषता है । दूसरी विशेषता पाठक या श्रोता के सोचे भावों को जागृत करने की सामर्थ्य है । तीसरी विशेषता है पदों

या शब्दों का तादात्मय चौथी विशेषता है संक्षिप्तता या व्यर्थ पदों या शब्दों का न आना । साहितियक दृष्टि से माधुर्य भी वाक्य संरचना की विशेषता है । इस प्रकार वाक्य की संरचना जितनी संयत, निर्दोष, स्पष्ट और सन्तुलित होगी, मन को उतना ही मुग्ध करेगी ।

<u>वाक्य की परिभाषा</u>

भाषा की स्वाभाविक इकाई वाक्य है । वाक्य के रूप में ही बोलकर या लिखकर हम भाषा को प्रयोग में लाते हैं । अतः वाक्य के सन्दर्भ में ही भाषा के शब्दों या पदों का कार्य पूर्णतया समझ में आ सकता है । हिन्दी और मलयालम के व्याकरणों में वाक्य की परिभाषा इस प्रकार मिलती है ।

पं. कामता प्रसाद गुरू के अनुसार "एक विचार पूर्णता से प्रगट करने वाले शब्द समूह" को वाक्य कहते हैं ।[1] जैसे बाबू दूध पी रहा है । डा॰ रामदेव ने वाक्य की परिभाषा यों की है - "जिस शब्द समूह से कहने या लिखने वाले का पूरा भाव प्रकट हो जाय उसे वाक्य कहते हैं"।[2] किसी किसी ने वाक्य की परिभाषा इस प्रकार की है - "सामान्य तौर पर वाक्य सार्थक शब्द का समूह है, जिसमें कर्ता और क्रिया दोनों होते हैं ।[3] इस प्रकार की परिभाषाओं से स्पष्ट है कि वाक्य दो या दो से अधिक पदों के उस समुदाय को कहते हैं जो किसी एक विचार को पूर्णता से प्रकट करने में समर्थ हो ।

---

1. हिन्दी व्याकरण - कामता प्रसाद गुरू - पृ 430
2. व्याकरण प्रदीप - डा रामदेव - पृ 155
3. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना - डा॰ वासुदेवनन्दन प्रसाद - - पृ 201

मलयालम व्याकरणों में भी इस प्रकार की परिभाषाएँ मिलती हैं । केरलपाणिनी के अनुसार "एक बात को ऐसे रूप में व्यक्त करने वाले शब्द समूह है जो आकांक्षा की पूर्ति करते हैं ।" [4] §आकांक्षा से तात्पर्य एक शब्द का दूसरे शब्दों के साथ सम्बन्ध से है§ शेषगिरि प्रभु ने इसकी परिभाषा इस प्रकार की है - " एक विचार को पूर्णरूप से व्यक्त करने वाला शब्द समूह वाक्य है ।" [5] भाषा दीप्तिकार ने इसकी परिभाषा यों की है -"एक विचार या वाक्य को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल करने वाला शब्द समूह वाक्य है ।" [6] प्रोफसर वट्टपरम्बिल गोपिनाथन के अनुसार वाक्य पूर्ण अर्थ का प्रतिपादन करनेवाला शब्दा समूह है । [7]

दोनों भाषाओं के व्याकरण में उपलब्ध विभिन्न परिभाषाओं में एक रूपता है । दोनों में यह बताया गया है कि भाव या विचार या अर्थ को प्रकट करने वाले शब्दों का समूह ही वाक्य है ।

वाक्य के अंग/दळम्

किसी वाक्य में दो तत्वों का होना आवश्यक है । कोई भी वाक्य तभी वाक्य कहा जाएगा जब उसमें ये दोनों तत्व विद्यमान होंगे । हिन्दी व्याकरण में इसे वाक्य के अंग अथवा

---

4. केरल पाणिनी-केरलपाणिनीयम - पृ 219
5. व्याकरण मित्रम - शेषगिरी प्रभु - पृ 121
6. भाषादीप्ति -के.के. पोन्नेमलत्त -पृ 50
7. मलयालम व्याकरणवुम, रचनयुम, - वट्टपरम्बिल गोपिनाथन - पृ 121

अवयव कहते हैं, और मलयालम में इसे "दलम्" [8] कहते हैं । दोनों में वाक्य के दो अंग/दलम् हैं - उद्देश्य/आख्या और विधेय/आख्यातम् ।

उद्देश्य/आख्या

वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाए, उसे हिन्दी में उद्देश्य कहते हैं । कामता प्रसाद गुरु के अनुसार "जिस वस्तु के विषय में कुछ कहा जाता है, उसे सूचित करने वाले शब्दों को उद्देश्य कहते हैं । [9] रामदेव ने इसकी परिभाषा यों की है - "जिसके विषय में कुछ (विधान) किया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं ।" [10]

मलयालम में इसको "आख्या" कहते हैं । केरलपाणिनी के अनुसार "जिस वस्तु के विषय के बारे में कुछ कहा जाता है, उसे आख्या कहते हैं ।" मलयालम व्याकरणवुम रचनयुम में वट्टपरम्बिल गोपिनाथन ने इसकी परिभाषा यों की है - हम जिसके बारे में बताते हैं, उसे आख्या कहते हैं । [12]

दोनों में जो आख्या या उद्देश्य है वह एक ही है । दोनों में यह बताया गया है कि हम किसी के सम्बन्ध में कुछ कहते हैं और जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जाता है उसे ही वाक्य

---

8. केरल पाणनीयम् - केरल पाणिनी - पृ 285
9. हिन्दी व्याकरण - कामता प्रसाद गुरु - पृ 450
10. व्याकरण प्रदीप - डा. रामदेव - पृ 156
11. केरल पाणनीयम - केरल पाणिनी - पृ 285
12. मलयालम व्याकरणवुम - वट्टपरम्बिल गोपिनाथन - पृ 121

में उद्देश्य या आख्या कहते हैं । आगे उदाहरण दिया गया है ।

विधेय ‹आख्यातम्›

वाक्य में उद्देश्य के बारे में कुछ कहा जाय, उसे हिन्दी में विधेय कहते हैं । कामता प्रसाद गुरु के अनुसार" उद्देश्य के विषय में जो विधान किया जाता है, उसे सूचित करनेवाले शब्दों को विधेय कहते हैं । [13] डा. रामदेव ने इसकी परिभाषा यों की है -" उद्देश्य के विषय में जो कुछ विधान होता है, उसे विधेय कहते हैं ।" [14]

मलयालम में इसको "आख्या" कहते हैं । केरल पाणिनी के अनुसार " आख्या के सम्बन्ध में जो कुछ कहा जाता है, उसे आख्यातम् कहते हैं ।" [15] मलयालम व्याकरणवुम् रचनयुम में वट्टपरम्बिल गोपिनाथन ने इसकी परिभाषा यो की है -" आख्या के बारे में जो कुछ बताया जाता है, उसे आख्यातम् कहते हैं । [16]

मलयालम का आख्यातम् और हिन्दी का विधेय एक ही है । इसके सम्बन्ध में दोनों में यह बताया गया है कि उद्देश्य या आख्या के संबन्ध में जो कुछ बताया जाता है, उसे विधेय या आख्यातम् कहते हैं ।

---

13. हिन्दी व्याकरण - कामता प्रसाद गुरु - पृ 430
14. व्याकरण प्रदीप - डा. रामदेव - पृ 156
15. केरलपाणनीयम् - केरलपाणिनी - पृ 284
16. मलयालम व्याकरणवुम् रचनयुम - वट्टरम्बिल गोपिनाथन - पृ 121

उद्देश्य {आख्या} और विधेय {आख्यातम्} के बारे में निम्नलिखित उदाहरण से अधिक जान सकते हैं ।

हिन्दी	मलयालम
बाबू पढ़ता है ।	बाबू पठिक्कुन्नु ।

इन वाक्यों में "बाबू" उद्देश्य {आख्या} है, क्योंकि यहाँ "बाबू" के बारे में ही बताया जाता है । हिन्दी में "पढ़ता है" और मलयालम में "पठिक्कुन्नु" विधेय या आख्यातम् है, क्योंकि यह उद्देश्य या आख्या के बारे में ही विधान करता है ।

हिन्दी और मलयालम में उद्देश्य या आख्या कभी कभी कर्ता होता है और विधेय या आख्यातम् कभी कभी क्रिया होती है ।

आख्या {उद्देश्य} और विधेय {आख्यातम्} वाक्य में एक या एक से अधिक शब्दों से जुड़कर आते हैं । दूसरे शब्दों से जुड़कर आते वक्त उसे उद्देश्य का विस्तार {आख्या विशेषण} और विधेय का विस्तार {आख्यातविशेषणम्} कहते हैं । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
1. राधा की बेटी अम्बिका खूबसूरत है ।	1. राधयुटे मकळ् अम्बिका सुन्दरियाण् ।
2. बाबू पुस्तक पढ़ता है ।	2. बाबू पुस्तकं वायिक्कुन्नु ।

पहले वाक्य में राधा की बेटी {हिन्दी में} और "राधुयुटे मकळ्" उद्देश्य का विस्तार {आख्या विशेषण} है और दूसरे वाक्य में पुस्तक {पुस्तकं} आख्यात विशेषण है । हिन्दी में उद्देश्य का विस्तार उद्देश्य के लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तित होता है । लेकिन मलयालम में इस प्रकार लिंग, वचन के अनुसार आख्या के विशेषण में कोई परिवर्तन नहीं होता । जैसे,

<u>हिन्दी</u>	<u>मलयालम</u>
1. <u>काली</u> गाय इधर चर रही है ।	<u>करूत्त</u> पशु इविटे मेयुकयाणु ।
2. काले बैल इधर चर रहे हैं ।	करूत्त काळकल, इविटे मेयुकयाणु ।

इसी अन्तर से प्रभावित होकर केरल के छात्र उद्देश्य के विस्तार का प्रयोग पुल्लिंग के रूप में ही करते हैं जिससे संबन्धित समस्याओं का विश्लेषण विशेषण संबन्धित समस्याओं के अन्तर्गत किया गया है ।

भूतकाल में विधेय का विस्तार {सकर्मक क्रिया} कर्म के अनुसार बदलता है । लेकिन मलयालम में इस तरह का परिवर्तन नहीं है । जैसे,

<u>हिन्दी</u>	<u>मलयालम</u>
1. बाबू ने पुस्तक पढ़ी है ।	बाबू पुस्तक वायिच्चु ।

इसी भिन्नता के कारण वे कभी कभी उद्देश्य के साथ ने छोड़ देते हैं तथा विधेय का परिवर्तन उद्देश्य के अनुसार करते हैं । इसका विश्लेषण कारक और क्रिया संबन्धी समस्याओं के अन्तर्गत किया गया है ।

अर्थ के आधार पर वाक्य विभाजन और उससे संबन्धित समस्यायें

हिन्दी के वैयाकरणों ने अर्थ के आधार पर आठ भेद माने हैं, जबकि मलयालम व्याकरण ग्रंथों में चार भेद ही मिलते हैं।

विधानार्थक वाक्य (निर्देशिका)

इसे विधिवाचक भी कहते हैं। इससे किसी बात का होना प्रमाणित होता है। इस तरह के वाक्य को मलयालम में निर्देशिका (सूचक) वाक्य कहते हैं। जैसे,

हिन्दी	मलयालम
हम खा चुके ।	ञङ्ङळ् आहारम् कष़िच्चु कष़िंञ्ञु ।

चूँकि इससे संबन्धित समस्याओं का विश्लेषण क्रिया संबन्धी समस्याओं के अन्तर्गत किया जा चुका है, इसलिए उसको दोहराना उचित नहीं जान पड़ता।

निषेधात्मक वाक्य और उससे संबन्धित समस्यायें

निषेधात्मक वाक्य किसी विषय का अभाव सूचित करता है। मलयालम में इस तरह का विभाजन नहीं है, लेकिन निषेधवाचक वाक्य पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त होता है। जैसे,

हिन्दी	मलयालम
हमने खाना नहीं खाया ।	ञङळ् आहारम् कष़िच्चिल्ला ।

वाक्य में निषेधार्थ सूचित करने के लिए नहीं (न), मत आदि अलग शब्द है और वह प्रयोग और प्रसंग के अनुसार शब्दों

के पहले जुडते हैं और बाद में भी । मलयालम में इल्ल, अल्ल, अरुत् आदि शब्दों का प्रयोग निषेध सूचित करने के लिए किया जाता है । इन तीनों का प्रयोग हमेशा वाक्यान्त में ही होता है । जैसे,

<u>हिन्दी</u>	<u>मलयालम</u>
1. लीला नृत्य नहीं सीखती ।	लीला नृत्तं चेय्युन्निल्ला ।
2. सडक पर थूको मत	रोडिल् तुप्परुत् ।

केरल के छात्र नहीं का प्रयोग भी शब्द के अन्त में रखकर करते हैं । क्योंकि मलयालम में इसका प्रयोग भी वाक्य के अन्तिम भाग में हमेशा होता है । यह कभी कभी हिन्दी की प्रकृति के विरुद्ध होने के कारण गलत है । जैसे, राधा रोटी खाती नहीं । हिन्दी की प्रकृति के अनुसार यह वाक्य अधिक सुन्दर होगा - राधा रोटी नहीं खाती ।

हिन्दी में "न तो.........और न" का प्रयोग कभी कभी एक से ज्यादा निषेध को सूचित करने के लिए किया जाता है और पहले वाले उपवाक्य में क्रिया का प्रयोग किया जाता है और दूसरे उपवास्य में दोनों उपवाक्यों की क्रिया एक होने के कारण छोड़ दिया जाता है । इसी भिन्नता के कारण वे न की जगह नहीं का ही प्रयोग करते हैं और क्रिया का प्रयोग भी दो बार करते हैं । जैसे, "उत्सव के अवसर पर राजा नहीं आया और उनके बेटे भी नहीं आया ।" यह वाक्य हिन्दी की प्रकृति की दृष्टि से भ्रामक प्रतीत होता है। हिन्दी की प्रकृति की दृष्टि से वाक्य इस प्रकार होना चाहिए-'उत्सव के अवसर पर न ही राजा आये और न उनके बेटे। इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

हिन्दी की प्रकृति के विरुद्ध	हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल
1. रविवार के दिन स्कूल में छात्र नहीं आते हैं और नहीं अध्यापक आते है ।	1. रविवार के दिन न तो छात्र आते हैं और न अध्यापक ।
2. मेरी शादी में नहीं मामा आए और नहीं उनके परिवार वाले आए ।	2. मेरी शादी में न तो मामा आए और न उनके परिवार वाले ।
3. स्वतंत्रता दिवस के समारोह में नहीं लीला आयी और उनकी सहेली नहीं आयी	3. स्वतंत्रता दिवस के समारोह में न तो लीला आयी और न उनकी सहेली ।

आज्ञार्थक वाक्य

इससे आज्ञा, बिनती या उपदेश सूचित होता है । मलयालम में यह नियोजक वाक्यम् है । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
तुम काम करो ।	निङ्ङळ् जोलि चेय्यु ।

आज्ञार्थक वाक्यों में कर्ता "तू" तुम और आप कर्ता के रूप में आता है । इससे जो गलतियाँ होती हैं उनका विस्तार से विश्लेषण क्रिया संबन्धी समस्याओं के अन्तर्गत किया गया है ।

प्रश्नार्थक वाक्य

इससे प्रश्न का बोध होता है । मलयालम में इसे "आनुयौगिक वाक्यम्" कहते हैं । हिन्दी में क्या, कौन, क्यों, कैसे, कहाँ, कब, आदि शब्दों का प्रयोग करके प्रश्नवाचक बनाया जाता है जबकि मलयालम में एन्त् (क्या), आर् (कौन), एन्तुकोण्ड् (क्यों), एङ्ङने (कैसे), एविटे (कहाँ), एप्पोल (कब)

आदि शब्दों से आनुयौगिक वाक्यम बनते हैं। जैसे,

हिन्दी	मलयालम
वह कौन है ?	अवन् आराण् ?

हिन्दी में "हाँ" या "न" उत्तर मिलने वाले वाक्यों में क्या प्रारंभ में जोडा जाता है जबकि मलयालम में क्या के समानार्थी एन्त के प्रयोग इसके लिए नहीं होता, बल्कि क्रिया के भविष्यकालिक रूप के साथ "ओ" जोडते हैं। जैसे,

मलयालम	हिन्दी
निडळ् वरुमो ?	क्या तुम आओगे ?

इसी भिन्नता के कारण वे कभी कभी क्या छोडकर लिखते हैं। जैसे पिताजी घर पर हैं ? कभी कभी वे क्या का प्रयोग अन्त में करते हैं। जैसे, अभी तक बाबू नहीं आया क्या ? इस तरह के वाक्यों का प्रयोग यद्यपि उच्चरित भाषा में होता है फिर भी लिखित भाषा में इस तरह का प्रयोग हिन्दी की प्रकृति के विरुद्ध होगा। हिन्दी की प्रकृति के अनुसार दोनों वाक्य इस प्रकार है –

1. क्या पिताजी घर पर हैं ?
2. क्या अभी तक बाबू नहीं आया ?

विस्मयादि बोधक वाक्य

यह आश्चर्य, विस्मय आदि भाव सूचित करता है। इसे मलयालम में व्याक्षेपकम् कहते हैं। जैसे,

हिन्दी	मलयालम
यह क्या हुआ था !	एन्ताण् संभविच्चत् !

केरल के छात्र अकसर विस्मयादि बोधक चिह्न छोडकर लिखते हैं जिससे यह जानना मुश्किल होता कि अमुक वाक्य विस्मयादि बोधक है या नहीं ।

इच्छाबोधक वाक्य

इससे इच्छा या आशिर्वाद सूचित होता है । यह मलयालम का नियोजक वाक्यम् है । जैसे,

मलयालम	हिन्दी
निङ्ङळ् निङ्ङळुटे कार्यत्तिल विजयिक्कट्टे	तुम अपने कार्य में सफल रहे ।

इससे संबन्धित समस्याओं का विश्लेषण क्रिया संबन्धी समस्याओं के अन्तर्गत किया गया है ।

सन्देहवाचक वाक्य

इससे सन्देह प्रकट होता है । यह मलयालम के निर्देशक वाक्यम् के अर्न्तगत ही आते हैं । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
यह पत्र उस लडकी ने लिखी होगी।	ई एऴुत्त आ पेणक्कुट्टि एऴुतियिरिक्कु ।

हिन्दी में वाक्यान्त में होगा, होगी, होंगे आदि आने के कारण इसे भविष्यत कालिक क्रिया समझकर केरल के छात्र ने प्रत्यय छोड़ देते हैं । जैसे आप शायद यह समाचार सुने होंगे । इस तरह की गलतियों का विश्लेषण क्रिया संबन्धी समस्याओं के अर्न्तगत किया गया है ।

संकेतार्थक वाक्य

इससे संदेह या शर्त प्रकट होता है । यह भी मलयालम का निर्देशिका वाक्यम् ही है । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
भीमा आ जाता तो काम बन जाता ।	भीमन् वन्निरुन्नेंकिल कार्य नटन्नेने ।

इससे संबन्धित समस्याओं का विश्लेषण आगे किया जा रहा है ।

रचना के आधार पर वाक्य विभाजन और उससे संबन्धित समस्यायें

रचना के आधार पर हिन्दी और मलयालम में तीन भेद हैं - साधारण वाक्य (चूर्णिका), मिश्रवाक्य (संकीर्णकम्) और संयुक्त वाक्य (महावाक्यम्)

साधारण वाक्य (चूर्णिका) और उससे संबन्धित समस्यायें

साधारण वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है ।[17] अर्थात् वाक्य में एक कर्ता और एक क्रिया होता है । मलयालम में इसके लिए चूर्णिक अथवा केवल वाक्यम् कहते हैं । एक आख्या और एक आख्यातम् से युक्त वाक्य चूर्णिका है ।[18] जैसे,

हिन्दी	मलयालम
सूरज प्रकाश देता है ।	सूर्यन् प्रकाश तरुन्नु ।

यहाँ सूरज (सूर्यन्) उद्देश्य (आख्या) और प्रकाश देता है (प्रकाशँ तरुन्नु) विधेय (आख्यातम्) है ।

---

17. हिन्दी व्याकरण कामता प्रसाद गुरु - पृ 43।
18. आधुनिक मलयाल व्याकरणम् :- के.टासनारायणपिल्ल - पृ 192

हिन्दी और मलयालम के साधारण वाक्यों में उद्देश्य और विधेय का विस्तार हो सकता है । जैसे,

<u>हिन्दी</u>	<u>मलयालम</u>
रमेश की पुस्तक इस कमरे में रखी है ।	रमेशिन्टे पुस्तकं ई मुरियिल् वच्चिट्टुण्ड् ।

दोनों में पुस्तक और पुस्तकं उद्देश्य है जिसका विस्तार है क्रमशः "रमेश की" और रमेशिन्टे । रखी है और वच्चिट्टुण्ड् विधेय है और उनका विस्तार है इस कमरे में और ई मुरियिल । यहाँ हिन्दी में उद्देश्य के लिंग और वचन के अनुसार उसके पहले कारक प्रत्यय आता है और विधेय के विस्तार में प्रयुक्त संज्ञा के बाद में आए प्रत्यय के अनुसार परिवर्तन होता है । यहाँ पुस्तक स्त्रीलिंग होने के कारण उसके पहले स्त्रीलिंग प्रत्यय "की" आया है और विधेय विस्तार में प्रयुक्त संज्ञा "कमरा" के बाद "में" आने के कारण विकृत (कमरे) हो जाता है । मलयालम में इस प्रकार लिंग और वचन के अनुसार उद्देश्य के पहले आनेवाले प्रत्यय या विस्तार में प्रयुक्त संज्ञा में कोई परिवर्तन नहीं होता । इसी अन्तर के कारण वे हिन्दी में भी परिवर्तन के बिना ही इनका प्रयोग करते हैं जो गलत है । जैसे, "श्रृंगार इस का अभिव्यक्ति यह दोहा में मिलता है। यहाँ उद्देश्य अभिव्यक्ति है जो स्त्रीलिंग है और उसके पहले मलयालम की प्रवृत्ति के प्रभाव के कारण का प्रत्यय का प्रयोग किया गया है । विधेय के अन्तर्गत आए संज्ञा (दोहा) और विशेषण (यह) के बाद "में आने के कारण उसमें विकार होना चाहिए, लेकिन मलयालम में इस प्रकार का विकार न होने के कारण इसका प्रयोग बिना विकार के किया गया है । सही वाक्य है - "श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति इस दोहे में मिलती है ।" इस प्रकार की समस्याओं का विस्तार से विश्लेषण पिछले अध्यायों में किया गया है ।

मिश्र वाक्य [संकीर्ण वाक्यम्] और उससे संबन्धित समस्यायें

जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य हो तथा अन्य वाक्य अधीन होकर आये, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं । मलयालम में इसे "संकीर्ण वाक्यम्" कहते हैं । प्रधान वाक्य को हिन्दी में मुख्य उपवाक्य कहते हैं जबकि मलयालम में इसे अंगीवाक्यम् कहते हैं । उसमें उद्देश्य [कर्ता] और विधेय [क्रिया] रहते हैं । अन्य खंड-वाक्य को मलयालम में "अंग वाक्यम्" कहते हैं और हिन्दी में आश्रित उपवाक्य । इस प्रधान वाक्य और आश्रित वाक्य के आधार पर मिश्र वाक्य [संकीर्ण वाक्यम्] की परिभाषा वैयाकरणों ने की है ।

कामता प्रसाद गुरू के अनुसार मिश्र वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य और एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं ।[19] मिश्र वाक्य के बारे में सूरज भान सिंह जी लिखते हैं -"मिश्र वाक्य में कम से कम दो उपवाक्य होते हैं जिनमें से एक मुख्य/स्वतंत्र उपवाक्य होता है और दूसरा गौण या आश्रित उपवाक्य ।"[20] मुख्य तथा आश्रित उपवाक्य के बीच आश्रय/आश्रित संबन्ध होता है । मुख्य उपवाक्य वाक्य का मुख्य था मुख्य कथन होता है और आश्रित उपवाक्य कुछ समुच्चयबोधक अव्ययों [जो, कि, ताकि आदि] द्वारा मुख्य उपवाक्य से जुडा होता हैं । जैसे

बाहर एक लडका खडा है जो आपको ढूँढ रहा है ।

मुख्य उपवाक्य बिना आश्रित उपवाक्य के भी प्रयुक्त होने की क्षमता रखता है । लेकिन आश्रित उपवाक्य अपने अर्थ की पूर्णता या संगति के लिए मुख्य उपवाक्य की आकांक्षा करता है

---

19. हिन्दी व्याकरण: कामता प्रसाद गुरू. पृ 441

20. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण: सूरज भान सिंह - पृ 8

और स्वतंत्र रूप से नहीं प्रयुक्त हो सकता । 1 के उदाहरण में बाहर एक लड़का खडा है मुख्य उपवाक्य है, क्योंकि यह बिना दूसरे वाक्य के स्वतंत्र रूप से भी प्रयुक्त हो सकता है, लेकिन जो आपको ढूँढ रहा है एक आश्रित उपवाक्य है, क्यों कि यह बिना मुख्य वाक्य के नहीं प्रयुक्त हो सकता ।

मलयालम के वैयाकरणों ने भी इसी तरह की परिभाषा दी है । उनके अनुसार एक "अंगीवाक्यम्" (प्रधान वाक्य) और उससे आश्रित एक या अधिक अंगवाक्यम (आश्रित वाक्य) से युक्त वाक्य संकीर्णकम् है ।[21] जैसे,

पुरत्तु् निल्कुन्न आणकुट्टि ताङ्ळे अन्वेषिच्चु कोण्डिरिक्कुकयाण ।
(मलयालम)

बाहर एक लडका खडा है जो आप को ढूँढ रहा है । (हिन्दी)

प्रकार्य की दृष्टि से आश्रित उपवाक्य के तीन भेद होते हैं – संज्ञा उपवाक्य (नाम वाक्यम्) विशेषण उपवाक्य (नाम विशेषण वाक्यम्), क्रिया विशेषण उपवाक्य (क्रिया विशेषण. वाक्यम) ।

<u>संज्ञा उपवाक्य और उससे संबन्धित समस्यायें</u>

"मुख्य उपवाक्य की किसी संज्ञा या संज्ञा वाक्यांश के बदले जो उपवाक्य आता है, उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं ।"[22] मलयालम के वैयाकरणों ने भी इसकी परिभाषा यों की है –" संज्ञा के स्थान पर उसका (संज्ञा का) व्यवहार करने वाला वाक्य "नामवाक्यम्" है ।"[23]

---

21. भाषा दीप्ति के.के. पोनमेलत्त – पृ 51
22. हिन्दी व्याकरण: कामता प्रसाद गुरू – पृ 442
23. मलयालम, व्याकरणवुम, रचनयुम – वट्टपरमिबल गोपिनाथन पृ 130

नाळे अवधियाणेन्नें अध्यापकन् परञ्ञु । §मलयालम§
अध्यापक ने कहा कि कल छुट्टी है । §हिन्दी§

उपर्युक्त वाक्यों में क्रमश: नाळे अवधियाणेन्नें और कल छुट्टि है संज्ञा उपवाक्य है ।

संज्ञा उपवाक्य बहुधा स्वरूपवाचक समुच्चय बोधक "कि" से होता है और मलयालम में नाम वाक्यम् "एन्नु" से समाप्त होता है । मलयालम में उपवाक्य §आश्रित वाक्य§ पहले आता है जबकि हिन्दी में मुख्य उपवाक्य के बाद । इसी भिन्नता की बजह से वे कभी कभी हिन्दी में भी आश्रित पहले और आश्रित उपवाक्य बाद में प्रयुक्त करके गलती कर बैठते हैं । जैसे, "आज छुट्टि है कि ऐसा अखबार में सूचना है ।" मलयालम का वाक्य "इन्नें अवधियाणेन्नें पत्रत्तिल अरियिप्पुण्ड्" के प्रभाव के कारण यहाँ आश्रित उपवाक्य §आज छुट्टि है § के बाद कि का प्रयोग करके मुख्य उपवाक्य को अन्त में रखा गया है । हिन्दी की प्रकृति के अनुसार सही वाक्य होना चाहिए - "अखबार में सूचना है कि आज छुट्टि है ।" इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. भगवान तुम्हारा भला करे कि ऐसा उसने कहा । §अशुद्ध§
   उसने कहा कि भगदान तुम्हारा भला करे । §शुद्ध§
2. सदा सच बोलो कि ऐसा पिताजी ने कहा । §अशुद्ध§
   पिताजी ने कहा कि सदा सच्च बोलो । §शुद्ध§
3. आप हमारे घर दो दिन के लिए ठहरें कि ऐसी हमारी इछा है । §अशुद्ध§
   हमारी इच्छा है कि आप हमारे घर दो दिन के लिए ठहरें §शुद्ध§

4. वह मेरी घडी ही होना चाहिए कि ऐसा मुझे लगा । §अशुद्ध§
मुझे लगा कि वह मेरी ही घडी है । §शुद्ध§
5. आप हमारे घर पधारे कि ऐसी प्रार्थना मैं करता हूँ । §अशुद्ध§
मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप हमारे घर पधारें । §शुद्ध§

विशेषण उपवाक्य §नामविशेषण वाक्यम्§ और उससे संबन्धित समस्यायें

"मुख्य उपवाक्य की किसी संज्ञा की विशेषता बतानेवाला उपवाक्य विशेषण उपवाक्य कहलाता है ।"[24] मलयालम में इसे "नाम विशेषण वाक्यम्" कहते है । मलयालम के वैयाकरणों ने इसकी परिभाषा यों की है - "नामविशषणम् §विशेषण§ के स्थान पर रहकर उसका व्यवहार करनेवाला वाक्य "नामविशेषण उपवाक्यम् है ।[25] जैसे,

मेशपुरत्त वच्चिरिक्कुन्न वाच्चॅ एन्टेताण् । §मलयालम§
जो घड़ी मेज पर रखी है वह मेरी है । §हिन्दी§

हिन्दी में विशेषण वाक्य जो, जिसने जैसे, जिन्हें शब्दों से प्रारंभ होता है । लेकिन मलयालम में नाम विशेषण के लिए "पेरच्चम्" का प्रयोग होता है ।

1. कुट्टिकळ् सञ्चरिक्कुन्न बस मरिञ्ञु । §मलयालम§
जिस बस में बच्चे यात्रा करते थे वह गिर गया । §हिन्दी§

---

24 हिन्दी व्याकरण: पं. कामता प्रसाद गुरू - पृ 442
25 मलयालम व्याकरणवुम् रचनयुम् - वट्टपराम्बल गोपिनाथन -पृ 180

विशेषण उपवाक्य के संबन्ध में मलयालम और हिन्दी की वाक्य सरचंना भिन्न होने के कारण जब केरल के छात्र मलयालम में सोचकर हिन्दी में अनुदित करके लिखते हैं तब वाक्य के मध्य में वाला जोड़कर वाक्य रचना करते हैं । जैसे, "बाहर खडे होनेवाला लडका आपसे मिलना चाहता है ।" इसमें कहीं भी व्याकरणिक त्रुटि नहीं है । फिर भी हिन्दी की प्रकृति की दृष्टि से सही वाक्य सरचंना इस प्रकार होनी चाहिए – बाहर जो लड़का खडा है, वह आपसे मिलना चाहता है । इस प्रकार के एक और उदाहरण है –

1. बच्चों की यात्रा करने वाली बस गिर गई । §हिन्दी की प्रकृति के विरुद्ध§

2. जिस बस में बच्चे यात्रा करते थे, वह गिर गयी । §हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल§

मलयालम में कर्ता के बाद विशेषण पदबद्ध रखने की प्रवृत्ति है । इसी प्रभाव के कारण वे मलयालम में सोचकर लिखते समय हिन्दी के विशेषण पदबद्ध का प्रयोग छोड देते हैं जो गलत हो जाता है । जैसे,

1. मैं ने चुना घोड़ा दौड में जीत गया ।
   जो घोडा मैंने चुना वह दौड में जीत गया ।
2. उसने कल लाया आम कच्चा है ।
   जो आम उसने कल लाया था, वह कच्चा है ।
3. आपने भेजा पत्र मैं नहीं पढ़ा ।
   आप ने जो पत्र भेजा, वह मैंने नहीं पढ़ा ।

<u>क्रियाविशेषण उपवाक्य §क्रियाविशेषण उपवाक्यम्§ और उससे संबन्धित समस्यायें</u>

जो आश्रित वाक्य किसी क्रिया के विशेषण का काम देता है, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं ।[26] मलयालम में इसे

क्रिया विशेषण वाक्यम कहते हैं। क्रिया विशेषण के स्थान पर आकर उसका व्यवहार करने वाला वाक्य क्रिया विशेषण वाक्य है।[27] जैसे,

हिन्दी	मलयालम
जब वह मेरे पास आया तब मैं सो रहा था ।	अवन् एन्टेयडुत्तें वन्नप्पोल ञान् उरडुकयायिरुन्नु ।

यहाँ "जब वह मेरे पास आया" और "अवन् एन्टेयटुत्तें वन्नप्पोल" क्रिया विशेषण उपवाक्य है ।

हिन्दी में क्रिया विशेषण उपवाक्य जब किधर, क्यों, यदि यद्यपि, आदि शब्द से आरंभ होता है । जबकि मलयालम में अन्, मूलम, आल्, एंकिलुमु, आपोल, आदि से अन्त होता है । जैसे,

1. रोगम शमिक्कान वैद्यन मरुन्नु कोडुत्तु । §मलयालम§
   रोग के शमन के लिए वैद्य ने दवा दी । §हिन्दी§
2. मसूरि मूलम् धाराळं पेर मरिच्चु । §मलयालम§
   मसूरि के कारण बहुत लोग मर गए । §हिन्दी§

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि हिन्दी की संरचना और मलयालम की सरचंना में अन्तर है । इसलिए वे मलयालम की सरंचना एंव प्रकृति के अनुसार वाक्य गठन करते हैं । जैसे, "फूल खिलने का जगह पर सुगन्ध निकलते हैं ।" यहाँ वाक्य का गठन मलयालम की प्रकृति के अनुसार किया गया है । हिन्दी की प्रकृति के अनुसार वाक्य होना चाहिए - जब फूल खिलता है तब सुगन्ध

---

26. हिन्दी व्याकरण:कामता प्रसाद गुरु - पृ 448
27. मलयालम व्याकरणवुम् रचनयुम् - वट्टपरम्पिल गोपिनाथन. पृ 131

फैलती है । इस प्रकार के अन्य उदाहरण है -

हिन्दी प्रकृति के विरुद्ध	हिन्दी प्रकृति के अनुकूल
1. फूल वाली जगह पर सुगन्ध होती है ।	1. जहाँ फूल है वहाँ सुगन्ध होती है ।
2. पृथ्वी सूरज की परिक्रमा करने जैसा चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करती है ।	2. जैसे पृथ्वी सूरज की परिक्रमा करती है वैसे चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है ।
3. किसान खूब मेहनत करने वाली जगह पर अच्छी उपज मिलती है ।	3. जहाँ किसान खूब मेहनत करते हैं वहाँ उच्छी उपज मिलती है ।
4. गोपाल जैसा कठिन परिश्रम रमेश नहीं करता ।	4. गोपाल जितना कठिन परिश्रम करता है उतना रमेश नहीं करता ।
5. तटीय प्रदेश में मिलने जैसा मछलियाँ यहाँ भी है ।	5. तटीय प्रदेश में जैसी मछलियाँ है वैसी यहाँ भी हैं ।
6. दिन बीतने पर बारिश बढ़ती ही जा रही है ।	6. ज्यों ज्यों दिन बीतते हैं त्यों त्यों बारिश बढ़ती जा रही है ।
7. आज पानी बरसने पर गरमी कम होगी ।	7. यदि आज पानी बरसेगा तो गरमी कम होगी ।
8. उसने दवा पी लेने पर भी बीमारी दूर नहीं हुई ।	8. यद्यपि उसने दवा पी ली फिर भी उसकी बिमारी दूर नहीं हुई ।
9. कल रविवार होने के कारण पढ़ाई नहीं थी ।	9. चूँकि कल रविवार था, इसलिए पढ़ाई नहीं थी ।
10. समय पर स्टेशन पर पहूँच सकूँ ताकि मैं बड़े सबेरे ही घर से निकला ।	10. मैं बडे सबेरे ही घर से निकला ताकि समय पर स्टेशन पर पहुँच सकूँ ।

चूँकि मलयालम में क्रिया विशेषण उपवाक्य के पहले और बाद में भी समुच्चय बोधक का प्रयोग नहीं है, इसलिए केरल के छात्र मलयालम के अनुरूप अन्तिम समुच्चय बोधक शब्द का प्रयोग करते हैं और प्रारंभ में जो समुच्चय बोधक है, उसे छोड देते हैं । जैसे,

1. सूरज निकलता तब प्रकाश फैलता है ।

जब सूरज निकलता है तब प्रकाश फैलता है ।

2. वह धनी है तो भी सुखी नहीं है ।

यद्यपि वह धनी है तो भी सुखी नहीं है ।

3. वह जाता तो गाड़ी ज़रूर मिलती है ।

यदि वह जाता तो गाडी ज़रूर मिलती ।

इन मिश्र वाक्यों में जो पहले दिया गया है उनमें वाक्य के प्रारंभमें जुडनेवाले सम्मुच्चय बोधक को छोड़ा गया है जो हिन्दी की प्रकृति के अनुसार ठीक नहीं है । लेकिन व्याकरण तथा भाव संप्रेषण की दृष्टि से कोई गलतियाँ नहीं है ।

सयुक्त वाक्यम् (महावाक्यम्)

सयुक्त वाक्य में एक से अधिक प्रधान वाक्य रहते हैं और इन प्रधान उपवाक्यों के साथ बहुधा इनके आश्रित उपवाक्य भी रहते हैं । वे एक दूसरे से आश्रित नहीं रहते । मलयालम में इसे महावाक्यम् कहते हैं । दोनों उपवाक्य सम्मुच्चयबोधक अव्यय से जोड़ जाता है । जैसे,

अध्ययन से बुद्धि का विकास होता है और ज्ञान में वृद्धि होती है ।

पठनत्ताल बुद्धि विकसिक्कुकयुम् अरिवें वधिक्कुकयुम चेयुन्नु ।

हिन्दी में और, लेकिन, पर, मगर, परन्तु, किन्तु, या आदि अव्यय जोडते हैं । मलयालम में उम् (और), एन्नाल् (लेकिन, पर, मगर, किन्तु, परन्तु) अल्लेङ्किल आदि जोड़ते है ।

इन दोनों भाषाओं में संयुक्त वाक्य की संरचना एक जैसी होने के कारण इससे कोई संरचनागत समस्यायें उत्पन्न नहीं होती ।

क्रम और उससे संबन्धित समस्यायें

हिन्दी और मलयालम के वाक्यों में पद -क्रम समान प्रकार से होता है- कर्ता, कर्म, क्रिया आदि क्रम से । जैसे

बाबू पुस्तक पढ़ता है । §हिन्दी§

बाबू पुस्तकं वायिक्कुन्नु । §मलयालम§

दोनों में सम्बन्धी से पहले सम्बन्ध कारक, विशेष्य से पहले विशेषण ,क्रिया से पहले क्रिया विशेषण रखा जाता है । जैसे

हिन्दी	मलयालम
राजू की काली गाय	राजुविन्टे करुत्त पशु

कभी कभी दोनों में क्रिया का स्थानान्तर होता है । जैसे,

मैंने बुलाया एक को मगर आये दस । §हिन्दी§

ओरुत्तने विलिच्चु बन्नतो पत्तु पेर् ।

कभी कभी दोनों के विशेषण के क्रम भी अलग होते हैं । जैसे,

चूटुळ्ळ पशुविन्टे पाल् । §मलयालम§

गाय का गरम दूध । §हिन्दी§

यहाँ विशेषण का प्रयोग भिन्न स्थानों में किया गया है । मलयालम में चूटुळ्ळ §गर्म§ पशुविन्टे §गाय का§ के पहले है जबकि हिन्दी में दूध के पहले । इसी भिन्नता के कारण केरल के छात्र-छात्राएँ विशेषण के प्रयोग में निम्न प्रकार की गलतियाँ कर बैठते है जो कभी कभी अर्थ परिवर्तन का कारण भी बन जाता है । जैसे,

1. यह इस सर्वोत्कृष्ट रोग की चिकित्सा है । (अशुद्ध)
   यह इस रोग की सर्वोत्कृष्ट चिकित्सा है । (शुद्ध)
2. एक रूई का तकिया दिखाओं । (अशुद्ध)
   रूई का एक तकिया दिखाओं । (शुद्ध)
3. मुझे गर्म गाय का दूध चाहिए । (अशुद्ध)
   मुझे गाय का गर्म दूध चाहिए । (शुद्ध)
4. उसने आयातित कमीज़ का कपडा दिखाया । (अशुद्ध)
   उसने कमीज का आयतित कपड़ा दिखाया । (शुद्ध)
5. एक फूलों की माला । (अशुद्ध)
   फूलों की एक माला । (शुद्ध)
6. कई मिल के मजदूर हड़ताल कर करे है । (अशुद्ध)
   मिल के कई मजदूर हडताल कर करे है । (शुद्ध)

<u>अन्वचन और उससे संबन्धित समस्यायें</u>

वाक्य में विशेषण विशेष्य के अनुसार होना चाहिए । जैसे, "काली गाय सफेद दूध देती है ।" इसमें काली विशेषण है । गाय विशेष्य है । गाय स्त्रीलिंग होने के कारण काली (जोकि स्त्रीलिंग रूप) का प्रयोग किया गया है । मलयालम में इसके लिए एक ही विशेषण का प्रयोग हर लिंग एवं वचन में होता है । जैसे,

काला बैल घास खाता है ।

काली गाय घास खाती है ।

काले बैल घास खाते हैं ।

केरल के छात्र छात्राएँ इसका प्रयोग करते समय पुल्लिंग एकवचन में प्रयुक्त विशेषण का प्रयोग ही हमेशा करते हैं । जैसे,

1. अच्छा लडके जिद्द नहीं करते । §अशुद्ध§
   अच्छे लडके जिद्द नहीं करते । §शुद्ध§
2. लम्बा लडकी खूब दौडती है । §अशुद्ध§
   लम्बी लडकी खूब दौडती है । §शुद्ध§

विशेषण से सम्बन्धित समस्याओं का विश्लेषण विशेषण के अन्तर्गत विस्तार से किया गया है ।

यदि कर्ता के बाद में ने हो और कर्म हो या न हो तो हिन्दी में क्रिया कर्ता के अनुसार होती है । जैसे, राम रोटी खाता है । मलयालम में कोई परिवर्तन क्रिया में नहीं होता । "ने" प्रत्यय के समानार्थी प्रत्यय भी मलयालम में नहीं है । इससे जो समस्यायें उत्पन्न होती है उनका विश्लेषण क्रिया संबन्धी समस्याओं के अन्तर्गत किया गया है ।

यदि कर्ता के बाद ने हो और कर्म के बाद को न हो तो क्रिया कर्म के अनुसार होती है । लेकिन मलयालम में कोई परिवर्तन नहीं होता । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
1. राम ने रोटी खायी	रामन् रोट्टि तिन्नु ।
2. राम ने दो रोटियाँ खायीं ।	रामन् रण्डु रोट्टिट तिन्नु ।

मलयालम में ने के समान कोई प्रत्यय न होने के कारण केरल के छात्र ने के बिना ही वाक्य बनाते हैं । इन से संबन्धित समस्याओं का विश्लेषण क्रिया संबन्धी समस्याओं के अन्तर्गत किया गया है ।

हिन्दी में यदि कर्ता के बाद ने और कर्म के बाद को हो तो क्रिया कर्ता या कर्म का अनुसरण नहीं करती । तब क्रिया पुल्लिंग एकवचन में रहती है । जैसे,

हिन्दी	मलयालम
लडकी ने लडके को मारा	पेणक्कुट्टि आणकुट्टिये अटिच्चु।

मलयालम में इस तरह के प्रयोग में भी कोई परिवर्तन नहीं होता है । लेकिन मलयालम भाषा भाषी यहाँ कर्म के अनुसार क्रिया में परिवर्तन करते हैं जिसका विश्लेषण भी क्रिया संबन्धी समस्याओं के अन्तर्गत किया गया है ।

हिन्दी में एक ही लिंग की प्राणी वाचक संज्ञाओं को "और" से जोड़ने से क्रिया बहुवचन हो जाती है । लेकिन यह भी हिन्दी में है कि अप्राणिवाचक चीजों या गुणों को "और" से जोड़ने से क्रिया एकवचन में ही होती है ।[28] यह केरल के छात्रों के लिए समस्यायें उपस्थित करता है । वे एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग करके गलतियाँ कर बैठते हैं । जैसे, "उस लडके के पास सिर्फ छतरी और घडी हैं ।" यहाँ छतरी और घड़ी अप्राणी वाचक है । इसलिए क्रिया का प्रयोग एकवचन में होना चाहिए । लेकिन यहाँ है की जगह हैं का प्रयोग किया गया है जो गलत है । सही वाक्य है - उस लडके के पास सिर्फ छतरी और घड़ी है । एक और उदाहरण है :-

तुम्हारी नाकामयाबी की खबर सुनकर मुझे रंज और ताज्जुब हुए । {अशुद्ध}

तुम्हारी नाकामयाबी की खबर सुनकर मुझे रंज और ताज्जुब हुआ । {शुद्ध}

यदि वाक्य में दो कर्ता है और उनमें से दूसरा कर्ता पहले से संबान्धित हो तो क्रिया प्रथम कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार होगा ।[29] जैसे, "मद्रास अंग्रेजों की राजधानी था" । यहाँ मद्रास

---

२८. हिन्दी व्याकरण - सर आर शास्त्री, बालचन्द्र आप्टे - पृ २५९

२९ वही पृ २६०

प्रथम कर्ता है जिससे संबन्धित कर्ता है अंग्रेजों की राजधानी है" जो स्त्रीलिंग है । यहाँ प्रथम कर्ता के अनुसार ही क्रिया रहती है । मलयालम में यह प्रवृत्ति नहीं है । इसलिए वे दूसरे कर्ता के अनुसार क्रिया में परिवर्तन करते हैं । जैसे,

1. कमला अपने पति की मौत का कारण हुआ । (अशुद्ध)
   कमला अपने पति की मौत का कारण हुई । (शुद्ध)
2. वर्धा योजना के अनुसार मातृभाषा शिक्षा का माध्यम रखी गया । (अशुद्ध)
   वर्धा योजना के अनुसार मातृभाषा शिक्षा का माध्यम रखी गई । (शुद्ध)

<u>हिन्दी और मलयालम की वाक्य रचना और उससे संम्बन्धित समस्यायें</u>

यद्यपि हिन्दी और मलयालम वाक्य रचना में कर्ता, कर्म और क्रिया का क्रम एक सा होता है तथापि, इस समानता के बावजूद हिन्दी रचना का अपना विशेष ढंग होता है । मलयालम भाषी छात्र यह मानकर चलता है कि मलयालम और हिन्दी की वाक्य संरचना एक सी होती है । शैली विशेषण भिन्नताओं को न तो वह जानता है नहीं उसे बताया जाता है ।

हिन्दी में सर्वनामों के प्रयोग में अपना का प्रयोग ज्यादा प्रचलित है । मलयालम में अपना के अर्थ में स्वन्तम् शब्द का प्रयोग होता है । यह इस अर्थ में विशेषण शब्द है । मलयालम में सर्वनाम प्रकरण में अपना के अर्थ में उसी सर्वनाम को दुहराया जाता है ।

हिन्दी में यह दुहराना मुहावरे के खिलाफ और अरोचक माना गया है । जैसे,

1. ञङळ् ञङळुटे विटिनु मुन्पिल कळिक्कुकयाकुन्नु ।
2. अवन् अवन्टे सहोदन्टे कूटे स्कूलिल् पोयि ।
3. ञान् एन्टे विट्टिल इरुन्नु एष़ुतुकयायिरुन्नु ।
4. निङळ् निङळुटे पेना एडुक्कुकयायिरुन्नु ।

मलयालम भाषा भाषी छात्र इस का प्रयोग निम्नानुसार करते हैं । जैसे

1. हम हमारे घर के सामने खेल रहे हैं ।
2. वह उसके भाई के साथ पाठशाला में गयी है ।
3. मैं मेरे घर में बैठकर लिख रहा था ।
4. तुम तुम्हारी कलम ले रहे थे ।

इन सभी में मलयालम शैली का प्रयोग ज्यादा आया है । हिन्दी का जो अपना ढंग है उसके अनुसार सही वाक्य इस प्रकार है ।

1. हम अपने घर के सामने खेल रहे हैं ।
2. वह अपने भाई के साथ पाठशाला में गयी है ।
3. मैं अपने घर में बैठकर लिख रहा था ।
4. तुम अपनी कलम ले रहे थे ।

भिन्नार्थी एक रूपी शब्दों से उत्पन्न समस्यायें

विभिन्न स्रोतों से आकर हिन्दी और मलयालम में कुछ एकरूपी शब्द ऐसे हैं जो दोनों भाषाओं के अन्तर्गत

भिन्न अर्थ रखते हैं । जैसे - अवधि हिन्दी में इसका अर्थ है नियत काल । मलयालम में इसका अर्थ छुट्टि है । जैसे,

1. मई - जून महीने में आगरे में बडी गर्मी पडती है । इस अवधि में पर्यटक बहुत कम आता है ।
2. ञान् इन्नले अवधियिलायिरुन्नु । (मलयालम)
   (कल मैं छुट्टि पर था)

केरल के छात्र छात्राएँ अक्सर मलयालम के अर्थ में इसका प्रयोग करते हैं जो कि बिलकुल गलत है । जैसे,

केरल में अनेक विष्णु क्षेत्र है । यहाँ क्षेत्र शब्द को लीजिए । हिन्दी में इसका अर्थ है इलाका जबकि मलयालम में उसका अर्थ है मंदिर । इस वाक्य में क्षेत्र का प्रयोग मलयालम में जो अर्थ है उसके रूप में किया है जो गलत है । सही वाक्य इस प्रकार होना चाहिए - केरल में अनेक विष्णु मंदिर है । इस प्रकार के अन्य कुछ उदाहरण हैं -

1. आज विश्व समाधान खतरे में है । (अशुद्ध)
   आज विश्व शान्ति खतरे में है । (शुद्ध)
2. धर्म न देने वाला क्रूर होता है । (अशुद्ध)
   भीख न देने वाला क्रूर होता है । (शुद्ध)
3. मुझे उनकी शादी का क्षण मिला है । (अशुद्ध)
   मुझे उनकी शादी का निमंत्रण मिला है । (शुद्ध)
4. राष्ट्रपति का प्रसंग आधे घंटे का था । (अशुद्ध)
   राष्ट्रपति का भाषण आधे घंटे का था । (शुद्ध)

अतः मलयालम में प्रचलित किसी शब्द का हिन्दी में प्रयोग करने से पूर्व उस शब्द के हिन्दी में प्रचलित अर्थ को ध्यान में लिया जाना चाहिए। क्योंकि मलयालम में प्रचलित किसी शब्द के अर्थ को ध्यान में लेते हुए, उसी अर्थ के लिए जब उस शब्द का हिन्दी में प्रयोग किया जाता है तब कभी कभी यह प्रयोग बडा ही अनर्थकारी हो जाता है।

निष्कर्ष

यहाँ अशुद्ध वाक्य रचना से सम्बन्धित कारणों का स्फुट विवेचन करते हुए, विशुद्ध वाक्य रचना की दृष्टि से कुछ आवश्यक बातों पर विचार किया है। हिन्दी वाक्य रचना लगभग मलयालम के समान होती है, जैसे प्रथम कर्ता, बाद में कर्म और अन्त में क्रिया। अतःमलयालम भाषियों की हिन्दी वाक्य-रचना में गलतियाँ अपेक्षित नहीं है फिर भी जिन कारणों से गलतियाँ हुआ करती है उन पर विचार करना आवश्यक है। मलयालम से प्रभावित वाक्य रचना में हमारे, उनके, मेरे, तेरे शब्द खटकने लगते हैं। लेकिन हिन्दी की शुद्ध वाक्य रचना में हमारे उसके, मेरे तेरे के स्थान पर लिंग विशेष्य के अनुसार अपना, अपने और अपनी शब्द का प्रयोग ठीक लगता है। विभिन्न स्रोतों से हिन्दी मलयालम में आगत शब्दों का प्रयोग करने से पूर्व - हिन्दी में प्रचलित उनके अर्थ को ध्यान में लिया जाना चाहिये।अन्यतः हो सकता है कि जिस शब्द के द्वारा

हम, जिस अर्थ का बोध कराना चाहते हैं उसका अर्थ वह नहीं होगा जो हमें अपेक्षित होता है। अपितु वह होगा जिसकी हमने कल्पना तक की हुई नहीं रहती है । वाक्य में प्रयुक्त शब्दों का क्रम यथा-स्थान होना चाहिए और उसमें प्रयुक्त शब्दों में अन्वय का होना आवश्यक है । यदि वाक्य व्याकरण - सम्मत न हो तो उसे शुद्ध वाक्य नहीं कहा जाएगा ।

उपसंहार

भाषा मानव की संपत्ति है जिसके ज़रिए वह अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचा देता है । सबसे पहले मानव अपने सहज एवं स्वाभाविक रूप में मातृभाषा से परिचित हो जाता है । जब वह अपने सीमित दायरे से बाहर निकलकर आगे बढना चाहता है तब उसके लिए अन्य किसी भाषा का प्रयोग अनिवार्य बन जाता है । वह अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त जिस भाषा का अध्ययन करता है वह उसके लिए द्वितीय भाषा है । जब व्यक्ति द्वितीय भाषा का अध्ययन करने लगता है, तब मातृभाषा के सहज संस्कार और प्रवृत्तियाँ उस पर राज करते रहते हैं । द्वितीय भाषा के अध्ययन के वक्त बीच बीच में अपनी मातृभाषा के संस्कार प्रकट होते रहते हैं जिसके कारण अनेक समस्यायें उपरिस्थित हो जाती है । उदाहरण के लिए केरलियों की मातृभाषा मलयालम है और मलयालम भाषा भाषी व्यक्ति जब हिन्दी का अध्ययन करता है तो हिन्दी उसके लिए द्वितीय भाषा बन जाता है । केरल का छात्र जब पहले पहल हिन्दी का अध्ययन करना शुरू करता है तो उसके सामने निम्नलिखित समस्यायें आ जाती है । मातृभाषा का अकारण प्रभाव, द्वितीय भाषा हिन्दी की प्रवृत्तियों को आत्मसात् करने की कठिनाइयाँ, नई भाषा की व्याकरणिक जटिलता आदि । जहाँ तक मलयालम और हिन्दी का प्रश्न है दोनों भाषाओं में कई ऐसे अनेक शब्द आ गये हैं जो मूल भाषा संस्कृत के हैं । लेकिन ये समान शब्द जब प्रयोग में लाये जाते हैं तो इनका अर्थ भिन्न

रहता है । यह समस्या केरल के छात्रों के सामने अनुत्तरित रह जाती है । इस समस्या के कारण केरल का छात्र ऐसी हिन्दी का प्रयोग करता है जो मलयालम के रंग में रंगी हुई होती है । इस प्रकार की अनेक समस्यायें हैं जो हिन्दी अध्ययन के समय केरल के छात्रों को असुविधाएँ प्रदान करती रहती हैं । जब केरल में हिन्दी अध्ययन शुरू हुआ तब से लेकर यह समस्यायें अस्तित्व में रही है ।

केरल में हिन्दी छात्रों के सामने प्रकट होने वाली इन समस्याओं की गहनता मूल रूप से दोनों भाषाओं की संरचनात्मक विशेषताओं पर निर्भर रहती है । मलयालम और हिन्दी की संरचनात्मक विशेषताएँ कहीं कहीं साम्य लिए हुए है तो कहीं कहीं वैषम्य भी देखने को मिलता है । जब एक बार संरचनाओं से युक्त किसी एक भाषा का ढाँचा तैयार हो जाता है तो स्वाभाविक रूप से व्यक्ति उसके सामने आने वाली नई भाषाओं को उसी ढाँचे में ढालने का प्रयास करता है । यहीं पर कठिनाइयाँ शुरू होती है । उदाहरण के लिए हिन्दी में भूतकाल क्रिया के प्रयोग करते समय कर्ता के साथ "ने" का प्रयोग होता है । "ने" अकर्मक क्रियाओं में कर्ता के साथ नहीं लगता । यही नहीं "ला","बोल","भूल", आदि सहायक क्रियाओं के प्रयोग में सकर्मक होते समय कर्ता के साथ "ने" का प्रयोग नहीं होता । मलयालम में तो भूतकाल के साथ किसी प्रत्यय का प्रयोग नहीं किया जाता । जैसे,

<u>हिन्दी</u>	<u>मलयालम</u>
उसने दो रोटी खायीं ।	अवन् रण्ड् अप्पम् कषिच्चु ।

ऐसी हालत में हिन्दी का यह विशेष नियम जिसका मलयालम में अभाव रहा है और हिन्दी में कहीं अपवादों के साथ इस नियम का प्रयोग किया जाता है, सामान्य छात्रों के लिए द्वितीय भाषा के अध्ययन में काफी कठिनाई उपस्थित करता है ।

भाषा अध्ययन में उच्चारण एवं वर्तनी की अहम भूमिका होती है । उच्चरित ध्वनि ही भाषा का मूलाधार है निरंतर उच्चरित होने के कारण व्यक्ति की मातृभाषा के उच्चारण उनके दिमाग के निगूढ मनोवैज्ञानिक सरंचना में अंशीभूत हो जाते हैं । ऐसी उच्चारणगत प्रवृत्तियों से विचलित होना भाषा के अध्ययन करनेवाले छात्रों के लिए कठिन कार्य है । मातृभाषा के अध्ययन करते समय इन उच्चारणगत प्रवृत्तियों से स्वतः अभ्यस्थ हो जाता है । अर्थात इन उच्चारणों को छात्र आत्मसात् करके सहज एवं स्वाभाविक ढंग से मातृभाषा की ध्वनियों का उच्चारण करता है । लेकिन यह समस्या बन कर तब सामने आता है जब छात्र अपनी मातृभाषा की ध्वनियों से भली भाँति परिचित होकर उसके उच्चारण करने के बाद किसी अन्य भाषा के अध्ययन में प्रवृत्त हो जाता है ।

केरल के हिन्दी अध्ययन में हिन्दी ध्वनियों के उच्चारण की भी यह स्थिति है । मातृभाषा मलयालम की ध्वनियों से परिचित होने के बाद केरल के हिन्दी छात्र जब द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी अध्ययन करते हैं तब मातृभाषा मलयालम की ध्वनियाँ काफी समस्यायें पैदा करती हैं । यहाँ यह याद रखना चाहिए कि जिस प्रकार हिन्दी भाषी हिन्दी का उच्चारण करता है उसी प्रकार हिन्दी का उच्चारण करना मलयालम भाषियों

के लिए मुश्किल है । क्योंकि हिन्दी भाषियों के उच्चारण अवयव हिन्दी ध्वनियों के लिए काफी अभ्यस्त रहते हैं । जबकि मलयालम भाषियों के उच्चारण अवयव मलयालम के लिए अनुकूल रहता है। इसके आलावा हिन्दी और मलयालम दोनों भाषाओं की ध्वनियों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि दोनों भाषाओं की ध्वनियों में समानताएँ हैं (जैसे, अ दोनों में कठ्य स्वर है ।) और साथ ही साथ भिन्नताएँ भी हैं (जैसे, हिन्दी में "ऐ" और "औ" का पूर्ण उच्चारण भी चलता है और अपूर्ण उच्चारण भी । लेकिन मलयालम में "ऐ" और "औ" का पूर्ण उच्चारण ही चलता है ।) कहने का मतलब यह है कि मलयालम की ध्वनियों का प्रभाव हिन्दी की ध्वनियों पर पडने के कारण हिन्दी ध्वनियों के उच्चारण में गलतियाँ आ जाती हैं ।

इस अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि उच्चारणगत भिन्नता के कारण कभी कभी वर्तनीगत गलतियाँ भी हो जाती है । उदाहरण के लिए-उद्भव के लिए उल्भव लिखते हैं । कभी कभी उच्चारणगत गलतियाँ अर्थ परिवर्तन का कारण बन जाता है । उदाहरण के लिए "जोडना" के स्थान पर "छोड़ना" करके लिखने से अर्थ उलटा हो जाता है ।

हिन्दी और मलयालम भाषाओं की संज्ञाओं के तुलनात्मक अध्ययन से यह पता चलता है कि दोनों भाषाओं में कुछ ऐसी समान रूपी भिन्नार्थी संज्ञाएँ हैं जो कुछ ध्वन्यात्मक अन्तरों के साथ दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होती है । जैसे,चरित्र और चरित्रम् । हिन्दी के चरित्र का अर्थ है स्वभाव जबकि मलयालम में चरित्रम् का अर्थ है इतिहास । कभी कभी केरल के छात्र मलयालम के अर्थ में उन शब्दों का प्रयोग करते हैं । इसलिए

इन भिन्न अर्थों को समझकर अध्ययन करना परम आवश्यक है ।

संज्ञा एवं सर्वनामों के लिंग निर्णय से संबन्धित समस्यायें भी केरल के छात्रों के लिए कठिनाइयाँ उपस्थित करती हैं । हिन्दी में दो लिंग - पुल्लिंग और स्त्रीलिंग हैं जबकि मलयालम में नपुंसक लिंग नामक तीसरा लिंग का भी प्रयोग होता है । संसार में जितनी भी वस्तुएँ है उनको सचेतन और अचेतन दो वर्गों में विभक्त किया गया है जिसमें चेतन वस्तुओं को दोनों भाषाओं में पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के रूप में अपनाया गया है जबकि अचेतन वस्तुओं को हिन्दी ने मलयालम के नपुसंक लिंग की श्रेणी में न गिनकर पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दो लिंगों में ही स्वीकारा है । यह केरल के छात्रों के लिए समस्यायें पैदा करती हैं । कभी कभी हिन्दी में एक ही अर्थ वाले दो सचेतन संज्ञाओं का प्रयोग भी होता है जिनमें से एक शब्द पुल्लिंग है तो दूसरा स्त्रीलिंग होता है । उसी प्रकार एक संज्ञा के दो अर्थ भी होता है जिनमें एक अर्थ में उसका प्रयोग स्त्रीलिंग में होता है और दूसरे अर्थ में इसका प्रयोग पुल्लिंग में होता है । केरल के छात्र जिस शब्द और लिंग से पहले परिचित हो जाते हैं उसी लिंग में दूसरे शब्द का प्रयोग भी करते हैं । लिंग संबन्धी समस्याओं का कारण बन जाता है । मलयालम भाषी शब्दों का संबन्ध जिससे रहता है उसी को ही अधिक महत्व देते हैं । इसलिए स्त्री के संबन्ध में चर्चा करते समय स्त्रीलिंग का प्रयोग करता है और पुरुष के संबन्ध में चर्चा करते समय - पुल्लिंग का प्रयोग करता है और असली संज्ञा को नज़र अदाज करते हैं ।

हिन्दी और मलयालम के वचनों का अध्ययन करने से पता चलता है कि लापरवाही या असावधानी के कारण ही संज्ञा या सर्वनाम संबन्धी समस्यायें उत्पन्न होती हैं । इसके अलावा हिन्दी में सदैव बहुवचन में प्रयुक्त संज्ञाओं के समानार्थी मलयालम संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में होता है । {जैसे, दर्शन - दर्शनम्} कभी कभी हिन्दी में दोनों वचनों में प्रयुक्त एक संज्ञा के स्थान पर मलयालम में दो अलग अलग संज्ञाओं का प्रयोग होता है । {जैसे, घर - वीट्‌ - वीटुक्ळ} । ये सभी भिन्नताएँ भी वचन संबन्धी अनेक समस्याओं का कारण बन जाती है ।

दोनों भाषाओं के संज्ञा और सर्वनाम की कारक व्यवस्था के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि दोनों भाषाओं की कारक व्यवस्था में काफी अन्तर है । दोनों भाषाओं की कारक व्यवस्था और अर्थ कल्पना में जो अन्तर है वही इन समस्याओं का मूल कारण है । इसी अन्तर के कारण केरल के छात्र कभी कभी कारक का प्रयोग छोड देते हैं तो कभी कभी अनावश्यक प्रयोग भी करते हैं । इसके अलावा दोनों भाषाओं की अर्थ संकल्पना के अन्तर के कारण कभी कभी वे एक कारक के स्थान पर दूसरे कारक का प्रयोग करते हैं ।

पुनरुक्ति को दूर करने के लिए संज्ञा के बदले सर्वनाम का प्रयोग करते समय उसका प्रयोग संज्ञा के लिंग वचन के अनुसार होता है । लेकिन मलयालम में सर्वनाम के लिंग एंव वचन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है । इसलिए केरल के छात्र हमेशा

सर्वनाम का प्रयोग पुल्लिंग एवं एकवचन में करते हैं । हिन्दी में संज्ञा एंव कारक का प्रयोग अलग अलग लिखा जाता है ﴾ जैसे, बाबु के ﴿ लेकिन सर्वनाम और कारक का प्रयोग एक साथ लिखा जाता है । ﴾जैसे, उसके﴿ । कभी कभी इसी भिन्नता के कारण वे इसका प्रयोग अलग अलग लिखते हैं ﴾जैसे, उस के ﴿ । हिन्दी में निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग पुरुषवाचक सर्वनामों के लिए भी होता है जबकि मलयालम में इसके लिए निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग नहीं होता । इसलिए वे कभी कभी निजवाचक सर्वनाम के स्थान पर पुरुषवाचक का प्रयोग करके गलती कर बैठते हैं ।

हिन्दी और मलयालम के विशेषणों के अध्ययन से पता चलता है कि दोनों भाषाओं के विशेषण में जो अन्तर हैं, वह अकसर छात्रों के लिए समस्याओं का कारण बन जाते हैं । उदाहरण के लिए हिन्दी में कुछ विशेषण ﴾ जैसे, बडा ﴿ लिंग और वचन के अनुसार बदलते हैं ﴾ जैसे, बडे, बडी ﴿ ।

हिन्दी और मलयालम की क्रियाओं के अध्ययन से पता चलता है कि दोनों भाषाओं की क्रियाओं में कुछ विशिष्ट अन्तर हैं जो केरल के छात्रों के लिए समस्यायें पैदा करते हैं । हिन्दी की क्रियायें लिंग एवं वचन के अनुसार बदलती रहती है । लेकिन मलयालम में लिंग एवं वचन के अनुसार क्रिया में परिवर्तन नहीं होती ।

हिन्दी	मलयालम
1. मोहन खेलता है । ﴾पु﴿	मोहन कळिक्कुन्नु ।
2. राधा खेलती है । ﴾स्त्री﴿	राधा कळिक्कुन्नु ।
3. मोहन और राधा खेलते हैं । ﴾बहुवचन﴿	मोहनुम राधयुम कळिक्कुन्नु ।

इस तरह के अन्तर के कारण केरल के छात्र क्रिया संबन्धी अनेक गलतियाँ करते हैं ।

यह धारणा केरल के छात्रों के मन में हैं कि लिंग, वचन एंव कारक के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होने के कारण अव्ययों से कोई समस्यायें उत्पन्न नहीं होती । एक हद तक यह सच है । लेकिन अव्ययों से कुछ गौण समस्यायें भी होती हैं । केरल के छात्र कभी कभी अव्ययों के साथ अनावश्यक प्रत्यय जोड देते हैं [जैसे, नीचे में बैठ जाओ], कभी कभी कारक प्रत्यय छोड देने हैं [जैसे, दस तारिख नाटक होगा] । हिन्दी में सम्मुच्चय बोधक अव्ययों के दो भाग होते है [जैसे यदि......तो] । लेकिन मलयालम में इस तरह दो भागवाले समुच्चय बोधक न होने के कारण केरल के छात्र कभी कभी एक अव्यय को छोड़ देते हैं । [जैसे, "यदि....तो" में से "तो" छोड देते हैं ।]

किसी भी भाषा की पूर्ण इकाई वाक्य है । क्योंकि वाक्य से भाव पूर्ण रूप से व्यक्त होता है । इसलिए अर्थ युक्त एंव स्पष्ट वाक्य का गठन भाषा अध्ययन के लिए परम आवश्यक है ।यद्यपि हिन्दी और मलयालम की वाक्य संरचना एक जैसी होती है, फिर भी कभी कभी वाक्य गठन करते समय केरल के छात्रों के सामने काफी कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं।जिससे वाक्य अस्पष्ट एवं जटिल बन जाते हैं। वे पहले मलयालम में सोचकर फिर भाव हिन्दी में अभिव्यक्त करते हैं । इससे हिन्दी वाक्य "छाभा कलुषित" हो जाते हैं [जैसे, यद्यपि उसने दवा पी लाने पर भी उसकी बिमारी दूर नहीं हुई] । कभी कभी विशेष. सन्दर्भों में हिन्दी के वाक्यों के पदक्रम और

मलयालम के वाक्यों के पदक्रम में अन्तर होता है । (जैसे, गाय का गरम दूध और गरम गाय का दूध) । वाक्य में हर एक शब्द का दूसरे शब्दों के साथ अन्वयन होता है । लेकिन मलयालम में इस तरह का अन्वयन आम तौर पर नहीं होता । इन कारणों से केरल के छात्र वाक्य संबन्धी अनेक गलतियाँ करके वाक्य को जटिल बना देते हैं ।

समस्याओं के विश्लेषण के उपरान्त यह पता चला है कि भाषागत गलतियों को दूर करने के लिए इन समस्याओं का निराकरण अनिवार्य है । इन समस्याओं को भली - भाँति समझकर उन्हें दूर किया जा सकता है जिसके लिए हिन्दी अध्ययन एंव अध्यापन में कार्यरत अध्यापकों एवं छात्रों को इन समस्याओं से अवगत होना चाहिए । दोनों भाषाओं के तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन तथा विश्लेषण से इन कठिनाइयों को मूल रूप में आँका जा सकता है और उन्हें दूर करने के प्रयत्न भी किए जा सकते हैं । हिन्दी पढाते समय यथा - संभव छात्रों को मातृभाषा के प्रभाव से बचाने का प्रयास कराना चाहिए । मलयालम में पहले सोचकर फिर हिन्दी में लिखने की अपेक्षा हिन्दी में सोचकर ही लिखने का प्रयास भी करना चाहिए ।

केरल के छात्रों के मन में हिन्दी भाषा के प्रति रुचि पैदा करना अनिवार्य है । चूँकि यहाँ हिन्दी का वातावरण कक्षाओं में भी नहीं है, इसलिए हिन्दी में बातचीत करेन का अवसर प्रदान करना चाहिए । स्कूलों और कालिजों में हिन्दी के अध्ययन के लिए जितना समय अपेक्षित है, उतना नहीं दिया गया है । इसलिए

ज्यादा समय देने की आवश्यकता है । केरल में स्वाधीनता प्राप्ति के बाद बनाये गये अधिनियम लागू होने से अंग्रेजी को अधिक प्रमुखता मिल गई है । लेकिन हिन्दी को भी अंग्रेजी के समान हैसियत मिलनी चाहिए । विद्यालयों में छोटी कक्षाओं से लेकर हिन्दी के सही उच्चारण पर बल देकर अध्ययन शुरू करना चाहिए । अध्यापकों को समय समय पर द्वितीय भाषा सिखाने का प्रशिक्षण देना चाहिए । भाषा के व्यावहारिक पक्ष पर ध्यान देकर पाठ्यक्रम में परिष्कार किया जा सकता है । ध्वनियों के उच्चारण में सहायक होने वाले आधुनिक यंत्रों का उपयोग करके अध्ययन करने से दोनों भाषाओं की ध्वनियों में जो अन्तर है, वह भली भाँति समझा जा सकता है और उससे काफी हद तक समस्याओं को दूर किया जा सकता है ।

लिंग संबन्धी समस्यायें, जोकि केरल के छात्रों के लिए बहुत सारी कठिनाइयाँ उपस्थित करती है, दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि जहाँ तक हो सके नियमों के अपवाद को नियमों के अन्तर्गत लाकर अध्ययन करने के स्थान पर उसे अपवाद ही समझकर प्रयोग करना चाहिए । हर एक संज्ञा से परिचित होते समय उसके लिंग से भी अवगत होना चाहिए । दोनों भाषाओं की अर्थ संकल्पना में जो अन्तर है, उससे भली भाँति अवगत हो जाने से कारक संबन्धी समस्याओं का हल हो सकता है ।

हिन्दी और मलयालम के व्याकरणिक अंगों के सांगोपांग विश्लेषण से यह स्पष्ट हो गया है कि दोनों भाषाओं के व्याकरणिक अंगों से संबन्धित नियम एवं प्रयोग जहाँ जहाँ थोडी समानताएँ दिखाते हैं तो उससे भी अधिक विषमताओं से युक्त है । जब तक केरल में हिन्दी पढने वाले छात्र हिन्दी और मलयालम की इन प्रवृत्तियों के सम्यक रूप से तुलनात्मक विश्लेषण न करें तब तक इन

विशेष प्रवृत्तियों से अवगन नहीं रहते । ऐसी हालत में कई समस्यायें पैदा होने की संभावनाएँ हैं । उदाहरणों के जरिए यह साबित हो जाता है कि इन विद्यार्थियों के द्वारा कई गलतियाँ होती रहती है और उन्हें इन गलतियों से अवगत कराना अवश्यक रह जाता है । व्याकरणिक नियमों व प्रयोगों के जरिए यह किया जाए तो औरसतन विद्यार्थी ऐसी गलतियों को समझकर उनसे दूर रहने का प्रयत्न कर सकते हैं और सफल भी हो जाते हैं ।

अकसर केरल के हिन्दी अध्ययन में हिन्दी के नियमों पर ही अधिक बल दिया जाता है । उनके व्यावहारिक पक्ष पर बहुत कम ध्यान रहता है । इस प्रकार कुछ बँधी -बँधायी परि-भाषाओं के आधार पर व्याकरण का अध्ययन होता है और इससे छात्रों को भाषा के प्रयोग से वंचित रखा जा सकता है । इस समस्या को दूर करने के लिए पहले भाषा का प्रयोग सिखाना होगा और उसके आधार पर बाद में व्याकरणिक नियम निर्धारित किए जा सकते हैं । मतलब यही है कि भाषा के सैद्धान्तिक पक्ष से हटकर व्यावहारिक पक्ष पर अधिक बल देना चाहिए ।

शोध प्रबन्ध के निष्कर्ष एंव प्रस्ताव

1. केरल में पहली बार हिन्दी के अध्ययन शुरू करने के साथ साथ हिन्दी और मलयालम के व्याकरण का तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन भी शुरू होना चाहिए । क्योंकि जब तक विद्यार्थी अपनी गलतियों को सही ढंग से पहचान नहीं सकता तब तक गलतियों को सुधार नहीं हो सकेगा ।

2. हिन्दी पढ़ाते समय अध्यापक इस बात का विशेष ध्यान रखे कि हिन्दी पर मातृभाषा का प्रभाव न आने पाये ।
3. मलयालम में सोचकर हिन्दी में लिखने से गलतियाँ ज्यादा आ जाती है । इसलिए हिन्दी में ही सोचकर हिन्दी में ही लिखने का प्रयास होना चाहिए ।
4. हिन्दी अध्ययन के पाठ्यक्रम में सुधार आवश्यक है और अध्ययन के समय में बढ़ोत्तरी की जानी चाहिए ।
5. हिन्दी का सही उच्चारण सीखने के लिए ओसिलोग्राफ व काइमोग्राफ आदि का प्रबन्ध किया जाना चाहिए ।
6. हिन्दी में प्रयुक्त समान रूपी तथा भिन्नार्थी शब्दों के लिंग एंव वचन के कारण कई समस्यायें उत्पन्न होती हैं और इनका समाधान दोनों भाषाओं के तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन से और भिन्न भिन्न प्रयोगों के निरतंर अभ्यास से किया जा सकता है ।
7. हिन्दी के कई व्याकरणिक नियमों के अपवाद मलयालम भाषा -भाषी लोगों के लिए समस्यायें उत्पन्न करते हैं । ऐसे अपवादों पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा ।
8. दोनों भाषाओं की अर्थ कल्पना में जो अन्तर है इससे भी समस्यायें उत्पन्न होती है जिनका समाधान सही अर्थ कल्पना एवं कारकों के सही अर्थ प्रयोगों के अध्ययन - अध्यापन से किया जा सकता है ।

सहायक ग्रंथ सूची

हिन्दी पुस्तकें

1. अच्छी हिन्दी — रामचन्द्र वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1966.

2. अच्छी हिन्दी — विश्वनाथ टण्डन, मंजु प्रकाशन, लखनऊ, 1987.

3. अनुवाद :भाषाएँ समस्यायें — एन.ई विश्वनाथ अय्यर, ज्ञान गंगा, दिल्ली, 1972.

4. अनुशीलन 1992 — हिन्दी विभाग, कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, 1992.

5. अन्य भाषा शिक्षण के कुछ पक्ष — सं. अमर बहादुर सिंह, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा - 1983.

6. अपभ्रंश भाषा का अध्ययन — वीरेन्द्र वास्तव, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली, 1965.

7. आओ हिन्दी शब्द कोटियाँ एवं रचना (व्यतिरेकी अध्ययन) — पीतांबर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, प्रथम संस्करण 1984.

8. आजकल के हिन्दी — बदरीनाथ कपूर, शब्दलोक प्रकाशन, वाराणसी, 1963.

9. आर्य और द्रविड भाषा परिवार का संबंध	डा. रामविलास शर्मा हिन्दुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1979.
10. आर्यभाषाओं के विकास क्रम में अपभ्रंश तथा अन्य निबंध	डा. रामनाथ सिंह शर्म अरूण, दी स्टूडेण्ट बुक कंपनी द्वितीय संस्करण 1966.
11. कंप्यूटर और हिन्दी	डा. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, 1988.
12. केरल	एन. ई. विश्वनाथ अय्यर - अखिल भारतीय हिन्दी संस्था नई दिल्ली, 1992.
13. केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास	डा. ए. चन्द्रशेखरन नायर केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, त्रिवेन्द्रम, प्रथम संस्करण 1989.
14. केरल हिन्दी पाठ माला	शिक्षा विभाग, केरल सरकार 1994.
15. केरलीयों की हिन्दी को देन	जी गोपीनाथन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1973.
16. खड़ीबोली का व्याकरणिक विश्लेषण	तेजपाल चौधरी, विकास प्रकाशन, कानपुर, 1990.

17.	गद्य सुमन (प्री. डिग्री)	गाँधीजी विश्वविद्यालय, 1985.
18.	दक्षिण में हिन्दी प्रचार आन्दोलन का समीक्षात्मक इतिहास	श्री. पी.के. केशवन नायर, हिन्दी साहित्य भण्डार लखनऊ 1963.
19.	देशी शब्दों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन	चन्द्रप्रकाश त्यागी, लिपि प्रकाशन दिल्ली, 1972.
20.	द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का विश्लेषणात्मक अध्ययन	वी.पी.शर्मा, हिन्दी साहित्य भण्डार लखनऊ, 1986.
21.	नई शिक्षा नीति में शिक्षक प्रशिक्षण	जयराम सिंह, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989.
22.	पद्मावती समय	सं. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी प्रकाशन केन्द्र, न्यू बिल्डिंग्स, लखनऊ
23.	प्राकृत भाषाओं का उद्भव और विकास	आचार्य नरेन्द्र नाथ, रामा प्रकाशन, लखनऊ, 1978.
24.	प्रायोगिक व्याकरण और पत्र लेखन	शिवकान्त गोस्वामी, विद्या प्रकाशन कानपुर, 1990.
25.	प्रयोजनमूलक हिन्दी	विनोद गेदरे, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 1991.

26. प्रयोजनमूलक हिन्दी व्याकरण — डा. द्विजराम यादव, साहित्य रत्नाकर कानपुर, 1989.

27. प्रशासनिक एवं कार्यालयी हिंदी — डा. राम प्रकाश, डा. दिनेश कुमार गुप्त राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.

28. भारत में दृश्य श्रव्य शिक्षा — सुजीत चक्रवर्ती, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, 1969.

29. भारत का इतिहास — रोमिला तापर, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1990.

30. भारत का राजनीतिक इतिहास — राजकुमार, हिन्दी प्रकाशक पुस्तकालय, काशी, 1962.

31. भारतीय आर्यभाषा — अनु. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय हिन्दी समिति सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, प्रथम संस्करण

32. भारतीय आर्यभाषाएँ — डा. इन्दुचन्द्र शास्त्री, सार्वभौमि संस्कृति पीठ दिल्ली, 1978.

33. भारतीय आर्यभाषाएँ और हिन्दी — डा. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, राजकमल प्रकाशन, 1963.

34. भारतीय आर्यभाषाओं का इतिहास — जगदीश प्रसाद कौशिक, अपोलो प्रकाशन जयपुर

35. भाषा और समाज — डा. रामविलास शर्मा राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 1977.

36. भाषाविज्ञान — भोलानाथ तिवारी, किताब महल इलाहाबाद, 1991.

37. भाषाविज्ञान — श्याम सुन्दर दास, इंडियन प्रेस राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1977.

38. राजभाषा हिन्दी — कैलाशचन्द्र भाटिया, वाणी प्रकाशन दिल्ली, 1990.

39. राजभाषा हिन्दी और राजकीय पत्र व्यवहार — डा.घनश्याम अग्रवाल, 1993.

40. राजभाषा हिन्दी विकास की मंजिलें — डा.के.पी.सत्यनारायण पूर्णा पब्लिकेशन कालिकट, 1993.

41. राष्ट्रभाषा हिन्दी: समस्यायें और समाधान — देवेन्द्रनाथ शर्मा, राजकमल प्रकाशन पटना, 1965.

42. विद्यालय प्रबन्ध में कंप्यूटर का प्रयोग — जयराम सिंह, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984.

43. व्यावसायिक हिन्दी — डा. रामप्रकाश, डा. दिनेश गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1991.

44. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण — जगदीश प्रसाद कौशिक, साहित्यागार, जयपुर, 1985.

45. व्यावहारिक हिन्दी संरचना और अभ्यास — बालगोविन्द मिश्र, केन्द्रीय हिन्दी संस्था, आगरा, 1990.

46. शब्द प्रयोग — डा. नरेश मिश्र, चिन्ता प्रकाशन, दिल्ली, 1988.

47. शब्दों का अध्ययन — भोलानाथ तिवारी, शब्दकार, दिल्ली, 1964.

48. शिक्षा के मूल आधार — शोभा गर्ग, रामनारायण लाल बेणीप्रसाद, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 1970.

49. संपर्क भाषा हिन्दी — भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1987.

50. संस्कृत हिन्दी शब्द कोश — वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसी दास, 1969.

51. संस्कृति के स्वर — तंकमणि अम्मा, लेखिका द्वारा प्रकाशित, 1988.

52. सामान्य भाषा विज्ञान — डा. बाबुराम सक्सेना, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, षष्ठ संस्करण

53. श्रीस्वाति तिरुनाल — कुन्नुकुंषि कृष्णनकुट्टी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1966.

54. हिन्दी अध्ययन स्वरूप एवं समस्यायें — डा. बलभीमराज गोरे संचालन, कानपुर, 1975.

55. हिन्दी और मलयालम में आगत संस्कृत शब्दावली — नारायण पिल्लै. टी.के. केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1984.

56. हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं का वैज्ञानिक इतिहास — शमशेर सिंह नरूला, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 1957.

57. हिन्दी और भारतीय आर्यभाषाएँ — सं. कमल सिंह और भोलानाथ तिवारी प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1987.

58. हिन्दी भाषा का इतिहास — धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तान एकेडेमी इलाहाबाद, 1962.

59. हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास — उदयनारायण तिवारी भारती भण्डार, प्रयाग, द्वितीय संस्करण, सं. 2018 वि.

60. हिन्दी भाषा का परिचय — बिन्धु माधव मिश्र, राजेश पुस्तक केन्द्र, 1975.

61. हिन्दी का मौलिक व्याकरण — निगमानन्द परम हंस, साहित्यागार जयपुर, 1987.

62. हिन्दी कारकों का विकास — विश्वनाथ ए. ए. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण

63. हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योगदान — डा. नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1961.

64. हिन्दी के साथ दक्षिणी भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन — दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, 1990.

65. हिन्दी तथा द्रविड भाषाओं के समान रूपी भिन्नार्थी शब्द — प्रो. सुन्दर रेड्डी, राजपाल दिल्ली, 1974.

66. हिन्दी तेलुगु संज्ञा पद बंध — विजयराघव रेड्डी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1987.

67. हिन्दी भाषा अतीत और वर्तमान — डा. अम्बा प्रसाद सुमन विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 1965.

68. हिन्दी भाषा और साहित्य — उदयनारायण तिवारी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961.

69.	हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्यसमाज की देन	डा. लक्ष्मीनारायण गुप्त. हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ 1900.
70.	हिन्दी भाषा का रचनात्मक व्याकरण	यज्ञदत्त शर्मा, लाइब्रेरी बुक मंदिर दिल्ली, 1985.
71.	हिन्दी भाषा का विकास	श्याम सुन्दर दास साहित्य रत्नमाला बनारस, 1900.
72.	हिन्दी भाषा की भूमिका	शिवशर्मा प्रसाद वर्मा, भारती भवन, पटना, 1969.
73.	हिन्दी भाषा पर फारसी और अंग्रेजी का प्रभाव	डा. मोहनलाल तिवारी, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, प्रथम संस्करण
74.	हिन्दी भाषा विकास और विश्लेषण	चन्द्रभान रावत, सरस्वती प्रकाशन मंदिर, आगरा, 1969.
75.	हिन्दी में अंग्रेजों के आगत शब्दों का भाषा तात्त्विक अध्ययन	डा. कैलाश चन्द्र भाटिया, हिन्दुस्थानी एकेडेमी, इलाहाबाद, 1967.
76.	हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों के अर्थ परिवर्तन	केशवदास पाल, प्राची प्रकाश मेरठ, 1964.

77. हिन्दी रूप रचना — आचार्य जयेन्द्र त्रिवेदी,
लोकभारती प्रकाशन, 1991.

78. हिन्दी व्याकरण — कामताप्रसाद गुरु,
नागरी प्रचारिणी सभा,
वाराणसी,
पन्द्रहवाँ पुनर्मुद्रण सं. 2047.

79. हिन्दी व्याकरण एवं रचना — प्रो. कृष्ण बेद पाण्डे,
चिन्तन प्रकाशन,
कानपुर, 1990.

80. हिन्दी व्याकरण सुधा — तन सुख राम गुप्त,
तूर्स प्रकाशन,
दिल्ली, 1985.

81. हिन्दी शब्दानुशासन — किशोरी दास वाजपेयी,
नागरी प्रचारिणी सभा
वाराणसी, संवत् 2014 वि.

82. हिन्दी शब्द मीमांसा — किशोरी दास वाजपेय,
मीनाक्षी प्रकाशन
मेरठ, 1968.

83. हिन्दी संरचना का अध्ययन — लक्ष्मीनारायण शर्मा,
केन्द्रीय हिन्दी संस्था,
दिल्ली, 1990.

हिन्दी की पत्र - पत्रिकाएँ

84. आजकल अंक 8	दिसम्बर 1928, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली
85. गवेषणा - जनवरी 1976	केन्द्रीय हिन्दी संस्था आगरा, 1976.
86. भाषा त्रैमासिक जून 1974.	केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
87. भाषा त्रैमासिक दिसंबर 1964	केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
88. संग्रथन	नवंबर 1992, हिन्दी विद्यापीठ केरल
89. संग्रथन	दिसंबर 1992, हिन्दी विद्यापीठ केरल
90. संग्रथन	जनवरी 1993, हिन्दी विद्यापीठ केरल
91. संग्रथन	फरवरी 1993, हिन्दी विद्यापीठ केरल
92. संग्रथन	अप्रैल 1993, हिन्दी विद्यापीठ केरल
93. संग्रथन	जून 1993, हिन्दी विद्यापीठ केरल

मलयालम की पुस्तकें

94. आर्य द्राविड भाषकळुटे परस्पर बंधम् — एल. ए. रविवर्मा, 1990.

95. केरलपाणिनीयम् — ए. आर. राजराजवर्मा, साहित्य सहकरण संघम्, 1970

96. केरल चरित्रम् — ए. श्रीधर मेनोन, साहित्य सहकरण संघम् - 1989.

97. गुण्डर्ट ओरु पठनम् — सं. डा. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, कोचिन विश्वविद्यालय, 1972.

98. भाषा गवेषणम् — डा. कुन्जुणी राजा, मङ्गलोदयम् लिमिटेट, त्रिशूर, 1962.

99. भाषा निरीक्षणम् — एन. आर. गोपिनाथ पिल्लै, साहित्य सहकरण सघम्, 1970.

100. भाषयुम् पढनवुम् — सुब्रह्मण्यम्, भाषा शास्त्र विभाग, केरल विश्वविद्यालय, 1974.

101. भाषा विज्ञानम् — सी. वी. बालकृष्णन, लेखक द्वारा प्रकाशित, 1962.

102. मलयाल भाषोत्पत्ति विवरणात्मक भूमिका — आर. रघुनाथन, केरल भाषा इन्स्टीट्यूट, त्रिवेन्द्रम्, 1989.

103. मलयाल भाषा चरित्रम् एषुत्तच्चन वरे — के. आर. रत्नम्मा, लेखिका द्वारा प्रकाशित, 1984.

104. मलयालभाषा पठनङ्ङल — केरल भाषा इन्स्टिट्यूट, त्रिवन्द्रम, 1990. डा. के. प्रभाकर वारियर डा. पी. एन. रवीन्द्रन

105. मलयाल भाषा शैली — कुट्टीकृष्णमारार, मातृभूमि प्रिंटिंग आण्ड पब्लिशिंग कंपनी, कालिकट, 1964.

106. मलयाष्मयुटे व्याकरण — जार्ज मात्तन, साहित्य सहकरण संघम्, 1863.

107. व्याकरण मित्रम् — शेषगिरी प्रभु, केरल साहित्य एकेडमी, तृश्शूर, 1989.

108. द्रविड भाषा व्याकरणम् पहला भाग — अनुवाद डा. एन. के. नायर, केरल भाषा इंस्टिट्यूट त्रिवेन्द्रम 1993.

109. द्रविड भाषा व्याकरण दूसरा भाग — अनुवादक डा. एन. के. नायर, केरल भाषा इंस्टिट्यूट त्रिवेन्द्रम, 1994.

110. स्वाति तिरुन्नाल — डॉ. शूरनाट्टु कुञ्ञनपिल्लै, केरल सरकार के सांस्कृतिक प्रकाशन विभाग, 1989.

अंग्रेज़ी पुस्तकें

111. A comparative study of Vocabulary of Hindi and Malayalam — Dr.M.Easwari, Cochin University of Science and Technology Cochin-22, 1973.

112. Education and National development Report 1964-66 — N C R T C, 1971

113. Evolution of Indian culture — B.N.Luniyar
Lakshmi narayanan Agarwal
Educational publisher
Agra - 1960

114. History of freedom movement in India Volume I — Tarachand
Publication Division
Ministry of information and Broadcasting
Government of India, 1971

115. Kerala English Reader — Education Department
Kerala Government, 1994.

116. Teaching of Hindi as s foreign language — Dr.P.Vidyasagar Dayal
Santhi Prakasan, Hyderabad
1993.